नित्य नियम पूजन, चतुर्विंशति जिन पूजा

(श्री वृन्दावन जीकृत)

तीर्थ क्षेत्र पूजन व स्तोत्र संग्रह

संग्रहकर्त्री : श्रीमती पद्मावती जैन

अहिंसा मन्दिर
१, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२
अन्य केन्द्र : (हरिद्वार, कुरुक्षेत्र व पिलानी)
संचालक : श्री राजकृष्ण जैन चैरीटेबल ट्रस्ट

प्रकाशक .
अहिंसा मन्दिर,
१, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२
फोन . २६७२००
अन्य केन्द्र : हरिद्वार, कुरुक्षेत्र व पिलानी
सचालक : श्री राजकृष्ण जैन चैरीटेबल ट्रस्ट

मूल्य ३० रुपये

श्रुतपचमी (ज्येष्ठ शुक्ल ५)
वीर निर्वाण सवत् २५१०
सन् १६८४

मुद्रक गीता प्रिंटिग एजेंसी, द्वारा विन्ध्यवासिनी पैकेजिंग
न्यू सीलमपुर दिल्ली-५३

प्रस्तावना

प्रस्तुत पूजन पाठ स्तोत्र सग्रह को आपकी सेवा मे प्रस्तुत करते हु हमे अपार हर्ष हो रहा है। इसकी विशेषता यह है कि इसमे स्तोत्रों, छ. ढाला, नित्य नियम पूजा के साथ-साथ गोतम स्वामी पूजन, सलूनो पूजन के अतिरिक्त श्री वृन्दावन जी कृत चतुर्विशति पाठ है व साथ मे सिद्ध क्षेत्र पूजाए। अभी तक जो चौबीसी पाठ प्रकाशित हुए है उनमे पच कल्याणक तिथियो मे विभिन्नता पाई जाती है। जितने भी प्रचलित पाठ हैं उनको एकत्र करके व वीर सेवा मदिर से प्रकाशित श्री मिलाप चन्द्र रतन लाल जी कटारिया केकडी द्वारा सशोधित पचकल्याणक तिथियां निबध रत्नावली से ली गई है। फिर भी पूजार्थियो से निवेदन है कि कही पर त्रुटी रह गई हो तो कृपया शुद्ध कर लें व हमे भी सूचित करने की कृपा करे। पच कल्याणक तिथिया तथा उनसे हिन्दू त्योहारो का मिलन करके एक तालिका भी दी जा रही है।

इस पूजन पाठ का सग्रह अहिसा मदिर के सस्थापक श्री राजकृष्ण जैन के सुपुत्र श्री प्रेमचन्द्र जैन की धर्म पत्नी श्री पद्मावती जैन ने किया था, परन्तु दुर्भाग्य से गत अनन्त चतुर्दशी को उनका स्वर्गवास हो गया उनकी इच्छानुसार ये पूजन पाठ पुस्तिका उनके सास-ससुर, (श्री राजकृष्ण जी व माता कृष्णा देवी जी) को समर्पित की जा रही है।

हम श्रीयुत प० बाबूलाल जी जमादार वडोत के आभारी हैं, जिन्होने इसके प्रकाशन मे सक्रिय सहयोग दिया व प्रूफ आदि शुद्ध किये।

विश्वास है कि लोग इसका सदुपयोग करेंगे।

श्रुत पचमी वीर नि० सवत् २५१० पद्मचन्द्र जैन शास्त्री



श्री प्रेमचन्द्र जैन (अहिंसा मन्दिर दिल्ली) अपने पिता श्री राजकृष्ण जैन माता श्रीमती कृष्णादेवी जैन
व पत्नी श्रीमती पद्मावती जैन के साथ

समर्पण

अपने धर्मपरायण धर्म पिता व माता

(ससुर व सास) श्री राजकृष्ण जैन

एवम् श्रीमती कृष्णा देवी जैन

को सादर—

पद्मावती जैन

अनन्त चतुर्दशी वीर निर्वाण संवत् २५[illegible]९

बुधवार २१ सितम्बर १९८३

श्रीमती पद्मावती जैन

आपका जन्म वाराणसी के प्रसिद्ध घराने मे बाबू सालिगरामजी (उर्फ गुल्लू बाबू) के यहां श्रावण कृष्ण १४ (जिस दिन भगवान शिव को गंगाजल हरिद्वार से कावरो द्वारा ले आकर वाराणसी-बैजनाथ धाम आदि तीर्थों पर अर्पण किया जाता है) ३० जौलाई १९२४ को हुआ था। आपके परदादा श्री छेदीलालजी ने भगवान सुपार्श्वनाथ के जन्म स्थान भदैनी घाट वाराणसी में एक जिन मन्दिर का निर्माण कराया था। आपके बाबा श्री गणेशदासजी व पिता श्री गुल्लू बाबू वहा प्रतिदिन पूजन करने जाते थे। आपकी बडी बहन श्रीमती राजुलमनी जैन लहरपुर (सीतापुर) के प्रसिद्ध जमीदार ला० दीपचन्दजी के ज्येष्ठ पुत्र श्री शान्तिदासजी बी० ए० एल० एल० बी० से ब्याही थी। उन्होने भी अपने गाव मे एक जिन मन्दिर का निर्माण कराया था। आपके छोटे भाई श्री सुपारसदास जैन भी धार्मिक वृत्ति के हैं। उनके बडे पुत्र डा० अशोक कुमार जैन व इजीनियर श्री प्रदीपकुमार जैन हैं। आपका विवाह ६ फरवरी १९४२ को देहली के प्रसिद्ध श्री राजकृष्णजी जैन के सुपुत्र श्री प्रेमचन्द्र जैन से हुआ। आपकी ननद श्री कान्ता जैन का विवाह देहरादून के श्री नरेन्द्रकुमार जैन से हुआ। उनके दो पुत्र श्री दिनेशकुमार जैन व राजेशकुमार जैन है।

आप जन्म से ही भाग्यशाली रही। आपको पितृगृह व ससुराल मे पूरा स्नेह व सम्मान मिला। आप शान्त चित्त, अतिथि-सेवा परायण, सरल हृदया, वात्सल्यमयी थी। पति पत्नी नित्य प्रति पूजन करते थे। आपकी चारो पुत्रिया क्रमश श्रीमती उषा जैन बी०ए०—श्री महावीर प्रसाद जैन एम० फार्मा० आगरा से, श्रीमती विजय जैन—श्री चक्रेश कुमार जैन बिजली वाले देहली से, श्रीमती कुन्दप्रभा जैन—श्री विनोदकुमार जैन इजीनियर व श्रीमती स्वयप्रभा जैन एम० ए०—श्री अतुलकुमार जैन इजीनियर रोहतक निवासी (हाल गाजियाबाद) मे ब्याही गई व तीनो पुत्र श्री भारत भूषण जैन, एडवोकेट—श्रीमती निरुपमा जैन एम० ए०, डा० देश भूषण जैन सर्जन—श्रीमती रेणु जैन बी० ए० व श्री धर्म भूषण जैन चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट—श्रीमती निशा जैन एम० ए० से विवाहित हुए। आप अपने पीछे १५ पौत्र-पौत्रिया, धेवते-धेवतिया छोड गई हैं।

आपने एक बार अपने पितृगृह की ओर से गुजरात दक्षिण के तीर्थों की यात्रा की। ससुराल की ओर से अपने सास-ससुर, पति व बच्चो के साथ अनेकों बार सम्मेदशिखरजी, महावीरजी, अहिक्षेत्र, खण्डगिरि-उदयगिरि, कम्पिलाजी,

शौरीपुर बटेश्वर, कमलदह (पटना), श्रावस्ती, कौशाम्बी, चन्द्रपुरी, श्रेयांसनाथ (सारनाथ) अयोध्या, रतनपुरी, मथुरा, चौरासी, केसरियानाथ(ऋषभदेव), पदमपुरी, तिजारा, चम्पापुर, पावापुर, राजगृही, गिरनारजी सोनगढ़, पालीताना तारगा, मुक्तागिरि, पावागढ़, श्रवणबेलगोल, मूडबिद्री, कुम्भोज, बाहुबली, हूमचा—पद्मावती, हलेबिड, कारकल वेणुर, धर्मस्थल, गजपथा, ऊन, बडवानी, सिद्धवरकूट, सोनागिर, अहारजी, पपौरा, नैनागिर, द्रोणागिरि, खजुराहो, देवगढ, चन्देरी, थौवनजी, एलौरा-अजन्ता आदि तीर्थों के कई बार दर्शन किये। हिन्दू तीर्थों मे जगन्नाथपुरी, बैजनाथधाम, बद्रीनाथ, देवप्रयाग, रुद्रप्रयाग जोशीमठ, गोवर्धन, वृन्दावन, नाथद्वारा आदि तीर्थों पर भी गई।

आपका पितृगृह व ससुराल दोनो मे ही अनेक आचार्यों, मुनिराजो, आर्यिकाओ जैसे—आचार्य नमिसागर जी, आचार्य सूर्यसागर जी, आचार्य देशभूषण जी, धर्मसागर जी, एलाचार्य विद्यानन्द जी, श्री कानजी स्वामी, ज्ञानमती माताजी, भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्तिजी हूमचा, चारुकीर्तिजी श्रवणबेलगोल, श्री लक्ष्मीसेनजी नरसिंहराजपुर आदि, क्षुल्लक गणेशप्रसादजी वर्णी, श्री मनोहर वर्णी ब्रह्मचारियो व आचार्य श्री तुलसी, मृगावतीजी महाराज, सत बाल मुनिजी, राष्ट्र सत नागराजजी आदि का आशीर्वाद मिलता रहा है। व यही ठहरते रहे हैं। ससुराल तो विद्वानो का गढ ही रहा है जिसमे वेद विशारद प० मगलसैनजी अम्बाला छावनी, प० जुगलकिशोरजी मुख्तार, सर्वश्री बाबू रतनचन्दजी मुख्तार सहारनपुर, प० तुलसीरामजी बडौत, प० माणिकचन्द्रजी कौन्देय फिरोजाबाद, डा० हीरालाल जी, डा० आदिनाथ नेमिनाथ उपाध्याय, प० वर्धमान शास्त्री, ब्र० सुमतिबाई शाह, प० मक्खनलालजी मोरेना, प० राजेन्द्रकुमारजी, प० फूलचन्द्रजी शास्त्री, प० महेन्द्रकुमारजी न्यायतीर्थ, प० कैलाशचन्द्रजी वाराणसी, प० दरबारीलालजी कोठिया, प० लालबहादुर शास्त्री, प० बाबूलालजी जमादार, प० पद्मचन्द्रजी शास्त्री, प० शिखरचन्दजी प्रतिष्ठाचार्य श्री विनयकुमार पथिक, प० परमेष्ठोदास, प० पन्नालालजी साहित्याचार्य, प० बलभद्रजी श्री नरेन्द्र विद्यार्थी आदि को तो हमेशा ही स्नेहस्त सर पर रहा है। वे यहाँ ठहरते रहे हैं

राष्ट्रीय नेताओ मे आपके पारिवारिक सम्बन्ध स्व० डा० राजेन्द्रप्रासजी। राजाजी, श्रीमौलाना अब्दुलकलाम आजाद, श्री सतनारायणसिंह, श्री के० सी०

रेड्डी, श्री जयसुखलाल जी हाथी, श्री तखतमल जैन, श्री मिश्रीलालजी गगवाल, श्री मेनन, भारत के भूतपूर्व उपराष्ट्रपति डा० जाकीर हुसैन, श्री बी० डी० जत्ती, श्री कमलापति त्रिपाठी, श्री राजबहादुर, श्री जगदीशनारायण अग्रवाल, दिल्ली के उपराज्यपाल श्री ए० एन० झा, श्रीकृष्णचन्द्र, डाक्टर शकरदयाल शर्मा श्रीमती राजकुमारी अमृत कौर, श्री गुलजारीलाल नन्दा, डा० कैलाशनाथ काटजू, डा० कालीदास नाग, श्री व श्रीमती अरुणा आसफअली आदि से रहे हैं।

पूज्य क्षुल्लक श्री गणेशप्रसाद जी वर्णी ने लाला राजकृष्णजी को अपने पत्र फाल्गुण वदी १० सवत् २००६ दिनाक १८-२-१९५० मे इनके विषय मे लिखा था कि 'चि० प्रेमचन्द्र योग्य बालक है, उसकी गृहणी सुशील व कोमल प्रवृति की है, इनको भी स्वाध्याय मे साथ रखना।'

आपने हरिवश कथा (बाल सस्करण) व प्रद्युमन कथा का भी सम्पादन किया जो प्रकाशित हो चुका है। आपके द्वारा पाडव कथा का भी रूपान्तर किया गया है जो प० लालबहादुरजी शास्त्री के अवलोकनार्थ गया हुआ है। प्रस्तुत पूजन पाठ का सकलन आप ही के द्वारा हुआ है।

आपका घराना बहुत धार्मिक व सामाजिक है। आपके ससुर श्री राजकृष्ण जी जैन ने श्री राजकृष्ण जैन चेरिटैबल ट्रस्थ की स्थापना की। उसके अन्तर्गत आपने दरियागज देहली मे एक भव्य अहिंसा मन्दिर जिसमे जिन मन्दिर, धर्मशाला, औषधालय, नर्सिगहोम, सरस्वती भवन व वाचनालय बनवाया। इस ट्रस्ट द्वारा जिसकी आप उपध्यक्षा थी—अनेको धार्मिक व सामाजिक कार्य हुए मुख्यत —

(१) मोदीनगर मे प्रथम जैन मन्दिर के निर्माण के वास्ते भूमि प्राप्त की, जिस पर श्री रघुवीर सिह जी जैनावाच कम्पनी व अन्य लोगो ने भव्य मन्दिर निर्माण कराया।

(२) मूडविद्री स्थित सिद्धान्त वस्ती (मन्दिर) मे सुरक्षित धवल-जयधवल, महाधवल ग्रन्थो के फोटो लेकर राष्ट्रीय सग्रहालय मे मूल ग्रथोका जीर्णोद्धार कराया।

(३) उपरोक्त ग्रथो को व रत्नमई जिनबिम्बो की सुरक्षा के वास्ते मूडबिद्री मे श्रीमती कृष्णादेवी राजकृष्ण जैन देहली धवलोद्धार गृह का निर्माण कराया।

(४) श्रवणबेलगोल मे भट्टारक गृह के नीचे पद्मावती प्रेमचन्द्र जैन सरस्वती भवन व वाचनालय का निर्माण कराया।

(५) हरिद्वार मे अहिंसा मन्दिर (प्रथम दिगम्बर जैन मन्दिर) के वास्ते उत्तर प्रदेश शासन से भूमि लेकर जिन मन्दिर, धर्मशाला, वाचनालय, प्रवचन हाल व औषधालय का निर्माण कराया, जो अब तक चालू है।

(६) कुरुक्षेत्र मैं अहिंसा मन्दिर (प्रथम दि० जैन मन्दिर) के वास्ते कुरुक्षेत्र विकास मण्डल से अपने ट्रस्ट के नाम भूमि ली जिसके मानचित्र आदि पास हो हो गये हैं।

(७) पिलानी मे अहिंसा मन्दिर (प्रथम दिगम्बर जैन मन्दिर) के वास्ते भूमि प्राप्त कर के मन्दिर निर्माण का कार्य प्रारम्भ किया जो चालू है।

(८) मायसौर विश्वविद्यालय मे श्री राजकृष्ण जैन शिष्य वृत्ती फन्ड की स्थापना की।

(९) दिल्ली विश्वविद्यालय मे ११,००० रु० प्रदान कर जैन धर्म के विविध विषयो पर श्री राजकृष्ण जैन स्मृति वार्षिक व्याख्यान माला की स्थापना की, जिसके अन्तर्गत हुए न्यायमूर्ति श्री टी० के टुकोल, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डा० दौलतसिंह जी कोठारी, मायसौर विश्वविद्यालय के प्राकृत व जैन दर्शन विभाग के अध्यक्ष प्रो० टी० जी कलघटगी, स्याद्वाद विद्यालय के प्रसिद्ध विद्वान सिद्धान्ताचार्य पडित कैलाश जी शास्त्री आदि के भाषण तो प्रकाशित भी हो चुके है।

(१०) विदेशो के प्रसिद्ध विश्वविद्यालयो मे जैन शास्त्र प्रदान किये।

(११) भारत की जेलो मे जैन ग्रन्थ भेट किये।

(१२) देहली दरियागज, अहिंसा मन्दिर के नीचे व हिन्दी पार्क मे विद्युत चालित शीतल जल प्याऊ का निर्माण कराया।

(१३) सस्कृत जैन स्कूल कूचा सेठ व कन्या स्कूल धर्मपुरा मे विद्युत चालित शीतल जल मशीन दी।

(१४) सराक क्षेत्र विहार मे जलकूप बनाकर भेट किया।

(१५) हस्तिनापुर जम्बूद्वीप मे निर्मित सुमेरु मे एक चैत्यालय का निर्माण कराया।

(१६) हस्तिनापुर मे ही वहा शवदाह स्थान पर श्रीमती कृष्णादेवी जैन की स्मृति मे तीन चबूतरे शवो के दाह सस्कार निर्मित बनाकर अर्पण किये। उससे पहले वहा घास पर ही शवो का दाह सस्कार होता था।

(१७) बिहार मे प्राकृतिक प्रकोप के समय १०,००० रु० प्रधानमन्त्री राहतकोष मे दान दिया।

(१८) आन्ध्र प्रदेश मे प्राकृतिक प्रकोप के समय १५,००० रु० प्रधानमत्री कोष मैं दान दिया।

(१९) आदर्श महिला विद्यालय, श्री महावीरजी मे स्वैटर बनाने की मशीन भेंट की।

(२०) श्री दिगम्बर जैन महावीर भवन (धर्मशाला) मसूरी मे कमरे का निर्माण कराया।

(२१) अहिक्षेत्र के शास्त्र भण्डार मे तीन लोहे की अल्मारिया भेंट की।

(२२) पालम हवाई अड्डे के पास नव निर्मित मन्दिरजी मे भगवान महावीर की प्रतिमा भेंट की।

(२३) चार वर्षों से गोरक्षा के लिए आन्दोलन मुनि श्री ज्ञानचन्दजी व श्री राधाकृष्णजी बजाज के नेतृत्व मे आपके ही यहा से श्रीमती कृष्णा देवी राजकृष्ण जैन स्मृति भवन से चल रहा है। आपने उनके ठहरने के लिए स्थान फ्री बिजली, पानी की व्यवस्था की हुई है।

(२४) इसके अतिरिक्त झज्जर के मन्दिर जी के जीर्णोद्धार मे, बागपत के स्कूल मे कई असमर्थ परिवारो की लडकियो के विवाहो मे, अनेको की तीर्थ-यात्रा कराने आदि मे गरीबो को तो कम्बल आदि बाटने का तो कहना ही क्या है।

(२५) ट्रस्ट द्वारा समयसार, अध्यात्म तरगनी, भगवान महावीर पुराने घाट नई सीढिया तन से लिपटी बेल, युगवीर भारती, भक्तिगुच्छक आदि ग्रथो का प्रकाशन भी हुआ है।

प्रसिद्ध गाधी—इरविन समझोता ४-३-१९३१ को आपकी ही कोठी न० १ दरियागज देहली मे समपन्न हुआ था उस समय राष्ट्रीय काग्रेस के अध्यक्ष डा० मुख्तार अहमद असारी यही रहते थे व गाधी जी यही ठहरे हुए थे।

आपको अपनी मृत्यु का पूर्वाभास सा हो गया था। आपने अपने ६०वे जन्म प्रवेश (३०-७-८३) पर लगभग ३००० रु० का रजतकलश मन्दिरजी को भेंट किया। ५-९-८३ को तिजारा दर्शनार्थ गईं, वहा से लौटकर अपनी वसीयत लिखवाई जिसमे एक न० दरियागज दिल्ली मे एक मकान जो आपके नाम पर था और जिसका लगभग १७०० रु० माहवार किराया आता है, धार्मिक व सामाजिक कार्यों के लिए श्री राजकृष्ण जैन चैरिटेबल ट्रस्ट को दे दिया। १०-९-८३ को मालव गाव (हरियाणा) से लाई हुई लगभग ५०० वर्ष प्राचीन कुथनाथ व नैमनाथ भगवान की प्रतिमायें भी राजकुमारजी सेठी डोमापुर (नागालैड) द्वारा वायुयान से डीफू मे बन रहे दिगम्बर जैन मन्दिर के लिए भेंट मे भेजी। २१/२२-९-८३ को अनन्त चतुर्दशी भगवान बासुपूज्य के निर्वाण दिवस की रात्रि को महा प्रयाण किया। आपके शव पर गौ सेवा समाज वर्धा की ओर से वाराणसी व दिल्ली वालो की ओर से पुष्प मालायें, सूत की कालायें, शाल आदि चढ़ाये गये।

उनके दिवगत होने के दुखद समाचार देहली के हिन्दुस्तान टाइम्स, नवभारत टाइम्स, जैन सन्देश, जैन गजट,करणाद्वीप, जैन मित्र, अखिल भारतवर्षीय दि०जैन शास्त्री परिषद का धर्मरक्षा बुलेटिन, जैन प्रचारक, बल्लभ सन्देश, वीतरागवाणी, सम्यग्ज्ञान, आदि पत्रो मे प्रकाशित हुए। जगतगुरु भट्टारक श्री देवेन्द्र कीर्तिजी स्वामी हूमचा, भट्टारक श्री चारुकीर्तिजी श्री जैन मठ श्रवणबेलगोल, मूडविद्री के भट्टारक श्री चारुकीर्ति पडिताचार्य स्वामीजी मुनि श्री ज्ञानचन्दजी आनन्द (गुजरात), श्री महावीर अकादमी जयपुर के डा० कस्तूर चन्दजी कासलीवाल, धाडवाड विश्वविद्यालय के जैन दर्शन के निदेशक डा० खडबडी, विघ्नहर पार्श्वनाथ अतिशयक्षेत्र महुआ के श्री गमनलाल शाह, भगवान महावीर बाल सस्था केन्द्र टीकमगढ के महामन्त्री श्री अशोक कुमार जैन, सागर विश्वविद्यालय के श्री कृष्णदत्त वाजपेयी, डा० ज्योतिप्रसादजी जैन लखनऊ, मायसौर विश्वविद्यालय के जैन दर्शन व प्राकृत विभाग के भूतपूर्व अध्यक्ष डा० टी० जी० कलघटगी, सोलापुर से ब्र० सुमतिबाई शाह, जागृत वीर समाज देहली, की ओर से प्रस्नाव बम्बई से डा० जगदीशचन्द जैन, कुम्भोज बाहुबली से श्री माणिक चन्दजी भिसीकर, वाराणसी से प० कैलाशचन्दजी जैन, रोटरी क्लब आफ दिल्ली, लायस क्लब दिल्ली, जैन को-आपरेटिव बैंक के चेयरमैन श्री मदनलाल जैन, श्री वशीधर शास्त्री जयपुर, श्री हीरालाल टोपी वाला सूरत, रोटरी इन्टरनेशनल, श्री शीतलकुमार जैन राची, राय बहादुर हरखचन्दजी राची, श्री प्रेमचन्दजी जैन ज्वालापुर, श्री शिखरचन्द जो जैन रानी मिल मेरठ, श्री महेशचन्दजी जैन हस्तिनापुर, श्री युधिष्ठिर एडवोकेट इलाहाबाद, मायसौर से श्री सी० बी० एम० चन्द्रइया, श्री राजेन्द्रकुमार जैन विदिशा, श्री ज्ञानचन्द जैन रेणु सागर, श्री प्रीतमसिह जैन चडीगढ़, श्री नाथूलालजी शास्त्री इन्दौर, श्री जैनीलालजी जगाधरी, श्रीमती फूलमती जैन अलीगढ, श्री शिखर चन्दजी जैन खरखरी, श्री विनयकुमार जैन पथिक मथुरा, श्री अमरचन्दजी जैन सतना, श्री नीरज जैन सतना, श्री कपलेश भूतपूर्व नगर निर्माण भोपाल, श्री राजकुमारजी अतिरिक्त सचिव मध्य प्रदेश शासन भोपाल, श्री रतनलाल जी कटारिया केकडी, श्री शैलेश कम्पडिया सूरत, श्री कनछेदीलालजी जैन शहडोल, श्री कपिल भाई कोटडिया हिम्मतनगर, श्री शेखर जेन भावनगर, श्री वशीधरजी

जैन व्याकरणाचार्य बीना, सवाई सि० श्री धन्यकुमार कटनी, श्री सुबोधकुमार जैन आरा, डा० एस० के० जैन दिल्ली, श्री ए०, श्रीचन्द शास्त्री मद्रास, श्री ज्ञानचन्द जी जैन खिन्दूका जयपुर, श्री सुरेश जैन पानीपत, श्री दयाचन्द राजेन्द्रकुमार जैन जगराओ (पजाब), श्री अनन्तप्रसादजी जैन गोरखपुर, श्री श्री सुनीलकुमार जैन ओबरा, श्री मुलायमचन्दजी जैन जबलपुर, श्री लालचन्द जी जैन टिकैतनगर, श्री भगवानदास शोभालाल सागर, अमरीका से श्री अनन्तकुमारजी जैन आदि लोबो की सवेदनाये प्राप्त हुई ।

भोपाल से श्री नन्दनकुमारजी के सुपुत्र श्री जयकुमारजी, कुरुक्षेत्र से डा० प्रेमचन्द्र जैन, श्री सागरचन्द जैन, पिलानी से डा० जिनेश्वरदास जैन, प० दरबारी लालजी कोठिया, प० खुशालचन्दजी गोरावाला, श्री सुपारसदासजी, श्री विमलकुमार जी, वाराणसी से तथा मेरठ से श्री चतरसेन जैन, जयचन्द जैन, पटना से श्री बद्रीप्रसाद जी सरावगी की पुत्र वधू व पौत्र, फरीदाबाद से चौधरी दीपकिशोर जी, कानपुर से श्री सन्तकुमार जी, रोहतक से बाबू जिनेन्द्र प्रसाद जी, तहमील फतेहपुर (बाराबकी) से श्री प्रेमचन्द जी, लखनऊ से श्री अजित प्रसादजी, गजवासौदा से श्री प० ज्ञानचन्द जी स्वतत्र एव दमोह से प० अमृतलाल जी, भागचन्दजी, आगरा से श्री दाऊदयालजी, प० हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर, टीकमगढ से प० विमलकुमारजी सोरया, बडौत से प० बाबूलालजी जमादार, गाजियाबाद से लाला शीतलप्रसाद जैन, फिरोजपुर झिरका से श्री ताराचन्द प्रेमी, देहरादून व अम्बाला छावनी व अन्य जगह से और देहली समाज के लोगो के अतिरिक्त उच्च न्यायालय के न्यायाधीश, देहली के अन्य न्यायाधीश, आयकर व अन्य अधिकारी, वकील, डाक्टर, वैद्य, प्रोफेसर अन्य गण मान्य व्यक्ति आदि स्वय सवेदना प्रगट करने आये। दि० जैन समाज हरिद्वार, दि० जैन समाज कुरुक्षेत्र, दि० जैन समाज फरीदाबाद, श्री पावा-नगर निर्वाण क्षेत्र समिति गोरखपुर व अन्य कई जगहो से तो अपने-अपने यहा शोक प्रस्ताव भी पास किये ।

कौन जी पायेगा आपको भूलकर, जुर्म कर जायेगा आपको भूलकर ।
जिस तरफ हम मुडे आप आये नजर, किस तरह हम जिये आपको भूलकर ।।
ढूढने उसको चला हू, जिसे पा भी न सकू, दिल से भुला भी न सकू ।
सुख गया दिन टूट रही है शाम, लेकिन फिर से हरा हो गया एक तुम्हारा नाम ।।

लालबहादुर शास्त्री दिल्ली

विषय-सूची

भाग प्रथम

भाग द्वितीय

चतुर्विंशति जिन व तीर्थ क्षेत्र पूजा

—: o :—

मंगलाष्टकम्

श्रीमन्नम्रसुरा—सुरेन्द्र-मुकुट-प्रद्योतरत्न-प्रभा—
भास्वत्पादनखेन्दव प्रवचनाम्भोधीन्दव स्थायिन
ये सर्वे जिनसिद्धसूर्यनुगतास्ते पाठका साधव ।
स्तुत्या योगिजनैश्च पञ्चगुरव कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥११॥
नाभेयादिजिना प्रशस्तवदना, ख्याताश्चतुर्विशति ।
श्रीमन्तो भरतेश्वरप्रभृतयो, ये चक्रिणो द्वादश ॥
ये विष्णुप्रतिविष्णु-लाङ्गलधरा सप्तोत्तरा विशति ।
त्रैलोक्ये प्रथितास्त्रिषष्ठिपुरुषा कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥२॥
ये पञ्चौषधिऋद्धय श्रुततपो-वृद्धिगता, पञ्च ये ।
ये चाष्टाङ्गमहानिमित्तकुशलाश्चाष्टौ विधाश्चारिण ॥
पञ्चज्ञानधराश्चयेपि विपुला, ये बुद्धि-ऋद्धीश्वरा ।
सप्तैते सकलार्चिता मुनिवरा कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥३॥
ज्योतिर्व्यन्तर-भावनामर-गृहे, मेरौ कुलाद्रौ स्थिता ।
जम्बूशालमलिचैत्यशाखिषु तथा, वक्षार-रूप्याद्रिषु ॥
इक्ष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे, द्वीपे च नन्दीश्वरे ।
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहा कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥४॥

कैलाशो वृषभस्य निर्वृत्ति-मही, वीरस्य पावापुरी ।
चम्पा वा वासुपूज्यसज्जिनपते सम्मेदशैलोऽर्हताम् ॥
शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरी नेमीश्वरस्याहंत ।
निर्वाणा-वनय प्रसिद्धविभवा, कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥५॥
सर्पो हारलता भवत्यसिलता, सत्पुष्पदामायते ।
सम्पद्येत रसायन विषमपि, प्रीति विधत्ते रिपु ॥
देवा यान्ति वश प्रसन्नमनस, किवा बहु ब्रूमहे ।
धर्मादेव नभोऽपि वर्षति तरा, कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥६॥
यो गर्भावतरोत्सवे भगवता, जन्माभिषेकोत्सवे ।
यो जात परिनिष्क्रमेण विभवो, य केवलज्ञानभाक् ॥
य कैवल्यपुरप्रवेशमहिमा, सम्पादित स्वर्गिभि ।
कल्याणानि च तानि पञ्च सतत, कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥७॥
आकाश मूर्त्यभावा-दघकुलदहना-दग्निरुर्वी क्षमाप्त्या ।
नै मगादायुराप -प्रगुणशमतया, स्वात्मनिष्ठै सुयज्वा ॥
सोम सौम्यत्वयोगा-द्रविरिति च विदु-स्तेजस सन्निधानाद् ।
विश्वात्मा विश्वचक्षु-र्वितरतु भवता, मगल श्रीजिनेश ॥८॥
इत्थ श्री जिनमगलाष्टकमिद, सौभाग्य-सम्पत्कर ।
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थङ्कराणा मुखा ॥
ये शृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनै धर्मार्थकामान्विता ।
लक्ष्मीराश्रियते व्यपायरहिता, निर्वाणलक्ष्मीरपि ॥९॥

॥ इति मगलाष्टकम् ॥

महावीराष्टक स्तोत्र

(कविबर भागचन्द)

शिखरिणी

यदीये चैतन्ये मुकुर इव भावाश्चिदचित
सम भान्ति ध्रौव्य-व्यय-जनि-लसन्तोऽन्तरहिता ।
जगत्साक्षी मार्ग-प्रकटन-परो भानुरिव यो
महावीर स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे ॥१॥
अताम्र यच्चक्षु कमल-युगल स्पन्द-रहित
जनान्कोपापाय प्रकटयति वाभ्यन्तरमपि ।
स्फुट मूर्तिर्यस्य प्रशमितमयी वातिविमला
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे ॥२॥
नमन्नाकेन्द्राली-मुकुट-मणि-भा-जाल-जटिल
लसत्पादाम्भोज-द्वयमिह यदीय तनुभृताम् ।
भवज्ज्वाला-शान्त्यै प्रभवति जल वा स्मृतिमपि
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे ॥३॥
यदर्चाभावेन प्रमुदित-मना दर्दुर इह
क्षणादासीत्स्वर्गी गुण-गण-समृद्ध सुख-निधि. ।

लभन्ते सदभक्ता शिव-सुख-समाज किमु तदा
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे ॥४॥
कनत्स्वर्णाभासोऽप्यपगत - तनुर्ज्ञान - निवहो
विचित्रात्माप्येको नृपति-वर-सिद्धार्थ-तनय. ।
अजन्मापि श्रीमान् विगत-भव-रागोद्भुत-गति
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे ॥५॥
यदीया वाग्गङ्गा विविध-नय-कल्लोल-विमला
बृहज्ज्ञानाम्भोभिर्जगति जनता या स्नपयति ।
इदानीमप्येषा बुध-जन-मरालै परिचिता
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे ॥६॥
अनिर्वारोद्रेकस्त्रिभुवन - जयी काम - सुभट
कुमारावस्थायामपि निज-बलाद्येन विजित
स्फुरन्नित्यानन्द-प्रशम-पद-राज्याय स जिन
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी-भवतु मे ॥७॥
महामोहातङ्क - प्रशमन - पराकस्मिक - भिषक्
निरोपेक्षो बन्धुर्विदित,महिमा मङ्गलकर ।
शरण्य साधूना भव-भयभृतामुत्तमगुणो
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे ॥८॥
महावीराष्टक स्तोत्र भक्त्या 'भागेन्दु' ना कृतम् ।
य पठेच्छृणुयाच्चापि स याति परमा गतिम् ॥९॥

भक्तामरस्तोत्रम्

(श्रीमानतुगाचार्य)

भक्तामर-प्रणत-मौलि-मणि-प्रभाणा-
मुद्योतक दलित-पाप-तमो-वितानम् ।
सम्यक्प्रणम्य जिन-पाद-युग युगादा-
वालम्बन भव-जले पतता जनानाम् ॥१॥
य सस्तुत. सकल-वाड मय-तत्त्व-बोधा-
दुद्भूत-बुद्धि-पटुभि, सुर-लोक-नाथै. ।
स्तोत्रैर्जगत्त्रितय-चित्त - हरैरुदारै
स्तोष्ये किलाहमपि त प्रथम जिनेन्द्रम् ॥२॥
बुद्धया विनापि विबुधार्चित-पाद-पीठ
स्तोतु समुद्यत-मतिर्विगत-त्रपोऽहम् ।
बाल विहाय जल-सस्थितमिन्दु-बिम्ब-
मन्य क इच्छति जन सहसा ग्रहीतुम् ॥३॥
वक्तु गुणान्गुण-समुद्र शशाङ्क-कान्तान्
कस्ते क्षम. सुर-गुरु-प्रतिमोऽपि बुद्धया ।
कल्पान्त-काल - पवनोद्धत - नक्र चक्र
को वा तरीतुमलमम्बु निधि भुजाभ्याम् ॥४॥
सोऽह तथापि तव भक्ति-वशान्मुनीश
कर्तु स्तव विगत-शक्तिरपि प्रवृत्त, ।

प्रीत्यात्म-वीर्यमविचार्य मृगो मृगेन्द्र
नाभ्येति कि-निज शिशो परिपालनार्थम्।।५।।

अल्प-श्रुत श्रुतवता परिहास-धाम
त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्माम् ।
यत्कोकिल किल मधौ मधुर विरौति
तच्चारुचाम्र कलिका-निकरैक-हेतु ।।६।।

त्वत्सस्तवेन भव-सन्तति-सन्निबद्ध
पाप क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम् ।
आक्रान्त - लोकमलि - नीलमशेपमाशु
सूर्याशु-भिन्नमिव शार्वरमन्धकारम् ।।७।।

मत्वेति नाथ तव सस्तवन मयेद-
मारभ्यते तनु-धियापि तव प्रभावात् ।
चेतो हरिष्यति सता नलिनी-दलेषु
मुक्ता-फलद्युतिमुपैति ननूद-बिन्दु, ।।८।।

आस्ता तव स्तवनमस्त-समस्त दोष
त्वत्सङ्कथापि जगतां दुरितानि हन्ति ।
दूरे सहस्रकिरण कुरुते प्रभैव
पद्माकरेषु जलजानि विकासभाञ्जि ।।९।।

नात्यद्भुत भुवन-भूषण भूत-नाथ
भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्तमभिष्टुवन्त ।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन कि वा
भूत्याश्रित य इह नात्मसम करोति. ।।१०।।

दृष्ट्वाभवन्तमनिमेष - विलोकनीय
नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षु, ।
पीत्वा पय शशिकर-द्युति-दुग्ध-सिन्धो,
क्षार जल जल-निधेरसितु क इच्छेत् ॥११॥

यै, शान्त-राग-रुचिभि, परमाणुभिस्त्व
निर्मापितस्त्रिभुवनैक - ललाम - भूत ।
तावन्त एव खलु तेऽप्यणव, पृथिव्या
यत्ते समानमपर न हि रूपमस्ति ॥१२॥

वक्त्र क्व ते सुर-नरोरग-नेत्र-हारि
नि शेष-निर्जित-जगत्त्रितयोपमानम् ।
बिम्ब कलङ्क-मलिन क्व निशाकरस्य
यद्वासरे भवति पाण्डु पलाश-कल्पम् ।१३॥

सपूर्ण-मडल-शशाङ्क - कला - कलाप -
शुभ्रा गुणास्त्रिभुवन तव लङ्घयन्ति ।
ये सश्रितास्त्रिजगदीश्वर-नाथमेक
कस्तान्निवारयति सचरतो यथेष्टम् ॥१४॥

चित्र किमत्र यदि ते त्रिदशाङ्गनाभि-
र्नीत मनागपि मनो न विकार-मार्गम् ।
कल्पान्त-काल-मरुता चलिताचलेन
कि मन्दराद्रि-शिखर चलित कदाचित् ॥१५॥

निर्धूम-वर्तिरपवर्जित-तैल-पूर
कृत्स्न जगत्त्रयमिद प्रकटीकरोपि ।

गम्यो न जातु मरुता चलिताचलानाँ
दीपोऽपरस्त्वमपि नाथ जगत्प्रकाश. ॥१६॥
नास्त कदाचिदुपयासि न राहु-गम्य.
स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति ।
नाम्भोधरोदर-निरुद्ध-महा-प्रभा,
सूर्यातिशायि-महिमासि मुनीन्द्र लोके ॥१७॥
नित्योदय दलित-मोह-महान्धकार
गम्य न राहु-वदनम्य न वारिदानाम् ।
विभ्राजने तव मुखाब्जमनल्पकान्ति-
विद्योतयज्जगदपूर्व-शशाक-बिम्बम् ॥१८॥
कि शर्वरीषु शशिनाह्नि विवस्वता वा
युष्मन्मुखेन्दु-दलितेषु तम सु नाथ ।
निष्पन्न-शालि-वन-शालिनि जीव-लोके
कार्य कियज्जलधरैर्जल-भार-नम्रै ॥१९॥
ज्ञान यथा त्वयि विभाति कृतावकाश
नैव तथा हरि-हरादिषु नायकेषु ।
तेज,स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्व
नैव तु काच-शकले किरणाकुलेऽपि ॥२०॥
मन्ये वर हरि-हरादय एव दृष्टा
दृष्टेषु येषु हृदय त्वयि तोषमेति ।

किं वीक्षतेन भवता भुवि येन नान्य
कश्चिन्मनो हरति नाथ भवान्तरेऽपि ॥२१॥
स्त्रीणा शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्
नान्या सुत त्वदुपम जननी प्रसूता ।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्र-रश्मि
प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदशुजालम् ॥२२॥
त्वामामनन्ति मुनय परम पुमास-
मादित्य-वर्णममल तमस परस्तात् ।
त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्यु
नान्य शिव, शिव-पदस्य मुनीन्द्र पन्था. ॥२३॥
त्वामव्यय विभुमचिन्त्यमसख्यमाद्य
ब्रह्माणमीश्वरमनन्तमनङ्गकेतुम् ।
योगीश्वर विदित-योगमनेकमेक
ज्ञान-स्वरूपममल प्रवदन्ति सन्त. ॥२४॥
बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चित-बुद्धि-बोधात्
त्व शकरोऽसि भुवन-त्रय-शकरत्वात् ।
धातासि धीर शिव-मार्ग-विधेर्विधानाद्
व्यक्त त्वमेव भगवन्पुरुषोत्तमोऽसि ॥२५॥
तुभ्य नमस्त्रिभुवनार्तिहराय नाथ
तुभ्य नम. क्षिति-तलामल-भूषणाय ।

तुभ्य नमस्त्रिजगत परमेश्वराय
तुभ्य नमो जिन भवोदधि-शोषणाय ॥२६॥
को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै-
स्त्व सश्रितो निरवकाशतया मुनीश ।
दोषैरुपात्तविविधाश्रय-जात-गर्वै
स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥२७॥
उच्चैरशोक-तरु-सश्रितमुन्मयूख-
माभाति रूपममल भवतो नितान्तम् ।
स्पष्टोल्लसत्किरणमस्त-तमो-वितान
बिम्ब रवेरिव पयोधर-पार्श्ववर्ति ॥२८॥
सिहासने मणि-मयूख-शिखा-विचित्रे
विभ्राजते तव वपु कनकावदातम् ।
बिम्ब वियद्विलसदशुलता-वितान
तुङ्गोदयाद्रिशिरसीव सहस्र-रश्मे ॥२९॥
कुन्दावदात-चल-चामर-चारु-शोभ
विभ्राजते तव वपु कलधौत-कान्तम् ।
उद्यच्छशाङ्क-शुचि-निर्झर-वारि-धार-
मुच्चैस्तट सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ॥३०॥
छत्र-त्रय तव विभाति शशाङ्क-कान्त-
मुच्चै स्थित स्थगित-भानु-कर-प्रतापम् ।
मुक्ता-फल-प्रकर-जाल-विवृद्ध-शोभ
प्रख्यापयत्त्रिजगत परमेश्वरत्वम् ॥३१॥

गम्भीर-तार-रव-पूरित-दिग्विभाग-

स्त्रैलोक्य-लोक-शुभ-सङ्गमभूति-दक्ष; ।

सद्धर्मराज-जय-घोषण-घोषक' सन् ।

खे दुन्दुभिर्नदति ते यशस प्रवादी ॥३२॥

मन्दार-सुन्दर-नमेरु-सुपारिजात-

सन्तानकादि-कुसुमोत्कर-वृष्टि-रुद्धा ।

गन्धोद-बिन्दु-शुभ-मन्द-मरुत्प्रयाता

दिव्या दिव. पतति ते वचसा ततिर्वा ॥३३॥

शुम्भत्प्रभा-वलय-भूरि-विभा विभोस्ते

लोक-त्रये द्युतिमता द्युतिमाक्षिपन्ती ।

प्रोद्यद्दिवाकर-निरन्तर-भूरि-सख्या

दीप्त्या जयत्यपि निशामपि सोम-सौम्याम् ॥३४॥

स्वर्गापवर्ग-गम-मार्ग-विमार्गणेष्ट

सद्धर्म-तत्त्व-कथनक-पटुस्त्रिलोक्या. ।

दिव्य-ध्वनिर्भवति ते विशदार्थ-सर्व-

भाषा-स्वभाव-परिणाम-गुणै-प्रयोज्य ॥३५॥

उन्निद्र-हेम-नव-पङ्कज-पुञ्ज-कान्ती

पर्युल्लसन्नख-मयूख-शिखाभिरामौ ।

पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र धत्त

पद्मानि तत्र विबुधा परिकल्पन्ति ॥३६॥

इत्थ यथा तव विभूतिरभूज्जिनेन्द्र
धर्मोपदेशन-विधौ न तथा परस्य ।
यादृक्प्रभा दिनकृत प्रहृतान्धकारा
तादृक्कुतो ग्रह-गणस्य विकासिनोऽपि ॥३७॥
श्च्योतन्मदाविल-विलोल-कपोल-मूल-
मत्त-भ्रमद्भ्रमर-नाद-विवृद्ध-कोपम् ।
ऐरावनाभमिभमुद्धनमापतन्त
दृष्ट्वा भय भवति नो भवदाश्रितानाम् ॥३८॥
भिन्नेभ-कुम्भ-गलदुज्ज्वल-शोणिताक्त-
मुक्ता-फल-प्रकर-भूषित-भूमि-भाग ।
बद्ध-क्रम, क्रम-गत हरिणाधिपोऽपि
नाक्रामति क्रम-युगाचल-सश्रित ते ॥३९॥
कल्पान्त-काल-पवनोद्धत-वन्हि-कल्प
दावानल ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिङ्गम् ।
विश्व जिघत्मुमिव समुखमापतन्त
त्वन्नाम-कीर्तन-जल शमयत्यशेषम् ॥४०॥
रक्तेक्षण समद-कोकिल-कण्ठ-नील
क्रोधोद्धत फणिनमुत्फणमापतन्तम्
आक्रामति क्रम-युगेन निरस्त-शङ्क-
स्त्वन्नाम-नाग-दमनी हृदि यस्य पुस ॥४१॥
वल्गत्तुरङ्ग-गज-गर्जित-भीमनाद-
माजौ बल बलवतामपि भूपतीनाम् ।

उद्यद्दिवाकर-मयूप-शिखापविद्ध

त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु भिदामुपैति ॥४२॥

कुन्ताग्र-भिन्न-गज-शोणित-वारिवाह-

वेगावतार-तरणातुर-योध-भीमे

युद्धे जय विजित-दुर्जय-जेय-पक्षा-

स्त्वत्पाद-पकज-वनाश्रयिणो लभन्ते ॥४३॥

अम्भोनिधौ क्षुभित-भीषण-नक्र-चक्र-

पाठीन-पीठ-भय-दोल्वण-वाडवाग्नौ ।

रङ्गत्तरङ्ग-शिखर-स्थित-यान-पात्रा-

स्त्रास विहाय भवत, स्मरणाद् व्रजन्ति ॥४४॥

उद्भूत-भीपण-जलोदर-भार-भुग्ना,

शोच्या दशामुपगताश्च्युत-जीविताशा, ।

त्वत्पाद-पकज-रजोमृत-दिग्ध-देहा

मर्त्या भवन्ति मकरध्वज-तुल्यरूपा, ॥४५॥

आपाद-कण्ठमुरु-शृङ्खल-वेष्टिताङ्गा

गाढ बृहन्निगड-कोटि-निघृष्ट-जङ्घा,

त्वन्नाम-मन्त्रमनिश मनुजा, स्मरन्त,

सद्य, स्वय विगत-बन्ध-भया भवन्ति ॥४६॥

मत्तद्विपेन्द्र-मृगराज-दवानलाहि-

सङ्ग्राम-वारिधि-महोदर-बन्धनोत्थम् ।

तस्याशु नाशमुपयाति भय भियेव
यस्तावक स्तवमिम मतिमानधीते ॥४७॥
स्तोत्रस्रज तव जिनेन्द्र गुणैर्निबद्धा
भक्त्या मया रुचिर-वर्ण-विचित्र-पुष्पाम् ।
धत्ते जनो य इह कण्ठ-गतामजस्र
तं 'मानतुङ्ग' मवशा समुपैति लक्ष्मी, ॥४८॥

श्री पार्श्वनाथ स्तोत्र

भुजगप्रयात छन्द

नरेंद्र फणीन्द्र सुरेंद्र अधीश,
शतेंद्र सु पूजै भजै नाय शीश ।
मुनींद्र गणेंद्र नमो जोडि हाथ,
नमो देवदेव सदा पार्श्वनाथ ॥१॥
गजेंद्र मृगेंद्र गह्यो तू छुडावै,
महा आगतैं नागतैं तू बचावै ।
महावीर तै युद्ध मे तू जितावै,
महा रोग तै बध तै तू छुडावै ॥२॥
दुखोदु,खहर्ता सुखीसुक्खकर्ता,
सदा सेवको को महानदभर्ता ।
हरै यक्ष राक्षस्य भूत पिशाच,
बिष डाकिनी विघ्न के भय अवाच ॥३॥

दरिद्रीनको द्रव्य के दान दीने,
अपुत्रीनकौ तै भने पुत्र कीने ।
महासकटो से निकारे विधाता,
सवै सपदा सर्व को देहि दाता ॥४॥
महाचोर को वज्र को भय निवारै,
महापौन के पुजतै तू उबारै ।
महाक्रोध की अग्नि को मेघ-धारा,
महालोभ-शैलेश को वज्र भारा ॥५॥
महामोह अधेर को ज्ञान भान,
महाकर्मकातार को दौ प्रधान ।
किये नाग नागिन अधोलोक स्वामी,
हर्यो मान तू दैत्य को है अकामी ॥६॥
तुही कल्पवृक्ष तुही कामधेनु,
तुही दिव्य चितामणि नाम एन ।
पशू नर्क के दुखतै तू छुडावै,
महास्वर्ग तै मुक्ति मे तू बसावे ॥७॥
करे लोह को हेम पाषाण नामी,
रटै नाम सो क्यो न हो मोक्षगामी ।
करै सेवता की करै देवसेवा,
सुनै वैन सोही लहै ज्ञान मेवा ॥८॥

जपै जाप ताके नहीं पाप लागे,
धरै ध्यान ताके सबै दोष भागे।
बिना तोहि जाने धरे भव घनेरे,
तुम्हारी कृपा तै सरै काज मेरे ॥९॥

दोहा

गणधर इंद्र न कर सकैं, तुम विनती भगवान।
'द्यानत' प्रीति निहारकै, कीजे आप समान ॥१०॥

विषापहार स्तोत्र

आतम लीन अनन्त गुण,
स्वामी ऋषभ जिनेन्द्र।
नित प्रति वन्दित चरण युग,
सुर नागेन्द्र नरेन्द्र ॥१॥
विश्व सुनाथ विमल गुण ईश,
विहरमान बन्दो जिन बीस।
गणधर गौतम शारदमाय,
वर दीजै मोहिबुद्धि सहाय ॥२॥
सिद्ध साधु सत गुरु आधार,
करूँ कवित्त आतम उपकार।
विषापहार स्तवन उद्धार,
सुखद औषधी अमृत सार ॥३॥

मेरा मत्र तुम्हारा नाम,
तुम ही गारुड गरुड समान ।
तुम सम वैद्य नही ससार,
तुम स्याने तिहुँ लोक मँझार ॥४॥
तुम विषहरण करन जग सन्त,
नमो नमो तुम देव अनन्त ।
तुम गुण महिमा अगम अपार,
सुरगुरु शेष लहे नहि पार ॥५॥
तुम परमातम परमानन्द,
कल्पवृक्ष यह सुख के कन्द ।
मुदित मेरु नय-मण्डित धीर,
विद्यासागर गुण गम्भीर ॥६॥
तुम दधिमथन महा वरवीर,
सकट विकट भयभजन भीर ।
तुम जगतारण तुम जगदीश,
पतित उधारण विसवाबीस ॥७॥
तुम गुणमणि चिन्तामणि रास,
चित्रबेलि चितहरण चितास ।
विघ्नहरण तुम नाम अनूप,
मत्र यत्र तुमही मणिरूप ॥८॥

जैसे वज्र पर्वत परिहार,
त्यो तुम नाम जु विष-अपहार।
नागदमन तुम नाम सहाय,
विषहर विषनाशक क्षणमाय ॥९॥

तुम सुमरण चिते मनमाहि,
विष पीवे अमृत हो जाहि ।
नाम सुधारस दर्षे जहाँ,
पाप पकमल रहै न तहाँ ॥१०॥

ज्यो पारस के परसे लोह,
निज गुण तज कचनसम होह ।
त्यो तुम सुमरण साधे सूँच,
नीच जो पावे पदवी ऊँच ॥११॥

तुमहि नाम औषधि अनुकूल,
महामत्र सर जीवन मूल ।
मूरख मर्म न जाने भेव,
कर्म कलक दहन तुम देव ॥१२॥

तुम ही नाम गारुड गह गहे,
काल भुजगम कैसे रहे ।
तुम्ही धनन्तर हो जिनराय,
मरण न पावे को तुम ठाय ॥१३॥

तुम सूरज उदकाघट जास,
सशय शीत न व्यापे तास ।
जीवे दादुर वर्षे तोय,
सुन वाणी सरजीवन होय ॥१४॥
तुम बिन कौन करै मुझ पार,
तुम कर्त्ता-हर्त्ता किरपाल ॥१५॥
शरण आयो तुम्हरी जिनराज,
अब मो काज सुधारो आज ।
मेरे यह धन पूँजी पूत,
साह कहै घर राखो सूत ॥१६॥
करौ वीनती बारम्बार,
तुम बिन कर्म करै को क्षार ॥१७॥
विग्रह ग्रह दुख विपति वियोग,
और जु घोर जलधर रोग ।
चरण कमल रज टुक तन लाय,
कुष्ट व्याधि दीरघ मिट जाय ॥१८॥
मै अनाथ तुम त्रिभुवननाथ,
मात-पिता तुम सज्जन साथ ।
तुम-सा दाता कोई न आन,
और कहाँ जाऊँ भगवान ॥१९॥
प्रभुजी पतित उधारन आह,

बाह गहेकी लाज निबाह ।
जहँ देखो तहँ तुमहो आय,
घट-घट ज्योति रही ठहराय ॥२०॥
बाट सुघाट विषम भय अहाँ,
तुम बिन कौन सहाई तहाँ ।
विकट व्याधि व्यतर जल दाह,
नाम लेत क्षण माहि विलाह ॥२१॥
आचार्य मानतुग अवसान,
सकट सुमिरो नाम निधान ।
भक्ता-मरको भक्ति सहाय,
प्रण राखे प्रगटे तिस ठाय ॥२२॥
चुगल एक नृप विग्रह ठयो,
वादिराज नृप देखन गयो ।
एकी भाव कियो निसन्देह,
कुष्ट गयो कचनसम देह ॥२३॥
कल्याण मदिर कुमुद चद्र ठयो,
राजा विक्रम विम्मय भयो ।
सेवक जान तुम करी सहाय,
पारसनाथ प्रगटै तिस ठाय ॥२४॥
गई व्याधि विमल मति लही,
तहाँ फुनि सनिधि तुमही कही ।

भव सुदत्त श्रीपाल नरेश,
सागर जल सकट सुविशेष ॥२५॥
तहाँ पुनि तुमही भये सहाय,
आनन्द से घर पहुँचे जाय ।
सभा दुश्शासन पकडो चीर,
द्रुपदी प्रण राखो कर धीर ॥२६॥
सीता लक्ष्मण दीनो साज,
रावण जीत विभीषण राज ।
सेठ सुदर्शन साहस दियो,
शूली मे सिहासन कियो ॥२७॥
बारिषेन नृप धरियो ध्यान,
ततक्षण उपजो केवल ज्ञान ।
सिह सर्पादिक जीव अनेक,
जिन सुमिरे तिन राखी टेक ॥२८॥
ऐसी कीरति जिनकी कहू,
साह कहै शरणगत रहू ।
इस अवसर जीवे यह बाल,
मुझ सन्देह मिटे तत्काल ॥२९॥
बन्दी छोड विरद महाराज,
अपना विरद निबाहो आज ।
और आलबन मेरे नाहि,

मै निश्चय कीनो मन माहि ॥३०॥
चरण कमल छोडो ना सेव,
मेरे तो तुम सतगुरु देव ।
तुम ही सूरज तुम ही चन्द,
मिथ्या मोह निकन्दनकन्द ॥३१॥
धर्मचक्र तुम धारण धीर,
विघहर चक्रबिडारन वीर ।
चोर अग्नि जल भूत पिशाच,
जल जड घम अटवी उदवास ॥३२॥
दर दुशमन राजा वश होय,
तुम प्रसाद गर्जे नाहि कोय ।
हय गज युद्ध सबल सामत
सिह शार्दूल महा भयवत ॥३३॥
दृढ बधन विग्रह विकराल,
तुम सुमरत छूटे तत्काल ।
पायन पनही नमक न नाज,
ताको तुम दाता गजराज ॥३४॥
एक उपाय थप्यो पुन राज,
तुम प्रभु बडे गरीब निवाज ।
पानी से पैदा सब करो,
भरी डाल तुम रीती करो ॥३५॥

हर्त्ता कर्त्ता तुम किरपाल,
कीडी कुञ्जर करत निहाल।
तुम अनन्त ज्ञान अल्प मो ज्ञान,
कह लग प्रभुजी करो बखान ॥३६॥
आगम पन्थ न सूझे मोहि,
तुम्हरे चरन बिना किमि होहि।
भये प्रसन्न तुम साहस कियो,
दयावन्त तब दर्शन दियो ॥३७॥
साह पुत्र जब चेतन भयो,
हँसत हँसत वह घर तब गयो।
धन दर्शन पायो भगवन्त,
आज अग मुख नयन लसन्त ॥३८॥
प्रभु के चरण कमल मे नयो,
जन्म कृतारथ मेरो भयो।
कर युग जोड नवाऊँ शीश,
मुझ अपराध क्षमा जगदीश ॥३९॥
सत्रह सौ पद्रह शुभ यान,
नारनौल तिथि चौदस जान।
पढे सुने तहाँ परमानन्द,
कल्पवृक्ष महा सुखकन्द ॥४०॥
अष्ट सिद्धि नवनिधि सो लहै,

अचलकीर्ति आचारज कहै ।
याको पढो सुनो सब कोय,
मनवाँछित फल निश्चय होय ।।४१।।

दोहा

भय भञ्जन रञ्जन जगत, विषापहार अभिराम ।
सशय तज सुमिरो सदा, श्री जिनवर को नाम ।।४२।।

श्री गोम्मटेश सस्तवन

शत-शत वार विनम पणाम ।

विकसित नील कमल दल सम ह जिनके सुन्दर नेत्र विशाल ।
शरतचन्द्र शरमाता जिनकी निरख शात छवि, उनन्त भाल ।
चम्पक पुष्प लजाता लख कर ललित नासिका सुपमा धाम ।
विश्ववद्य उन गोम्मटेश प्रति शत-शत बार विनम्र प्रणाम ।।१।।
पय सम विमल कपोल, अ नने कर्ण क न पर्यन्त निनान्त ।
सौम्य, सातिशय, सहज शा तप्रद वीतराग मुद्राति प्रशात ।
हस्तिशुड सम सबल भुजाग वन कृतकृत्य करे विश्राम ।
विश्वप्रेम उन गोम्मटेश प्रति शत-शत बार विनम्र प्रणाम ।।२।।
दिव्य सख सौदर्य विजयिनी ग्रीवा जिनकी भव्य विशाल ।
दृढ स्कध लख हुआ पराजित हिमगिरि का भी उन्नत भाल ।
जग जन मन आकर्षित करती कटि सुपुष्ट जिनकी अभिराम ।
विश्ववद्य उन गोम्टेश प्रति शत-शत बार विनम्र प्रणाम ।।३।।

विंध्याचल के उच्च शिखर पर हीरक ज्यो दमके जिन भाव।
तप पूत सर्वांग सुखद है आत्मलीन जो देव विशाल।
वर विराग प्रसाद शिखामणि, भुवन शातिप्रद चन्द्र ललाम।
विश्ववद्य उन गोम्मटेश प्रति शत-शत बार विनम्र प्रणाम ।।४।।

निर्भय बन बल्लरिया लिपटी पाकर जिनकी शरण उदार।
भव्य जनो को सहज सुखद है कल्पवृक्ष सम सुख दातार।
देवेन्द्रो द्वारा अर्चित ह जिन पादारविद अभिराम।
विश्ववद्य उन गोम्टश प्रति शत-शत बार विनम्र प्रणाम ।।५।।

निष्कलक निर्ग्रथ दिगम्बर भय भ्रमादि परिमुक्त नितात।
अम्बरादि-आसक्ति विवर्जित निर्विकार योगीन्द्र प्रशात।
सिह-स्याल-शुडाल-व्यालकृत उपसर्गो मे अटल अकाम ।।६।।
विश्ववद्य उन गोम्मटेश प्रति शत-शत बार विनम्र प्रणाम।

जिनकी सम्यग्दृष्टि विमल है आशा-अभिलाषा परिहीन।
ससृति-सुख बाछा मे विरहित, दोष मूल अरि मोह विहीन।
बन सपुष्ट विरागभाव से लिया भरत प्रति पूर्ण विराम।
विश्ववद्य उन गोम्मटेश प्रति शत-शत बार विनम्र प्रणाम ।।७।।

अतरग-बहिरग-सग धन धाम बिवर्जित विभु सभ्रात।
समभावी, मदमोह-रागजित् कामक्रोध उन्मुक्त नितात।
किया वर्ष उपवास मौन रह बाहुबली चरितार्थ सुनाम।
विश्ववद्य उन गोम्मटेश प्रति शत-शत बार विनम्र प्रणाम ।।८।।

श्री दौलतरामजी कृत स्तुति

दोहा

सकल ज्ञेय ज्ञायक तदपि, निजानन्द रस लीन।
सो जिनेन्द्र जयवन्त नित, अरि-रज-रहस विहीन ॥१॥

पद्धरि छद

जय वीतराग विज्ञानपूर,
जय मोहतिमिरको हरन सूर।
जय ज्ञानअनतानत धार,
दृगसुख-वीरजमडित अपार ॥२॥
जय परमशात मुद्रा समेत,
भविजनको निज अनुभूति हेत।
भवि भागनवशजोगेवशाय,
तुम धुनि ह्वै सुनि विभ्रम नसाय ॥३॥
तुम गुण चितत निजपरविवेक,
प्रगटै विघटै आपद अनेक।
तुम जगभूषण दूषणविमुक्त,
सब महिमायुक्त विकल्पमुक्त ॥४॥
अविरुद्ध शुद्ध चेतनस्वरूप,
परमात्म परम पावन अनूप।
शुभ-अशुभविभाव अभाव कीन,

स्वाभाविकपरिणति मयअछीन ॥५॥
अष्टादश-दोपविमुक्त धीर,
स्व-चतुष्टयमय राजत गभीर ।
मुनिगणधरादि सेवत महत,
नवकेवललब्धिरमा धरत ॥६॥
तुम शासन सेय अमेय जीव,
शिव गये जाहि जैहै सदीव ।
भवसागर मे दुख छार बारि,
तारन को अवर न आप टारि ॥७॥
यह लखि निज दुखगद हरण काज,
तुम ही निमित्तकारण इलाज ।
जाने तातै मै शरण आय,
उचरो निज दुख जो चिर लहाय ॥८॥
मै भ्रम्यो अपनपो विसरि आप,
अपनाये विधि फल पुण्य पाप ।
निजको परको करता पिछान,
पर मे अनिष्टता इष्ट ठान ॥९॥
आकुलित भयो अज्ञान धारि,
ज्यो मृग मृगतृष्णा जानि वारि ।
तनपरणति मे आपो चितार,
कबहू न अनुभयो स्वपदसार ॥१०॥

तुम को बिन जाने जो कलेश,
पावे सो तुम जानत जिनेश ।
पशु-नारक-नर-सुर-गति मझार,
भव धर-धर मर्यो अनत बार ॥११॥
अब काललब्धिबलतै दयाल,
तुम दर्शन पाय भयो खुश्याल ।
मन शात भयो मिटि सकल द्वद्व,
चाख्यो स्वातम-रस दुखनिकन्द ॥१२।
तातै अब ऐसी करहु नाथ,
बिछुरै न कभी तुव चरण साथ ।
तुम गुणगण को नहि छेव देव,
जग तारन को तुव विरद एव ॥१३॥
आतम के अहित विषय कषाय,
इन मे मेरी परिणति न जाय ।
मै रहू आप मे आप लीन,
सो करो होउ ज्यो निजाधीन ॥१४॥
मेरे न चाह कछु और ईश,
रत्नत्रयनिधि दीजे मुनीश ।
मुझ कारज के कारन सु आप,
शिव करहु, हरहु मम मोहताप ॥
शशि शातिकरन तप हरन हेत,

स्वयमेव तथा तुम कुशल देत ।
पीवत पियूष ज्यो रोग जाय,
त्यो तुम अनुभवतै भव नसाय ॥१६॥
त्रिभुवनतिहुकाल मँझार कोय,
नहि तुम बिन निज सुखदाय होय ।
मो उर यह निश्चय भयो आज,
दुखजलधिउतारन तुम जिहाज ॥१७॥

दोहा

तुम गुण-गण-मणि गणपति,
गणन न पावहि पार ।
'दौल' स्वल्पमति किम कहै,
नमूँ त्रियोगसँभार ॥१८॥

दर्शन-पाठ

प्रभु पतितपावन मैं अपावन,
चरन आयो सरन जी ।
यो विरद आप निहार स्वामी,
मेट जामन मरनजी ।
तुम ना पिछान्या आन मान्या,
देव विविधप्रकार जी ।

या बुद्धिसेती निज न जान्यो,
भ्रम गिन्यो हितकारजी ॥१॥
भवविकटवन मे करम वैरी,
ज्ञानधन मेरो हर्यो ।
तब इष्ट भूल्यो भ्रष्ट होय,
अनिष्टगति धरतो फिर्यो ।
धन घडी यो धन दिवस यो ही,
धन जनम मेरो भयो ।
अब भाग मेरो उदय आयो,
दरश प्रभुको लखलयो ॥२॥
छवि वीतरागी नगन मुद्रा,
दृष्टि नासापै धरै ।
वसु प्रातिहार्य अनत गुण जुत,
कोटि रवि छविको हरै ।
मिट गयो तिमिर मिथ्यात मेरो,
उदयरवि आतम भयो ।
मो उर हरप ऐसो भयो,
मनु रक चितामणि लयो ॥३॥
मै हाथ जोड नवाय मस्तक,
वीनऊ तुव चरन जी ।
सर्वोत्कृष्ट त्रिलोकपति जिन,

सुनहु तारन तरन जी ।
जाचू नही सुर वास पुनि,
नरराज परिजन साथजी ।
बुध जाचहू तुव भक्ति भव भव,
दीजिये शिवनाथ जी ॥४॥

दर्शन-पाठ

दर्शन देवदेवस्य, दर्शन पाप-नाशन ।
दर्शन स्वर्ग-सोपान, दर्शन मोक्ष-साधन ॥१॥
दर्शनेन जिनेन्द्राणा, साधूना वदनेन च ।
न चिर तिष्ठते पाप, छिद्रहस्ते यथोदकम् ॥२॥
वीतरागमुख दृष्ट्वा, पद्मरागसमप्रभ ।
अनेकजन्मकृत पाप, दर्शनेन विनश्यति ॥३॥
दर्शन जिनसूर्यस्य, ससार-ध्वान्त-नाशन ।
बोधन चित्तपद्मस्य, समस्तार्थप्रकाशन ॥४॥
दर्शन जिनचन्द्रस्य, सद्धर्मामृतवर्षण ।
जन्मदाहविनाशाय, वर्धन सुखवारिधे, ॥५॥
जीवादितत्त्वप्रतिपादकाय,
सम्यक्त्वमुख्याष्टगुणार्णवाय ।

प्रशातरूपाय दिगम्बराय,
देवाधिदेवाय नमो जिनाय ॥६॥
चिदानन्दैकरूपाय, जिनाय परमात्मने ।
परमात्मप्रकाशाय, नित्य सिद्धात्मने नम, ॥७॥
अन्यथा शरण नास्ति, त्वमेव शरण मम ।
तस्मात्कारुण्यभावेन, रक्ष रक्ष जिनेश्वर ! ॥८॥
न हि त्राता न हि त्राता, न हि त्राता जगत्त्रये ।
वीतरागात्परो देवो, न भूतो न भविष्यति ॥९॥
जिने भक्तिर्जिने भक्तिर्जिने भक्तिर्दिने दिने ।
सदा मेऽस्तु सदा मेऽस्तु सदा मेऽस्तु भवे भवे ॥१०॥
जिनधर्मविनिर्मुक्तो, मा भवेच्चक्रवर्त्यपि ।
स्याच्चेटोऽपि दरिद्रोऽपि जिनधर्मानुवासित, ॥११॥
जन्म जन्म कृत पाप, जन्मकोटिमुपार्जित ।
जन्ममृत्युजरारोग हन्यते जिनदर्शनात् ॥१२॥
अद्याभवत्सफलता नयनद्वयस्य,
देव ! त्वदीय चरणाबुजवीक्षणेन ।
अद्य त्रिलोकतिलक ! प्रतिभासते मे,
समारवारिधिरय चुलुकप्रमाणम् ॥१३॥

अभिषेक पाठ

दोहा

जय जय भगवन्ते सदा, मंगल मूल महान ।
वीतराग सर्वज्ञप्रभु, नमो जोरि जुगपान ।।

(छन्द अडिल्ल और गीत)

श्री जिन जग मे ऐसो, को बुधवन्त जू,
जो तुम गुण वरननि करि पावै अन्त जू ।
इन्द्रादिक सुर चार ज्ञानधारी मुनी,
कहि न सकै तुम गुणगण हे त्रिभुवनधनी ।।
अनुपम अमित तुम गुणनि वारिधि, ज्यो अलोकाकाश है ।
किमि धरैं हम उर कोष मे सो अथक गुणमणिराश है ।।
पै जिन प्रयोजन सिद्धि की तुम नाम मे ही शक्ति है ।
यह चित्त मे सरधान यातै नाम ही मे भक्ति है ।।

ज्ञानावरणी दर्शन आवरणी भने ।
कर्म मोहिनी अन्तराय चारो भने ।।
लोकालोक विलोक्यो केवलज्ञान मे ।
इन्द्रादिक के मुकुट नये सुरथान मे ।।
तब इन्द्र जान्यो अवधितै उठि सुरन युत वदत भयो ।
तुम पुन्य को प्रेर्यो हरि ह्वै मुदित धनपति सौं चयो ।।
अब बेगि जाय रचौ समवसृति सफल सुरपद को करौ ।
साक्षात श्री अरहन्त के दर्शन करौ कलमष हरौ ।।२।।

ऐसे वचन सुने सुरपति के धनपती।
चल आयो ततकाल माद धारै अती॥
वीतराग छवि देखि शब्द जय जय चयौ।
दै परदच्छिना बार-बार बदत भयौ॥
अति भक्ति भीना नम्र चित्त ह्वै समवरण रच्यौ सही।
ताकी अनूपम शुभगती को, कहन समरथ कोऊ नही॥
प्राकार तोरण सभा मण्डप कनक मणिमय छाजही।
नग जडित गधकुटी मनोहर मध्य भाग विराजही॥३॥
सिहासन तामध्य बन्यौ अद्भुत दिपै।
तापर बारिज रच्यो प्रभा दिनकर छिपै॥
तीनछत्र सिर शोभित चौसठ चमर जी।
महाभक्ति युत ढोरत हे तहाँ अमरजी।
प्रभु तरन तारन कमल ऊपर, अतरीक्ष विराजिता।
यह वीतराग दशा प्रत्यक्ष विलोकि भविजन सुख लिया॥
मुनि आदि द्वादश सभा के भवि जीव मस्तक नायकै।
बहुभाँति बारबार पूजै, नमैं गुणगण गायकै॥४॥
परमौदारिक दिव्य देव पावन सही।
क्षुधा तृषा चिता भय गद दूषण नही॥
जन्म जरा मृति अरति शोक विस्मय नसे।
राग द्वेष निद्रा मद मोह सबै खमे॥
श्रमबिन श्रमजल रहित पावन अमल ज्योतिस्वरूपजी।
शरणागतनि की अशुचिता हरि करत विमल अनूपजी॥
ऐसे प्रभु की शाति मुद्रा को न्हवन जलतै करे।
'जस' भक्तिवश मन उक्तितै हम भानु ढिग दीपक धरे॥५॥

तुमतौ सहज पवित्र यही निश्चय भयो।
तुम पवित्रताहेत नहो मज्जन ठयो॥
मैं मलीन रागादिक मलतै ह्वै रह्यो॥
महामलिन तनमे वसुविधिवश दुख सह्यो॥
बीत्यो अनन्तो काल यह मेरी अशुचिता ना गई।
तिस अशुचिताहर एक तुमहो हरहु बाछा चित ठई॥
अब्र अष्टकर्म विनाश सब मल रोषरोगादिक हरो।
तनरूप कारागेहसै उद्धार शिववासो करो॥६॥
मैं जानत तुम अष्टकर्म हरि शिव गये।
आवागमन विमुक्त रागवर्जित भये॥
पर तथापि मेरो मनोरथ पूरत सही॥
नयप्रमानतै जानि महा साता लही।
पापाचरण तजि न्हवन करता चित्त मे ऐसे धरू।
साक्षात श्री अरहन्त का मानो न्हवन परसन करू॥
(यहा पर जलाभिषक करें)
ऐसे विमल परिणाम होते अशुभ नसि शुभ बध ते।
विधि अशुभ नसि शुभबधतै ह्वै शर्म सब विधि तासतै॥७॥
पावन मेरे नयन भये तुम दरसतै।
पावन पानि भये तुम चरनन परसतै॥
पावन मन ह्वै गयो तिहारे ध्यानतै।
पावन रसना मानी, तुम गुण गानतै॥
पावन भई परजाय मेरी, भयौ मैं पूरणधनी।
मैं शक्ति पूर्वक भक्ति कीनी, पूर्णभक्ति नही बनी॥

धन्य ते बडभागि भवि तिन नीव शिवघर की धरी।
वर क्षीरसागर आदि जल मणिकुभभरि भक्ति करी ॥८॥

विघनसघनवनदाहन-दहन प्रचण्ड हो।
मोह महातमदलन प्रबल मारतण्ड हो॥

ब्रह्मा विष्णु महेश आदि सज्ञा करो।
जगविजयी जमराज नाश ताको करो॥

आनन्दकारण दुखनिवारण, परम मगलमय सही।
मो सो पतित नहि और तुमसो, पतिततार सुन्यौ नही॥
चितामणी पारस कलपतरु, एकभाव सुखकार हो।
तुम भक्तिनौका जे चढै ते, भये भवदधि पार हो ॥८॥

दोहा

तुम भवदधितै तरि गये, भये निकल अविकार।
तारतम्य इस भक्ति को, हमे उतारो पार॥

पूरा पाठ पढकर निर्मल वस्त्र से प्रतिमाजी का मार्जन करे। और पीछे चरणोदक ग्रहण करे। पश्चात ९ बार णमोकार मन्त्र पढकर नमस्कार करे।

विनय पाठ

इह विधि ठाडो होय के, प्रथम पढै जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशो कर्म जु आठ ॥१॥
अनन्त चतुष्टय के धनी, तुम ही हो सिरताज।
मुक्तिबधू के कथ तुम, तीन भुवन के राज ॥२॥

तिहु जगकी पीडाहरन, भवदधि शोषणहार ।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिवसुख के करतार ॥३॥

हरता अघअंधियार के, करता धर्म प्रकाश ।
थिरतापद दातार हो, धरता निजगुण रास ॥४॥

धर्मामृत उर जलधिसो, ज्ञानभानु तुम रूप ।
तुमरे चरण सरोज को, नावत तिहु जग भूप ॥५॥

मै बदो जिनदेव को कर अति निर्मल भाव ।
कर्मबध के छेदने, और न कछू उपाय ॥६॥

भविजनको भव कूपतै, तुमही काढन हार ।
दीनदयाल अनाथपति, आतम - गुण - भडार ॥७॥

चिदानद निर्मल कियो, धोय कर्म-रज मैल ।
सरल करी या जगत मे भविजन का शिव-गैल ॥८॥

तुम पद पकज पूजतै, विघ्न रोग टर जाय ।
शत्रु मित्रता को धरै, विष निरविषता थाय ॥९॥

चक्री-खगधर-इन्द्रपद, मिलै आप तै आप ।
अनुक्रमकर शिवपद लहै, नेम सकल हनि पाप ॥१०॥

तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन ।
जन्मजरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन ॥११॥

पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेव ।
अजन मे तारे कुधी जय जय जय जिनदेव ॥१२॥

थकी नाव भवदधिविषै, तुम प्रभु पार करेव।
खेवटिया तुम हो प्रभु जय जय जय जिनदेव ॥१३॥
रागसहित जगमे रुल्यो, मिले सरागीदेव।
वीतराग भेट्यो अबै, मेट्यो राग कुटेव ॥१४॥
कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यंच अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान ॥१५॥
तुम को पूजै सुरपति, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव ॥१६॥
अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत-भव सिंधु मे, खेउ लगाओ पार ॥१७॥
इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान।
अपनो विरद निहारकै, कीजे आप समान ॥१८॥
तुमरी नेक सुदृष्टितै, जग उतरत है पार।
हाहा डूबो जात हो, नेक निहार निकार ॥१९॥
जो मै कहऊ औरसो, तो न मिटै उरझार।
मेरी तो तोसो बनी, तातै करो पुकार ॥२०॥
बंदो पांचो परमगुरु, सुरगुरु वंदत जास।
विघनहरण मंगल करन, पूरन परम प्रकाश ॥२१॥
चौबीसो जिनपद नमो, नमो शारदा माय।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यो पाठ सुखदाय ॥२२॥

स्तुति

(कविवर भूधर जी)

अहो जगतगुरु देव, सुनिए अरज हमारी।
तुम प्रभु दीनदयाल, मैं दुखिया संसारी ॥
इस भव-बनके माँहि, काल अनादि गमायो।
भ्रम्यो चहू गति माहि, सुख नहि दुख बहु पायो ॥
कर्म महारिपु जोर, एक न कान करै जी।
मनमाने दुख देहि, काहूसो नाँहि डरै जी ॥
कबहू इतर निगोद, कबहू नरक दिखावैं।
सुर-नर-पशु गतिमाहि, बहुविधि नाच नचावैं ॥
प्रभु इनको परसंग, भव-भव माहि बुरो जी।
जे दुख देखे देव, तुमसो नाँहि दुरो जी ॥
एक जनम की बात, कहि न सकौ सुनि स्वामी।
तुम अनंत परजाय, जानत अंतरजामी ॥
मैं तो एक अनाथ, ये मिल दुष्ट घनेरे।
कियो बहुत बेहाल, सुनियो साहिब मेरे ॥
ज्ञान महानिधि लूटि, रंक निबल करि डार्यो।
इनही तुम मुझ माहि, हे जिन अंतरपार्यो ॥
पाप पुन्य मिलि दोय, पायनि बेडी डारी।
तन-कारागृहमाहि, मोहि दियो दुखभारी ॥
इनको नेक बिगार, मैं कछु नाहि कियो जी।

बिन कारन जगवद्य, बहु बिध वैर लियो जी ॥
अब आयौ तुम पास, सुन जिन सुजस तिहारो ।
नीति-निपुन जगराय, कीजै न्याय हमारो ॥
दुष्टन देहु निकाल, साधुन को रखि लीजै ।
विनवै 'भूधरदास' हे प्रभु ढील न कीजै ॥

नित्य नियम पूजा

ॐ जय जय जय । नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु ।
णमो अरहताण णमो सिद्धाण णमो आइरियाण ॥
णमो उवज्झायाण णमो लोए सव्वसाहूण ॥१॥

ॐ ह्री अनादिमूलमन्त्रेभ्यो नम पुष्पाञ्जलि क्षिपामि

चत्तारिमगल — अरहता मगल, सिद्धा मगल, साहू मगल, केवलिपण्णत्तो धम्मो मगल । चत्तारि लोगुत्तमा—अरहता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा । चत्तारि सरण पव्वज्जामि—अरहते सरण पव्वज्जामि, सिद्धे सरण पव्वज्जामि— साहू सरण पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्त धम्म सरण पव्वज्जामि ।

ॐ ह्री नमोऽर्हते स्वाहा, पुष्पाञ्जलि क्षिपामि

अपवित्र पवित्रो वा सुस्थितो दु स्थितोऽपि वा ।
ध्यायेत्पञ्च-नमस्कार सर्व-पापै प्रमुच्यते ॥१॥

अपवित्र पवित्रो वा सर्वावस्था गतोऽपि वा ।
य स्मरेत्परमात्मान स बाह्याभ्यन्तरे शुचि ॥२॥
अपराजितमन्त्रोऽय सर्व-विघ्न-विनाशन ।
मङ्गलेषु च सर्वेषु प्रथम मङ्गल मत ॥३॥
एसो पच-णमोयारो सव्व-पाव-प्पणासणो ।
मगलाण च सव्वेसि पढम होइ मगल ॥४॥
अर्हमित्यक्षर ब्रह्मवाचक परमेष्ठिन ।
सिद्ध चक्रस्य सद्बीज सर्वत प्रणमाम्यहम् ॥५॥
कर्माष्टक विनिर्मुक्त मोक्ष-लक्ष्मी-निकेतनम् ।
सम्यक्त्वादि-गुणोपेत सिद्धचक्र नमाम्यहम् ॥६॥
विघ्नौघा प्रलय यान्ति शाकिनी-भूत-पन्नगा ।
विष निर्विषता याति स्तूयमाने जिनेश्वरे ॥७॥

[पुष्पाजंलि क्षिपामि]

[सहस्रनाम स्तोत्र पठित्वा क्रमशोऽर्घ्य दशक दद्यात् । समयाभावादधोलिखित श्लोक पठित्वा एकोऽर्घ्यो देय ।]

उदक-चन्दन-तन्दुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यक ।
धवल-मङ्गल-गान रवाकुले जिन-गृहे जिननाथमह यजे ॥

ॐ ह्री श्री भगवज्जिन सहस्रनामेभ्योऽर्घ्य निवपामीति स्वाहा ।

श्री मज्जिनेन्द्रमभिवन्द्य जगत्त्रयेश
स्याद्वाद्व-नायकमनन्त-चतुष्टयार्हम्

श्री मूलसघ-सुदृशा सुकृतैकहेतु-
जैनेन्द्र-यज्ञ-विधिरेष मयाऽभ्यधायि ॥८॥

स्वस्ति त्रिलोक-गुरवे जिन-पुङ्गवाय
स्वस्ति स्वभाव महिमोदय-सुस्थिताय ।
स्वस्ति प्रकाश-सहजोर्जित दृङ्मयाय
स्वस्ति प्रसन्न-ललिताद्भुत वैभवाय ॥९॥

स्वस्त्युच्छलद्विमल-बोध-सुधा प्लवाय
स्वस्ति स्वभाव-परभाव-विभासकाय ।
स्वस्ति त्रिलाकवितर्तक-चिदुद्गमाय
स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत-विस्तृताय ॥१०॥

द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्य यथानुरूप
भावस्य शुद्धिमधिकामधिगन्तुकाम ।
आलम्बनानि विविधान्यवलम्ब्य वल्गन्
भूतार्थ-यज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञम् ॥११॥

अर्हत्पुराण पुरुषोत्तम पावनानि
वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव ।
अस्मिञ्ज्वलद्विमल-केवल-बोधवह्नौ
पुण्य समग्रमहमेकमना जुहोमि ॥१२॥

[इति पुष्पाजलि क्षिपामि]

स्वस्ति-मंगलम्

श्रीवृषभो न स्वस्ति, स्वस्ति श्री अजित ।
श्रीसम्भव स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअभिनन्दन ॥
श्रीसुमति स्वस्ति, स्वस्ति श्रीपद्मप्रभ ।
श्रीसुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीचन्द्रप्रभ ॥
श्रीपुष्पदन्त स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशीतल ।
श्रीश्रेयान् स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवासुपूज्य ॥
श्रीविमल स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअनन्त ।
श्रीधर्म स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशान्ति ॥
श्रीकुन्थु स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअरनाथ ।
श्रीमल्लि स्वस्ति, स्वस्ति श्रीमुनिसुव्रत ॥
श्रीनमि स्वस्ति, स्वस्ति श्रीनेमिनाथ ।
श्रीपार्श्व स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवर्धमान ॥

[पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि]

नित्याप्रकम्पाद्भुत - केवलौघा,
स्फुरन्मन पर्यय - शुद्धबोधा ।
दिव्यावधिज्ञान - बलप्रबोधा,
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो न ॥१॥
कोष्ठस्थ - धान्योपममेकबीज,
सभिन्न सश्रोतृ - पदानुसारि ।
चतुर्विध बुद्धिबल दधाना,

स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो न ॥२॥

सस्पर्शन सश्रवण च दूरा—

दास्वादन - घ्राण-विलोकनानि ।

दिव्यान्मतिज्ञानबलाद्वहन्त,

स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो न ॥३॥

प्रज्ञाप्रधाना श्रमणा समृद्धा,

प्रत्येकबुद्धा दशसर्वपूर्व ।

प्रवादिनोऽष्टागनिमित्तविज्ञा,

स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो न ॥४॥

जङ्घावलि-श्रणि-फलाम्बु-तन्तु,

प्रसून-बीजाङ्कुर-चारणाह्वा ।

नभोऽङ्गण - स्वैर - विहारिणश्च,

स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो न ॥५॥

अणिम्नि दक्षा कुशलामहिम्नि,

लघिम्निशक्ता कृतिनो गरिम्णि ।

मनो-वपूर्वाग्बलिनश्च नित्य,

स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो न ॥६॥

सकामरूपित्व - वशित्वमैश्य,

प्राकाम्यमन्तर्द्धिमथाप्तिमाप्ता ।

तथाऽप्रतीघातगुणप्रधाना,

स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो न ॥७॥

दीप्त च तप्त च तथा महोग्र,
घोर तपो घोर पराक्रमस्था ।
ब्रह्मापर घारगुणाश्चरन्त ,
स्वस्ति. क्रियासु परमर्षयो न ॥८॥

आमर्ष - सर्वौषधयस्तथाशी—
र्विषविषा दृष्टिविषविषाश्च ।
सखिल्ल-विड्-जल्ल-मलौषधीशा ,
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो न ॥९॥

क्षीर स्रवन्तोऽत्र घृत स्रवन्त,
मधु स्रवन्तोऽप्यमृत स्रवन्त ।
अक्षीणसवास - महानशाश्च,
स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो न ॥१०॥

[प्रतिश्लोकसमाप्तेरनन्तर पुष्पाजलि क्षिपेत्]

इति परमर्षिस्वस्तिमङ्गलविधानम् ।

देव-शास्त्र-गुरु पूजा

[कविवर द्यानतराय जी]

अडिल्ल छन्द

प्रथम देव अरहत सुश्रुत सिद्धान्त जू ।
गुरु निरग्रन्थ महत मुकतिपुरपथ जू ॥

तीन रतन जगमाहिं सो ये भवि ध्याइये ।
तिनकी भक्तिप्रसाद परमपद पाइये ॥१॥

दोहा

पूजो पद अरहंत के पूजो गुरुपदसार ।
पूजो देवी सरस्वती नितप्रति अष्टप्रकार ॥२॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ ।

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

गीता छन्द

सुरपति उरग नरनाथ तिनकरि वन्दनीक सुपदप्रभा ।
अति शोभनीक सुवरण उज्जल देख छवि मोहित सभा ।
वर नीर क्षीर समुद्र घट भरि अग्र तसु बहुविधि नचूं ।
अरहंत श्रुत-सिद्धान्त गुरु-निरग्रंथ नित पूजा रचूं ॥१॥

दोहा

मलिन वस्तु हर लेत सब जल-स्वभाव मलछीन ।
जासो पूजो परमपद देव शास्त्र गुरु तीन ॥१॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो जन्म जरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपा० ॥१॥

जे त्रिजग-उदर मझार प्रानी तपत अति दुद्धर खरे ।
तिन अहितहरन सुवचन जिनके परम शीतलता भरे ॥

तसु भ्रमरलोभित घ्राणपावन सरस चन्दन घसि सचू।
अरहत श्रुत-सिद्धान्त-गुरु-निरग्रथ नित पूजा रचू ॥

दोहा

चदन शीतलता करै तपत वस्तु परवीन ।
जासो पूजो परमपद देव शास्त्र गुरु तीन ॥२॥

ॐ ह्री देवशास्त्रगुरुभ्यो ससारतापविनाशनाय चन्दन निर्वपा० ।

यह भवसमुद्र अपार तारण के निमित्त सुविधि ठई।
अति दृढ परमपावन जथारथ भक्ति वर नौका सही॥
उज्जल अखण्डित सालि तन्दुल पुज धरि त्रयगुण जचू।
अरहत श्रुत-सिद्धान्त गुरु-निरग्रथ नित पूजा रचू ॥

दोहा

तदुल सालि सुगधि अति परम अखण्डित बोन।
जासो पूजो परमपद देव शास्त्र गुरु तीन ॥३॥

ॐ ह्री देवशास्त्रगुरुभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपा० ।

जे विनयवत सुभव्य-उर-अम्बुज प्रकाशन भान हैं।
जे एक मुख चारित्र भाषत त्रिजग माहि प्रधान हैं॥
लहि कुन्दकमलादिक पहुप भव भव कुवेदनसो बचूं।
अरहत श्रुत-सिद्धान्त गुरु-निरग्रथ नित पूजा रचू ॥

दोहा

विविध भाति परिमल सुमन भ्रमर जास आधीन।
जासो पूजो परमपद देवशास्त्र गुरु तीन ॥४॥
ॐ ह्री देवशास्त्र गुरुभ्यो कामवाण विध्वसनाय पुष्पनिर्व०।
अति सबल मदकदर्प जाको क्षुधा-उरग अमान है।
दुस्सह भयानक तासु नाशनको सुगरुडसमान है॥
उत्तम छहो रसयुक्त नित नैवेद्य करि घृत मे पचूं॥
अरहत श्रुत-सिद्धान्त गुरु निरग्रथ नित पूजा रचू॥

दोहा

नानाविधि सयुक्तरस व्यजन सरस नवीन।
जासो पूजो परमपद देव शास्त्र गुरू तीन ॥५॥
ॐ ह्री देवशास्त्र गुरुभ्यो क्षधारोगविध्वसनाय नैवेद्य निर्वपा०
जे त्रिजग-उद्यम नाश कीने मोह-तिमिर महाबली।
तिहि कर्मघाती ज्ञानदोप प्रकाश ज्योति प्रभावली॥
इह भाँति दीप प्रजाल कचन के सुभाजन मे खचूँ।
अरहन श्रुत-सिद्धान्त गुरु- निरग्रन्थ नित पूजा रचू॥

दोहा

स्व-पर प्रकाशक जोति अति दीपक तमकरि हीन।
जासो पूजो परमपद देव शास्त्र गुरु तीन ॥६॥

ॐ ह्री देवशास्त्रगुरुभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीप निर्वपा० ।

जो कर्म-ईंधन दहन अग्निसमूह सम उद्धत लसै ।
वर धूप तासु सुगंधिताकरि सकल परिमलता हसै ॥
इह भाँति धूप चढाय नित भव-ज्वलनमाहि नही पचू ।
अरहत श्रुत-सिद्धान्त गुरु-निरग्रथ नित पूजा रचूं ॥

दोहा

अग्निमाँहि परिमल बहन चदनादि गुणलीन ।
जासो पूजो परमपद देव शास्त्र गुरु तीन ॥७॥
ॐ ह्री देवशास्त्रगुरुभ्योऽष्टकर्मविध्वसनाय धूप निर्वपा० ।

लोचन सुरसना घ्रान उर उत्साह के करतार हैं ।
मोपै न उपमा जाय वरणी सकल फलगुणसार है ॥
सो फल चढावत अर्थपूरन परम अमृतरस सचू ।
अरहत श्रुत-सिद्धान्त गुरु-निरग्रथ नित पूजा रचू ॥

दोहा

जे प्रधान फल फलविषै पचकरण-रस-लीन ।
जासो पूजो परमपद देव शास्त्र गुरु तीन ॥८॥
ॐ ह्री देवशास्त्रगुरुभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फल निर्वपा० ।

जल परम उज्जवल गध अक्षत पुष्प चरुदीपक धरु ।
वर धूप निर्मल फल विविध बहुजनम के पातक हरु ॥
इह भाति अर्घ चढाय नित भवि करतशिव-पकति मचू ।
अरहतश्रुत-सिद्धान्त गुरु-निरग्रन्थ नित पूजा रचूं ॥

दोहा

वसुविधि अर्घ सजोय कै अति उछाह मन कीन।
जासो पूजो परमपद देव शास्त्र गुरु तीन ॥६॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्य निर्वपा० ।

जयमाला

दोहा

देव शास्त्र गुरु रतन शुभ रतन तीन करतार।
भिन्न-भिन्न कहु आरती अल्प सुगुणविस्तार ॥१॥

पद्धरी छन्द

कर्मण की त्रेसठ प्रकृतिनाशि,
जीते अष्टादश दोषराशि।
जे परम सुगुण है अनत धीर,
कहवत के छयालिस गुणगभीर॥
शुभ समवसरणशोभा अपार,
शत इद्र नमत कर सीस धार।
देवाधिदेव अरहत देव,
बदो मन वच तन करि सुसेव॥
जिनकी ध्वनि ह्वै ओंकाररूप,
निरअक्षरमय महिमा अनूप।

दश-अष्ट महाभाषा समेत,
        लघुभाषा सातशतक सुचेत ॥
सो स्याद्वादमय सप्त भंग,
        गणधर गूंथे बारह सुअंग ।
रवि शशि न हरै सो तम हराय,
        सो शास्त्र नमो बहु प्रीति ल्याय ॥
गुरु आचारज उवझाय साध,
        तन नगन रतनत्रयनिधि अगाध ।
संसार-देह वैराग्य धार,
        निरवाँछि तपै शिवपद निहार ॥
गुण छत्तिस पच्चीस आठवीस,
        भवतारन तरन जिहाज ईस ।
गुरुकी महिमा वरनी न जाय,
        गुरु नाम जपो मन वचन काय ॥

सोरठा

कीजे शक्ति प्रमान शक्ति बिना सरधा धरै ।
'द्यानत' सरधावान अजर अमर पद भोगवै ॥

ॐ ह्री देवशास्त्रगुरुभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा

श्री जिनके परसाद तै सुखी रहे सब जीव ।
यातै तन मन वचन तै सेवो भव्य सदीव ॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजली क्षिपेत् ।

देवशास्त्र-गुरु-भाषा-पूजा

[जुगल किशोर]

स्थापना

केवल-रवि-किरणो से जिसका,
सम्पूर्ण प्रकाशित है अन्तर।
उस श्री जिनवाणी मे होता,
तत्वो का सुन्दरतम दर्शन ॥
सद्दर्शन-बोध-चरण-पथ पर,
अविरल जो बढते है मुनिगण।
उन देव परम आगम गुरु को,
शत-शत वदन शत-शत वदन ॥

ॐ ह्री देवशास्त्रगुरुसमूह अत्र अवतर अवतर सवौषट्।
ॐ ह्री देवशास्त्रगुरुसमूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ
ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरु समूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

इन्द्रिय के भोग मधुर विष सम,
लावण्यमयी कचन काया।
यह सब कुछ जड की क्रीडा है,
मैं अब तक जान नही पाया ॥
मैं भूल स्वय के वैभव को,
पर ममता मे अटकाया हू।
अब सम्यक् निर्मल नीर लिए,
मिथ्या मल धोने आया हू ॥१॥

ॐ ह्री देवशास्त्रगुरुभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जल निर्वपा०।

जड चेतन की सब परिणति प्रभु,
अपने अपने मे होती है ।
अनुकूल कहे प्रतिकूल कहे,
यह झूठी मन की वृत्ती है ॥
प्रतिकूल सयोगो मे क्रोधित,
होकर ससार बढाया है ।
सतप्त हृदय प्रभु ! चन्दन सम,
शीतलता पाने आया है ॥२॥

ॐ ह्री देवशास्त्रगुरुभ्यो ससारताप विनाशनाय चन्दनं ।

उज्ज्वल हू कुन्द धवल हू प्रभु,
पर से न लगा हू किंचित् भी ।
फिर भी अनुकल लगे उन पर,
करता अभिमान निरन्तर ही ॥
जड पर झुक-झुक जाता चेतन,
की मार्दव की खडित काया ।
निज शास्वत अक्षय निधि-पाने,
अब दास चरण-रज मे आया ॥३॥

ॐ ह्री देवशास्त्रगुरुभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षत ।

यह पुष्प सुकोमल कितना है,
तन मे माया कुछ शेष नही ।
उर अन्तर का प्रभु ! भेद कहू,
उसमे ऋजुता का लेश नही ॥

चितन कुछ, फिर सभाषण कुछ,
किरिया कुछ की कुछ होती है।
स्थिरता निज मे प्रभु पाऊ जो,
अन्तर का कालुष धोती है ॥४॥

ॐ ह्री देवशास्त्रगुरुभ्यो काम वाण विध्वसनाय पुष्प ।

अब तक अगणित जड द्रव्यो से,
प्रभु भूख न मेरी शान्त हुई।
तृष्णा की खाई खूब भरी,
पर रिक्त रहो वह रिक्त रही ॥
युग युग से इच्छा सागर मे,
प्रभु ! गोते खाता आया हू।
पचेन्द्रिय मन के षट् रस तज,
अनुपम रस पीने आया हू ॥५॥

ॐ ह्री देवशास्त्र गुरुभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्य ।

जग के जड दीपक को अब तक,
समझा था मैने उजियारा ।
झझा के एक झकोरे मे,
जो बनता घोर तिमिर कारा ॥
अतएव प्रभो ! यह नश्वर दीप,
समर्पण करने आया हू ।

तेरी अन्तर लौ से निज अन्तर,
दीप जलाने आया हू ॥६॥

ॐ ह्री देवशास्त्रगुरुभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीप ।

जड़ कर्म घुमाता है मुझको,
यह मिथ्या भ्रान्ति रही मेरी ।
मैं राग-द्वेष किया करता,
जब परिणति होती जड केरी ॥
यो भाव करम या भाव मरण,
सदियो से करता आया हू ।
निज अनुपम गध अनल से प्रभु,
पर गध जलाने आया हूं ॥७॥

ॐ ह्री देवशास्त्रगुरुभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूप ।

जग मे जिसको निज कहता मैं,
वह छोड मुझे चल देता हैं ।
मैं आकुल व्याकुल हो लेता,
व्याकुल का फल व्याकुलता है ॥
मैं शान्त निराकुल चेतन हू,
है मुक्तिरमा सहचर मेरी ।
यह मोह तडक कर टूट पडे,
प्रभु! सार्थक फल पूजा तेरी ॥८॥

ॐ ह्री देवशास्त्रगुरुभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फल निर्वपामि० ।

क्षण भर निज रस को पी चेतन,
मिथ्या मल को धो देता है।
काषायिक भाव विनष्ट किये,
निज आनन्द अमृत पीता है।
अनुपम सुख तब विलसित होता,
केवल रवि जगमग करता है।
दर्शन बल पूर्ण प्रगट होता,
यह ही अर्हन्त अवस्था है ॥
यह अर्घ समर्पण करके प्रभु !
निज गुण का अर्घ बनाऊगा।
अरु निश्चित तेरे सदृश प्रभु !
अर्हन्त अवस्था पाऊगा ॥६॥

ॐ ह्री देवशास्त्रगुरुभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ निर्वपामि०।

स्तवन

भव वन मे जी भर घूम चुका,
कण कण को जी भर भर देखा।
मृग-सम मृग-तृष्णा के पीछे,
मुझको न मिली सुख की रेखा ॥१॥
झूठे जग के सपने सारे,
झूठी मन की सब आशाये।

तन-यौवन-जीवन अस्थिर है,
क्षण भगुर पल मे मुरझायें ॥२॥
सम्राट महा-बल सैनानी,
उस क्षण को टाल सकेगा क्या ।
अशरण मृत काया मे हर्षित,
निज जीवन डाल सकेगा क्या ॥३॥
संसार महा दुख सागर के,
प्रभु दुखमय सुख-आभासो मे ।
मुझको न मिला सुख क्षणभर भी,
कचन-कामिनि-प्रासादो मे ॥४॥
मैं एकाकी एकत्व लिए,
एकत्व लिए सब ही आते ।
तन-धन को साथी समझा था,
पर ये भी छोड चले जाते ॥५॥
मेरे न हुए ये मैं इन से,
अति भिन्न अखण्ड निराला हू ।
निज मे पर से अन्यत्व लिए,
निज सम रस पीने वाला हू ॥६॥
जिसके शृंगारो मे मेरा,
यह महगा जीवन घुल जाता ।
अत्यन्त अशुचि जड काया से,
इस चेतन का कैसा नाता ॥७॥

दिन रात शुभाशुभ भावो से,
मेरा व्यापार चला करता ।
मानस वाणी अरु काया से,
आश्रव का द्वार खुला रहता ॥८॥
शुभ और अशुभ की ज्वाला से,
झुलसा है मेरा अन्तस्तल ।
शीतल समकित किरणे फूटे,
सवर से जागे अन्तर्बल ॥९॥
फिर तप की शोधक वन्हि जगे,
कर्मो की कडिया टूट पडे ।
सर्वाङ्ग निजात्म प्रदेशो से,
अमृत के निर्झर फूट पडे ॥१०॥
हम छोड चले यह लोक तभी,
लोकान्त विराजे क्षण मे जा ।
निज लोक हमारा वासा हो,
शोकात बने फिर हमको क्या ॥११॥
जागे मम दुर्लभ बोधि प्रभो ।
दुर्नयतम सत्वर टल जावे ।
बस ज्ञाता-दृष्टा रह जाऊ,
मद-मत्सर मोह-विनश जावे ॥१२॥
चिर रक्षक धर्म हमारा हो,
हो धर्म हमारा चिर साथी ।

जग मे न हमारा कोई था,
हम भी न रहे जग के साथी ॥१३॥
चरणो मे आया हू प्रभुवर,
शीतलता मुझको मिल जावे।
मुरझाई ज्ञान लता मेरी,
निज अन्तरबल से खिल जावे ॥१४॥
सोचा करता हू भोगो से,
बुझ जावेगी इच्छा ज्वाला।
परिणाम निकलता है लेकिन,
मानो पावक मे घी डाला ॥१५॥
तेरे चरणो की पूजा से,
इन्द्रिय सुख की ही अभिलाषा।
अब तक न समझ ही पाया प्रभु !
सच्चे सुख की भी परिभाषा ॥१६॥
तुम तो अविकारी हो प्रभुवर !
जग मे रहते जग से न्यारे।
अतएव झुके तव चरणो मे,
जग के माणिक मोती सारे ॥१७॥
स्याद्वाद मयी तेरी वाणी,
शुभनय के झरने झरते है।
इस पावन नौका पर लाखो,
प्राणी भव-वारिधि तिरते है ॥१८॥

हे गुरुवर ! शाश्वत सुख-दर्शक,
यह नग्न स्वरूप तुम्हारा है।
जग की नश्वरता का सच्चा,
दिग्दर्श कराने वाला है ।।१६।।
जब जग विषयो मे रच-पच कर,
गाफिल निद्रा मे सोता हो।
अथवा वह शिव के निष्कटक,
पथ मैं विष-कटक बोता हो ।।२०।।
हो अर्ध निशा का सन्नाटा,
वन मे वनचारी चरते हो।
तब शान्त निराकुल मानव तुम,
तत्वो का चितवन करते हो ।।२१।।
करते तप शैल नदी तट पर
तरु तल वर्षा की झडियो मे
समता रस पान किया करते,
सुख-दुख दोनो को घडियो मे ।।२२।।
अन्तर ज्वाला हरती वाणी,
मानो झडती हो फुलझडिया।
भव बन्धन तड तड टूट पडे,
खिल जावे अन्तर की कलियाँ ।।२३।।
तुम सा दानी क्या कोई है,
जग को देदी जग की निधिया।

दिन-रात लुटाया करते हो,
सम-शम की अविनश्वर मणिया ॥२४॥
हे निर्मल देव ! तुम्हे प्रणाम,
हे ज्ञान दीप आगम ! प्रणाम।
हे शान्ति त्याग के मूर्तिमान,
शिव-पथ-पथी गुरुवर ! प्रणाम ॥२५॥

ॐ ह्री देवशास्त्रगुरुभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ निर्वपा० ।

बीस तीर्थंकर पूजा

[कविवर द्यानतराय जी]

दीप अढाई मेरु पन सब तीर्थंकर बीस।
तिन सबकी पूजा करू मन वच तन धरि सीस ॥१॥

ॐ ह्री विद्यमानविशतितीर्थङ्करा अत्र अवतर अवतर सवोषट्।
ॐ ह्रीं विद्यमानविशतितीर्थङ्करा: ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ: ।
ॐ ह्री विद्यमानविशतितीर्थङ्करा ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

इन्द्र-फणीन्द्र-नरेन्द्रवद्य पद निर्मल धारी।
शोभनीक ससार सार गुण है अविकारी ॥
क्षीरोदधि सम नीरसो (हो) पूजो तृषा निवार।
सीमधर जिन आदि दे बीस विदेह मंझार ॥

श्रीजिनराज हो भव तारणतरण जहाज ।१॥

ॐ ह्रीं सीमंधर-युगमन्धर-बाहु-सुबाहु-सजात-स्वयंप्रभ-वृषभानन-अनन्तवीर्य-सूरप्रभ-विशालकीर्ति-वज्रधर-चन्द्रानन-भद्रबाहु भुजङ्गम-ईश्वर-नेमिप्रभ-वीरषेण- महाभद्र - देवयशोऽजितवीर्याश्चेति-विंशतिविद्यमानतीर्थङ्करेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जल निर्वपा० ।

तीन लोक के जीव पाप आताप सताये ।
तिनको साता दाता शीतल वचन सुहाये ॥
बावन चंदन सों जजूं (हो) भ्रमन तपन निरवार ॥सीम०॥

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्यो भवतापविनाशनाय चंदनं० ।

यह संसार अपार महासागर जिनस्वामी ।
तातैं तारे बडी भक्ति-नौका जगनामी ।।
तन्दुल अमल सुगंधसों (हो) पूजो तुम गुणसार ॥सीम०॥

ॐ ह्रीं विद्यमान विंशतितीर्थङ्करेभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपा० ।

भविक-सरोज-विकाश निंद्य-तमहर रवि से हो ।
जति-श्रावक आचार कथन को तुम्हीं बड हो ॥
फूल सुवास अनेकसों (हो) पूजो मदनप्रहार ॥सीम०॥

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपा० ।

काम-नाग विषधाम नाशको गरुड कहे हो ।
क्षुधा महादवज्वाल तासुको मेघ लहे हो ॥

नेवज बहुघृत मिष्टसो (हो) पूजो भूख बिडार ।।सीमं०।।

ॐ ह्री विद्यमानविशतितीर्थङ्करेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्य निर्वपा० ।

उद्यम होन न देत सर्व जगमाहि भर्यो है ।
मोह-महातम घोर नाश परकाश कर्यो है ।।
पूजो दीप प्रकाशसो (हो) ज्ञानज्योति करतार ।।सीम०।।

ॐ ह्री विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीप निर्वपा० ।

कर्म आठ सब काठ भार विस्तार निहारा ।
ध्यान अगनिकर प्रगट सरब कीनो निरवारा ।।
धूप अनूपम खेवते (हो) दुख जलै निरधार ।।सीम०।।

ॐ ह्री विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्योऽष्टकर्मविध्वसनाय धूप निर्वपा० ।

मिथ्यावादी दुष्ट लोभऽहकार भरे है ।
सबको छिन मे जीत जैन के मेर खडे है ।।
फल अति उत्तमसो जजो (हो) वाछित फलदातार ।।सीम०।।

ॐ ह्रीं विद्यमानविशतितीर्थङ्करेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फल निर्वपा० ।

जल फल आठो दर्व अरघ कर प्रीति धरी है।
गणधर इन्द्रनिहूतै थुति पूरी न करी है ।।
'द्यानत' सेवक जान के (हो) जगतै लेहु निकार ।।सीम०।।

ॐ ह्री विद्यमानविशतितीर्थङ्करेभ्योऽनर्घपदप्राप्तये अर्घ्य निर्वपा०

जयमाला

सोरठा

ज्ञान-सुधाकर चन्द भविक-खेत हित मेघ हो ।
भ्रम-तम भान अमन्द तीर्थङ्कर बीसो नमो ॥

चौपाई

सीमधर सीमधर स्वामी,
जुगमधर जुगमधर नामी ।
बाहु बाहु जिन जगजन तारे,
करम सुबाहु बाहुबल दारे ॥१॥
जात सुजात केवलज्ञान,
स्वयप्रभू प्रभु स्वय प्रधान ।
ऋषभानन ऋषि भानन दोष,
अनन्तवीरज वीरजकोष ॥२॥
सौरी प्रभ सौरीगुणमाल,
सुगुण विशाल विशाल दयाल ।
वज्रधार भवगिरि वज्जर है,
चन्द्रानन चन्द्रानन वर है ॥३॥
भद्रबाहु भद्रनिके करता,
श्री भुजग भुजगम हरता ।
ईश्वर सबके ईश्वर छाजै,
नेमिप्रभु जस नेमि विराजै ॥४॥

वीरसेन वीर जग जानै
महाभद्र महाभद्र बखानै।
नमो जसोधर जसधरकारी,
नमो अजित वीरज बलधारी ॥५॥

धनुष पाँचसै काय विराजे,
आव कोडिपूरव सब छाजे।
समवसरण शोभित जिनराजा,
भव-जल तारनतरन जिहाजा ॥६॥
सम्यक रत्न-त्रयनिधि दानी,
लोकालोक प्रकाशक ज्ञानी।
शत इन्द्रनिकरि वंदित सोहैं,
सुर नर पशु सबके मन मोहैं ॥७॥

दोहा

तुमको पूजे वंदना करै, धन्य नर सोय।
'द्यानत' सरधा मन धरै सो भी धरमी होय ॥८॥

ॐ ह्री विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्योऽर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

देवशास्त्रगुरु-विद्यमान बीसतीर्थंकर और सिद्धपूजा

[सच्चिदानन्द कृत]

दोहा

देव शास्त्र गुरु नमन करि, बीस तीर्थंकर ध्याय।
सिद्ध शुद्ध राजत सदा, नमूं चित्त हुलसाय॥

ॐ ह्री श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह श्री विद्यमान विंशतितीर्थंकर

श्री सिद्ध समूह अत्रावतरअवतर, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अनादिकाल से जग मे स्वामिन् जल से शुचिता को माना।
शुद्ध निजातम सम्यक् रत्नत्रय-निधि को नहि पहिचाना॥
अब निर्मल रत्नत्रय-जल लेकर, श्री देव शास्त्रगुरु को ध्याऊ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊ॥

ॐ ह्री श्री देवशास्त्रगुरुसमूह श्री विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह, श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो जलम् नि० स्वाहा।

भव आताप मिटावन की निज मे ही क्षमता समता है।
अनजाने अब तक मैंने, पर मे की झूठी ममता है॥
चन्दन-सम शीतलता पाने, श्री देवशास्त्रगुरु को ध्याऊ।
विद्यमान श्री बीसतीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊ॥चन्दनम्॥

अक्षय पद बिन फिरा जगत की, लख चौरासी योनि मे।
अष्ट कर्म के नाश करन को, अक्षत तुम ढिग लाया मैं॥
अक्षय-निधि निज की पाने को श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊ॥
विद्यमान श्री बीसतीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊ॥अक्षत॥

पुष्प सुगधी से आतम ने शील स्वभाव नसाया है।
मन्मथ-बाणो से बिध करके चहुगति दुःख उपजाया है॥
स्थिरता निज पाने को, श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊ।
विद्यमान श्री बीसतीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊ॥पुष्पम्॥

षट् रस मिश्रित भोजन से, ये भूख न मेरी शात हुई।
आतम रस अनुपम चखने से, इन्द्रिय मन इच्छा शमन हुई॥

सर्वथा भूख के मेटन को, श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊ ।
विद्यमान श्री बीसतीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊ ।।नैवेद्यम्।।
जड दीप विनश्वर को अब तक समझा था मैंने उजियारा ।
निज गुण दर्शायक दिव्य-ज्ञान से, मिटा मोह का अंधियारा ।।
ये दीप समर्पित करके मैं, श्री देवशास्त्रगुरु को ध्याऊ ।
विद्यमान श्री बीसतीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊ ।।दीपम्।।
ये धूप अनल मे खेने से, कर्मो को नही जलाएगी ।
निज मे निज की शक्ति ज्वाला, जो राग द्वेष नसाएगी ।।
उस शक्ति दहन प्रगटाने को, श्री देव शास्त्र गुरु को ध्याऊं ।
विद्यमान श्री बीसतीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊ ।।धूपम्।।
पिस्ता, बादाम, श्रीफल लवग, तुव चरण निकट मैं ले आया ।
आतमरस पीने निजगुणफल मम मन अब उनमे ललचाया ।।
अब मोक्ष महाफल पाने को, श्री देवशास्त्रगुरु को ध्याऊ ।
विद्यमान श्री बीसतीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊ ।।फलम्।।
अष्टम वसुधा पाने को, कर मे ये आठो द्रव्य लिये ।
सहज शुद्ध स्वाभाविकता मे, निज मे निज गुण प्रगट भये ।।
ये अर्घ समर्पण करके मैं, श्री देवशास्त्रगुरु को ध्याऊ ।
विद्यमान श्री बीसतीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊ ।।अर्घम्।।

जयमाला

नसे घातिया कर्म अरहत देवा,
करे सुर असुर नर मुनि नित्य सेवा ।

दरस ज्ञान सुख बल अनन्त के स्वामी,
छियालीस गुण युत महा ईस नामी।
तेरी दिव्य-वाणी सदा भव्य मानी,
महामोह विध्वसिनी मोक्षदानी।
अनेकान्तमय द्वादशागी बखानी,
नमो लोक माता श्री जैन-बानी।
बिरागी अचाराज उवज्झाय साधू,
दरश ज्ञान भण्डार समता अराधू।
नगन वेशधारी सु एका विहारी,
निजानन्द मडित मुकतपथ प्रचारी।
विदेह क्षेत्र मे तीर्थकर बीस राजे,
बिहरमान बन्दू सभी पाप भाजे।
नमू सिद्ध निरभय निरामय सुधामी,
अनाकुल समाधान सहजाभिरामी॥
देव शास्त्र गुरु बीसतीर्थंकर, सिद्ध हृदय बिच धरले रे।
पूजन ध्यान गान गुण करके, भवसागर जिय तरले रे॥अर्घम्॥
भूत भविष्यत् वर्तमान की तीस चौबीसी मैं ध्याऊ।
चैत्य चैत्यालय कृत्रिमाकृत्रिम तीन लोक मे मन लाऊ॥

ॐ ह्री त्रिकाल सबधी तीस चौबीसी, त्रिलोक सबधी कृत्रिमाकृत्रिम चैत्यचैत्यालयेभ्यो अर्घ नि० स्वाहा।

चैत्य भक्ति आलोचना चाहू, कायोत्सर्ग अघ नासन हेत।
कृत्रिमाकृत्रिम तीन लोक मे, राजत हैं जिनबिब अनेक॥

चतु निकाय के देव जजें, ले अष्ट द्रव्य निज कुटुम्ब समेत।
निज शक्ति अनुसार जजू मैं, कर समाधि पाऊं शिव खेत॥
(पुष्पाजलि क्षेपम्)

पूर्व मध्य अपरान्ह की बेला पूर्वाचार्यों के अनुसार।
देव वन्दना करू भाव से सकल कर्म को नासनहार॥
पच महागुरु सुमिरन करके कायोत्सर्ग करू सुखकार।
सहज स्वभाव शुद्ध लख अपना, आऊगा, मैं अब भवपार॥
(कायोत्सर्ग पूर्वक नौ बार णमोकार मत्र का जाप करें)

षोडश-कारण भावना भाऊ, दशलक्षण हिरदय धारू।
सम्यक् रत्नत्रय गहि करके, अष्ट करम का बन जारू॥

ॐ ह्री षोडशकारण भावना दशलक्षण धर्म, सम्यकरत्नत्रयेभ्यो अर्घम् नि० स्वाहा।

कृत्रिमाकृत्रिम-जिनचैत्य-पूजा

कृत्याकृत्रिम-चारु-चैत्यनिलयान् नित्य त्रिलोकीगतान्।
वन्दे भावन-व्यन्तरान् द्युतिवरान् स्वर्गामरावासगान्॥
सद्गन्धाक्षत-पुष्प-दाम-चरुकं सद्दीप-धूपैः फलै-
र्द्रव्यैर्नीरमुखैर्यजामि सतत दुष्कर्मणा शान्तये॥१॥

ॐ ह्री कृत्रिमाकृत्रिमचैत्यालयसम्बन्धिजिनबिम्बेभ्योऽर्घं निर्व०

वर्षेषु वर्षान्तर-पर्वतेषु।
नन्दीश्वरे यानि च मन्दरेषु।

यावन्ति चैत्यायतनानि लोके ।
सर्वाणि वन्दे जिनपुङ्गवानाम् ॥२॥
अवनि-तल-गताना कृत्रिमाकृत्रिमाणा ।
वन-भवन-गताना दिव्य-वैमानिकानाम् ।
इह मनुज-कृताना देवराजार्चिताना ।
जिनवर-निलयाना भावतोऽहं स्मरामि ॥३॥

जम्बू-धातकि-पुष्करार्ध-वसुधा-क्षत्र-त्रये ये भवा—
श्चन्द्राम्भोज-।शखण्डिकण्ठ-कनक प्रावृड्घनाभाजिन ।
सम्यग्ज्ञान-चरित्र-लक्षणधरा दग्धाष्ट-कर्मेन्धना ।
भूतानागत-वर्तमान समये तेभ्यो जिनेभ्यो नम ॥ ४॥

श्रीमन्मेरौ कुलाद्रौ रजतगिरिवरे शाल्मलौ जम्बुवृक्षे ।
वक्षारे चैत्यवृक्षे रतिकर-रुचके कुण्डले मानुषाङ्के ।
इष्वाकारेऽञ्जनाद्रौ दधिमुख-शिखरे व्यन्तरे स्वर्गलोके ।
ज्योतिर्लोकेऽभिवन्दे भुवनमहितले यानि चैत्यालयानि ॥५॥

द्वौ कुन्देन्दु-तुषार-हार धवलौ द्वाविन्द्रनील-प्रभौ ।
द्वौ बन्धूक-सम प्रभौ जिनवृषौ द्वौ च प्रियगुप्रभौ ।
शेषा षोडशजन्म-मृत्यु-रहिता सन्तप्त-हेमप्रभा-
स्ते सज्ज्ञान-दिवाकरा सुर-नुना सिद्धि प्रयच्छन्तु न ॥६॥

ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धि-कृत्रिमाकृत्रिमचैत्यालयेभ्योऽर्घ निर्व०

इच्छामि भते ! चेइभते-काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउ । अहलोय-तिरियलोय-उड्ढलोयम्मि किट्टिमाकिट्टिमाणि जाणि जिणचेइ-याणि ताणि सव्वाणितीसु वि लोएसु भवणवासिय-वाणवितर-

जोइसिय-कप्पवासिय त्ति चउव्विहा देवा सप्परिवारा दिव्वेण गधेण दिव्वेण वासेण दिव्वेण ह्लाणेण णिच्चकाल अच्चति पुज्जति वदति णमस्संति। अहमवि इह सतो तत्थ सताइ णिच्चकाल अच्चेमि पुज्जेमि वदामि णमसामि। दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइ-गमण समाहिमरण जिणगुणसम्पत्ती होउ मज्झ।

अथ पौर्वाह्लिक-माध्याह्लिक-आपराह्निक देववन्दनाया पूर्वा-चार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजा-वन्दना-स्तवसमेत श्री पच-महागुरुभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहम्।

ताव काय पावकम्म दुच्चरिय वोस्सरामि।
णमो अरहताण णमो सिद्धाण णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाण णमो लोए सव्वसाहूण।

सिद्धपूजा

द्रव्याष्टक

ऊर्ध्वाधोरयुत सबिन्दु सपरं ब्रह्मस्वरावेष्टित,
वर्गापूरित-दिग्गताम्बुज-दल तत्सन्धि-तत्त्वान्वितम्।
अन्त·पत्र-तटेष्वनाहतयुत ह्लीकार-सवेष्टित,
देव ध्यायति य: स मुक्ति-सुभगो वैरीभ-कण्ठीरव ॥१॥

ॐ ह्री श्री सिद्धचक्राधिपते सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर सवौषट्। ॐ ह्री श्री सिद्धचक्राधिपते सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ. ठ। ॐ ह्री श्रीसिद्धचक्राधिपते सिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

निरस्त-कर्म-सबन्ध सूक्ष्मं नित्य निरामयम् ।
वन्देऽहं परमात्मानममूर्तमनुपद्रवम् ॥२॥

सिद्धयन्त्रस्थापनम्

सिद्धौ निवासमनुग परमात्म-गम्य,
हान्यादि-भाव-रहित भव-वीत-कायम् ।
रेवापगा-वर-सरो यमुनोद्भवाना,
नीरैर्यजे कलशगैर्वर-सिद्ध-चक्रम् ॥३॥

ॐ ह्री क्षायिकसम्यकत्व-अनन्तज्ञान-अनन्तदर्शन-अनन्तवीर्यअगुरु लघुत्व-अवगाहनत्व-सूक्ष्मत्व-निराबाधत्वगुणसम्पन्न--सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने जन्ममृत्युविनाशनाय जल निर्वपा० ।

आनन्द-कन्द-जनक घन कर्म-मुक्त,
सम्यक्त्वशर्म-गरिम जननार्ति-वीतम् ।
सौरभ्य-वासित-भुव हरि-चन्दनाना,
गन्धैर्यजे परिमलैर्वर-सिद्धचक्रम् ॥४॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने ससारताप-विनाशनाय चन्दन निर्वपामीति स्वाहा ।

सर्वावगाहन-गुण सुसमाधि-निष्ठ,
सिद्धस्वरूप-निपुण कमल विशालम् ।
सौगन्ध्य-शालि-वनशालिवराक्षताना,
पुञ्जैर्यजे शशि-निभैर्वर-सिद्धचक्रम् ॥५॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

नित्य स्वदेह-परिमाणमनादिसञ्ज्ञ,
द्रव्यानपेक्षममृत मरणाद्यतीतम् ।
मन्दार-कुन्द-कमलादि वनस्पतीना,
पुष्पैर्यजे शुभतमैर्वर-सिद्ध-चक्रम् ॥६॥ पुष्प

ऊर्ध्वं स्वभाव-गमन सुमनो-व्यपेत,
ब्रह्मादि-बीज-सहित गगनावभासम् ।
क्षीरान्न-साज्य-वटकै रस-पूर्ण-गर्भै,
नित्य यजे चरुवरैर्वर-सिद्धचक्रम् ॥७॥ दीप

आतङ्क-शोक-भय-रोग-मद - प्रशान्त,
निर्द्वन्द्व-भाव-धरण महिमा - निवेशम् ।
कर्पूर-वर्ति-बहुभि. कनकावदातैर्दीपै,
यजे रुचिवरैर्वर-सिद्ध-चक्रम् ॥८॥ दीप

पश्यन्समस्त भुवन युगपन्नितान्त,
त्रैकाल्य-वस्तु-विषये निविडप्रदीपम् ।
सद्द्रव्य-गन्ध-घनसार-विमिश्रिताना,
धूपैर्यजे परिमलैर्वर-सिद्ध-चक्रम् ॥९॥ धूप

सिद्धासुराधिपति - यक्ष - नरेन्द्र - चक्रै,
ध्येय शिव सकल-भव्य-जनैः सुवन्द्यम् ।
नारिङ्ग-पूग- कदली - फल - नारिकेलै,
सोऽहं यजे वरफलैर्वर-सिद्धचक्रम् ॥१०॥ फल ।

गन्धाढ्य सुपयो मधुव्रतगणै' सग वर चन्दन,
पुष्पौघ विमल सदक्षत-चय रम्य चरु दीपकम् ।
धूप गन्धयुत ददामि विविध श्रेष्ठ फल लब्धये,
सिद्धाना युगपत्क्रमाय विमल सेनोत्तर वाञ्छितम् ॥११॥

ॐ ह्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अनर्घपदप्राप्तये अर्घ०।

ज्ञानोपयोगविमल विशदात्मरूप,
सूक्ष्म-स्वभाव-परम यदनन्तवीर्यम् ।
कर्मौघ-कक्ष-दहन सुख-शस्य-बीज,
वन्दे सदा निरुपम वर-सिद्ध-चक्रम् ॥१२॥ अर्घ्य

कर्माष्टक-विनिर्मुक्त मोक्ष-लक्ष्मी-निकेतनम् ।
सम्यक्त्वादि-गुणोपेतं सिद्धचक्र नमाम्यहम् ॥१३॥महार्घ

त्रैलोकेयेश्वर-वदनीय-चरणा. प्रापु श्रिय शाश्वती,
यानाराध्य निरुद्ध-चण्ड-मनस सन्तोऽपि तीर्थङ्करा ।
सत्सम्यक्त्व - विबोध-वीर्य-विशदाव्याबाधताद्यैर्गुणै,
युक्तास्तानिह तोष्टवीमि सतत सिद्धान् विशुद्धोदयान् ॥१३॥

(पुष्पाञ्जलि क्षिपामि)

जयमाला

विराग सनातन शान्त निरश,
निरामय निर्भय निर्मल हस ।
सुधाम विबोध-निधान विमोह,
प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध-समूह ॥

विदूरित - संसृति - भाव निरङ्ग,
समामृत - पूरित देव विसङ्ग ।
अबन्ध कषाय - विहीन विमोह,
प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध-समूह ॥
निवारित - दुष्कृत-कर्म - विपाश,
सदामल-केवल - केलि-निवास ।
भवोदधि-पारग शान्त विमोह,
प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध-समूह ॥
अनन्त - सुखामृत - सागर - धीर,
कलङ्क - रजो-मल-भूरि-समीर ।
विखण्डित-काम विराम विमोह,
प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध-समह ॥
विकार - विवर्जित तर्जित - शोक,
विबोध-सुनेत्र-विलोकित लोक ।
विहार विराव विरङ्ग विमोह,
प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध-समह ॥
रजोमल - खेद-विमुक्त विगात्र,
निरन्तर नित्य सुखामृत-पात्र ।
सुदर्शन - राजित नाथ विमोह,
प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध-समह ॥
विदम्भ वितृष्ण विदोष विनिद्र,
परापर शङ्कर सार वितन्द्र ।
विकोप विरूप विशङ्क विमोह,

प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध-समूह ।।
जरा-मरणोज्झित वीत - विहार,
विचिन्तित निर्मल निरहंकार।
अचिन्त्य - चरित्र विदर्प विमोह,
प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध-समूह ।।
विवर्ण विगन्ध विमान विलोभ,
विमाय विकाय विशब्द विशोभ।
अनाकुल केवल सर्व विमोह,
प्रसीद विशुद्ध सुसिद्ध-समूह ।।

घत्ता

असम - समयसार चारु - चैतन्य - चिन्ह,
पर - परिणति - मुक्त पद्मनदीन्द्र - वन्द्यम् ।
निखिल - गुण - निकेत सिद्धचक्र विशुद्ध,
स्मरति नमति यो वा स्तौति सोऽभ्येति मुक्तिम् ।।
ॐ ह्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने महार्घ्यं निर्वपा० ।

श्री गोम्मटेश्वर पूजा

मत्तगयंद छंद

स्थापना

देखत ही द्युतिवन्त हरे, तनकी छवि, सुधाधर हारे।
ध्यान विवेक तपोबल से, जिने अरि-कर्म प्रचड सहारे ।।

बाहु पसार अनुग्रह को, भवसागर से भवि जीव उबारे।
सो जिन बाहुबलीश, दयाकर तिष्ठहु मानस आय हमारे।
ॐ ह्री श्रीबाहुबलिभगवन् अत्र अवतर अवतर सबौषट्॥
ॐ ह्री श्रीबाहुबलिभगवन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ:।
ॐ ह्री श्रीबाहुबलिभगवन् मम सन्निहितो भव भव बषट्।

हरिगीतिका छन्द

शुचि सित सलिल की धार शशि रस तुल्य गुण की खान है।
सो चरण सन्मुख ईश के भवसिधु-सेतु समान है॥
वसुकर्मजेता मोक्षनेता, मदनतन अभिराम है।
भगवान बाहुबलीश को, नित शीशनाय प्रणाम है॥

ॐ ह्री भगवते श्रीबाहुबलिजिनाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर कपूर सुगन्धयुत श्रीखण्ड सग घसाइये।
भवतापभजन देव पद को भव्य पूज रचाइये॥वसुकर्म०॥चदन
अक्षत अखंड सुधाशुकरसद धवल शुद्ध चुनायके।
अक्षय महापद हेतु चरचू चरण नित गुण गायके॥वसुकर्म०॥
अक्षतान्
अम्भोज चपक मालती बेला गुलाब प्रसून ले।
पदपद्म पूजू देवके, है मदन मद जिनने दले॥वसुकर्म०॥ पुष्प
अतिमिष्ट मोहनभोग मोदक घेवरादिक घृतसने।
पकवान से भगवान को पूंजू क्षुधादिक जिनहने॥वसुकर्म०।नैवेद्य
लेकर जजू कर्पूर घृत रत्नादि की दीपावली।
जिनकी प्रभा से हो प्रगट गुणराशि आतम की भली॥वसुकर्म०॥
दीप

सुरदारु अगर कपूर तगर सुगन्ध चन्दन से बनी।
दशदिशारजन धूप दशविधि अग्र खेऊ पावनी ।।वसुकर्म०।।धूपं

बादाम पिस्ता नारियल अगूर कदली आम हैं।
शिव अमरफल हित चर्चते हम नाथ तव पदधाम है ।।वसुकर्म०।।
फल

गन्धाम्बु तन्दुल सुमन व्यजन दीप धूप सुहावनी।
फल मधुरांमिश्रित अर्घ ले, पूजू तुम्हे त्रिभुवन धनी ।।वसुकर्म०।।अर्घं

दोहा

पोदनपुर मे स्वर्ण की, जजू बिब छविधाम।
पुष्प वृष्टि सुर जह करे, केशर को अविराम ।।

ॐ ह्री श्रीपोदनपुरस्थबाहुबलिस्वामिप्रतिमायै अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

भला विध्यगिरि शिखर है, भले विराजे जेह।
चालिस हस्त सोभाभनो, खड्गासन है देह ।।
अनुपम छवि जिनराज की, देख लजे शशि सूर्य,
तातै नहिं छाया पडे, बन्दू यह माधुर्य ।।

ॐ ह्री श्रीश्रवणबेलगोल—विध्यगिरिस्थ बाहुबलिजिनाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

गोम्मटगिरि वेणूर मे, जजू नाय कर शीश।
पूंजू आरा कारकल, और जहा हो ईश ।।

ॐ ह्री श्रीगोम्मटगिरि वेणुपुर, धनुपुरा (आरा) कारकल आदि-विविधस्थानस्थ श्रीबाहुबलिजिनप्रतिमायै अर्घ निर्वपामि।

नमूं शिखर कैलाश जिंहि, शेष कर्म करि शेष।
लोक शिखर चूडामणी, भए सिद्ध परमेश ॥

ॐ ह्रीं श्रीकैलाशशिखरात् सिद्धिगताय श्रीबाहुबलिसिद्धाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

सवा पाँच सौ धनुष तन, लतायुक्त अभिराम।
खड्गासन मरकत वरण, सुन्दर रूप ललाम ॥

पद्धरी

जय बाहुबलीश्वर सगुण धाम, चरणो मे हो कोटिक प्रणाम।
तुम आदि ब्रह्म के सुत सुजान, था अतरग मे स्वाभिमान ॥
प्रण था वृषभेश्वर के सिवाय, यह मस्तक परको ना झुकाय।
षट्-खण्ड भूमि भरतेश जीत, लौटे जब अवधपुरी पुरीत ॥
नहि करै चक्र तब पुर प्रवेश, भरतेश्वर की जय थी अशेष।
तुम पोदनेश बाहुबलीश, नहिं थे वश मे नहि नमो शीश ॥
इस पर ही युद्ध ठना महान, थी खडी सैन्य चतुरग आन।
हैं भरत बाहुद्वय चरम अग, इनका नहिं होगा अग भग ॥
बहु सेना का होगा सहार, कर उभयपक्ष मन्त्री विचार।
ठहराए निर्णय हित प्रबुद्ध, थिर-दृष्टि मल्ल जल तीन युद्ध ॥
तीनो जीते तुम हे बलीश, तब क्रोधित हो वह चक्र ईश।
निज चक्र दिया तुमपर चलाय, कुल रीति नीति सबको भुलाय ॥

पर चक्ररत्न तुम पास आय, फिर गया सप्रदक्षिण शीश नाय ।
यह ज्येष्ठभ्रात की क्रिया देख, इस जग को स्वार्थकता विलेख ।
तुम देव भये जग से उदास, सब शिथिल किया भवमोह पास ।
दे तनुज महाबल को स्वराज, सब सौप उसे वैभव समाज ।।
कह भरतेश्वर से बनो ज्येष्ठ, इस नश्वर भू के भूप श्रेष्ठ ।
फिर यथाजात मुद्रा सुधार, कर किया कर्मरिपु का सहार ।।
इक वर्ष खडे थे एक थान, धर प्रतिमायोग अखण्ड ध्यान ।
थे एक वर्ष तक निराहार, सर्वोत्कृष्ट तप महा धार ।।
बाईस परीषह सहे धीर, तपते थे तप जिन अति गहीर ।
थे उगे लता तरु आस-पास, चरनन मे था अहि का निवास ।।
थे तजे उग्र तप के प्रभाव, बन के सब जीव विरोध भाव ।
अनुताप तुम्हे इक था महेश, पाए है मुझसे भरत क्लेश ।।
भरतेश्वर से सम्मान पाय, सन्ताप गया सत्वर नशाय ।
तब भए केवली हे जिनेश, पूजन की आकर नर सुरेश ।
उपदेश दिया करुणा-अधार, भवि जीवो को करके विहार ।
कैलाश शिखर से मुक्ति थान, पाया तुमने सब कर्महान ।।
जय गोमटेश बाहूबलीश, जय जय भुजबलि जय दोर्बलीश ।
जय त्रिभुवन मोहन छवि अनूप, जय धर्म प्रकाशक ज्योतिरूप ।।
जय मुनिजन भूषण धर्मसार, अकलकरूप मोहि करहु पार ।
जय मात सुनन्दा के सुनन्द, शिव राज्य देहु मोहि जगतवद ।।
है स्वर्णमयी प्रतिमाभिराम, पोदनपुर मे शतश: प्रणाम ।
धनु सवा पाँच सौ हो जिनेन्द्र, जजते कुसमाजलि ले सुरेन्द्र ।।

प्रतिमा विंध्येश्वर की प्रधान, नित नमूं कारकल की महान।
वेणूर पुरीकी है ललाम, गोमट निरपति को हो प्रणाम ॥
आरा मे रहे विराजनाथ, शतबार तुम्हे हम नमत माथ।
जितनी हो जह जह बिम्बसार, सबको मेरा हो नमस्कार ॥

धत्ता

जय बाहुवलीश्वर महाऋषीश्वर, दयानिधीश्वर जगतारो।
जय जय मदनेश्वर जितचक्रेश्वर, विंध्येश्वर भवभयहारी।

महार्घ

बाहुबली के महापादपद्मो को, जो भवि नित्य जजे,
सर्वसपदा पावे जग मे, ताके सब सताप भजे।
होकर 'वीर' बाहुबलि जैसा, 'धर्म' चक्र का कत सजै,।
कर्मबेडियाँ काट स्वपर की, निश्चय शिवपुरराज रजै ॥

[इत्याशीर्वाद·]

सरस्वती पूजा

जनम जरा मृत्यु छय करै, हरै कुनय जडरीति।
भवसागर सो ले तिरै, पूजे जिन वच प्रीति ॥१॥

ॐ ह्री श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीवाग्वादिनि ! अत्र अवतर अवतर सवौषट्। ॐ ह्री श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीवाग्वादिनि ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ स्थापन। ॐ ह्री श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीवाग्वादिनि ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरण

अथाष्टक सोरठा

क्षीरोदधिगगा, विमल तरगा, सलिल अभगा सुख सगा।
भरि कचन झारी, धार निकारी, तृषा निवारी, हित चगा॥
तीर्थंकर की धुनि, गणधर ने सुनि, अग रचे चुनि, ज्ञानमई।
सो जिनवरबानी, शिव सुखदानी, त्रिभुवन मानी पूज्य भई॥१॥
ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै जल निर्वपामीति स्वाहा।
करपूर मगाया, चदन आया, केशर लाया रग भरी।
शारदपद बदो, मन अभिनदो, पाप निकदो, दाह हरी। तीर्थ०चदन
सुखदास कमोद, धारकमोद, अति-अनुमोद, चन्दसम।
बहुभक्ति बढाई, कीरति गाई, होहु सहाई, मात मम॥तीर्थ०अक्षतान्०
बहु फूल सुवास, विमल प्रकास, आनन्द रास लाय धरे।
मम काम मिटायो, शील बढायो, सुख उपजायो, दोष हरे॥तीर्थ पुष्प
पकवान बनाया, बहु घृतलाया, सब विधि भाया मिष्ठ महा।
पूजू थुति गाऊ, प्रीति बढाऊ, क्षुधा नशाऊ, हर्ष लहा॥तीर्थ०नैवेद्य
करिदीपक- जोत, तमछय होत, ज्योति उदोत तुमहि चढै।
तुम हो परकाशक, भरमविनाशक, हम घट-भासक, ज्ञान बढै॥तीर्थ
दीप
शुभगध दशोकर, पावक मे धर, धूप मनोहर खेवत है।
सब पाप जलावै, पुण्य कमावै, दास कहावै, सेवत है॥तीर्थ० धूप
बादाम छुहारी, लोग सुपारी, श्रीफल भारी ल्यावत है।
मनवाछित दाता, मेट असाता, तुम गुन माता, ध्यावत है॥तीर्थ०
फल
नयनन सुखकारी, मृदुगुनधारी, उज्ज्वल भारी, मोलधरै।
शुभगधसम्भारा, वसन निहारा, तुम तन धारा, ज्ञान करै।तीर्थ वस्त्र

जलचदन अच्छत, फूल चरू अरु, दीप धूप शुभ फल लावें।
पूजा को ठानत, जो तुम जानत, सो नर द्यानत, सुख पावें ॥तीर्थं०
ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ जयमाला (सोरठा)

ओंकार धुनिसार, द्वादशांगवाणी विमल।
नमो भक्ति उर धार, ज्ञान करै जडता हरै॥

छन्द वेसरी

पहलो आचारांग बखानो, पद अष्टादश सहस प्रमानो।
दूजो सूत्रकृत अभिलाषं, पद छत्तीस सहस गुरु भाषं॥१॥
तीजो ठाना अंग सुजानं, सहस बियालिस पद सरधानं।
चौथो समवायांग निहारं, चौसठ सहस लाख इक धारं॥२॥
पंचम व्याख्याप्रज्ञपतिदरसं, दोय लाख अट्ठाइस सहसं।
छट्ठो ज्ञातृकथा विसतारं, पाँच लाख छप्पन हज्जारं॥३॥
सप्तम उपासकाध्ययनंगं, सत्तर सहस ग्यार लख भंगं।
अष्टम अंतकृत दश ईसं, सहस अठाइस लाख तेईसं॥४॥
नवम अनुत्तर दश सुविशालं, लाख बानवै सहस चवालं।
दशम प्रश्न व्याकरण विचारं, लाख तिरानव सोल हजारं॥५॥
ग्यारम सूत्र विपाक सुभाखं, एक कोड चौरासी लाखं।
चार कोडि अरु पन्द्रह लाखं, दो हजार सब पद गुरु शाखं॥६॥
द्वादश दृष्टिवाद पनभेदं, इक सौ आठ कोडि पन वेदं।
अडसठ लाख सहस छप्पन है, सहित पंचपद मिथ्या हन हैं॥७॥
इक सौ बारह कोडि बखानो, लाख तिरासी ऊपर जानो।
ठावन सहस पंच अधिकाने, द्वादश अंग सर्वपद माने॥८॥

कोडि इकावन आठहि लाख, सहस चुरासी आठहि भाख।
साढ़े इकीस सिलोक बताए, एक एक पद के ये गाये ॥६॥

धत्ता

जा बानी के ज्ञान मे, सूझे लोक अलोक।
'द्यानत' जग जयवत हो, सदा देत हो धोक ॥

ॐ ह्री श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

[इत्याशीर्वाद]

श्री गौतम स्वामी पूजा

(लेखक—राजमल पवैया, भोपाल)

जय जय इन्द्रभूति गौतम गणधर स्वामी मुनिवर जय जय।
तीर्थकर श्री महावीरके प्रथम मुख्य गणधर जय जय॥
द्वादशाग श्रुत पूर्ण ज्ञानधारी गौतम स्वामी जय जय।
वीर प्रभू की दिव्यध्वनि जिनबाणी को रच हुए अभय॥
ऋद्धि सिद्धि मगल के दाता मोक्ष प्रदाता गणधर देव।
मगलमय शिवपथ पर चलकर मैं भी सिद्ध बनू स्वयमेव॥

ॐ ह्री श्री गौतम गणधर स्वामिन्! अत्र अवतर अवतर सवौषट्। ॐ ह्री श्री गौतम गणधर स्वामिन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ. ठ.। ॐ ह्री श्री गौतम गणधर स्वामिन् अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

मैं मिथ्यात्व नष्ट करने को निर्मल जल की धार करू।
सम्यक्दर्शन पाऊ जन्म मरण क्षयकर भवरोग हरू॥
गौतम गणधर स्वामी के चरणो की मैं करता पूजन।
देव आपके द्वारा भाषित जिनवाणी को करू नमन॥
ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर स्वामिन् जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जल।

पच पाप अविरत को त्यागू शीतल चन्दन चरण धरू।
भव आताप नाश करके प्रभू मैं अनादि भव रोग हरू॥गौतम॰
चन्दनम्

पद प्रमाद नष्ट करने को उज्जवल अक्षत भेट करू।
अक्षयपद की प्राप्ति हेतु प्रभू मैं अनादि भव रोग हरू॥गौतम॰
अक्षतम्

चार कषाय अभाव हेतु मैं पुष्प मनोरम भेट करू।
काम बाण विध्वस करू प्रभु मैं अनादि भव रोग हरू॥गौतम॰
पुष्पम्।

मन वच काया योग सब हरने को प्रभु नैवेद्य धरू।
क्षुधा व्याधि का नाम मिटाऊ मैं अनादि भवरोग हरू॥गौतम॰
नैवेद्य।

सम्यक्ज्ञान प्राप्त करने को अतरदीप प्रकाश करू।
चिर अज्ञान तिमिर को नाशूं मैं अनादि भवरोग हरू॥गौतम॰
दीपम्॰

मैं सम्यक्चारित्र ग्रहण कर अतर तपकी धूप वरू।
अष्ट कर्म विध्वस करू प्रभु मैं अनादि भवरोग हरू॥गौतम॰
धूपम्॰

रत्नत्रयमय परम मोक्षफल पाने को फल भेट करू ।
शुद्ध स्वपद निर्वाण प्राप्तकर मैं अनादि भव रोग हरू ।।
गौतम गणधर स्वामी के चरणो की मैं करता पूजन ।
देव आपके द्वारा भाषित जिनवाणी को करू नमन ।।
ॐ ह्री श्री गौतम गणधर स्वामिन् मोक्षफल प्राप्तये फलम् ।

जल फलादि वसु द्रव्य अर्घ चरणो मे सविनय भेट करू ।
पद अनर्घ सिद्धत्व प्राप्त कर मैं अनादि भव रोग हरू ।।गौतम०
अर्घम्० ।

शुभ आषाढ शुक्ल पूनम को समवशरण मे तुम आए ।
मानस्तम्भ देखते ही दर्शन-ज्ञान-चरित्र पाए ।।
महावीर के दर्शन करते ही मिथ्यात्व हुआ चकचूर ।
रत्नत्रय पाते ही दिव्यध्वनि का लाभ लिया भरपूर ।।
इसलिए अषाढ पूर्णिमा गुरू - पूर्णिमा प्रसिद्ध हुई ।
हुए तपस्या लीन सहज ही बुद्धि ऋद्धि सब सिद्ध हुई ।।
ज्ञान मन पर्यय होते ही पाया गणधर पद पावन ।
मिली वीर की दिव्यध्वनि श्रावण कृष्णा एकम के दिन ।।
ॐ ह्री श्री गौतम गणधर स्वामिन् दिव्यध्वनिप्राप्तये अर्घ ।

कार्तिक कृष्ण अमावस्या को कर्मघातिया करके क्षय ।
सायकाल समय मे पाई केवलज्ञान लक्ष्मी जय ।।
अन्तराय का सर्व नाश कर तुमने पाया पद भगवन्त ।
ज्ञानावरण दर्शनावरणी मोहनीयका करके अन्त ।।
ॐ ह्री श्री गौतम गणधर स्वामिन् केवलज्ञानप्राप्तये अर्घ ।

विचरण करके दुखी जगत के जीवो का कल्याण किया।
अन्तिम शुक्लध्यान के द्वारा योंगो का अवसान किया।।
देव बानवे वर्ष अवस्थामे तुमने निर्वाण लिया।
क्षेत्र गुणावा करके पावन सिद्ध स्वरूप महान लिया।।
ॐ ह्री श्री गौतम गणधर स्वामिन् मोक्षपद प्राप्तये अर्घं।

जयमाला

मगध देश के गौतमपुरवासी वसुभूति ब्राह्मण पुत्र।
पृथ्वी के लाल लाडले इन्द्रभूति तुम ज्येष्ठ सुपुत्र।।
अग्निभूति अरु वायुभूति लघुभ्राता द्वय उत्तम विद्वान।
शिष्य पाँचसौ साथ आपके चौदह विद्याज्ञान निधान।।
शुभ वैशाख शुक्ल दशमी को हुआ वीर को केवलज्ञान।
समवशरणकी रचना करके हुआ इन्द्र को हर्ष महान।।
बारह सभा बनी अति सुन्दर गधकुटी थी बीच प्रधान।
अतरीक्ष मे महावीर प्रभु बैठे पद्मासन निज ध्यान।।
छ्यासठ दिन हो गए दिव्य ध्वनि प्रभुकी खिरी नही यह जान।
अवधिज्ञानसे लखा इन्द्रने गणधर की है कमी प्रधान।।
इन्द्रभूति गौतम पहले गणधर होगे यह जान लिया।
वृद्ध ब्राह्मण वेष बना गौतम के गृह प्रस्थान किया।।
पहुंच इन्द्र ने नमस्कार कर किया निवेदन विनय मई।
मेरे गुरु श्लोक सुनाकर मौन हो गए ज्ञानमई।।

अर्थ भाव वे बता न पाए वही जानने आया हू ।
आप श्रेष्ठ विद्वान जगत मे शरण आपकी आया हू ।।
इन्द्रभूति गौतम श्लोक श्रवण कर मन मे चकराए ।
झूठा अर्थ बताने के भी भाव नही उरमे आए ।।
मनमे सोचा तीनकाल छहद्रव्य जीव षट् लेश्या क्या ?
नव पदार्थ पचास्तिकाय गति समिति ज्ञान व्रत चारित क्या ।
बोले गुरु के पास चलो मैं वही अर्थ बतलाऊगा ।
अगर हुआ तो शास्त्रार्थ कर उन पर भी जय पाऊगा ।।
अति हर्षित हो इन्द्र हृदय मे बोला स्वामी अभी चले ।
शकाओ का समाधान कर मेरे मन की शल्य दले ।।
अग्निभूति अरु वायुभूति दोनो भ्राता सग लिए जभी ।
शिष्य पाचसौ सग ले गौतम साभिमान चल दिए तभी ।।
समवशरणकी सीमा मे जाते ही गलित हुआ अभिमान ।
प्रभु दर्शन करते ही पाया सम्यक्दर्शन सम्यक्ज्ञान ।।
तत्क्षण सम्यक्चारित धारा मुनि बन गणधर पद पाया ।
अष्ट ऋद्धियाँ प्रगट हो गइ ज्ञान मन पर्यय छाया ।।
खिरने लगी दिव्यध्वनि प्रभु की परम हर्ष उर मे आया ।
कर्मनाशकर मोक्ष-प्राप्ति का यह अपूर्व अवसर पाया ।।
ओकार ध्वनि मेघ गर्जना सम होती है गुणशाली ।
द्वादशाग वाणी तुमने अन्तरमुहूर्त्त मे रच डाली ।।
दोनो भ्राता शिष्य पाचसौ ने मिथ्यात्व तभी हरकर ।
हर्षित हो जिन दीक्षा ले ली दोनो भ्रात हुए गणधर ।।

राजगृही के विपुलाचल पर प्रथम देशना मगलमय।
महावीर सदेश विश्व ने सुना शाश्वत शिवसुखमय ॥
इन्द्रभूति श्री अग्निभूति, श्री वायुभति, शुचिदत्त महान।
श्री सुधर्म, माडव्य, मौर्यसुत, श्री अकम्पन अति विद्वान ॥
अचल और मेदार्य, प्रभास यही ग्यारह गणधर गुणवान।
महावीर के प्रथम शिष्य तुम हुए मुख्य गणधर भगवान ॥
छह छह घडी दिव्य ध्वनि खिरती चार समय नित मगलमय।
वस्तुतत्व उपदेश प्राप्तकर भव्य जीव होते निजमय ॥
तीस वर्ष रह समवशरणमे गूथा श्री जिनवाणी को।
देश देशमे कर विहार फैलाया श्री जिनवाणीको ॥
कार्तिक कृष्ण अमावस प्रात महावीर निर्वाण हुआ।
संध्याकाल तुम्हे भी पावापुरमे केवल ज्ञान हुआ ॥
आयुपूर्ण जब हुई आपकी योग नाश निर्वाण लिया।
धन्य हो गया क्षेत्र गुणावा देवो ने जय गान किया ॥
आज तुम्हारे चरणकमलके दर्शन पाकर हर्षाया।
रोम रोम पुलकित है मेरे भव का अन्त निकट आया ॥
मुझको भी प्रज्ञा छैनी दो मैं निज परमे भेद करू।
भेदज्ञान की महाशक्ति से दुखदायी भव खेद हरू ॥
पद सिद्धत्व प्राप्त करके मैं पास तुम्हारे आ जाऊ।
तुम समान बन शिवपद पाकर सदा सदाको मुसकाऊ ॥
जय जय गौतम गणधरस्वामी अभिरामी अन्तर्यामी।
पाप पुण्य परभाव विनाशी मुक्ति निवासी सुखधामी ॥
ॐ ह्री श्री गौतम गणधरस्वामिन् अनर्घपदप्राप्तये महाअर्घं।

गौतम स्वामीके वचन भाव सहित उर धार।
मन वच तन जो पूजते वे होते भवपार।।

इत्याशीर्वाद.

सलूना पर्व पूजन

(नोट—यह श्रेयासनाथ भगवान का निर्वाण दिन भी है अत: इस पूजन से पूर्व उनकी व सरस्वती पूजन कर लेनी चाहिए।)

श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतमुनि पूजा

(चाल जोगीरासा)

पूज्य अकम्पन साधु-शिरोमणि सात-शतक मुनि ज्ञानी।
आ हस्तिनापुर के कानन मे हुए अचल दृढ ध्यानी।।
दुखद सहा उपसर्ग भयानक सुन मानव घबराये।
आत्म-साधना के साधक वे, तनिक नही अकुलाये।।
योगिराज श्री विष्णु त्याग तप, वात्सल्य-वश आये।
किया दूर उपसर्ग, जगत-जन मुग्ध हुए हर्षाये।।
सावन शुक्ला पन्द्रस पावन शुभ दिन था सुखदाता।
पर्व सलूना हुआ पुण्य-प्रद यह गौरवमय गाथा।।
येही दिन था श्रेयासनाथ प्रभु के निर्वाण महोत्सव का।
छाया अति उल्लास सभीके मन मे दोनो उत्सव का।।
शान्ति दया समता का जिनसे नव आदर्श मिला है।
जिनका नाम लिये से होती जागृत पुण्य-कला है।।

करू वन्दना उन गुरुपद की वे गुण मैं भी पाऊ।

आह्वानन सस्थापन सन्निधि कर्ण करूँ हर्षाऊँ ॥

ॐ ह्री श्रीअकम्पनाचार्यादिसप्तशतमुनिसमूह अत्र अवतर२ सवौषट् इत्याह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ प्रतिष्ठापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

अथाष्टकम्

(गीता–छन्द)

मैं उर-सरोवर से विमल जल भाव का लेकर अहो।

नत पाद-पद्मो मे चढाऊँ मृत्यु जनम जरा न हो ॥

श्रीगुरु अकम्पन आदि मुनिवर मुझ साहस शक्ति दे।

पूजा करूँ पातक मिट, वे सुखद समता भक्ति दे ॥

ॐ ह्रीं श्रीअकम्पनाचार्यादिसप्तशतमुनिभ्यो जन्म जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलम्।

सन्तोष मलयागिरीय चन्दन निराकुलता सरस ले।

नत पाद-पद्मो मे चढाऊँ, विश्वताप नही जले ॥

श्रीगुरु अकम्पन० ॥ चन्दनम्

तदुल अखण्डित पूत आशा के नवीन सुहावने।

नत पाद-पद्मो मे चढाऊँ दीनता क्षयता हने ॥

श्रीगुरु अकम्पन० ॥ अक्षतम्

ले विविध विमल विचार सुन्दर सरस सुमन मनोहरे।

नत पाद-पद्मो मे चढाऊँ काम की बाधा हरे ॥

श्रीगुरु अकम्पन० ॥ पुष्पम्

शुभ भक्ति घृत मे विनय के पकवान पावन मैं बना ।
नत पाद-पद्मो मे चढा मेटू क्षुधा की यातना ।।
श्रीगुरु अकम्पन आदि मुनिवर मुझे साहस शक्ति दे ।
पूजा करू पातक मिटे, वे सुखद समता भक्ति दे ।।

ॐ ह्री श्रीअकम्पनाचार्यादिसप्तशतमुनिभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् ।

उत्तम कपूर विवेक का ले आत्म-दीपक मे जला ।
कर आरती गुरु की हटाऊँ मोह-तम की यह बला ।।
श्रीगुरु अकम्पन० ।। दीपम्

ले त्याग-तप की यह सुगन्धित धूप मै खेऊँ अहो ।
गुरुचरण-करुणा से करम का कष्ट यह मुझको न हो ।।
श्रीगुरु अकम्पन० ।। धूपम्

शुचि-साधना के मधुरतम प्रिय सरस फल लेकर यहाँ ।
नत पाद-पद्मो मे चढाऊँ मुक्ति मै पाऊँ यहाँ ।।
श्रीगुरु अकम्पन० ।। फलम्

यह आठ द्रव्य अनूप श्रद्धा स्नेह से पुलकित हृदय ।
नत पाद-पद्मो मे चढाऊँ भव-पार मैं होऊँ ।।
श्रीगुरु अकम्पन० ।। अर्घम्

जयमाला

(सोरठा)

पूज्य अकम्पन आदि सात शतक साधक सुधी ।
यह उनकी जयमाल वे मुझको निज भक्ति दे ।।

(पद्धड़ी छन्द)

वे जीव दया पाले महान, वे पूर्ण अहिंसक ज्ञानवान् ।
उनके न रोष उनके न राग, वे करे साधना मोह त्याग ।
अप्रिय असत्य बोले न बैन, मन वचन काय मे भद है न ।
वे महा सत्य धारक ललाम, है उनके चरणो मे प्रणाम ।।

वे ले न कभी तृणजल अदत्त, उनके न धनादिक में ममत्त ।
वे व्रत अचौर्य दृढ धरे सार, है उनको सादर नमस्कार ।।
वे करे विषय की नही चाह, उनके न हृदय मे काम-दाह ।।
वे शील सदा पाले महान, कर मग्न रहे निज आत्मध्यान ।।

सब छोड बसन भूषण निवास, माया ममता सनेह आस ।
वे धरे दिगम्बर वेष शान्त, होते न कभी विचलित न भ्रान्त ।।
नित रहे साधना मे सुलीन, वे सहे परीषह नित नवीन ।
वे करे तत्व पर नित विचार, है उनको सादर नमस्कार ।।

पचेन्द्रिय दमन करे महान, वे सतत बढावे आत्म-ज्ञान ।
ससार देह सब भोग त्याग, वे शिव-पथ साधे सतत जाग ।।
"कुमरेश" साधु वे हैं महान, उनसे पाये जग नित्य त्राण ।
मैं करूँ वन्दना बार बार वे करे भवार्णव मुझे पार ।।

मुनिवर गुण-धारक पर-उपकारक, भव-दुख-हारक सुखकारी ।
वे करम नशाये सुगुण दिलाये, मुक्ति मिलाये भय-हारी ।।

ॐ ह्री श्रीअकम्पनाचार्यादिसप्तशतमुनिभ्यो महार्घम् ।।

(सोरठा)

श्रद्धा भक्ति समेत जो जन यह पूजा करे ।
वह पाये निज ज्ञान, उसे न व्यापे जगत दुख ।।

इत्याशीर्वादः ।

श्री विष्णुकुमार महामुनि पूजा

लावनी छन्द

श्री योगी विष्णुकुमार बाल बैरागी ।
पाई वह पावन ऋद्धि विक्रिया जागी ।।
सुन मुनियो पर उपसर्ग स्वय अकुलाये ।
हस्तिनापुर वे वात्सल्य भरे हिय आये ।।
कर दिया दूर सब कष्ट साधना-बल से ।
पा गये शान्ति सब साधु अग्नि के झुलसे ।।
जन जन ने जय-जयकार किया मन भाया ।
मुनियो को दे आहार स्वय भी पाया ।।
है वे मेरे आदर्श सर्वदा स्वामी ।
मैं उनकी पूजा करूँ बनू अनुगामी ।।
वे दे मुझमे यह शक्ति भक्ति प्रभु पाऊँ ।
मैं कर आतम कल्यान मुक्त हो जाऊँ ।।

ॐ ह्री श्रीविष्णकुमारमुनिवर अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ प्रतिष्ठापनम् अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

चाल जोगीरासा

श्रद्धा की वापी से निर्मल, भावभक्ति जल लाऊँ ।
जनम मरण मिट जाये मेरे इससे विनत चढाऊँ ।।
विष्णुकुमार मुनीश्वर वन्दू यति-रक्षा हित आये ।
यह वात्सल्य हृदय मे मेरे अभिनव ज्योति जगाये ।।

ॐ ह्री श्रीविष्णुकुमारमुनये जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम् ।

मलयगिरि धीरज से सुरभित समता चन्दन लाऊँ।
भव-भव की आतप न हो यह इससे विनत चढाऊँ॥
विष्णुकुमार मुनी० ॥ चन्दनम्

चन्द्रकिरन सम आशाओ के अक्षत सरस नवीने।
अक्षय पद मिल जाये मुझको गुरु सन्मुख धर दीने॥
विष्णुकुमार मुनी० ॥ अक्षतम्

उर उपवन से चाह सुमन चुन विविध मनोहर लाऊँ।
व्यथित करे नहिं काम वासना इससे विनत चढाऊँ॥
विष्णुकुमार मुनी० ॥ पुष्पम्

नव नव नित मधुर रसीले मैं पकवान बनाऊँ।
क्षुधा न बाधा यह दे पाये इससे विनत चढाऊँ॥
विष्णुकुमार मुनी० ॥ नैवेद्यम्

मै मन का मणिमय दीपक ले ज्ञान-वर्तिका जारूँ।
मोह-तिमिर मिट जाये मेरा गुरु सन्मुख उजियारूँ॥
विष्णुकुमार मुनी० ॥ दीपम्

ले विराग की धूप सुगन्धित त्याग धूपायन खेऊँ।
कर्म आठ का ठाठ जलाऊँ गुरु के पद नित सेऊँ॥
विष्णुकुमार मुनी० ॥ धूपम्

पूजा सेवा दान और स्वाध्याय विमल फल लाऊँ।
मोक्ष विमल फल मिले इसी से विनत गुरू पद ध्याऊँ॥
विष्णुकुमार मुनी० ॥ फलम्

यह उत्तम वसु द्रव्य सजोये हर्षित भक्ति बढाऊँ।
मै अनर्घपद को पाऊँ गुरुपद पर बलि जाऊँ॥
विष्णुकुमार मुनी० ॥ अर्घम्

ॐ ह्री श्रीविष्णुकुमारमुनये अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घम्।

दोहा

श्रावण शुक्ला पूर्णिमा यति-रक्षा दिन जान ।
रक्षक विष्णु मुनीश की यह गुणमाल महान् ।।

जयमाला

पद्धडी छन्द

जय योगिराज श्रीविष्णु धीर, आकर वह हर दो साधु-पीर ।
हस्तिनापुर वे आये तुरन्त, कर दिया विपत् का शीघ्र अन्त ।।
वे ऋद्धि-सिद्धि-साधक महान्, वे दयावान वे ज्ञानवान ।
धर लिया स्वय वामन सरूप, चल दिये विप्र बनकर अनूप ।।
पहुचे बलि नृप के राजद्वार, वे तेज-पुञ्ज धर्मावतार ।
आशीष दिया आनन्दरूप, हो गया मुदित सुन शब्द भूप ।।
बोला वर मागो विप्रराज, दूँगा मनवाछित द्रव्य आज ।
पग तीन भूमि याची दयाल, बस इतना ही तुम दो नृपाल ।।
नृप हँसा समझ उनको अज्ञान, बोला यह क्या लो और दान ।
इससे कुछ इच्छा नही शेष, बोले वे ये ही दो नरेश ।।
सकल्प किया दे भूमि दान, ली वह मन मे अति मोद मान ।
प्रगटाई अपनी ऋद्धि सिद्धि, हो गई देह की विपुल वृद्धि ।।
दो पग मे नापा जग समस्त, हो गया भूप बलि अस्त-व्यस्त ।
पग एक और दो भूमि दान, बोले बलि से करुणानिधान ।।
नतमस्तक बलि ने कहा अन्य, है भूमि न मुझ पर हे अनन्य ।
रख ले पग मुझ पर एक नाथ, मेरी हो जाये पूर्ण बात ।।

कहकर तथास्तु पग दिया आप, सह सका न बलि वह भार-ताप।
बोला तुरन्त ही कर विलाप, करदे अब मुझको क्षमा आप ॥
मैं हू दोषी मैं हू अज्ञान, मैंने अपराध किया महान।
ये दुखित किये जो साधु सन्त, अब करो क्षमा हे दयावन्त ॥
तब की मुनिवर ने दया-दृष्टि, हो उठी गगन से मधुर वृष्टि।
पा गये दग्ध वे साधु-त्राण, जन-जनके पुलकित हुए प्राण ॥
घर घर मे छाया मोद-हास, उत्सव ने पाया नव प्रकाश।
पीड़ित मुनियो का पूर्णमान, रख मधुर दिया आहार दान ॥
युग युग तक इसकी रहे याद, कर-सूत्र बधाया साह्लाद।
बन गया पर्व पावन महान, रक्षाबन्धन सुन्दर निधान ॥
वे विष्णु मुनीश्वर परम सन्त, उनकी गुण-गरिमा का न अन्त।
वे करे शक्ति मुझको प्रदान, 'कुमरेश' प्राप्त हो आत्मज्ञान ॥

घत्ता

श्री मुनि विज्ञानी आतम-ध्यानी, मुक्ति-निशानी सुख-दानी।
भव-ताप विनाशे सुगुण प्रकाशे, उनकी करुणा कल्याणी ॥

ॐ ह्री श्रीविष्णुकुमारमुनये महार्घम्।

दोहा

विष्णुकुमार मुनीश को, जो पूजे धर प्रीत।
वह पावे कुमरेश शिव, और जगत मे जोत ॥

—.०.—

सोलहकारण पूजा

[कविवर द्यानत रायजी]

सोलहकारण भाय तीर्थंकर जे भये।
हरषे इन्द्र अपार मेरु पै ले गए॥
पूजा करि निज धन्य लख्यो बहु चावसौं।
हमहू षोडश कारन भावैं भावसौं॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणानि! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं दर्शनशुद्ध्यादि षोडशकारणानि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ.। ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणानि! अत्र मम सन्निहितानि भव भव वषट्।

कंचन-झारी निरमल नीर पूजो जिनवर गुण गंभीर।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो॥
दरशविशुद्धि भावना भाय सोलह तीर्थंकर-पद दाय।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धि-विनयसम्पन्नता-शीलव्रतेष्वनतिचाराभीक्ष्ण-ज्ञानोपयोग संवेग-शक्तितस्त्याग-तपसी-साधुसमाधि-वैयावृत्यकरणार्हद्-भक्तिआचार्यभक्ति-बहुश्रुतभक्ति-प्रवचनभक्ति - आवश्यकापरिहाणि-मार्गप्रभावना- प्रवचनवात्सल्येतितीर्थंकरत्वकारणेभ्योजन्मजरामृत्युवि-नाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन घसौं कपूर मिलाय पूजो श्री जिनवर के पाय।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरुहो ॥दरश०॥ चन्दनं॥

तंदुल धवल सुगंध अनूप पूजौं जिनवर तिहु जग भूप।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ॥दरश०॥ अक्षतान्
फूल सुगंध मधुप-गुंजार पूजौं जिनवर जग आधार।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ॥दरश० ॥पुष्प ॥
सद नेवज बहुबिधि पकवान पूजौं श्रीजिनवर गुणखान।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ॥दरश०। नवेद्य
दीपक-ज्योति तिमिर छयकार पूजूं श्रीजिन केवलाधार।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ॥दरश०॥ दीप।
अगर कपूर गंध शुभ खेय श्री जिनवर आगे महकेय।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ॥दरश० ॥ धूप ॥
श्री फल आदि बहुत फलसार पूजौं जिन वांछित दातार।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो॥
दरशविशुद्धि भावना भाय सोलह तीर्थंकर पद दाय।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ॥फल०॥
जल फल आठो दरब चढाय 'द्यानत' वरत करो मनलाय।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ॥दरश०॥अर्घं०

जयमाला

षोडश कारण गुण करै, हरै चतुरगति-बास।
पाप पुण्य सब नाश के, ज्ञान भान परकाश॥

चौपाई १६ मात्रा

दरशविशुद्धि धरे जो कोई, ताको आवागमन न होई।
विनय महाधारे जो प्राणी, शिव-वनिता की सखी बखानी॥
शील सदा दिढ जो नर पालै, सो औरन को आपद टालै।
ज्ञानाभ्यास करै मन माही, ताके मोह-महातम नाही॥

जो संवेग-भाव विसतार, सुरग-मुकति-पद आप निहारै।
दान देय मन हरष विशेखै, इह भव जस परभव सुख देखै॥
जो तप तपै खपे अभिलाषा, चूरे करम-शिखर गुरु भाषा।
साधु-समाधि सदा मन लावै, तिहु जग भोग भोगि शिव जावै॥
निशि-दिन वैयावृत्य करैया, सो निहचै भव नीर तिरैया।
जो अरहत-भगत मन आनै, सो जन विषय कषाय न जानै॥
जो आचरज-भगति करै है, सो निर्मल आचार धरै है।
बहु श्रुतवत-भगति जो करई, सो नर सपूरन श्रुत धरई॥
प्रवचन भगति करै जो ज्ञाता, लहै ज्ञान परमानन्द दाता।
षट् आवश्यक काल जो साधै, सो ही रत्न-त्रय आराधै।
धरम प्रभाव करै जे ज्ञानी, तिन-शिव मारग रीति पिछानी।
वत्सल अग सदा जो ध्यावै, सो तीर्थंकर पदवी पावै॥
ॐ ह्री दर्शनविशुद्धयादिशोडषकारणेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामी०

दोहा

एही सोलह भावना, सहित धरै व्रत जोय।
देव-इन्द्र-नर-वद्य-पद, 'द्यानत' शिव पद होय॥

[इत्याशीर्वाद]

पंचमेरु पूजा

[कविवर द्यानतराय जी]

गीता छन्द

तीर्थंकरो के न्हवन--जलतै भये तीरथ शर्मदा,
तातै प्रदच्छन देत सुर-गन पचमेरुन की सदा।

द्वो जलधि ढाई द्वीप मे सब गनत-मूल विराजही,

पूजौ असी जिनधाम-प्रतिमा होहि सुख दुख भाजही ॥

ॐ ह्री पचमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयस्थजिनप्रतिमासमूह ! अत्रावतरावतर सवौषट् । ॐ ह्री पचमेरुसम्बन्धिजिनचत्यालयस्थजिनप्रतिमासमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ । ॐ ह्री पचमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयस्थजिनप्रतिमासमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

चौपाई आंचलीबद्ध

सीतल मिष्ट-सुवास मिलाय, जलसो पूजौ श्रीजिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥
पाचो मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमा को करौ प्रनाम ।
महासुख होय देखे नाथ परम सुख होय ॥टेक॥

ॐ ह्री सुदर्शन-विजय अचल-मन्दिर-विद्युन्मालिपंचमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो जल निर्वपामीति स्वाहा ।

जल केशर करपूर मिलाय गधसो पूजौं श्रीजिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥पाँचो०॥चन्दन ।
अमल अखड सुगध सुहाय, अच्छत सौं पूजौं जिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥पाँचो०॥ अक्षतान् ।
वरन अनेक रहे महकाय, फूल सो पूजौं श्रीजिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥पाँचो० ॥ पुष्पं ।
मन-वाछित बहु तुरत बनाय, चरुसो पूजौं श्रीजिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥पाँचो०॥ नैवेद्य ।
तम-हर उज्वल ज्योति जगाय, दीपसो पूजौं श्रीजिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥

पाँचो मेरु असी जिन धाम, सब प्रतिमा को करो प्रनाम।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख हाय ।।
ॐ ह्री पचमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो दीप निर्व०

खेऊ अगर अमल अधिकाय, धूपसो पूजौ श्रीजिनराय।
महासुख होय, देख नाथ परम सुख होय ।।धूप।।
सुरस सुवर्ण सुगध सुभाय, फलसो पूजौ श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे परम सुख हाय ।।पाचो०।।फल।
आठ दरबमय अरघ बनाय, 'द्यानत' पूजौ श्रीजिनराय
महासुख होय देखे नाथ परम सुख होय।।पाचो०।। अर्घ।

जयमाला

प्रथम सुदर्शन-स्वामि, विजय अचल मदर कहा।
विद्युन्माली नाम, पच मेरु जग मे प्रगट ।।१।।

वेसरी छन्द

प्रथम सुदर्शन मेरु विराजै, भद्रशाल वन भूपर छाजै।
चैत्यालय चारो सुखकारी, मन वच तन बदना हमारी ।।२।।
ऊपर पच-शतकपर सोहै, नदन वन देखत मन मोहै।
चैत्यालय चारो सुखकारी, मन वचतन बदना हमारी ।।३।।
साढे बासठ सहस ऊचाई, वन सुमनस शोभै अधिकाई।
चैत्यालय चारो सुखकारी, मनवचतन बदना हमारी ।।४।।
ऊचा जोजन सहस छत्तीस, पाडुकवन सोहै गिरि सीस।
चैत्यालय चारो सुखकारी, मनवचतन बदना हमारी ।।५।।

चारो मेरु समान बखाने, भूपर भद्रसाल चहु जाने।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मनवचतन बदना हमारी ॥६॥
ऊँचे पाँच शतक पर भाखे, चारो नन्दनवन अभिलाखे।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मनवचतन बदना हमारी ॥७॥
साढ़े पचपन सहस उतगा, वन सौमनस चार बहुरगा।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मनबचतन बदना हमारी ॥८॥
उच्च अठाइस सहस बताये, पाडुक चारो वन शुभ गाये।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मनबचतन बन्दना हमारी ॥९॥
सुर नर चारन बन्दन आवै, सो शोभा हम किह मुख गावै।
चैत्यालय अस्सी सुखकारी, मनवचतन बन्दना हमारी ॥१०॥

दोहा

पचमेरु की आरती, पढै सुनै जो कोय।
'द्यानत' फल जानै प्रभू, तुरत महासुख होय ॥११॥

ॐ ह्री पचमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अर्घं निर्व०

[इत्याशीर्वाद]

नन्दीश्वरद्वीप-पूजा

[कविवर द्यानतराय जी]

सरब पर्व मे बडो अठाई परव है।
नदीश्वर सुर जांहि लेय वसु दरव है॥
हमे सकति सो नांहि इहाँ करि थापना।
पूजे जिनगृह-प्रतिमा है हित आपना॥

ॐ ह्री श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्वि पचाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमासमूह ! अत्र अवतर अवतर सवौषट्। ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे द्विपचाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमासमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ। ॐ ह्री श्रीनन्दीश्वरद्वीपे द्विपचाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमासमूह ! अत्र मम सन्निहितोभव भव वषट्।

कचन-मणि-मय-भृङ्गार, तीरथ-नीर भरा।
तिहु धार दई निरवार, जामन मरन जरा॥
नदीश्वर-श्रीजिन-धाम बावन पुज करो।
वसु दिन प्रतिमा अभिराम, आनद भाव धरो॥

ॐ ह्री श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणदिक्षु द्विपचाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमाभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जल निर्व०।

भव-तप-हर शीतल वास, सो चदन नाही।
प्रभु यह गुन कीज साच आयो तुम ठाही॥नदी०॥चदन०
उत्तम अक्षत जिनराज, पुञ्ज धरे सोहै।
सब जीते अक्ष-समाज, तुम सम अरु को है॥नदो०॥अक्षतान्
तुम काम विनाशक देव, ध्याऊ फूलनसो।
लहु शील-लक्ष्मी एव, छूटो सूलनसों॥नदी०॥पुष्प०
नेवज इद्रिय-बलकार, सो तुमने चूरा।
चरु तुम ढिग सोहै सार, अचरज है पूरा॥नदी०॥नैवेद्य०
दीपक की ज्योति-प्रकाश, तुभ तन माहि लसै।
टूटै करमन की रास, ज्ञान-कणी दरसै॥नदी०॥दीप०
कृष्णागरु-धूप-सुवास, दश-दिशि नारि वरै।
अति हरष-भाव परकाश, मानो नृत्य करै॥नदी०॥धूप०
बहुविधि फल ले तिहुकाल, आनन्द राचत हैं।
तुम शिव-फल देहु दयाल, तुहि हम जाचत हैं॥नदी०॥फल०
यह अरघ कियो निज-हेत, तुमको अरपतु हो।
'द्यानत' कीजो शिव-खेत, भूमि समपतु हो॥नदी०॥अर्घं०

जयमाला

दोहा

कार्तिक फागुन साढके, अत आठ दिन माहि ।
नदीश्वर सुर जात है, हम पूजै इह ठाहिं ।।१।।
एकसौ त्रेसठ कोडि, जोजन महा ।
लाख चौरासिया एक दिशा मे लहा ।।
आठमो दीप नदीश्वर भास्वर ।
भौन बावन्न प्रतिमा नमो सुखकर ।।२।।टेक।।
चार दिशि चार अजनगिरी राजही ।
सहस चौरासिया एक दिश छाजहीं ।।
ढोलसम गोल ऊपर तले सुदर ।।भौन०।।३।।
एक इक चार दिशि चार शुभ बावरी ।
एक इक लाख जोजन अमल-जल भरी ।।
चहुं दिशा चार बन लाख जोजन वर ।
भौन बावन्न प्रतिमा नमो सुखकर ।।४।।
सोल वापीन मधि सोल गिरि दधिमुख ।
सहस दश महा जोजन लखत ही सुख ।।
बावरी कौन दो माहि दो रति कर ।।भौन०।।५।।
शैल बत्तीस इक सहस जोजन कहे ।
चार सोलै मिलै सर्व बावन लहे ।।
एक इक सीस पर एक जिनमदिर ।।भौन० ।।६।
बिब अठ एक सौ रतनमयि सोहही ।
देव देवी सरव नयन मन मोहहीं ।।
पाचसै धनुष तन पद्म-आसन पर ।।भौन० ।।७।।
लाल नख मुख नयन श्याम अरु श्वेत हैं ।

स्याम-रग भौंह सिर-केशछवि देत हैं ।।
वचन बोलत मनो हँसत कालुष हर ।।भौन० ।।८।।
कोटि-शशि-भान-दुति-तेज छिप जात है।
महा-वैराग-परिणाम ठहरात है ।
वयन नहि कहै लखि होत सम्यक्धर ।।भौन० ।।९।।

सोरठा

नदीश्वर-जिन-धाम, प्रतिमा महिमा को कहै।
'द्यानत' लीनो नाम, यही भगति शिव-सुख करै।।

ॐ ह्री श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणदिक्षु द्विपचाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमाभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

[इत्याशीर्वाद । पुष्पाञ्जलि क्षिपामि]

दशलक्षणधर्म-पूजा

[कविवर द्यानतराय जी]

अडिल्ल

उत्तम छिमा मारदव आरजव भाव हैं,
सत्य सौच सयम तप त्याग उपाव हैं।
आकिचन ब्रह्मचरज धरम दश सार है,
चहुगति-दुखतै काढि मुकति करतार है।।

ॐ ह्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अवतर् अवतर् सवौषट्। ॐ ह्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ.। ॐ ह्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

सोरठा

हेमाचलकी धार, मुनि-चित सम शीतल सुरभि ।
भव-आताप निवार, दस-लक्षण पूजौ सदा ।।

ॐ ह्री उत्तमक्षमामार्दवार्जवसत्यशौचसयमतपस्त्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्यति दशलक्षणधर्माय जल निर्वपामोति स्वाहा ।

चन्दन केशर गार, होय सुवास दशो दिशा ।
भव-आताप निवार, दश लच्छन पूजौ सदा ।। चदन०

अमल अखडित सार, तदुल चन्द्र समान शुभ ।
भव-आताप निवार, दश लच्छन पूजौ सदा ।। अक्षतान्०

फूल अनेक प्रकार, महके ऊरध-लोकलो ।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा ।। पुष्प०

नेवज विविध निहार, उत्तम षट-रस-सजुगत ।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौ सदा ।। नैवेद्य०

बाति कपूर सुधार, दीपक-जोति सुहावनी ।
भव-आताप निवार, दस-लचचन पूजौ सदा ।। दीप०

अगर धूप विस्तार, फैले सर्व सुगधता ।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौ सदा ।। धूप०

फलको जाति अपार, घ्रान-नयन-मन-मोहने ।
भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौ सदा ।। फल०

आठो दरब सवार, 'द्यानत' अधिक उछाहसो ।
भव आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा ।। अर्घ०

अंग पूजा

सोरठा

पीडै दुष्ट अनेक, बाँध मार बहुविधि करै ।
धरिये छिमा विवेक, कोप न कीजै पीतमा ।।

उत्तम छिमा गहो रे भाई, इह भव जस पर-भव सुखदाई ।
गाली सुनि मन खेद न आनो, गुनको औगुन कहै अयानो ।।
कहि है अयानो वस्तु छीनै, बाँध मार बहुविधि करै ।
घरतै निकारै तन विदारै, बैर जो न तहाँ धरै ।।
तै करम पूरब किये खोटे, सहै क्यो नहि जीयरा ।
अति क्रोध-अगनि बुझाय प्रानी, साम्य जल ले सीयरा ।।

ॐ ह्री उत्तमक्षमाधर्माङ्गाय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।

मान महाविषरूप, करहि नीच-गति जगत मे ।
कोमल सुधा अनूप, सुख पावै प्रानी सदा ।।

उत्तम मार्दव-गुन मन माना, मान करनको कौन ठिकाना ।
वस्यो निगोद माहितै आया, दमरी रूकन भाग बिकाया ।।
रूकन बिकाया भाग-वशतै, देव इकइद्री भया ।
उत्तम मुआ चाडाल हूआ, भूप कीडो मे गया ।।
जीतव्य जोवन धन गुमान, कहा करै जल-बुदबुदा ।
करि विनय बहु-गुन बडे जनकी, ज्ञान का पावै उदा ।।

ॐ ह्री उत्तममार्दवधर्माङ्गाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

कपट न कीज कोय, चोरन के पुर ना बसै ।
सरल सुभावो होय, ताके घर बहु सपदा ।।

उत्तम आर्जव-रीति बखानी, रचक दगा बहुत दुखदानी ।
मनमे हो सो वचन उचरिये, वचन होय सो तनसौ करिये ।।
करिये सरल तिहु जोग अपने, देख निरमल आरसो ।
मुख करै जैसा लखै तैसा, कपट-प्रीति अगारसो ।।

नहि लहै लछमी अधिक छल करि, करम-बध-विशषता ।
भय त्यागि दूध बिलाव पीवै, आपदा नहि देखता ॥
ॐ ह्री उत्तमआर्जवधर्माङ्गाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

कठिन वचन मति बोल, पर-निदा अरु झूठ तज ।
साच जवाहर खोल, सतवादी जगमे सुखी ॥

उत्तम सत्य वरत पालोजै, पर-विश्वासघात नहि कीजै ।
साँचे झूठे मानुस देखो, आपन पूत स्वपास न पेखो ॥
पेखो तिहायत पुरुष साचे को दरव सब दीजिये ।
मुनिराज-श्रावक की प्रतिष्ठा साँच गुण लख लीजिये ॥
ऊँचे सिहासन बैठि वसु नृप, धरम का भूपति भया ।
बच झूठसेती नरक पहुचा, सुरग मे नारद गया ॥
ॐ ह्री उत्तमसत्यधर्माङ्गाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

धरि हिरदै सताप, करहु तपस्या देहसो ।
शौच सदा निरदोष, धरम बडो ससार मे ॥

उत्तम शौच सर्व जग जाना, लोभ पाप को बाप बखाना ।
आशा-पास महा दुखदानी, सुख पावै सतोषी प्रानी ॥
प्रानी सदा शुचि शील जप तप, ज्ञान ध्यान प्रभावतै ।
नित गग जमुन समुद्र न्हाये, अशुचि-दोष सुभावतै ॥
ऊपर अमल मल भर्यो भीतर, कौन विधि घट शुचि कहै ।
बहु देह मैली सुगुन-थैली, शौच गुन साधू लहै ॥
ॐ ह्री उत्तमशौचधर्माङ्गाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

काय छहो प्रतिपाल, पचेद्री मन वश करो ।
सजम-रतन सभाल, विषय चोर बहु फिरत हैं ॥

उत्तम सजम गहु मन मेरे, भव-भवके भाजै अघ तेरे ।
सुरग-नरक-पशुगति मे नाही, आलस-हरन करन सुख ठाही ॥

ठाही पृथ्वी जल आग मारुत, रूख त्रस करुना धरौ।
सपरसन रसना घ्रान नैना, कान मन सब वश करो॥
जिस बिना नहि जिनराज सीझे, तू रुल्यो जग कीच मे।
इक घरी मत बिसरो नित, आव जम-मुख बीच मे॥
ॐ ह्री उत्तमसयमधर्माङ्गाय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

तप चाहै सुरराय, करम - सिखर को वज्र है।
द्वादशविधि सुखदाय, क्यो न करै निज सकति सम॥

उत्तम तप सब माहि बखाना, करम-शैल को वज्र-समाना।
वस्यो अनादि-निगोद-मझारा, भू-विकलत्रय-पशु - तनधारा॥
धारा मनुष तन महादुर्लभ, सुकुल आव निरोगता।
श्रीजैनवानी तत्त्वज्ञानी, भई विषय-पयोगता॥
अति महा दुरलभ त्याग विषय, कषाय जो तप आदरै।
नर-भव अनूपम कनक घर पर, मणिमयी कलश धरै।
ॐ ह्री उत्तमतपोधर्माङ्गाय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

दान चार परकार, चार सघ को दीजिए।
धन बिजुली उनहार, नर-भव-लाहो लीजिए॥

उत्तम त्याग कह्यो जग सारा, औषध शास्त्र अभय आहारा।
निहचै राग-द्वेष निरवारै, ज्ञाता दोनो दान सभारै॥
दोनो सभारे कूप - जलसम, दरब घर मे परिनया।
निज हाथ दीजे साथ लीजे, खाया खोया बह गया॥
धनि साध शास्त्र अभय-दिवैया, त्याग राग विरोध को।
बिन दान श्रावक साध दोनो, लहै नाही बोध को॥
ॐ ह्री उत्तमत्यागधर्माङ्गाय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

परिग्रह चौबीस भेद, त्याग करै मुनिराज जी।
तिसना भाव उछद, घटती जान घटाइए॥

उत्तम आकिंचन गुण जानो, परिग्रह - चिंता दुख ही मानो ।
फाँस तनक सी तन मे साले, चाह लगोटी की दुख भाले ।।
भाले न समता सुख कभी नर, बिना मुनि - मुद्रा धरैं ।
धनि नगन पर तन-नगन ठाढे, सुर असुर पायनि परैं ।।
घर माहिं तिसना जो घटावै, रुचि नही ससारसौं ।
बहु धन बुरा हू भला कहिये, लीन पर-उपगार सौं ।।
ॐ ह्री उत्तमाकिंचन्यधर्माङ्गाय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।

शील-बाड नौ राख, ब्रह्म-भाव अतर लखो ।
करि दोनो अभिलाख, करहु सफल नर-भव सदा ।।

उत्तम ब्रह्मचर्य मन आनो, माता बहिन सुता पहिचानो ।
सहै बान-वरषा बहु सूरे, टिकै न नैन-बान लखि कूरे ।।
कूरे तिया के अशुचि तनमे, काम - रोगी रति करै ।
बहु मृतक सडहि मसान माही, काग ज्यो चोचै भरैं ।।
ससार मे विष - बेल नारी, तजि गये जोगीश्वरा ।
'द्यानत' धरम दश पैडि चढिकै, शिव-महल मे पग धरा ।।
ॐ ह्री उत्तमब्रह्मचर्यधर्माङ्गाय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।

समुच्चय-जयमाला

दोहा

दश लच्छन बदो सदा, मन-वाछित फलदाय ।
कहो आरती भारती, हम पर होहु सहाय ।।

वेसरी छन्द

उत्तम छिमा जहाँ मन होई, अतर-बाहिर शत्रु न कोई ।
उत्तम मार्दव विनय प्रकासै, नाना भेद ज्ञान सब भासै ।।

उत्तम आर्जव कपट मिटावै, दुरगति त्यागि सुगति उपजावै ।
उत्तम सत्य-वचन मुख बोलै, सो प्रानी ससार न डोलै ।।
उत्तम शौच लोभ-परिहारी, सतोषी गुण-रतन-भडारी ।
उत्तम सयम पालै ज्ञाता, नर-भव सफल करै ले साता ।।
उत्तम तप निरवाछित पालै, सो नर करम-शत्रु को टालै ।
उत्तम त्याग करै जो कोई, भोगभूमि-सुर-शिवसुख होई ।।
उत्तम आकिंचन व्रत धारै, परम समाधि दशा विसतारै ।
उत्तम ब्रह्मचर्य मन लावै, नर-सुर सहित मुकति-फल पावै ।।

दोहा

करै करम की निरजरा, भव पीजरा विनाश ।
अजर अमर पदको लहै, 'द्यानत' सुखकी राश ।।

ॐ ह्री उत्तमक्षमामार्दवार्जवशौचसत्यसयमतपत्यागाकिचन्यब्रह्मचर्यदशलक्षणधर्मेभ्य पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

रत्नत्रय-पूजा

दोहा

चहुगति फनि विषहरन मणि, दुखपावक जलधार ।
शिवसुख सुधा-सरोवरी, सम्यक्त्रयी निहार ।।१।।

ॐ ह्री सम्यग्रत्नत्रय ! अत्र अवतर अवतर ! सवौषट् । ॐ ह्री सम्यग्रत्नत्रय ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठ: ठ: । ॐ ह्री सम्यग्रत्नत्रय ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

सोरठा

क्षीरोदधि उनहार, उज्ज्वल जल अति सोहनो ।
जन्मरोग निरबार, सम्यक्रत्नत्रय भजू ।१।।

ॐ ह्री सम्यग्रत्नत्रयाय जन्मरोगविनाशनाय जल निर्वपामीति स्वाहा

चदन केशर गारि, परिमल महासुरगमय ।। जन्म० ।। चदन०
तदुल अमल चितार, वासमती सुखदास के ।। जन्म० ।। अक्षतान्०
महकें फूल अपार, अलि गुजे ज्यो थुति करै ।।जन्म० ।। पुष्प०
लाडू बहु विस्तार, चीकन मिष्ट सुगधयुत ।। जन्म० ।। नैवेद्य०
दीप रतनमयसार, जोत प्रकाशै जगत मे ।। जन्म० ।। दीप०
धूप सुवास विथार, चदन अगर कपूर को ।। जन्म० ।। धूप०
फल शोभा अधिकार, लोग छुहारे जायफल ।। जन्म० ।। फल०
आठ दरब निरधार, उत्तमसो उत्तम लिए ।। जन्म० ।। अर्घ०

सम्यक्दर्शनज्ञान, व्रत शिवमग तीनो मयी ।
पार उतारन जान, 'द्यानत' पूजो व्रतसहित ।।१०।।

दर्शनपूजा

दोहा

सिद्ध अष्टगुणमय प्रगट, मुक्तजीव सोपान ।
जिहबिन ज्ञानचरित अफल, सम्यक्दर्श प्रधान ।।१।।

ॐ ह्रीं अष्टागसम्यग्दर्शन ! अवतर अवतर ! सवौषट् । ॐ ह्री अष्टागसम्यग्दर्शन ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठ· ठ । ॐ ह्री अष्टाँगसम्यग्दर्शन ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

नीर सुगंध अपार, त्रिषा हरै मल छय करे।
सम्यक्दर्शनसार, आठ अंग पूजौं सदा ॥१॥

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय जल निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

जल केसर घनसार, ताप हरै शीतल करै ॥ सम्य० ॥ चंदन०
अछत अनूप निहार, दारिद नाशै सुख भरै ॥ सम्य० ॥ अक्षतान्०
पहुप सुवास उदार, खेद हरै मन शुचि करै ॥ सम्य० ॥ पुष्प०
नेवज विविधप्रकार, छुधा हरै थिरता करै ॥ सम्य० ॥ नैवे०
दीपज्योति तमहार, घटपट परकाशै महा ॥ सम्य० ॥ दीप०
धूप घ्रान सुखकार, रोग बिघन जड़ता हरै ॥ सम्य० ॥धूप०
श्रीफल आदि विथार, निहचै सुरशिव फल करे ॥ सम्य० ॥ फल०
जल गंधाक्षत चारु, दीप धूप फलफूल चरु ॥ सम्य० ॥ अर्घं०

अथ जयमाला

दोहा

आप आप निहचै लखै, तत्त्वप्रीति व्यौहार।
रहितदोष पच्चीस है, सहित अष्ट गुन सार ॥१॥

चौपाई-मिश्रित गीताछन्द

सम्यक्दरशन रतन गहीजै। जिनवच मे संदेह न कीजै।
इह भव विभव महादुखदानी। परभवभोग चहै मत प्रानी।
प्रानी गिलान न करि अशुचि लखि, धरमगुरुप्रभु परखिये।
परदोष ढँकिए धरम डिगतेको, सुथिर कर हरषिये ॥
चहुसंघको वात्सल्य कीजे, धरम की परभावना।

गुन आठसो गुन आठ लहिके, इहाँ फेर न आवना ॥२॥

ॐ ह्री अष्टांगसहितपंचविंशतिदोषरहिताय सम्यग्दर्शनाय पूर्णार्घं०

ज्ञान पूजा

दोहा

पंचभेद जाके प्रगट, ज्ञेय प्रकाशन भान।
मोह-तपन-हर-चन्द्रमा, सोई सम्यक्ज्ञान ॥१॥

ॐ ह्री अष्टविधसम्यग्ज्ञान ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्। ॐ ह्री अष्टविधसम्यग्ज्ञान ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठः। ॐ ह्री अष्टविध-सम्यग्ज्ञान अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

नीरसुगंध अपार, त्रिषा हरै मल छय करै।
सम्यक्ज्ञान विचार, आठभेद पूजौ सदा ॥१॥

ॐ ह्री अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

जलकेसर घनसार, ताप हरै शीतल करै ॥ सम्य० ॥ चन्दन०

अछत अनूप निहार, दारिद नाशै सुख भरै ॥ सम्य० ॥ अक्षतान्०

पहुपसुवास उदार, खेद हरै मन शुचि करै ॥ सम्य० ॥ पुष्पं०

नेवज विविधप्रकार, छुधा हरै थिरता करै ॥ सम्य० ॥ नैवेद्यं०

दीप ज्योति तमहार, घटपट परकाशै महा ॥ सम्य० ॥ दीपं०

धूप घ्रानसुखकार, रोग विघन जडता हरै ॥ सम्य० ॥ धूपं०

श्रीफल आदि विथार, निहचै सुरशिवफल करै ॥ सम्य० ॥ फलं०

जल गंधाक्षत चारु, दीप धूप फल फूल चरु ॥ सम्य० ॥ अर्घं०

अथ जयमाला

दोहा

आप आप जानै नियत, ग्रंथपठन व्योहार।
संशय विभ्रम मोह बिन, अष्टभंग गुणकार ॥

चौपाई-मिश्रित गीताछन्द

सम्यक्ज्ञान रतन मन भाया, आगम तीजा नैन बताया।
अच्छरशुद्ध अरथ पहिचानो, अच्छर अरथ उभय सग जानो॥
जानो सुकालपठन जिनागम, नाम गुरु न छिपाइयै।
तपरीति गहि बहु मान देकै, विनयगुन चित लाइये॥
ये आठ भेद करम उछेदक, ज्ञान-दर्पन देखना।
इस ज्ञानही सो भरत सीझा, और सब पटपेखना॥२॥

ॐ ह्री अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय पूर्णार्घ निर्वपामीति स्वाहा॥

चारित्र पूजा

दोहा

विषयरोग औषध महा, दवकषाय जलधार।
तीर्थंकर जाको धरै, सम्यक्चारितसार॥१॥

ॐ ह्री त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र! अत्र अवतर अवतर सवौषट्। ॐ ह्री त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ। ॐ ह्री त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र! अत्र मम सन्निहितो भव२ वषट्।

नीर सुगध अपार, त्रिषा हरै मल छय करै।
सम्यकचारितसार, तेरहविध पूजौ सदा॥१॥

ॐ ह्री त्रयोदशत्रिधसम्यक्चारित्राय जल निर्वपामीति स्वाहा।

जल केशर घनसार, ताप हरै शीतल करै। सम्य०॥ चदन०
अछत अनूप निहार, दारिद नाशै सुख भरै॥ सम्य०॥ अक्षतान्०
पहुपसुवास उदार, खेद हरै मन शुचि करै॥ सम्य०॥ पुष्प०
नेवज विविध प्रकार, छुधा हरै थिरता करै॥ सम्य०॥ नवेद्य०
दीपजोति तमहार, घटपट परकाशै महा॥ सम्य०॥ दीप०

धूप घ्रान सुखकार, राग विघन जडता हरै ॥ सम्य० ॥ धूप०
श्रीफल आदि विथार, निहचै सुरशिवफल करै ॥ सम्य० ॥ फल०
जल गंधाक्षत चारु, दीप धूप फल फूल चरु ॥ सम्य० ॥ अर्घ०

अथ जयमाला

दोहा

आप आप थिर नियत नय, तपसंजम व्यौहार।
स्वपर दया दोनो लिए, तेरहविधि दुखहार ॥१॥

चौपाई-मिश्रित गीताछंद

सम्यकचारित रतन संभालौ, पांच पाप तजिकै व्रत पालौ।
पंचसमिति त्रयगुपति गहीजै, नरभव सफल करहु तन छीजै ॥
छीजै सदा तन को जतन यह, एक संजम पालिए।
बहु रुल्या नरक निगोद मांही, विषयकषायनि टालिए।
शुभकरम जोग सुघाट आया, पार हो दिन जात है।
'द्यानत' धरम की नाव बैठो, शिवपुरी कुशलात है ॥२॥
ॐ ह्री त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ समुच्चय जयमाला

दोहा

सम्यक्दर्शन-ज्ञान-व्रत, इन बिन मुकति न होय।
अंध पंगु अरु आलसी, जुदे जलैं दव-लोय ॥१॥

चौपाई

जापै ध्यान सुथिर बन आवै। ताके करमबंध कट जावैं।
तासों शिवतिय प्रीति बढावै। जो सम्यक्रत्नत्रय ध्यावै ॥२॥

ताको चहुगयिके दुख नाही। सो न परै भवसागर माही।
जनमजरामृत दोष मिटावैं। जो सम्यक्रत्नत्रय ध्यावैं ।।३।।
सोई दशलच्छन को साधै। सो सोलह कारण आराधै।
सो परमातम-पद उपजावैं। जो सम्यक्रत्नत्रय ध्यावै ।।४।।
सोई शक्र चक्रि पद लेई। तीन लोक के सुख विलसेई।
सो रागादिक भाव बहावै। जो सम्यक्रत्नत्रय ध्यावै ।।५।।
सोई लोकालोक निहारै। परमानद दशा विस्तारै।
आप तिरै औरन तिरवावैं। जो सम्यक्रत्नत्रय ध्यावै ।।६।।

दोहा

एकस्वरूपप्रकाश निज, वचन कह्यो नहि जाय।
तीन भेद व्योहार सब, द्यानत को सुखदाय ।।

ॐ ह्री सम्यग्दर्शनसम्यग्ज्ञानसम्यक्चारित्राय महार्घ निर्वपामीति०

क्षमावणी पूजा

अङ्ग क्षमा जिन धर्म तनो दृढ मूल लखानो।
सम्यक रतन सभाल हृदय मे निश्चय जानो।
तज मिथ्या विष मूल और चित निर्मल ठानो।
जिन धर्मी सो प्रीति करो सब पागित भानो ।।
रत्नत्रय गहि भविक जन, जिन आज्ञा सम चालिये।
निश्चय करि आराधना, करम राशि को जालिए ।।

ॐ ह्री सम्यग्रत्नत्रयाय नम अत्रावतरावतर सवौषट् आह्वानन। अत्र तिष्ठ २ ठ ठ स्थापन ।। अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट् सन्निधिकरण ।।

क्षमा गहो उर जीवडा जिनवर वचन गहाय ॥टेक॥
नीर सुगध सुहावनो पदम द्रह को लाय।
जन्म रोग निर्वारिये सम्यक्रतन लहाय ॥क्षमा०॥जिन०

ॐ ह्रीं नि शकितागाय ॥१॥ निकाक्षिताागाय ॥२॥ निर्विचिकित्सितागाय ॥३॥ निर्मूढतागाय ॥४॥ उपगूहनागाय ॥५॥ सुस्थितिकरणागाय ॥६॥ वात्सल्यागाय ॥७॥ प्रभावनागाय ॥८॥ जन्मजरामृत्यु विनाशनाय सम्यग्दर्शनाय जल ॥ ॐ ह्री व्यजन व्यजिताय ॥१॥ अर्थ समग्राय ॥२॥ तदुभय समग्राय ॥३॥ कालाध्ययनाय ॥४॥ उपध्योपहिताय ॥५॥ विनय लब्धिप्रभावनाय ॥६॥ गुरबाधपन्हव ॥७॥ बहुमानोन्मान ॥८॥ अष्टाग सम्यग्ज्ञानाय जल ॥ ॐ ह्री अहिंसा व्रताय ॥१॥ सत्य व्रताय ॥२॥ अचौर्यव्रताय ॥३॥ ब्रह्मचर्यव्रताय ॥४॥ अपरिग्रह महाव्रताय ॥५॥ मनो गुप्तये ॥६॥ वचन गुप्तये ॥७। काय गुप्तये ॥८॥ ईर्या समिति ॥९॥ भाषा समिति ॥१०॥ एषणा समिति ॥११॥ आदान निक्षेपणसमिति ॥१२॥ प्रतिष्ठापना समिति ॥१३॥ त्रयोदशविध सम्यक् चारित्राय नमः जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय २९ अगेभ्यो जल ॥

केसर चदन लीजिए, सग कपूर मिलाय।
अलि पकति आवत घनी, वास सुगध सुहाय ॥
क्षमा गहो उर जीवडा जिनवर० ॥ चदन० ॥२॥

शालि अखडित लीजिए, कचन थाल भराय।
जिनपद पूजौं भावसौ, अक्षय पद को पाय ॥ क्षमा० ॥ अक्षत०

पारिजात अरु केतकी, पहुप सुगध गुलाब।
श्रीजिन चरण सरोज कू, पूजू हरष चितचाव ॥
क्षमा गहो उर जीवडा जिनवर० ॥ पुष्प० ॥४॥

शक्कर घृत सुरभी तनो, व्यजन षट्रस स्वाद ।
जिनके निकट चढायकर हिरदे धरि आह्लाद ॥
क्षमा गहो उर जीवडा जिनवर० ॥ नैवेद्य० ॥५

हाटक मय दीपक रचो, बाति कपूर सुधार ।
शोधक घृत कर पूजिए, मोह तिमिर निर्वार ।
क्षमा गहो उर जीवडा जिनवर० । दीपम्० ॥६

कृष्णागरु करपूर हो, अथवा दस विधि जान ।
जिन चरणा ढिग खेइये, अष्ट करम की हान ॥
क्षमा गहो उर जीवडा जिनवर० । धूपम्० ॥७

केला अम्ब अनार हो, नारिकेल ले दाख ।
अग्र धरो जिनपद तने, मोक्ष होय जिन भाख ॥
क्षमा गहो उर जीवडा जिनवर० । फलम् ॥८

जलफल आदि मिलायके, अरघ करो हरषाय ।
दुःख जलाजलि दीजिए, श्रीजिन होय सहाय ॥
क्षमा गहो उर जीवडा जिनवर० । अर्घ० ॥९

जयमाला

दोहा

उनतिसअङ्ग की आरती, पढो भविकचितलाय ।
मन वच तन सरधा करो, उत्तम नर भव पाय ॥२॥

चौपाई

जैनधर्म मे शक न आनै, सो निशकित गुण चित ठानै ।
जप तप कर फल बाछै नाही, निःकाक्षित गुण हो जिसमाही ।
पर को देखि गिलानि न आनै, सो तीजा सम्यक् गुण ठानै ।
आन देव को रच न मानो, सो निर्मूढत गुण पहिचानो ॥

पर को औगुण देख जु ढाकै, सो उपगूहन श्री जिनभाखै ।
जैनधर्म ते डिगता देखै, थापै बहुरि थिती कर लेखै ।।४।।
जिनधरमो मो प्रीत निवहिए, गऊ बच्छावत बच्छल कहिए ।
ज्यौ त्यौ जैन उद्योत बढावै, सो प्रभावना अङ्ग कहावै ।।५।।
अष्ट अङ्ग यह पाले जोई, सम्यक् दृष्टी कहिए सोई ।
अब गुण आठ ज्ञान के कहिए, भाखे श्रीजिन मन मे गहिए ।।
व्यञ्जन व्यजित अङ्ग कहीजै, सम्यकज्ञान प्रथम लखलीजै ।
अर्थ सहित शुद्ध शब्द उचारै, दूजा अर्थ समग्रह धार ।।७।।
तदुभय तीजा अङ्ग लखीजै, अक्षर अर्थ सहित जुपढोजै ।
चौथा कालाध्ययन विचारै, पाठ सहित तब बहु फल पावै ।।
षष्टम विनय सुलब्धि सुनोजे, बाणो बहुत विनय सु पढीजै ।।
जापै पढै न लोपै जाई, अङ्ग सप्तम गुरु बाद कहाई ।
गुरु की बहुत बिनय जु करीजै, सा अष्टम अङ्ग धर सुख लीजै ।।
यह आठो अङ्ग ज्ञान बढावै, ज्ञाता मन वच तन कर ध्यावै ।
अब आगे चारित्र सुनोजै, तेरह विधि धर शिव सुख लोज ।।
छहो काय की रक्षा करिहै, सोई अहिंसा व्रत चित धर है ।।
हित मित सत्य वचन मुख कहिए, सो सतबादी केवल लहिए ।
मन वच काय न चोरी करिए, सोई अचौय व्रत चित धरिए ।
मनमथ भय मन रञ्च न आनै, सो मुनि ब्रह्मचर्य तप ठानै ।।
परिग्रह देख न मूछित होई, पच महाव्रत धारक सोई ।
महाव्रत ये पाचो खरे हैं, सब तीर्थंकर इनका करे है ।।
मन मे विकल्प रञ्च न होई, मनागुप्ति मुनि कहिए सोई ।।
बचन अलीक रच नहि भाखै, बचन गुप्ति सो मुनिवर राखै ।
कायोत्सर्ग परीषह सहि है, सो मुनि कायगुप्ति जिन कहि हैं ।
पच समिति अब सुनिए भाई, अर्थ सहित भाखी जिनराई ।।
हाथ चारि जब भूमि निहारै, तब मुनि ईर्या मग पग धारै ।

मिष्ट बचन मुख बोलै सोई, भाषा समिति तास मुनि होई ।।
भोजन छयालिस दूषण टारै, सो मुनि एषण शुद्धि विचारै ।।
देखके पोथी ले अरु धर है, सो आदान निक्षेपन वर है ।।
मल ओ मूत्र एकान्त जु डारै परतिष्ठापन समिति सभारै ।
यह सब अङ्ग उनतीस कहे है, श्रीजिन भाखै गणधर ने गहे हैं ।।
आठ आठ तेरह विधि जानो, दर्शन ज्ञान चारित्र सुठानौ ।।
तातै शिवपुर पहुचा जाई, रत्नत्रय की यह विधि भाई ।।
रतन त्रय पूरण जब होई, क्षिमा क्षिमा करियो सब कोई ।।
चैत माघ भादौ त्रय बारा, क्षिमा क्षिमा हम उर मे धारा ।।

दोहा

यह क्षमा वाणी आरती, पढै सुनै जो कोय ।
कहे मल्ल सरधा करो, मुक्ति श्रीफल होय ।।२२।। महार्घं

सोरठा

दोष न गहिए कोय, गुणगहि पढिए भाव सो ।
भूल चूक जो होय, अर्थ बिचारि जु सोधिए ।।२३।।

[इत्याशीर्वाद]

स्वयम्भू-स्तोत्र

[कविवर द्यानतराय जी]

राजविषै जुगलनि सुख कियो, राज त्याग भुवि शिवपद लियो ।
स्वयबोध स्वयभू भगवान, बदौ आदिनाथ गुणखान ।।
इद्र छीर - सागर - जल लाय, मेरु न्हाये गाय बजाय ।
मदन-विनाशक सुख करतार, बदौ अजित अजित-पदकार ।।

शुकल ध्यान करि करम विनाशि, घाति अघाति सकल दुखराशि।
लह्यो मुकतिपद सुख अविकार, बदौं सम्भव भव-दुख टार॥
माता पच्छिम रयन मँझार, सुपने सोलह देखे सार।
भूप पूछि फल सुनि हरषाय, बदौं अभिनन्दन मन लाय॥
सब कुवादवादी सरदार, जीते स्यादवाद-धुनिधार।
जैन-धरम-परकाशक स्वाम, सुमतिदेव-पद करहु प्रनाम॥
गर्भ अगाऊ धनपति आय, करी नगर शोभा अधिकाय।
बरसे रतन पचदश मास, नमौ पदमप्रभु सुख की रास॥
इद्र फनिंद नरिंद त्रिकाल, बानो सुनि सुनि होहि खुस्याल।
द्वादश सभा ज्ञान-दातार, नमो सुपारसनाथ निहार॥
सुगुन छियालिस है तुम माहिं, दोष अठारह कोऊ नाहिं।
मोह-महातम-नाशक दीप, नमो चद्रप्रभ राख समीप॥
द्वादशविध तप करम विनाश, तेरह भद चरित परकाश।
निज अनिच्छ भवि इच्छकदान, बदौं पहुपदत मन आन॥
भवि-सुखदाय सुरगतै आय, दशविध धरम कह्यो जिनराय।
आप समान सबनि सुख देह, बदौं शीतल धर्म-सनेह॥
समता-सुधा कोप-विष-नाश द्वादशाग वानी परकाश।
चार सघ-आनद-दातार, नमौ श्रियास जिनेश्वर सार॥
रतनत्रय चिर मुकुट विशाल, सभे कठ सुगुन मनि-माल।
मुकित-नार-भरता भगवान, वासपूज्य बदौं धर ध्यान॥
परम समाधि-स्वरूप जिनेश, ज्ञानो ध्यानो हित-उपदेश।
कर्म नाशि शिव सुख-विलसत, बदौं विमलनाथ भगवत॥
अनर बाहिर परिग्रह डारि, परम दिगबर व्रत को धारि।
सर्व जीव-हित-राह दिखाय, नमो अनत वचन मन काय॥
सात तत्त्व पचास्तिकाय, अरथ नवो छ दरब बहु भाय।
लोक अलोक सकल परकाश, बदौं धमनाथ अविनाश॥

पचम चक्रवरति निधि भोग, कामदेव द्वादशम मनोग।
शातिकरन सोलम जिनराय, शातिनाथ बदौ हरखाय ।।
बहु थुति करे हरष नहि होय, निदे दोष गहै नहि कोय।
शीलवान परब्रह्मस्वरूप, बदौ कुन्थुनाथ शिव-भूप ।।
द्वादश गण पूजै सुखदाय, थुति वदना करै अधिकाय।
जाकी निज-थुति कबहु न होय, बदौ अर-जिनवर-पद दोय ।।
पर-भव रतनत्रय-अनुराग, इह भव ब्याह-समय वैराग।
बाल-ब्रह्म - पूरन - व्रत धार, बदौं मल्लिनाथ जिनसार ।।
बिन उपदेश स्वय वैराग, थुति लोकान्त करै पग लाग।
नम सिद्ध कहि सब व्रत लेहिं, बदौ मुनि सुव्रत व्रत देहि ।।
श्रावक विद्यावत निहार, भगति-भाव सो दिया अहार।
बरसी रतन-राशि ततकाल, बदौ नमि प्रभु दीन-दयाल ।।
सब जीवन की बदो छोर, राग-दोष द्वै बधन तोर।
रजमति तजि शिव-तियसो मिले, नेमिनाथ बदो सुख मिले ।।
दैत्य किया उपसर्ग अपार, ध्यान देखि आयो फणधार
गयो कमठ शठ मुख करि श्याम, नमो मेरुसम पारस स्वाम ।।
भव सागर तै जीव अपार, धरम पोत मे धरे निहार।
डूबत काढे दया विचार, वर्धमान बदो बहु बार ।।

दोहा

चौवीसो पद-कमलजुग, बदौ मन-वच-काय।
'द्यानत' पढै सुने सदा, सो प्रभु क्यो न सहाय ।।

महार्घ

गीता छन्द

मैं देव श्री अर्हन्त पूजू, सिद्ध पूजू चावसा।
आचार्य श्री उवझाय पूजू, साधु पूजू भावसा ।।

अर्हन्त-भाषित बैन पूजू, द्वादशाग रचे गनी।
पूजू दिगम्बर गुरुचरन, शिव हेत सब आशा हनी॥
सर्वज्ञभाषित धर्म दशविधि दया-मय पूजूं सदा।
जजि भावना षोडश रतनत्रय जा बिना शिव नहिं कदा॥
त्रैलोक्य के कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय जजू।
पन मेरु नन्दीश्वर जिनालय, खचर सुर पूजित भजू॥
कैलाश श्री सम्मेद श्री गिरनार गिरि पूजू सदा।
चम्पापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा॥
चौबीस श्री जिनराज पूजू बीस क्षेत्र विदेह के।
नामावली इक सहस वसु, जप होय पति शिवगेह के॥

दोहा

जल गधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय।
सर्व पूज्य पद पूजहू बहु विध भक्ति बढाय॥

ॐ ह्री निर्वाणक्षेत्रेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्ति-पाठ

शास्त्रोक्त विधि पूजा महोत्सव सुरपति चक्री करै।
हम सारिख लघुपुरुष कैसे यथाविधि पूजा करै॥
धनक्रिया ज्ञानरहित न जाने रीति पूजन नाथजी।
हम भक्तिवश तुम चरण आगे जोड लीने हाथ जी॥१॥
दुखहरण मगलकरण आशा भरन जिन पूजन सही।
यह चित्त मे सरधान मेरे शक्ति है स्वयमेव ही॥
तुम सारिखे दातार पाये काज लघु जाचू कहा।
मुझ आपसम कर लेहु स्वामी यही इक वाछा महा॥२॥

ससार भीषण विषम वन मे कर्म भिल आतापियो ।
तिसदाहते आकुलित चिरतै शाति थल कहू ना लियो ॥
तुम मिले शातस्वरूप शाति करण समरथ जगपती ।
वसुकर्म मेरे शात कर दो शाति मे पचमगती ॥३॥
जबलो नही शिव लहौ तबलो देहु यह धन पावना ।
सत्सग शुद्धाचरण श्रुत अभ्यास आतम भावना ॥
तुम बिन अनतानत काल गयो रुलत जगजाल मे ।
अब शरण आयो नाथ कर जुग जोर नावत भाल मैं ॥४॥

कर प्रमाण के मानते, गगन नपै किस भत ।
त्यो तुम गुण वरनन करे, कहूँ न पावे अत ॥

विसर्जन

सपूर्णविधि करि वीनऊँ इस परम पूजन ठाट मे ।
अज्ञानवश शास्त्रोक्त विधितै चूक कीनी पाठ मे ॥
सो होउ पूर्ण समस्त विधिवत् तुम चरणकी शरणतै ।
बदू तुम्हे कर जोड के उद्धार जम्मन मरण तें ॥१॥
आह्वानन स्थापन सन्निधीकरण विधान जी ।
पूजन विसर्जन हू यथा विधि जानो नही गुणखानजी ॥
जो दोष लागे सो नशो सब तुम चरणकी शरण तै ।
बदूँ तुम्हे कर जोड के उद्धार जम्मन मरणत ॥२॥
तुम रहित आवागमन आह्वानन कियो निज भावमे ।
यथा विधि निज शक्ति सम पूजन कियो अति चाव तै ॥
करहू विसर्जन भाव ही मै तुम चरण की शरण ते ।
बदू तुम्हे कर जोड के उद्धार जम्मन मरण ते ॥३॥

तीन भुवन तिहु कालमे, तुमसा देव न और ।
सुख कारन सकट हरण, नमू जुगल कर जोर ॥

आशिका

श्री जिनवर की आशिका, लीजे शीश चढाय ।
भव भव के पातक कटें, दुख दूर हो जाय ।।

भाषास्तुति पाठ

तुम तरणतारण भवनिवारण, भविकमन आनदनो ।
श्रीनाभिनदन जगतवदन, आदिनाथ निरजनो ।।१
तुम आदिनाथ अनादि सेऊ, सेय पद पूजा करूँ ।
कैलाश गिरिपर रिषभजिनवर, पदकमल हिरदे धरूँ ।।२
तुम अजितनाथ अजीत जीते, अष्टकर्म महाबली ।
इह विरद सुनकर सरन आयो, कृपा कीजे नाथजी । ३
तुम चन्द्रवदन सु चन्द्रलच्छन, चन्द्रपुरि परमेश्वरो ।
महासेननदन जगतबन्दन चन्द्रनाथ जिनेश्वरो ।।४
तुम शाति पाचकल्याण पूजू, शुद्धमनवचकाय जू ।
दुर्भिक्ष चोरी पापनाशन, विघन जाय पलाय जू ।।५
तुम बालब्रह्म विवेकसागर, भव्यकमल विकाशनो ।
श्रीनेमिनाथ पवित्र दिनकर, पापतिमिर विनाशनो ।।६
जिन तजी राजुल राजकन्या, कामसैन्या वश करी ।
चारित्ररथ चढि भये दूलह, जाय शिव रमणी वरी ।।७
कन्दर्प दर्प सुसर्पलच्छन, कमठ शठ निर्मद कियो ।
अश्वसेननन्दन जगतबदन, सकलसघ मगल कियो ।।८
जिन धरी बालकपणे दीक्षा, कमठ मानविदारके ।
श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्र के पद, मैं नमो सिरधार के ।।९
तुम कर्मघाता मोक्षदाता, दीन जानि दया करो ।
सिद्धार्थनदन जगत वदन, महावीर जिनेश्वरो ।।१०

छत्र तीन सोहै सुरनर मोहै, वीनती अवधारिये ।
करजोडि सेवक वीनवै, प्रभु आवागमन निवारिये ।।११
तुम होउ भवभव स्वामि मेरे, मै सदा सेवक रहो ।
करजोड यो वरदान मागू, मोक्षफल जावत लहो ।।१२
जो एक माही एक राजत, एकमाहि अनेकनो ।
इक अनेक की नाहि सख्या, नमू सिद्ध निरजनो ।।१३
चौ०—मैं तुम चरणकमल गुण गाय, बहुविधि भक्ति करी मनलाय ।
जनम जनम प्रभु पाऊ तोहि, यह सेवाफल दीजे मोहि ।।१४
कृपा तिहारी ऐसी होय, जामन मरन मिटावो मोय ।
बार बार मैं विनती करूँ, तुम सेये भवसागर तरूँ ।।१५
नाम लेत सब दुख मिट जाय, तुव दर्शन देख्या प्रभु आय ।
तुम हो प्रभु देवन के देव, मै तो करू चरण तव सेव ।।१६
मै आयो पूजन के काज, मेरो जन्म सफल भयो आज ।
पूजा करके नवाऊँ शीश, मुझ अपराध क्षमहु जगदीश ।।१७

दोहा

सुख देना दुख मेटना, यही तुम्हारी बान ।
मो गरीब की वीनती, सुन लीज्यो भगवान ।।१८
पूजन करते देव की, आदि मध्य अवसान ।
सुरगन के सुख भोगकर, पावै मोक्ष निदान ।।१९
जैसी महिमा तुम विषै, और धरै नहि कोय ।
जो सूरज मे जोति है, तारन मे नहि सोय ।।२०
नाथ तिहारे नामतै, अघ छिनमाहि पलाय ।
ज्यो दिनकर परकाशतै, अधकार विनसाय ।।२१
बहुत प्रशसा क्या करूँ, मैं प्रभु बहुत अजान ।
पूजाविधि जानू नहो, सरन राखि भगवान ।।२२

पंचपरमेष्ठी की आरती

इहविधि मगल आरती कीजै ।
पच परमपद भज सुख लीजै ।।टेक।।
पहली आरती श्रीजिनराजा ।
भव दधि पार उतार जिहाजा ।। इहविधि० ।।१।।
दूसरी आरती सिद्धनकेरी ।
सुमिरन करत मिटै भव फेरी ।। इहविधि० ।।२ ।
तीजी आरती सूर मुनिंदा ।
जनम मरण दुख दूर करिंदा ।। इहविधि० ।।३।।
चौथी आरती श्री उवझाया ।
दर्शन देखत पाप पलाया ।। इहविधि० ।।४।।
पाचमी आरती साधु तिहारो ।
कुमति-विनाशन शिव-अधिकारी ।। इहविधि० ।।५।।
छट्ठी ग्यारह प्रतिमा धारी ।
श्रावक बंदौ आनन्दकारी ।। इहविधि० ।।६।।
सातमि आरतो श्रीजिनवानी ।
'द्यानत' सुरग मुकति सुखदानी ।। इहविधि० ।।७ ।

भागचन्द्र कृत (भजन)

राग सोरठा

हे जिन तुम गुन अपरपार, चन्द्रोज्ज्वल अविकार ।।टेक।।
जबै तुम गर्भमाहि आये, तबै सब सुरगन मिलि आये ।
रतन नगरी मे बरसाये, अमित अमोघ सुढार ।। हे जिन० ।।१
जन्म प्रभु तुमने जब लीना, न्हवन सुरगिर परि हरि कीना ।

भक्ति करि सची सहित भीना, बोली जयजयकार ।।हे जिन० ।।२
जगत छनभगुर जब जाना, भये तब नगनवृत्ती बाना ।
स्तवन लौकातिकसुर ठाना, त्याग राजको भार ।। हे जिन० ।।३
घातिया प्रकृति जबै नासो, चराचर वस्तु सबै भाषी ।
धर्म की वृष्टि करी खासी, केवलज्ञान भडार ।। हे जिन० ।।४
अघाती प्रकृति सुविघटाई, मुक्ति कान्ता तब ही पाई ।
निराकुल आनद असहाई, तीनलोक सरदार ।। हे जिन० ।।५
पार गनधर हू नहि पावै, कहा लगि 'भागचन्द' गावै ।
तुम्हारे चरनाबुज ध्यावै, भवसागर सो तार ।। हे जिन० ।।६

छहढाला

सोरठा

तीन भुवन मे सार, वीतराग विज्ञानता ।
शिवस्वरूप शिवकार, नमहु त्रियोग सभारिकै ।।१

पहिली ढाल । चौपाई (१५ मात्रा)

जे त्रिभुवन मे जीव अनत । सुख चाहै दुखतै भयवत ।
तातै दुखहारी सुखकारि । करै सीख गुरु करुणा धारि ।।२
ताहि सुना भवि मन थिर आन । जो चाहो अपनो कल्यान ।
मोह महामद पियो अनादि । भूलि आपको भरमत वादि ।।३
तास भ्रमन की है बहु कथा । पै कुछ कहू कही मुनि जथा ।
काल अनत निगोद मझार । बीत्यौ एकेंद्रिय-तन धार ।।४
एक श्वास मे अठदश बार । जन्म्यो मरचो भरचो दुख भार ।
निकसि भूमि जल पावक भयो । पवन प्रत्येक वनस्पति थयो ।।५
दुर्लभ लहि ज्यो चितामणी । त्यो परजाय लही त्रस तणी ।

लटपिपीलि अलि आदि शरीर। धरधर मर्‌यो सही बहु पीर॥६
कबहूँ पचेन्द्रिय पशु भयो। मनबिन निपट अज्ञानी थयो।
सिहादिक सैनी ह्वै क्रूर। निबल पशू हति खाये भूर॥७
कबहू आप भयो बलहीन। सबलनिकरि खायो अति दीन।
छेदन भेदन भूखपियास। भार-बहन हिम आतप त्रास॥८
बध बधन आदिक दुख घने। कोटि जीभतै जात न भने।
अतिसक्लेश भावतै मर्‌यो। घोर शुभ्रसागर मे पर्‌यो॥६
तहाँ भूमि परसत दुख इस्यो। वीछू सहस डसै तन तिस्यो।
तहाँ राधशोणितवाहिनी। कृमिकुलकलित देह-दाहिनी॥१०
सेमरतरुजुत दलअसिपत्र। असि ज्यो देह विदारै तत्र।
मेरुसमान लोह गलि जाय। ऐसी शीत उष्णता थाय॥११
तिलतिल करहि देह के खड। असुर भिडावे दुष्टप्रचड।
सिधुनीरतै प्यास न जाय। तौ पण एक न बूद लहाय॥१२
तीन लोक को नाज जु खाय। मिटै न भूख कणा न लहाय।
ये दुख बहु सागरलौ सहे। कर्मजोगतै नरतन लहे॥१३
जननी उदर बस्यो नवमास। अग सकुचतै पाई त्रास।
निकसत जे दुख पाये घोर। तिनको कहत न आवे ओर॥१४
बालपने मे ज्ञान न लह्यो। तरुण समय तरुणीरत रह्यो।
अर्धमृतकसम बूढापनो। कैस रूप लखै आपनो॥१५
कभी अकामनिर्जरा करै। भवनत्रिक मे सुरतन धरै।
विषय चाह दावानल दह्यो। मरत विलाप करत दुख सह्यो॥१६
जो विमानवासी हू थाय। सम्यक्‌दर्शन बिन दुख पाय।
तहँतै चय थावरतन धरै। यो परिवर्तन पूरे करै॥१७

दूसरो ढाल। पद्धरी छन्द।

ऐसे मिथ्या दृग्ज्ञानचरन। वश भ्रमत भरत दुख जन्ममरण।

तातै इनको तजिए सुजान । सुन तिन सक्षेप कहूँ बखान ।। १
जीवादि प्रयोजनभूत तत्त्व । सरधै तिनमाहिं विपर्ययत्व ।
चेतन को है उपयोगरूप । बिन मूरति चिन मूरति अनूप ।
पुद्गल नभ धर्म अधर्मकाल । इनतै न्यारी है जीव-चाल ।
ताको न जान विपरीत मान । करि, करै देहमे निज पिछान ।। ३
मैं सुखी दुखी मैं रक राव । मेरो धन गृह गोधन प्रभाव ।
मेरे सुत तिय मै सबल दीन । बेरूप सुभग मूरख प्रवीन ।। ४
तन उपजत अपनी उपज जानि । तन नशत आपको नाशमानि ।
रागादि प्रगट जे दु खदैन । तिनही को सेवत गिनहि चैन ।। ५
शुभ-अशुभ बध के फलमझार । रति अरति करै निजपद विसार ।
आतमहितहेतु विराग ज्ञान । ते लखै आपको कष्टदान ।। ६
रोकी न चाह निजशक्ति खोय । शिवरूप निराकुलता न जोय ।
याही प्रतीत जुत कछुक ज्ञान । सो दुखदायक अज्ञान जान ।। ७
इनजुत विषयनि मे जो प्रवृत्त । ताको जानौ मिथ्याचरित्त ।
यह मिथ्यात्वादि निसर्ग जेह । अब जे गृहीत सुनिये सु तेह ।। ८
जो कुगुरु कुदेव कुधर्म सेव । पोषे चिर दर्शन मोह एव ।
अन्तररागादिक धरै जेह । बाहर धन अम्बरतै सनेह ।। ९
धारै कुलिंग लहि महतभाव । ते कुगुरु जनमजल उपलनाव ।
जे रागदोषमलकरि मलीन । बनितागदादिजुत चिन्हचीन ।। १०
ते है कुदेव तिनकी जु सेव । शठ करत न तिन भवभ्रमनछेव ।
रागादिभाव हिसा समेत । दर्वित त्रसथावर मरनखेत ।। ११
जे क्रिया तिन्हे जानहु कुधम । तिन सरधै जीव लहै अशर्म ।
याको गृहीतमिथ्यात जान । अब सुन गृहीत जो है कुज्ञान ।। १२
एकातवाद दूषित समस्त । विषयादिक पोषक अप्रशस्त ।
कपिलादिरचित श्रुतको अभ्यास । सोहै कुबोध बहु देन त्रास ।। १३
जो ख्यातिलाभ पूजादि चाह । धरि करत विविधविधि देहदाह ।

आतम अनात्म के ज्ञानहीन । जे जे करनी तनकरनछीन ॥१४
ते सब मिथ्याचारित्र त्यागि । अब आतम के हितपथ लागि ।
जगजालभ्रमनको देहु त्यागि । अब दौलत, निज आतम सुपागि ॥१५

तीसरी ढाल । नरेन्द्र छन्द (जोगीरासा)

आतम को हित है सुख सो सुख आकुलता बिन कहिए ।
आकुलता शिव माहिं न तातैं, शिव मग लाग्यो चहिए ।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरन शिव मग सो दुविध विचारो ।
जो सत्यारथ रूप सुनिश्चय, कारन सो व्यवहारो ॥१
परद्रव्यनितै भिन्न आपमे रुचि, सम्यक्त्व भला है ।
आप रूप को जानपना, सो सम्यक्ज्ञानकला है ।
आपरूप मे लोन रहै थिर, सम्यक्चारित सोई ।
अब व्यवहार मोखमग सुनिए, हेतु नियत को होई ॥२
जीव अजीव तत्त्व अरु आस्रव, बधरु सबर जानौ ।
निर्जर मोक्ष कहे जिन तिनको, ज्यो का त्यो सरधानौ ।
हैं सोई समकित व्यवहारी, अब इन रूप बखानौ ।
तिनको सुनि सामान्यविशषै, दृढ प्रतीत उर आनौ ॥३
बहिरातम अतरआतम, परमातम जीव त्रिधा है ।
देह जीवको एक गिनै, बहिरातम तत्त्व मुधा है ।
उत्तम मध्यम जघन त्रिविधिके, अन्तर आतम ज्ञानी ।
द्विविध सगबिन शुधउपयोगी, मुनि उत्तम निजध्यानी ॥४
मध्यम अन्तर आतम है जे, देवव्रती आगारी ।
जघन कहे अविरतसमदृष्टि, तीनो शिवमगचारी ।
सकल निकल परमातम द्वैविध, तिनमे घाति निवारी ।
श्री अरहत सकल परमातम, लोकालोक निहारी ॥५
ज्ञानशरीरो त्रिविध कर्ममल-वर्जित सिद्ध महता ।
ते है निकल अमल परमातम, भोगै शर्म अनता ।

बहिरातमता हेय जानि तजि, अतर आतम हूजे ।
परमातम को ध्याय निरन्तर, जो नित आनद पूजे ।।६
चेतनता बिन सो अजीव है, पच भेद ताके है ।
पुद्गल पच वरन, रसपन गध दु फरस बसु जाके है ।
जिय पुद्गल को चलन सहाई, धर्म द्रव्य अनरूपी ।
तिष्ठत होय अधर्म सहाई, जिन बिनमूर्ति निरूपी ।।७
सकल द्रव्य को वास जासमे, सो आकाश पिछानो ।
नियत वरतना निशिदिन सो व्यवहारकाल परिमानो ।
यो अजीव अब आस्रव सुनिए, मन-वच-काय त्रियोगा ।
मिथ्या अविरत अरु कषाय, परमाद सहित उपयोगा ।।८
ये ही आतम के दुखकारन, तातै इनको तजिए ।
जीवप्रदेश बधे विधिसो, सो बधन कबहु न सजिए ।
शमदम सो जो कर्म न आवै, सो सवर आदरिये ।
तपबलतै विधिझरन निरजरा, ताहि सदा आचरिये ।।९
सकल करमतै रहित अवस्था, सो शिव थिरसुखकारी ।
इहविधि जो सरधा तत्त्वन की, सो समकित व्यौहारी ।
देव जिनेन्द्र गुरु परिग्रह विन, धर्म दयाजुत सारो ।
यहू मान समकित को कारन, अष्ट अगजुत धारो ।।१०
वसुमद टारि निवारि त्रिषठता, षट् अनायतन त्यागो ।
शकादिक वसुदोष बिना, सवेगादिक चित पागो ।
अष्ट अग अरु दोष पचीसो, अब सक्षेपहु कहिए ।
बिन जानेतै दोष गुननको, कैसे तजिए गहिए ।।११
जिनवच मे शका न धारि वृष, भव सुख वाछा भानै ।
मुनितन मलिन न देख घिनावै, तत्त्व कुतत्त्व पिछानै ।
निजगुन अर पर अवगुन ढाकै, वा जिनधर्म बढावै ।
कामादिक कर वृषतै चिगते, निजपरको सुदृढावै ।।१२

धर्मीसो गऊवच्छ-प्रीतिसम, कर जिनधर्म दिपावै ।
इन गुनतै विपरीत दोष वसु, तिनको सतत खिपावै ।
पिता भूप वा मातुल नृप जो, होय तो न मद ठानै ।
मद न रूप को मद न ज्ञान को, धन बलको मद भानै ॥१३
तपको मद न मद जु प्रभुताको, करै न सो निज जानै ।
मद धारै तो येहि दोष वसु, समकित को मल ठानै ।
कुगुरु-कुदेव-कुवृष-सेवक को, नहि प्रशस उचरै है ।
जिनमुनि जिनश्रुत बिन कुगुरादिक तिन्हे न नमन करै है ॥१४
दोषरहित गुनसहित सुधी जे, सम्यक्दरश सजे है ।
चरित मोहवश लेश न सजम, पै सुरनाथ जजे है ।
गेहीपै गृह मे न रचै ज्यो, जल मे भिन्न कमल है ।
नगरनारिको प्यार यथा, कादे मे हेम अमल है ॥१५
प्रथम नरक विन षटभू ज्योतिष, वान भवन षँड नारी ।
थावर विकलत्रय पशुमे नहि, उपजत समकितधारी ।
तीनलोक तिहु कालमाहि नहि, दशन-सम सुखकारी ।
सकल धरमको मूल यही, इस विन करनी दुखकारी ॥१६
मोक्ष महल की परथम सीढी, या बिन ज्ञान चरित्रा ।
सम्यकता न लहै सो दर्शन, धारो भव्य पवित्रा ।
'दौल' समझ सुन चेत सयाने, काल वृथा मत खोवै ।
यह नरभव फिर मिलन कठिन है, जो सम्यक नहि होवै ॥१७

चोथी ढाल

दोहा

सम्यक श्रद्धा धारि पुनि, सेवहु सम्यक्ज्ञान ।
स्वपर अर्थ बहु धर्मजुत, जो प्रगटावन भान ॥१

रोला छन्द

सम्यक साथै ज्ञान होय, पै भिन्न अराधो ।

लक्षण श्रद्धा जान, दुहूमे भेद अबाधो।
सम्यक्कारण जान, ज्ञान कारज है सोई।
युगपद होते हू, प्रकाश दीपकतै होई ॥२
तास भेद दो है परोक्ष, परतछ तिनमाही।
मति श्रुत दोय परोक्ष, अक्ष मनतै उपजाही।
अवधिज्ञान मनपर्जय, दो है देशप्रतच्छा।
द्रव्यक्षेत्रपरिमान लिए जानै जिय स्वचठा ॥३
सकल द्रव्य के गुन अनत, परजाय अनन्ता।
जानै एकै काल, प्रगट केवलि भगवन्ता।
ज्ञान समान न आन, जगत मे सुख का कारन।
इह परमामृत जन्म, जरामृत-रोग निवारन ॥४
कोटि जनम तप तपे, ज्ञान बिय कर्म झरे जे।
ज्ञानी के छिनमाहि त्रिगुप्तितै सहज टरै ते।
मुनिव्रत धार अनत बार, ग्रीवक उपजायो।
पै निज आतमज्ञान बिना सुख लेश न पायो ॥५
तातै जिनवर कथित, तत्त्व अभ्यास करीजै।
सशय विभ्रम मोह, त्याग आपौ लखि लीजै।
यह मानुषपरजाय, सुकुल सुनिबो जिनवानी।
इहविधि गये न मिलै, सु मणि ज्यो उदधिसमानी ॥६
धन समाज गज बाज राज, तो काज न आवै।
ज्ञान आपको रूप भये, फिर अचल रहावै।
तास ज्ञान को कारन, स्वपरविवेक बखान्यो।
कोटि उपाय बनाय, भव्य ताको उर आन्यो ॥७
जे पूरब शिव गये, जाय अब आगे जै है।
सो सब महिमा ज्ञानतनी, मुनिनाथ कहै है।
विषयचाह-दव-दाह, जगतजन अरनि दझावै।
तासु उपाय न आन ज्ञान घनघान बुझावै ॥८

पुण्य पाप-फल माहि, हरख बिलखो मत भाई।
यह पुद्गल परजाय, उपजि बिनसै थिर थाई।
लाख बात को बात यहै, निश्चय उर लावो।
तोरि सकल जगदंदफंद, निज आतम ध्यावो ॥९

सम्यक्ज्ञानी होइ, बहुरि दृढ़ चारित लीजै।
एकदेश अरु सकलदेश, तसु भेद कहीजै।
त्रसहिंसा को त्याग वृथा थावर न संघारै।
परवधकार कठोर निंद्य नहिं वयन उचारै ॥१०

जल मृतिका बिन और नाहि कछु गहै अदत्ता।
निज बनिता बिन सकल नारिसौं रहै विरत्ता।
अपनी शक्ति विचार परिग्रह थोरो राखै।
दश दिशि गमन-प्रमान, ठान तसु सीम न नाखै ॥११

ताहू में फिर ग्राम गली, गृह बाग बजारा।
गमनागमन प्रमान ठान अन सकल निवारा।
काहूकी धनहानि, किसी जयहार न चिंतै।
देय न सो उपदेश, होय अघ वनिज कृषीतैं। १२

कर प्रमाद जल भूमि, वृक्ष पावक न विराधै।
असि धनु हल हिंसोपकरन, नहिं दे जस लाधै।
रागदोष करतार कथा, कबहू न सुनीजै।
और हु अनरथदंड, हेतु अघ तिन्हैं न कीजै। १३

धर उर समताभाव सदा, सामायिक करिये।
पर्व चतुष्टय माहि पाप तजि प्रोषध धरिये।
भोग और उपभोग नियमकरि ममतु निवारै।
मुनि को भोजन देय फेर, निज करहि अहारै ॥१४

बारह व्रत के अतीचार, पन पन न लगावै।
मरन समय सन्यास धारि, तसु दोष नशावै।

यो श्रावक व्रत पाल स्वर्ग, सोलम उपजावै ।
तहँतै चय नरजन्म पाय मुनि ह्वै शिव जावै ॥१५

पाचवीं ढाल । सखी छन्द (१४ मात्रा)

मुनि सकल व्रती बडभागी, भवभोगनतै वैरागी ।
वैराग्य उपावन माई, चितो अनुप्रेक्षा भाई ॥१
इन चितन समरस जागै जिमि ज्वलन पवनके लागै ।
जबही जिय आतम जानै, तबही जिय शिवसुख ठानै ॥२
जोवन गृह गोधन नारी, हय गय जन आज्ञाकारी ।
इन्द्रिय भोग छिन थाई, सुरधनु चपला चपलाई ॥३
सुर असुर खगाधिप जते, मृग ज्यों हरि काल दल ते ।
मणि मंत्र तंत्र बहु होई, मरते न बचावै कोई ॥४
चहुगतिदुख जीव भरे है, परिवर्तन पंच करे है ।
सबविधि संसार असारा, यामें सुख नाहि लगारा ॥५
शुभ अशुभ करम फल जेते, भोगे जिय एकहि तेते ।
सुत दारा होय न सीरी, सब स्वारथ के है भीरी ॥६
जलपय ज्यों जियतन मेला, पै भिन्न भिन्न नहि भेला ।
तो प्रकट जुदे धन धामा, क्यों ह्वै इक मिलि सुत रामा ॥७
पल-रुधिर राध-मल-थैली, कीकस वसादितै मैली ।
नव द्वार बहै घिनकारी, अस देह करे किम यारी ॥८
जो जोगन की चपलाई, तातें ह्वै आस्रव भाई ।
आस्रव दुखकार घनेरे, बुधिवन्त तिन्हे निरवेरे ॥९
जिन पुण्यपाप नहि कीना, आतम अनुभव चित दीना ।
तिन ही विधि आवत रोके, संवरलहि सुख अवलोके ॥१०
निज काल पाय विधि झरना, तासों निज काज न सरना ।
तप करि जो कर्म खपावै, सोई शिवसुख दरसावै ॥११
किनहू न करयो न धरै को, षट्द्रव्यमयी न हरै को ।
सो लोकमाहि बिन समता, दुख सहै जीव नित भ्रमता ॥१२

अतिम ग्रीबकलौ की हद, पायो अनतबिरिया पद ।
पर सम्यक्ज्ञान न लाध्यो, दुर्लभ निजमे मुनि साध्यो ॥१३
जे भाव मोहतै न्यारे, दृग ज्ञान व्रतादिक सारे ।
सो धर्म जबै जिय धारे, तबही सुख सकल निहारै ॥१४
सो धर्म मुनिनकरि धरिये, तिनकी करतूति उचरिये ।
ताको सुनिये भवि प्रानी, अपनी अनुभूति पिछानी ॥१५

छट्ठी ढाल (हरिगीता छन्द)

षट्काय जीव न हननतैं, सब विधि दरवहिसा-टरी ।
रागा द भाव निवारतै, हिसा न भावित अवतरी ।
जिनके न लेश मृषा न जल तृन हू बिना दीयो गहैं ।
अठदशसहस विधि शील धर चिद्ब्रह्म मे नित रम रहै ॥१
अन्तर चतुर्दश भेद बाहिर सग दशधा तै टलै ।
परम द तजि चउकर मही लखि समिति ईर्यातै चलै ।
जग मुहितकर सब अहितहर श्रुतिसुखद सब सशय हरै ।
भ्रमरोग-हर जिनके वचन मुखचद्रतै अमृत झरै ॥२
छयालीस दोष बिना सुकुल श्रावकतणे घर अशनको ।
ले तप बढावन हेत नहि तन पोषते तजि रसन को ।
शुचि ज्ञान सजम उपकरन लखिके गहे लखिके धरे ।
निर्जतु थान विलोकि तन-मलमूत्र-श्लेषम परिहरै ॥३
सम्यक् प्रकार निरोधि मन-वच-काय आतम ध्यावते ।
तिन सुथिर मुद्रा देखि मृगगन उपल खाज खुजावते ।
रसरूप गध तथा फरस अरु शब्द शुभ असुहावने ।
तिनमे न राग विरोध पचेन्द्रियजयन पद पावने ॥४
समता सम्हारै थुति उचारै बदना जिन देव को ।
नित करै श्रुत रति धरै प्रतिक्रम तजे तन अहमेव को ।
जिनके न न्हौन न दतधोवन लेश अम्बर आवरन ।
भूमाहि पिछली रयनि मे कछु शयन एकाशन करन ॥५

इक बार दिन मे ले अहार खडे अलप निज पान मे।
कचलोच करत न डरत परिषहसो लगे निज ध्यानमे।
अरिमित्र महल मसान कचन काच निदन थुति करन।
अर्घावतारन असिप्रहारन मे सदा समता धरन ॥६
तप तपै द्वादश धरे वृष दश रतनत्रय सेवे सदा।
मुनि साथमे वा एक विचरे चहै नहि भवसुख कदा।
यो है सकल सजम चरित सुनिये स्वरूपाचरन अब।
जिस होत प्रगटै आपनी निधि मिटै परकी प्रवृत्ति सब ॥७
जिन परम पैनी सुबुधि छनी डारि अतर भेदिया।
वरनादि अरु रागादितै निज भाव को न्यारा किया।
निजमाहि निजके हेतु निजकर आपको आपै गह्यो।
गुनगुनो ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय मझार कछु भेद न रह्यो ॥८
जहँ ध्यान ध्याता ध्येयको न विकल्प वचभद न जहाँ।
चिद्भाव कम चिदेश करता चेतना क्रिया तहाँ।
तीनो अभिन्न अखिन्न शुध उपयोग की निश्चल दशा।
प्रकटी जहाँ दृग ज्ञान व्रत ये तीनधा एकै लशा ॥९
परमान नय निक्षेप को न उदोत अनुभव मे दिखे।
दृग ज्ञान सुख-बलमय सदा नहि आन भावजु मो विखै।
मैं साध्य साधक मै अबाधक कम अरु तसु फलनितै।
चितपिड चड अखड सुगुन, करडच्युत पुनि कलनितै ॥१०
यो चित निज मे थिर भये तिन अकथ जो आनद लह्यो।
सो इन्द्र नाग नरेन्द्र वा अहिमिद्रकै नाही कह्यो।
तब ही शुकलध्यानाग्निकर चउघाति विधिकानन दह्यो।
सब लख्यो केवलज्ञानकरि भविलोकको शिवमग कह्यो ॥११
पुनि घाति शे५ अघाति विधि छिनमाहि अष्टम भू बसै।
वसुकर्म विनशै सुगुन वसु सम्यक्त्व आदिक सब लसै।

ससार खार अपार पारावार तिर तीरहि गये।
अविकार अकल अरूप शुध चिद्रूप अविनाशी भये ॥१२

निजमांहि लोक अलोक गुन परजाय प्रतिबिंबित थये।
रहिहैं अनतानतकाल यथा तथा शिव परि नये।
धनि धन्य हैं जे जीव नरभव पाय यह कारज किया।
तिनही अनादी भ्रमन पचप्रकार तजि वर सुख लिया ॥१३

मुख्योपचार दुभेद यो बडभागि रत्नत्रय धरै।
अरु धरैंग ते शिव लहै तिन सुजस जल जगमल हरै।
इमि जान आलस हानि साहस ठानि यह सिख आदरो।
जबलो न रोग जरा गहै तबलो जगत निज हित करो ॥१४

यह राग आग दहै सदा तातै समामृत सेइये।
चिर भजे विषय कषाय अब तौ त्याग निजपद बेइये।
कहा रच्यो परपद मे न तेरो पद यहै क्यो दुख सहै।
अब दौल, होउ सुखी स्वपद रचि दाव मत चूको यहै ॥१५

दोहा

इक नव वसु इक वर्ष की, तीज शुकल बैशाख।
करचो तत्त्व उपदेश यह, लखि बुधजन की भाख ॥१६

लघुधी तथा प्रमादतै, शब्द अर्थ की भूल।
सुधी सुधार पढो सदा, जो पावो भवकूल ॥१७

इति श्री प० दौलतरामजीकृत छहढाला समाप्त।

श्री तत्त्वार्थाधिगममोक्षशास्त्रम्

मोक्षमार्गस्य नेतार भेत्तार कर्मभूभृताम् ।
ज्ञातार विश्वतत्त्वाना वन्दे तद्गुणलब्धये ।।

सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्ग ।१। तत्त्वार्थश्रद्धान सम्यग्दर्शनम् ।२। तन्निसर्गादधिगमाद्वा ।३। जीवाजीवास्रवबन्धसवरनिर्जरामोक्षास्तत्त्वम् ।४। नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यास ।५। प्रमाणनयैरधिगम ।६। निर्देशस्वामित्वसाधनाऽधिकरणस्थितिविधानत ।७। सत्सख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्तरभावाल्पबहुत्वैश्च ।।८। मतिश्रुतावधिमन पर्ययकेवलानि ज्ञानम् ।९। तत्प्रमाणे ।१०। आद्ये परोक्षम् ।११। प्रत्यक्षमन्यत् ।१२। मति स्मृति सज्ञा चिन्ताऽभिनिबोध इत्यनर्थान्तरम् ।१३। तदिद्रियानिन्द्रियनिमित्तम् ।१४। अवग्रहेहाऽवायधारणा ।१५। बहुबहुविधक्षिप्राऽनि सृताऽनुक्तध्रुवाणा सेतराणाम् ।१६। अर्थस्य ।१७। व्यञ्जनस्यावग्रह ।१८। न चक्षुरनिन्द्रियाभ्याम् ।१९। श्रुत मतिपूव द्व्यनेकद्वादशभेदम् ।२०। भवप्रत्ययोऽवधिर्देवनारकाणाम् ।२१। क्षयोपशमनिमित्तः षड्विकल्प शेषाणाम् ।२२। ऋजुविपुलमती मन पर्यय ।२३। विशुद्ध्यप्रतिपाताभ्या तद्विशेष ।२४। विशुद्धिक्षेत्रस्वामिविषयेभ्योऽवधिमन पर्यययो ।२५। मतिश्रुतयोर्निबन्धो द्रव्येष्वसर्वपर्यायेषु ।२६। रूपिष्ववधे ।२७। तदनन्तभागे मन पर्ययस्य ।२८। सर्वद्रव्यपर्यायेषु केवलस्य ।२९। एकादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्नाचतुर्भ्य ।३०। मतिश्रुतावधयो विपर्ययश्च ।३१। सदसतोरविशेषाद्यदृच्छोपलब्धेरुन्मत्तवत् ।३२। नैगमसग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरूढैवभूता नया ।।३३।।

ज्ञानदर्शनयोस्तत्व नयाना चैव लक्षणम् ।
ज्ञानस्य च प्रमाणत्वमध्यायेऽस्मिन्निरूपितम् ।।

इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे प्रथमोऽध्याय ।

औपशमिकक्षायिकौ भावौ मिश्रश्च जीवस्य स्वतत्त्वमौदयिकपारिणामिकौ च ।१। द्विनवाष्टादशैकविंशतित्रिभेदा यथाक्रमम् ।२। सम्यक्त्वचारित्रे ।३। ज्ञानदर्शनदानलाभभोगोपभोगवीर्याणि च ।४। ज्ञानाज्ञानदर्शनलब्धयश्चतुस्त्रित्रिपचभेदा सम्यक्त्वचारित्रसयमासयमाश्च ।५। गतिकषायलिगमिथ्यादर्शनाऽज्ञानासयताऽसिद्धलेश्याश्चतुश्चतुस्त्र्येकैकैकैकषड्भेदा ।६। जीवभव्याऽभव्यत्वानि च ।७। उपयोगो लक्षणम् ।८। स द्विविधोऽष्टचतुर्भेद ।९। ससारिणो मुक्ताश्च ।१०। समनस्काऽमनस्का ।११। ससारिणस्त्रसस्थावरा ।१२। पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतय स्थावरा ।१३। द्वीन्द्रियादयस्त्रसा ।१४। पञ्चेन्द्रियाणि ।१५। द्विविधानि ।१६। निर्वृत्युपकरणे द्रव्येन्द्रियम् ।१७। लब्ध्युपयोगौ भावेन्द्रियम् ।१८। स्पर्शनरसनघ्राणचक्षुश्रोत्राणि ।१९। स्पर्शरसगधवणशब्दास्तदर्था ।२०। श्रुतमनिन्द्रियस्य ।२१। वनस्पत्यन्तानामेकम् ।२२। कृमिपिपीलिकाभ्रमरमनुष्यादीनामेकैकवृद्धानि ।२३। सज्ञिन समनस्का ।२४। विग्रहगतौ कर्मयोग ।२५। अनुश्रेणि गति ।२६। अविग्रहा जीवस्य ।२७ विग्रहावती च ससारिण प्राक् चतुर्भ्य ।२८। एकसमयाऽविग्रहा ।२९। एक द्वौ त्रीन्वाऽनाहारक ।३०। सम्मूर्छनगर्भोपपादाज्जन्म ।३१। सचित्तशीतसवृता सेतरा मिश्राश्चैकशस्तद्योनय ।३२। जरायुजाण्डजपोताना गर्भ ।३३। देवनारकाणामुपपाद ।३४। शेषाणा सम्मूर्छनम् ।३५। औदारिकवैक्रियिकाहारकतैजसकार्मणानि शरीराणि ।३६। पर पर सूक्ष्म ।३७। प्रदेशतोऽसख्येयगुण प्राक्तैजसात् ।३८। अनतगुणे परे ।३९। अप्रतीघाते ।४०। अनादिसबधे च ।४१। सर्वस्य ।४२। तदादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्नाचतुर्भ्य ।४३। निरुपभोगमन्त्य ।४४। गर्भसामूर्छनजमाद्य ।४५। औपपादिक वैक्रियिक ।४६। लब्धिप्रत्यय च ।४७। तैजसमपि ।४८। शुभ विशुद्धमव्याघाति

चाहारक प्रमत्तसयतस्यैव ।४९। नारकसर्मूच्छिनो नपुसकानि ।५० न देवा ।५१। शेषास्त्रिवेदा ।५२। औपपादिकचरमोत्तमदेहाऽसख्येय-वर्षायुषोऽनपवर्त्यायुष ।५३।

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे द्वितीयोऽध्याय ॥२॥

रत्नशर्कराबालुकापकधूमतमोमहातम प्रभा भूमयो घनाम्बुवाता-काशप्रतिष्ठा सप्ताऽधोऽध ।१। तासु त्रिशत्पचविशतिपचदशदशत्रि-पचोनैकनरकशतसहस्राणि पच चैव यथाक्रम ।२। नारका नित्याऽशुभ-तरलेश्यापरिणामदेहवेदनाविक्रिया ।३। परस्परोदीरितदु खा ।४। सक्लिष्टाऽसुरोदीरितदु खाश्च प्राक् चतुर्थ्या ।५। तेष्वेकत्रिसप्तदश-सप्तदशद्वाविशतित्रयस्त्रिशत्सागरोपमा सत्वाना परा स्थिति ।६। जबूद्वीपलवणोदादय शभनामानो द्वीपसमुद्रा ।७। द्विर्द्विर्विष्कभा पूर्वपूर्वपरिक्षेपिणोवलयाकृतय ।८। तन्मध्ये मेरुनाभिर्वृत्तो योजनशत-सहस्रविष्कभो जबूद्वीप ।९। भरतहैमवतहरिविदेहरम्यकहैरण्यवतैरा-वतवर्षाक्षेत्राणि ।१०। तद्विभाजिन पूर्वापरायता हिमवन्महाहिमवन्नि-षधनीलरुक्मिशिखरिणो वर्षधरपर्वता ।११। हेमार्जुनतपनीयवैडूर्यरजत-हेममया ।१२। मणिविचित्रपार्श्वा उपरिमूले च तुल्यविस्तारा ।१३। पद्ममहापद्मतिगिछकेशरिमहापुडरीकपुडरीकाह्रदास्तेषामुपरि ।१४। प्रथमो योजनसहस्रायामस्तदर्द्धविष्कभो ह्रद ।१५। दशयोजनावगाह ।१६। तन्मध्ये योजन पुष्करम् ।१७। तद्द्विगुणद्विगुणा ह्रदा पुष्कराणि च ।१८। तन्निवासिन्यो देव्य श्रीह्रीधृतिकीर्तिबुद्धिलक्ष्म्य पल्योपम-स्थितय ससामानिकपरिषत्का ।१९। गगासिधुरोहिद्रोहितास्याहरिद्ध-रिकातासीतासीतोदानारीनरकातासुवर्णरूप्यकूलारक्तारक्तोदा सरि-तस्तन्मध्यगा ।२०। द्वयोर्द्वयो पूर्वा पूर्वगा ।२१। शेषास्त्वपरगा ।२२। चतुर्दशनदीसहस्रपरिवृता गगासिध्वादयो नद्य ।२३। भरत षड्विशतिपचयोजनशतविस्तार षट्चैकोनविशतिभागा योजनस्य ।२४। तद्द्विगुणद्विगुणविस्तारा वर्षधरवर्षा विदेहान्ता ।२५। उत्तरा

दक्षिणतुल्या ।२६। भरतैरावतयोर्वृद्धिह्रासौ षट्समयाभ्यामुत्सर्पिण्य-
वसर्पिणीभ्या ।२७। ताभ्यामपरा भूमयोऽवस्थिता ।२८। एकद्वित्रिपल्यो-
मस्थितयो हैमवतकहारिवर्षकदैवकुरवका ।२९। तथोत्तरा ।३०।
विदेहेषु सख्येयकाला । १। भरतस्य विष्कभो जबूद्वीपस्य नवतिशत-
भागः ।३२। द्विर्धातकीखडे ।३३। पुष्करार्द्धे च ।३४। प्राङमानुषोत्तरा-
न्मनुष्या ।३५। आर्या म्लेच्छाश्च ।३६ भरतैरावतविदेहा. कर्मभूमयो-
ऽन्यत्र देवकुरूत्तरकुरुभ्य ।३७। नृस्थिती परावरे त्रिपल्योपमानर्मुहूर्ते
।३८। तिर्यग्योनिजाना च ।३९।

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे तृतीयोऽध्याय ।।३।।

देवाश्चतुर्णिकाया ।१। आदितस्त्रिषु पीतातलेश्या ।२। दशाष्ट-
पचद्वादशविकल्पा कल्पोपपन्नपर्यन्ता ।३। इन्द्रसामानिकत्रायस्त्रिंशपा-
रिषदात्मरक्षलोकपालानीकप्रकीर्णकाभियोग्यकिल्विषिकाश्चैकश ।४।
त्रायस्त्रिंशल्लोकपालवर्ज्या व्यतरज्योतिष्का ।५। पूर्वयोर्द्वीन्द्रा ।६।
कायप्रवीचारा आ ऐशानात् ।७। शेषाः स्पर्शरूपशब्दमन प्रवीचाराः
।८। परेऽप्रवीचारा ।९। भवनवासिनोऽसुरनागविद्युत्सुपर्णाग्निवातस्त-
नितोदधिद्वीपदिक्कुमारा ।१०। व्यतरा किन्नरकिपुरुषमहोरगगधर्व-
यक्षराक्षसभूतपिशाचा ।११। ज्योतिष्का. सूर्याचद्रमसौ ग्रहनक्षत्रप्र-
कीर्णकतारकाश्च ।१२। मेरुप्रदक्षिणा नित्यगतयो नृलोके ।१३। तत्कृत
कालविभाग ।१४। बहिरवस्थिता ।१५। वैमानिका ।१६। कल्पोप-
पन्ना. कल्पातीताश्च ।१७। उपर्युपरि ।१८। सौधर्मैशानसानत्कुमारमाहेन्द्र-
ब्रह्मब्रह्मोत्तरलातवकापिष्ठशुक्रमहाशुक्रशतारसहस्रारेष्वानतप्राणतयो-
रारणाच्युतयोर्नवसु ग्रैवेयकेषु विजयवैजयतजयतापराजितेषु सर्वार्थ-
सिद्धो च ।१९। स्थितिप्रभावसुखद्युतिलेश्याविशुद्धीन्द्रियावधिविषयतो-

ऽधिका. ।२०। गतिशरीरपरिग्रहाभिमानतो हीना· ।२१। पीतपद्मशुक्ल-लेश्या द्वित्रिशेषेषु ।२२। प्राग्ग्रैवेयकेभ्य कल्पा ।२३। ब्रह्मलोकालया लौकांतिकाः ।२४। सारस्वतादित्यवह्न्यरुणगर्दतोयतुषिताव्याबाधारि-ष्टाश्च ।२५। विजयादिषु द्विचरमा. ।२६। औपपादिकमनुष्येभ्यः शेषा-स्तिर्यग्योनयः ।२७। स्थितिरसुरनागसुपर्णद्वीपशेषाणा सागरोपम-त्रिपल्योपमार्धहीनमिता· ।२८। सौधर्मैशानयो. सागरोपमेऽधिके ।२९। सानत्कुमारमाहेन्द्रयो· सप्त ।३०। त्रिसप्तनवैकादशत्रयोदशपचदश-भिरधिकानि तु ।३१। आरणाच्युतादूर्ध्वमेकैकेन नवसु ग्रैवेयकेषु विज-यादिषु सर्वार्थसिद्धौ च ।३२। अपरा पल्योपममधिकम् ।३३। परतः परत पूर्वा पूर्वानतरा· ।३४। नारकाणा च द्वितीयादिषु ।३५। दश-वर्षसहस्राणि प्रथमाया ।३६। भवनेषु च ।३७। व्यतराणा च ।३८। परा पल्योपममधिक ।३९। ज्योतिष्काणा च ।४०। तदष्टभागोऽपरा ।४१। लौकांतिकानामष्टौ सागरोपमाणि सर्वेषाम् ।।४२।।

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे चतुर्थोऽध्याय ।।४।।

अजीवकाया धर्माधर्माकाशपुद्गला ।१। द्रव्याणि ।२। जीवाश्च ।३। नित्यावस्थितान्यरूपाणि ।४। रूपिण पुद्गला. ।५। आ आकाशा-देकद्रव्याणि ।६। निष्क्रियाणिच ।७। असख्येया प्रदेशा धर्माधर्मैक-जीवाना ।८। आकाशस्यानता ।९। सख्येयासख्ययाश्च पुद्गलाना ।१०। नाणो ।११। लोकाकाशेऽवगाह. ।१२। धर्माधर्मयो कृत्स्ने ।१३। एकप्र-देशादिषु भाज्यः पुद्गलाना ।१४। असख्येयभागादिषु जीवाना ।१५। प्रदे-शसहारविसर्पाभ्या प्रदीपवत् ।१६। गतिस्थित्युपग्रहौ धर्माधर्मयोरुपकार ।१७। आकाशस्यावगाहः ।१८। शरीरवाङ्मनः प्राणापाना. पुद्गला-

नाम् ।१६। सुखदुःखजीवितमरणोपग्रहाश्च ।२०। परस्परोपग्रहो जीवा-
ना ।२१। वर्तनापरिणामक्रियापरत्वापरत्वे च कालस्य ।२२। स्पर्शरस-
गधवर्णवत पुद्‌गला· ।२३। शब्दबधसौक्ष्म्यस्थौल्यसस्थानभेदतम-
श्छायातपोद्योतवतश्च ।२४। अणव स्कन्धाश्च ।२५। भेदसघातेभ्य
उत्पद्यते ।२६। भेदादणु ।२७। भेदसघाताभ्या चाक्षुष· ।२८। सद्-
द्रव्यलक्षण ।२६। उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्त सत् ।३०। तद्भावाव्यय नित्य
।३१। अर्पितानर्पितसिद्धेः ।३२। स्निग्धरूक्षत्वाद् बन्ध ।३३। न जघ-
न्यगुणाना ।३४। गुणसाम्ये सदृशाना ।३५। द्वयधिकादिगुणाना तु ।३६।
बधेऽधिकौ पारिणामिकौ च ।३७। गुणपर्ययवद्द्रव्य ।३८। कालश्च
।३६। सोऽनतसमय ।४०। द्रव्याश्रया निर्गुणा गुणाः ।४१। तद्भावः
परिणाम ।।४२।।

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे पचमोऽध्याय ।।५।।

कायवाङ्मन कर्मयोग· ।१। स आस्रव ।२। शुभ पुण्यस्याशुभ·
पापस्य ।३। सकषायाकषाययो· सापरायिकेर्यापथयो ।४। इद्रियकषा-
याव्रतक्रिया पचचतु·पचपचविशतिसख्या पूर्वस्य भेदा ।५। तीव्रमद-
ज्ञाताज्ञातभावाधिकरणवीर्यविशेषेभ्यस्तद्विशेष ।६। अधिकरण जीवा-
जीवा ।७। आद्य सरभसमारभारभयोगकृतकारितानुमतकषायविशेषै-
स्त्रिस्त्रिस्त्रिश्चतुश्चैकश· ।८। निर्वर्तनानिक्षेपसयोगनिसर्गा द्विचतुर्द्वित्रिभेदाः
पर ।६। तत्प्रदोषनिन्हवमात्सर्यांतरायासादनोपघाता ज्ञानदर्शनावर्णयोः
।१०। दुःखशोकतापक्रदनबधपरिदेवनान्यात्मपरोभयस्थानान्यसद्वेद्यस्य
।११। भूतवृत्यनुकपादानसरागसयमादियोगः क्षाति शौचमिति सद्वेद्यस्य
।१२। केवलिश्रुतसघधर्मदेवावर्णवादो दर्शनमोहस्य ।१३। कषायोदया-
त्तीव्रपरिणामश्चारित्रमोहस्य ।१४। बह्वारभपरिग्रहत्व नारकस्यायुषः

।१५। माया तैर्यग्योनस्य ।१६। अल्पारभपरिग्रहत्वमानुषस्य ।१७। स्वभावमार्दव च ।१८। नि:शीलव्रतत्व च सर्वेषा ।१९। सरागसयमसयमासयमाकामनिर्जराबालतपा।स देवस्य ।२०। सम्यक्त्व च ।२१। योगवक्रताविसवादन चाशुभस्य नाम्न ।२२। तद्विपरीत शुभस्य ।२३। दर्शनविशुद्धिविनयसपन्नता शीलव्रतेष्वनतीचारोऽभीक्ष्णज्ञानोपयोगसावेगौ शक्तितस्त्यागतपसी साधुसमाधिर्वैयावृत्यकरणमर्हदाचार्यबहुश्रुतप्रवचनभक्तिरावश्यकापरिहाणि मार्गप्रभावना प्रवचनवत्सलत्वमिति तीर्थकरत्वस्य ।२४। परात्मनिदाप्रशसे सदसद्गुणोच्छादनोद्भावने च नीचैर्गोत्रस्य ।२५। तद्विपर्ययो नीचैर्वृत्त्यनुत्सेकौ चोत्तरस्य ।२६। विघ्नकरणमतरायस्य ।।२७।।

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे षष्ठोऽध्याय ।।६।।

हिमानृतस्तेयाब्रह्मपरिग्रहेभ्यो विरतिर्व्रत ।१। देशसर्वतोऽणुमहती तत्स्थैर्यार्थं भावना पच पच ।३। वाङ्मनोगुप्तीर्यादाननिक्षेपणसमित्यालोकितपानभोजनानि पच ।४। क्रोधलोभभीरुत्वहास्यप्रत्याख्यानान्यनुवीचिभाषण च पच ।५। शून्यागारविमोचितावासपरोपरोधाकरणभैक्ष्यशुद्धि सद्धर्माविसवादा पच ।६। स्त्रीरागकथाश्रवणतन्मनोहराङ्गनिरीक्षणपूर्वरतानुस्मरणवृष्येष्टरसस्वशरीरसस्कारत्यागा पच ।७। मनोज्ञामनोज्ञेन्द्रियविषयरागद्वेषवर्जनानि पच ।८। हिंसादिष्विहामुत्रापायावद्यदर्शनम् ९। दु खमेव वा ।१०। मैत्रीप्रमोदकारुण्यमाध्यस्थानि च सत्वगुणाधिकक्लिश्यमानाविनेयेषु ।११। जगत्कायस्वभावौ वा सवेगवैराग्यार्थ ।१२। प्रमत्तयोगात्प्राणव्यपरोपण हिंसा ।१३। असदभिधानमनृत ।१४। अदत्तादान स्तेय ।१५। मैथुनमब्रह्म ।१६। मूर्छा परिग्रह ।१७। नि शल्यो व्रती ।१८। अगार्यनगारश्च ।१९। अणु-

व्रतोऽगारी ।२०। दिग्देशानर्थदण्डविरतिसामायिकप्रोषधोपवासोपभोगपरिमाणातिथिसंविभागव्रतसंपन्नश्च ।२१। मारणांतिकीं सल्लेखनां जोषिता ।२२। शंकाकांक्षाविचिकित्सान्यदृष्टिप्रशंसासंस्तवाः सम्यग्दृष्टेरतीचाराः ।२३। व्रतशीलेषु पंच पंच यथाक्रमं ।२४। बंधवधच्छेदातिभारारोपणान्नपाननिरोधाः ।२५। मिथ्योपदेशरहोभ्याख्यानकूटलेखक्रियान्यासापहारसाकारमंत्रभेदाः ।२६। स्तेनप्रयोगतदाहृतादानविरुद्धराज्यातिक्रमहीनाधिकमानोन्मानप्रतिरूपकव्यवहाराः ।२७। परविवाहकरणेत्वरिकापरिगृहीतापरिगृहीतागमनानंगक्रीडाकामतीव्राभिनिवेशाः ।२८। क्षेत्रवास्तुहिरण्यसुवर्णधनधान्यदासीदासकुप्यप्रमाणातिक्रमाः ।२९। ऊर्ध्वाधस्तिर्यग्व्यतिक्रमक्षेत्रवृद्धिस्मृत्यंतराधानानि ।३०। आनयनप्रेष्यप्रयोगशब्दरूपानुपातपुद्गलक्षेपाः ।३१। कंदर्पकौत्कुच्यमौखर्यासमीक्ष्याधिकरणोपभोगपरिभोगानर्थक्यानि ।३२। योगदुष्प्रणिधानानादरस्मृत्यनुपस्थानानि ।३३। अप्रत्यवेक्षिताप्रमार्जितोत्सर्गादानसंस्तरोपक्रमणानादरस्मृत्यनुपस्थानानि ।३४। सचित्तसंबंधसंमिश्राभिषवदुःपक्वाहाराः ।३५। सचित्तनिक्षेपापिधानपरव्यपदेशमात्सर्यकालातिक्रमाः ।३६। जीवितमरणाशंसामित्रानुरागसुखानुबंधनिदानानि ।३७। अनुग्रहार्थं स्वस्यातिसर्गो दानं ।३८। विधिद्रव्यदातृपात्रविशेषात्तद्विशेषः ।।३९।

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे सप्तमोऽध्यायः ।।७।।

मिथ्यादर्शनाविरतिप्रमादकषाययोगा बंधहेतवः ।१। सकषायत्वाज्जीवः कर्मणो योग्यान्पुद्गलानादत्ते स बंधः ।२। प्रकृतिस्थित्यनुभागप्रदेशास्तद्विधयः ।३। आद्यो ज्ञानदर्शनावरणवेदनीयमोहनीयायुर्नाम-

गोत्रांतराया ।४। पचनवद्वयष्टाविंशतिचतुर्द्विचत्वारिंशद्द्विपचभदा यथाक्रमं ।५। मतिश्रुतावधिमन पर्ययकेवलाना ।६। चक्षुरचक्षुरवधि-केवलाना निद्रानिद्रानिद्राप्रचलाप्रचलाप्रचलास्त्यान गृद्धयश्च ।७। सद-सद्वेद्ये ।८। दर्शनचारित्रमोहनीयाकषायकषायवेदनीयाख्यास्त्रिद्विनव-षोडशभेदा सम्यक्त्वमिथ्यात्वतदुभयान्यकषायकषायौ हास्यरत्यरति-शोकभयजुगुप्सास्त्रीपुन्नपुसकवेदा अनन्तानुबन्ध्यप्रत्याख्यानप्रत्याख्यान-सज्वलनविकल्पाश्चैकश क्रोधमानमायालोभा ।९। नारकतैर्यग्योन-मानुषदैवानि ।१०। गतिजातिशरीरागोपागनिर्माणबधनसघातसस्थान-सहननस्पर्शरसगधवर्णानुपूर्व्यगुरुलघूपघातपरघातातपोद्योतोच्छ्वासवि-हायोगतय प्रत्येकशरीरत्रससुभगसुस्वरशुभसूक्ष्मपर्याप्तिस्थिरादेययश कीर्तिसेतराणि तीर्थंकरत्व च ।११। उच्चैर्नीचैश्च ।१२। दानलाभभोगो-पभोगवीर्याणा ।१३। आदितस्तिसृणामतरायस्य च त्रिंशत्सागरोपम-कोटीकोटय परा स्थिति ।१४। सप्ततिर्मोहनीयस्य ।१५। विंशतिर्नाम-गोत्रयो ।१६। त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाण्यायुष ।१७। अपरा द्वादशमुहूर्ता वेदनीयस्य ।१८। नामगोत्रयोरष्टौ ।१९। शेषाणामतर्मुहूर्ता ।२०। विपाकोऽनुभव ।२१। स यथानाम ।२२। ततश्च निर्जरा ।२३। नाम-प्रत्यया सर्वतो योगविशेषात्सूक्ष्मैकक्षेत्रावगाहस्थिता सर्वात्मप्रदेशष्व-नतानतप्रदेशा ।२४। सद्वेद्यशुभायुर्नामगोत्राणि पुण्य ।२५। अतोऽन्य-त्पापम् ।।२६।।

इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे अष्टमोऽध्याय ।।८।।

आस्रवनिरोध सवर ।१। स गुप्तिसमितिधर्मानुप्रेक्षापरीषह-जयचारित्रै ।२। तपसा निर्जरा च ।३। सम्यग्योगनिग्रहो गुप्ति ।४।

ईर्याभाषैषणादाननिक्षेपोत्सर्गा. समितय. ।५। उत्तमक्षमामार्दवार्जव-शौचसत्यसयमतपस्त्यागकिंचन्यब्रह्मचर्याणि धर्म ।६। अनित्याशरणससा-रैकत्वान्यत्वाशुच्यास्रवसवरनिर्जरालोकबोधिदुर्लभधर्मस्वाख्यातत्वा-नुचिंतनमनुप्रेक्षा । । मार्गाच्यवननिर्जरार्थं परिषोढव्या: परिषहा: ।८। क्षुत्पिपासाशीतोष्णदंशमशकनाग्न्यारतिस्त्रीचर्यानिषद्याशय्याक्रोश-वधयाञ्चालाभरोगतृणस्पर्शमलसत्कारपुरस्कारप्रज्ञाज्ञानादर्शनानि ।९। सूक्ष्मसापरायछद्मस्थवीतरागयोश्चतुर्दश ।१०। एकादश जिने ।११। बादरसापराये सर्वे ।१२। ज्ञानावरणे प्रज्ञाज्ञाने ।१३। दर्शनमोहांतराय-योरदर्शनालाभौ ।१४। चारित्रमोहे नाग्न्यारतिस्त्रीनिषद्याक्रोशयाचा-सत्कारपुरस्कार. ।१५। वेदनीये शेषा ।१६। एकादयो भाज्या युगपदे-कस्मिन्नैकोनविंशति ।१७। सामायिकच्छेदोपस्थापनापरिहारविशुद्धि-सूक्ष्मसापराययथाख्यातमिति चारित्रम् ।१८। अनशनावमौदर्यवृत्ति-परिसख्यानरसपरित्यागविविक्तशय्यासनकायक्लेशा बाह्य तप ।१९। प्रायश्चित्तविनयवैय्यावृत्यस्वाध्यायव्युत्सर्गध्यान्यानुत्तरं ।२०। नवचतु-र्दशपचद्विभेदा यथाक्रम प्राग्ध्यानात् ।२१। आलोचनप्रतिक्रमणतदुभय-विवेकव्युत्सर्गतपश्छेदपरिहारोपस्थापना ।२२। ज्ञानदर्शनचारित्रोप-चारा ।२३। आचार्योपाध्यायतपस्विशैक्ष्यग्लानगणकुलसघसाधुमनोज्ञा-ना ।२४। वाचनापृच्छनानुप्रेक्षाम्नायधर्मोपदेशा ।२५। बाह्याभ्यन्तरो-पध्यो· ।२६। उत्तमसहननस्यैकाग्रचिंतानिरोधो ध्यानमांतर्मुहूर्तात् ।२७। आर्त्तरौद्रधर्म्यशुक्लानि ।२८। परे मोक्षहेतू ।२९। आर्तममनो-ज्ञस्य सप्रयोगे तद्विप्रयोगाय स्मृतिसमन्वाहार: ।३०। विपरीत मनोज्ञ-स्य ।३१। वेदनायाश्च ।३२। निदान च ।३३। तदविरतदेशविरतप्रमत्त-सयताना ।३४। हिंसानृतस्तेयविषयसरक्षणेभ्यो रौद्रमविरतदेशविरतयो:

।३५। आज्ञापायविपाकसस्थानविचयाय धर्म्यं ।३६। शुक्ले चाद्ये पूर्व. विद: ।३७। परे केवलिन ।३८। पृथक्त्वैकत्ववितर्कसूक्ष्मक्रियाप्रतिपातिव्युपरतक्रियानिवर्तीनि ।३९। त्र्येकयोगकाययोगायोगाना ।४०। एकाश्रये सवितर्कवीचारे पूर्वे ।४१। अवीचार द्वितीय ।४२। वितर्क श्रुत ।४३। वीचारोऽर्थव्यजनयोगसक्रान्ति ।४४। सम्यग्दृष्टिश्रावकविरतानतवियोजकदर्शनमोहक्षपकोपशमकोपशान्तमोहक्षपकक्षीणमोहजिना क्रमशोऽसख्येयगुणनिर्जरा ।४५। पुलाकबकुशकुशीलनिर्ग्रथस्नातका निर्ग्रंथा ।४६। सयमश्रुतप्रतिसेवनातीर्थलिगलेश्योपपादस्थानविकल्पत. साध्या: ।।४७।।

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्र नवमोऽध्याय ।।९।।

मोहक्षयाज्ज्ञानदर्शनावरणातरायक्षयाच्च केवल ।१। बधहेत्वभावनिर्जराभ्या कृत्स्नकर्मविप्रमोक्षा मोक्ष ।२। औपशमिकादिभव्यत्वाना च ।३। अन्यत्र केवलसम्यक्त्वज्ञानदर्शनसिद्धत्वेभ्य ।४। तदनन्तरमूध्व गच्छत्यालोकातात् ।५। पूर्वप्रयोगादसगत्वाद्बन्धच्छेदात्तथागतिपरिणामाच्च ।६। आविद्धकुलालचक्रवद्व्यपगतलेपालावुबदेरडबीजवदग्निशिखावच्च ।७ धर्मास्तिकायाभावात् ।८। क्षेत्रकालगतिलिगतीर्थचारित्रप्रत्येकबुद्धबोधितज्ञानावगाहनातरसख्याल्पबहुत्वत साध्या· ।।९।।

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे दशमोऽध्याय ।।१०।

अक्षरमात्रपदस्वरहीन व्यजनसधिविवर्जितरेफम् ।
साधुभिरत्र मम क्षमितव्य को न विमुह्यति शास्त्रसमुद्रे ।।१
दशाध्याये परिच्छिन्ने तत्त्वार्थे पठिते सति ।
फल स्यादुपवासस्य भाषित मुनिपुगवै ।।२
तत्त्वार्थसूत्रकर्त्तार गृध्रपिच्छोपलक्षितम् ।
वन्दे गणीन्द्रसजातमुमास्वामिमुनीश्वरम् ।।३

इति तत्त्वार्थाधिगम मोक्षशास्त्र समाप्तम् ।।

श्री परमात्मने नम

स्वर्गीय कविवर वृन्दावनजी रचित

वर्तमान चतुर्विंशतिजिनपूजा

दोहा

वदो पाँचो परम गुरु, सुर गुरु वदत जास ।
विघनहरन, मगलकरन, पूरन परम प्रकाश ।।१।।
चौबीसो जिनपति नमो, नमो शारदा माय ।
शिवमगसाधक साधु नमि, रचो पाठ सुखदाय ।।२।।

नामावली-स्तोत्र

जय जिनद सुखकद नमस्ते, जय जिनद जितफद नमस्ते ।
जय जिनद वरबोध नमस्ते, जय जिनद जितक्रोध नमस्ते ।।१।।
पाप-तापहर इदु नमस्ते, अरह-वरन जुत बिदु नमस्ते ।
शिष्टाचार विशिष्ट नमस्ते, इष्ट मिष्ट उत्कृष्ट नमस्ते ।।२।।
पर्म धर्म वर शर्म नमस्ते, मर्म-भर्म घन धर्म नमस्ते ।
दृग-विशाल वरभाल नमस्ते, हृदिदयाल गुनमाल नमस्ते ।।३।।

शुद्ध-बुद्ध अविरुद्ध नमस्ते, रिद्धि-सिद्धि-वरवृद्ध नमस्ते ।
वीतराग-विज्ञान नमस्ते, चिद्विलास धृतध्यान नमस्ते ॥४॥
स्वच्छ गुणाबुधिरत्न नमस्ते, सत्त्वहितकर-यत्न नमस्ते ।
कुनय-करी मृगराज नमस्ते, मिथ्याखगवरबाज नमस्ते ॥५॥
भव्य भवोदधितार नमस्ते, शर्मामृत-सितसार नमस्ते ।
दरशज्ञानसुखवीर्य नमस्ते, चतुराननधर धीर्य नमस्ते ॥६॥
हरि-हर-ब्रह्मा-विष्णु नमस्ते, मोहमर्द्द मनु जिष्णु नमस्ते ।
महादान महाभोग नमस्ते, महाज्ञान महाजोग नमस्ते ॥७॥
महा उग्र तपसूर नमस्ते, महा मौनगुण-भूरि नमस्ते ।
धरमचक्रि, वृषकेतु नमस्ते, भवसमुद्र शतसेतु नमस्ते ॥८॥
विद्याईश मुनीश नमस्ते, इद्रादिक नुतशीश नमस्ते ।
जय रत्नत्रयराय नमस्ते, सकल जीवसुखदाय नमस्ते ॥९॥
अशरनशरनसहाय नमस्ते, भव्य सुपथ लगाय नमस्ते ।
निराकार साकार नमस्ते, एकानेक आधार नमस्ते ॥१०॥
लोकालोक विलोक नमस्ते, त्रिधा सर्वगुणथोक नमस्ते ।
सल्ल दल्ल दल मल्ल नमस्ते, कल्लमल्ल जितछल्ल नमस्ते।११
भुक्तिमुक्ति दातार नमस्ते, उक्तिसुक्ति शृंगार नमस्ते ।
गुण अनत भगवत नमस्ते, जै जै जै जयवन्त नमस्ते ॥१२॥

इति पठित्वा जिनचरणाग्रे परिपुष्पाजलिम् क्षिपेत्

समुच्चय चतुर्विंशतिजिनपूजा

छन्द कवित्त

वृषभ अजित सभव अभिनन्दन,
सुमति पदम सुपार्स जिनराय ।
चद पुहुप शीतल श्रेयास नमि,
वासुपूज्य पूजित सुरराय ।।
विमल अनत धरम जस उज्ज्वल,
शाति कुन्थ अर मल्लि मनाय ।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु,
वर्द्धमान पद पुष्प चढाय ।।१।।

ॐ ह्री श्री वृषभादिवीरान्त चतुर्विशतिजिनसमूह अत्र अवतर अवतर सवौषट् आह्वानन ।

ॐ ह्री श्री वृषभादिवीरान्त चतुर्विशतिजिनसमूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ स्थापन ।

ॐ ह्री श्री वृषभादिवीरान्त चतुर्विशति जिनसमूह अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरण ।

अष्टक

मुनिमन सम उज्ज्वल नीर, प्राशुक गध भरा ।
भरि कनक कटोरी क्षीर, दीनी धार धरा ।।

चौबीसो श्री जिनचद, आनन्दकद सही ।
पद जजत हरत भवफद, पावत मोक्ष मही ।।१।।
ॐ ह्री श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम् ।
गोशीर कपूर मिलाय, केशर रग भरी ।
जिनचरनन देत चढाय, भव आताप हरी ।। चौ० २।।
ॐ ह्री श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो भवातापविनाशनाय चन्दनम् ।
तदुल सित सोमसमान, सुन्दर अनियारे ।
मुकताफल की उनमान, पुज धरो प्यारे ।।चौ० ३।।
ॐ ह्री श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतम् ।
वर कज कदब करड, सुमन सुगध भरे ।
जिन अग्र धरो गुनमड, कामकलक हरे ।। चौ० ४।।
ॐ ह्री श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो कामवाणविध्वसनाय पुष्पम् ।
मन मोदन मोदक आदि, सुन्दर सद्य बने ।
रसपूरित प्राशुक स्वाद, जजत छुधादि हने ।। चौ० ५।।
ॐ ह्री श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् ।
तम खडन दीप जगाय, धारो तुम आगे ।
सब तिमिर मोह क्षय जाय, ज्ञान कला जागै ।।चौ० ६।।
ॐ ह्री श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् ।
दशगध हुताशनमाहि, हे प्रभु खेवत हों ।
मिस धूम करम जरि जांहि, तुम पद सेवत हो ।।चौ० ७।।

ॐ ह्री श्री वृषभादिवीरान्तेभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपम् ।

शुचि पक्व सरस फल सार, सब ऋतुके ल्यायो ।
देखत दृगमन को प्यार, पूजत सुख पायो ।।चौ० ८।।

ॐ ह्री श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलम् ।

जलफल आठो शुचिसार, ताको अर्घ करो ।
तुमको अरपो भवतार, भवतरि मोक्ष वरो ।।चौ० ९।।

ॐ ह्री श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये अर्घम् ।

जयमाला

दोहा

श्रीमत तीरथनाथपद, माथ नाय हित हेत ।
गाऊ गुणमाला अबै, अजर अमरपद देत ।।१।।

छद घत्तानन्द

जय भवतमभजन जनमनकजन,
रजन दिनमनि स्वच्छ करा ।
शिवमगपरकाशक अरिगननाशक,
चौबीसो जिनराज वरा ।।२।।

छद पद्धरी

जय ऋषभदेव ऋषिगन नमत,
जय अजित जीत वसु अरि तुरत ।
जय सभव भवभय करत चूर,
जय अभिनन्दन आनन्दपूर ।।३।।

जय सुमति सुमतिदायक दयाल,
जय पद्म पद्मद्युति तन रसाल।
जय जय सुपास भवपास नाश,
जय चन्द चन्द तन दुतिप्रकाश ॥४॥
जय पुष्पदन्त दुति दन्त सेत,
जय शीतल शीतल गुननिकेत।
जय श्रेयनाथ नुत सहसभुज्ज,
जय वासवपूजित वासपुज्ज ॥५॥
जय विमल विमलपद देनहार,
जय जय अनन्त गुणगन अपार।
जय धर्म धर्म शिवशर्म देत,
जय शाति शाति पुष्टी करेत ॥६॥
जय कुथु कुथ वादिक रखेय,
जय अर जिन वसुअरि छय करेय।
जय मल्लि मल्ल हत मोहमल्ल,
जय मुनिसुव्रत व्रत सल्लदल्ल ॥७॥
जय नमि नुत वासवनुत सपेम,
जय नेमिनाथ वृषचक्रनेम।
जय पारसनाथ अनाथनाथ,
जय वर्द्धमान शिवनगरसाथ ॥८॥

घत्तानन्द छद

चौबीस जिनन्दा आनन्दकदा, पापनिकदा सुखकारी ।
तिन पद जुगचदा उदय अमन्दा, वासववन्दा हितधारी ।।

ॐ ह्री श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो महार्घम् ।

सोरठा

भुक्ति-मुक्ति-दातार चौबीसौ जिनराज वर ।
तिन पद मनवचधार, जो पूजै सो शिव लहै ।।

इत्याशीर्वादम् (पुष्पाजलिम् क्षिपेत्)

श्री आदिनाथ (ऋषभ) नाथ पूजा

अडिल्ल ।

परमपूज वृषभेश स्वयभू देवजू ।
पिता नाभि मरुदेवि करै सुर सेवजू ।।
कनकवरण तन-तुङ्ग धनुष पणशत तनो ।
कृपासिधु इत आइ तिष्ठ मम दुख हनो ।।१।।

ॐ ह्री श्री ऋषभनाथ जिन । अत्र अवतर अवतर सवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक

छद द्रुतविलम्बित तथा सुन्दरी

हिमवनोद्भव वारि सुधारिकै,
जजत हो गुनबोध उचारकै ।

परमभाव सुखोदधि दीजिये,
जनममृत्युजरा छय कीजिये ॥१॥

ॐ ह्री श्री ऋषभदेवजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम् ।

मलय चन्दन दाहनिकदन,
घसि उभै करमे करि वदन ।
जजत हो प्रशमाश्रय दीजिये,
तपत ताप तृषा छै कीजिये ॥२॥

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेवजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चदनम् ।

अमल तदुल खड विवर्जित,
सित निशेष महिमामय तर्जित ।
जजत हो तसु पुज धरायजी,
अखय सपति द्यो जिनरायजी ॥३॥

ॐ ह्री श्री पदेवजिनेन्द्राऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतम् ।

कमल चपक केतकि लीजिये,
मदनभजन भेट धरीजिये ।
परमशील महा सुखदाय है,
समरसूल निमूल नशाय है ॥४॥

ॐ ह्री श्री षभभदेवजिनेन्द्राय कामबाणविध्वसनाय पुष्पम् ।

सरस मोदन मोदक लीजिये,
हरनभूख जिनेश जजीजिये ।
सकल आकुल अतकहेतु है,

अतुल शांत सुधारस देतु है ।।५।।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेवजिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् ।

निबिड मोह महातम छाईयो,
स्वपर भेद न मोहि लखाइयो ।
हरनकारन दीपक तासके,
जजत हो पद केवल भासके ।।६।।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेवजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् ।

अगर चन्दन आदिक लेयके,
परम पावन गन्ध सुखेयके ।
अगनि संग जरै मिस धूमके,
सकल कर्म उडे यह घूमके ।।७।।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेवजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम् ।

सुरस पक्व मनोहर पावने,
विविध ले फल पूज रचावने ।
त्रिजगनाथ कृपा अब कीजिये ।
हमहि मोक्ष महाफल दीजिये ।।८।।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेवजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम् ।

जल फलादि समस्त मिलायके,
जजत हो पद मंगल गायके ।
भगतवत्सल दीनदयालजी,
करहु मोहि सुखी लखि हालजी ।।९।।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेवजिनेंद्राय अनर्घ्यपदप्राप्ये अर्घम् ।

पञ्चकल्याणक

अमित दोज अषाढ सुहावनी, गरमगल को दिन पावनी ।
हरि सची पितुमातहि सेवही, जजत है हम श्रीजिनदेव ही ।।१।।
ॐ ह्रीं आषाढकृष्णद्वितीयाया गर्भमगलप्राप्ताय श्रीऋषभनाथाय अर्घम्

असित चैत सुनौमि सुहाइयो, जनममगल तादिन पाइयो ।
हरि महागिरिपै जजियो तबै हम जजे पदपकजको अबै ।।२।।
ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्या जन्ममगलप्राप्ताय श्री ऋषभनाथाय अर्घम्

असित नौमि सुचैत धरे सही, तप विशुद्ध सबै समता गही ।
निजसुधारसमो झर लाइयो, हम जजै पद अर्घ चढाइयो ।।३।।
ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्याम् तपमगलप्राप्ताय श्रीऋषभनाथाय अर्घम्

असित फागुन ग्यारसि सोहनो, परम केवलज्ञान जग्यो भनो ।
हरिसमूह जजै तहँ आइकै, हम जजे इत मगल गाइके ।।४।।
ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णैकादश्या, ज्ञानमगलप्राप्ताय श्रीऋषभनाथाय अर्घम्

असित चौदसि माघ विराजई, परम मोक्ष सुमगल साजई ।
हरिसमूह जजै कैलाशजी, हम जजै अति धार हुलासजी ।।५।।
ॐ ह्रीं माघकृष्णचतुर्दश्या मोक्षमगलप्राप्ताय श्रीऋषभनाथाय अर्घम्

जयमाला

छन्द घत्तानन्द

जय जय जिनचदा आदि जिनदा, हनि भवफदा कदा जू ।
वासवशतवदा धरि आनदा, ज्ञान अमदा नदा जू ।।१।।

छन्द मोतियादाम

त्रिलोक हितकर पूग्न पर्म,
प्रजापति विष्णु चिदातम धर्म ।
जतीसुर ब्रह्म विदाबर बुद्ध,
वृषक अशक क्रियाम्बुधि शुद्ध ॥२॥
जबै गर्भागम मङ्गल जान,
तबै हरि हर्ष हिये अति आन ।
पिता जननी पद सेव करेय,
अनेक प्रकार उमग भरेय ॥३॥
जये जबही तबही हरि आय,
गिरेन्द्रविषै किय न्हौन सुजाय ।
नियोग समस्त किये तित सार,
सुलाय प्रभू पुनि राज अगार ॥४॥
पिताकर सौपि कियो तित नाट,
अमद अनद समेत विराट ।
सुथान पयान कियो फिर इन्द,
इहा सुर सेब करै जिनचन्द ॥५॥
कियो चिरकाल सुखाश्रिराज,
प्रजा सब आनद को तित साज ।

सुलिप्त सुभोगनि मे लखि जोग,
किये हरि ने यह उत्तम योग ॥६॥
निलज्जन नाच रच्यो तुम पास,
नवो रस पूरित भाव विलास।
बजै मिरदग दृमदृम जोर,
चलै पग झारि झनाझन झोर ॥७॥
घनाघन घट करै धुनि मिष्ठ,
बजै मुहचग सुरान्वित पुष्ट।
खडी छिन पास छिनहि आकाश,
लघू छिन दीरघ आदि विलास ॥८॥
ततच्छन ताहि विलै अविलोय,
भये भवतै भयभीत बहोय।
सुभावत भावन बारह भाय,
तहा दिवब्रह्म रिषीश्वर आय ॥९॥
प्रबोधप्रभू सुगये निज धाम,
तबै हरि आय रची शिवकाम।
कियो कचलौच प्रयाग अरण्य,
चतुर्थज्ञान लह्यो जग धन्य ॥१०॥
धरयो तब योग छ मास प्रमान,
दियो श्रेयाश तिन्है इखु-दान।

भयो जब केवलज्ञान जिनेन्द्र,
समोसृत ठाठ रच्यो सु धनेन्द ॥११॥
तहा वृषतत्त्व प्रकाशि अशेस,
कियो फिर निर्भय नाथ प्रवेस ।
अनन्त गुनातम श्रीसुखराश,
तुम्हैं नित भव्य नमैं शिवआश ॥१२॥

छन्द-घत्तानन्द

यह अरज हमारी सुनि त्रिपुरारी, जन्म जरामृति दूर करो ।
शिवसपति दीजे ढील न कीजे, निज लख लीजे कृपा धरो ॥

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेवजिनेन्द्राय महार्घम् ।

छन्द आर्या

जो ऋषभेश्वर पूजै, मनवचतन भाव शुद्ध कर प्रानी ।
सो पावै निश्चैसौं, भुक्ति औ मुक्ति सार सुख थानी ॥

पुष्पाञ्जलिम् क्षिपेत्, इत्याशीर्वाद ।

—०—

श्री अजितजिनेन्द्रपूजा

छद-अशोकपुष्पमजरी, दडक तथा अर्धमजरी तथा अर्द्धनाराच

त्याग वैजयंत सार सार-धर्म के अधार,
जन्मधार धीर नम्र सुष्टु कौशलापुरी ।
अष्ट दुष्ट नष्टकार मातु वैजयाकुमार,

आयु पूर्व लक्ष दक्ष है बहत्तरैंपुरी ॥
ते जिनेश श्रीमहेश शत्रु के निकन्दनेश,
अत्र हेरिये सुदृष्टि भक्त पै कृपा पुरी ।
आय तिष्ट इष्टदेव मे करो पदाब्जसेव,
पर्म शर्मदाय पाय आय शर्म आपुरी ॥१॥

ॐ ह्री श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अत्र अवतर अवतर सवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ । अत्र तम सन्निहितो भव भव वषट् ॥

अष्टक

गङ्गाहृद पानी निर्मल आनी, शौरभसानी सीतानी ।
तसु धारत धारा तृष, निवारा शातागारा सुखदानी ॥
श्री अजितजिनेश नुतनकेश, चक्रधरेश खग्गेश ।
मनवाछितदाता त्रिभुवनत्राता, पूजो ख्याता जग्गेश ॥१॥

ॐ ह्री श्री अजितजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम् ।

शुचि चदन बावन तापमिटावन, सौरभ पावन घसि ल्यायो ।
तुम भवतपभजन हो शिवरजन पूजा रजन मै आयो ॥श्री०॥

ॐ ह्री श्री अजितजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चदनम् ।

सितखड विवर्जित निशिपतितर्जित, पुज विधर्जित तदुल को ॥
भवभावनिखर्जित शिवपदसर्जित,आनदभर्जित ददलको ॥श्री०॥

ॐ ह्री श्री अजितजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतम् ।

मनमथमदमथन धीरजग्रथन, ग्रथनिग्रथन ग्रथपती ।

तुअपादकुशेसे आदिकुशेसे, धारि अशेसे अर्चयती ।।श्री०।।

ॐ ह्री श्री अजितजिनेन्द्राय कामवाणविध्वसनाय पुष्पम ।

आकुलकुलवारन थिरताकारन, छुधाविदारन चरु लायो ।

षटरसकर भीने अन्न नवीने, पूजन कीने सुख पायो ।।श्री०।।

ॐ ह्री श्री अजितजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय चरम ।

दीपक मनिमाला जोत उजाला, भरि कनथाला हाथ लिया ।

तुम भ्रमतहारी सिवसुखकारी, केवलधारी पूज किया ।।श्री०।।

ॐ ह्री श्री अजितजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम ।

अगरादिकचूरन परिमलपूरन, खेवत क्रूरन कर्म जरै ।

दशहूदिशि धावत हर्ष बढावत,अलिगुणगावत नृत्य करै ।।श्री०।।

ॐ ह्री श्री अजितजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम ।

बादाम नरगी श्रीफल पुगी, आदि अभगीसौ अरचौ ।

सबविघनविनाशै सुखपरकाशै,आतम भासै भौ विरचौ ।।श्री०।।

ॐ ह्री श्री अजितजिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलम ।

जलफल सब सज्जै बाजत बज्जै, गुनगनरजै मनमज्जै ।

तुअ पदजुगमज्जै सज्जन जज्जै,ते भव भज्जै निजकज्जै ।।श्री०।।

ॐ ह्री श्री अजितजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घम ।

पंचकल्याणक

जेठ असेत अमावशि सोहै, गर्भदिना नद सो मन मोहै ।

इद फनिद जजे मन लाई, हम पद पूजत अर्घ चढाई ।।१।।

ॐ ह्री ज्येष्ठकृष्णामावस्याया गर्भमगलाप्राप्ताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घम् ।

माघ सुदी दशमी दिन जाये, त्रिभुवनमे अति हर्ष बढाये ।
इद फनिद जजै तित आई, हम नित सेवत है हुलसाई ।।२।।

ॐ ह्री माघशुक्लदशमीदिने जन्ममगलमडिताय श्री अजित-नाथजिनेन्द्राय अर्घम ।

माघसुदी दशमी तप धारा, भव तन भोग अनित्य विचारा ।
इद फनिद जजै तित आई, हम इत सेवत है सिर नाई ।।३।।

ॐ ह्री माघशुक्लादशमीदिने तपमडिताय श्री अजितजिनेन्द्राय अर्घम् ।

पौषसुदी तिथि ग्यारस सुहायो, त्रिभुवनभानु सुकेवल जायो ।
इद फनिद जजै तित आई, हम पद पूजत प्रीत लगाई ।।४।।

ॐ ह्री पौषशुक्लएकादश्यादिने ज्ञानमडलमडिताय श्री अजित-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

पचमि चैतसुदी निरवाना, निज गुनराज लियो भगवाना ।
इद फनिद जजै तित आई, हम पद पूजत है गुन गाई ।।५।।

ॐ ह्री चैत्रशुक्लपचमीदिने निर्वाणमगलमडिताय श्री अजित-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

जयमाला

दोहा

अष्ट दुष्ट को नष्ट करि, इष्ट मिष्ट निज पाय ।
शिष्ट धर्म भाख्यो हमे, पुष्ट करो जिनराय ।।१।।

छन्द पद्धडी

जय अजितदेव तुअ गुन अपार,
पै कहूँ कछुक लघुबुद्धि धार ।
दश जनमत अतिशय बल अनत,
शुभ लच्छन मधुर वचन भनत ॥२॥
सहनन प्रथम, मलरहित देह,
तन सौरभ, शोणितस्वेत जेह ।
वपु स्वेद-बिना महरूप धार,
समचतुर धरे सठान चार ॥३॥
दश केवल, गमन अकाश देव,
सुरभिच्छ रहे योजन सतेव ।
उपसर्गरहित जिन तन सु होय,
सब जीव रहित बाधा सु जोय ॥४॥
मुख चारि सरब विद्या अधीश,
कवलाहार सुवर्जित गरीश ।
छायाबिनु नख कच बढ़ै नाहि,
उन्मेष टमक नहि भ्रकुटि माहि ॥५॥
सुरकृत दश चार करो बखान,
सब जीव मित्रताभाव जान ।
कटकबिन दर्पणवत सुभूम,
सब धान वृच्छ फल रहे झूम ॥६॥

षट रितु के फूल फले निहार,
दिशि निर्मल जिय आनन्द धार।
जह शीतल मन्द सुगन्ध वाय,
पदपंकजतल पंकज रचाय ॥७॥
मलरहित गगन सुर जय उचार,
वरषा गन्धोदक होत सार।
वर धर्मचक्र आगे चलाय,
वसु मंगलजुत वह सुर रचाय ॥८॥
सिंहासन छत्र चमर सुहात,
भामंडल छवि वरनी न जात।
तरु उच्च अशोक रु सुमन वृष्टि,
धुनि दिव्य और दुन्दुभि सुमिष्ट ॥९॥
दृग ज्ञान शर्म वीरज अनंत,
गुण छियालीस इम तुम लहंत।
इन आदि अनंते सुगुन धार,
वरनत गनपति नहिं लहत पार ॥१०॥
तब समवशरणमंह इन्द्र आय,
पद पूजत वसुविधि दरब लाय।
अति भगति सहित नाटक रचाय,
ताथेइ थेइ थेइ पुनि रही छाय ॥११॥

पग नूपुर झननन झनननाय,
तननतनन तननन तान गाय ।
घननन नन घटा घनाय,
छम छम छम छम घुघरू बजाय ॥१२॥
दृम दृम दृम दृम दृम मुरजध्वान,
ससाग्रदि सरगी सुर भरत तान ।
झट झट झट अटपट नटत नाट,
इत्यादि रच्यो अद्भुत सुठाट ॥१३॥
पुनि वदि इन्द्र थुति नुति करत,
तुम हो जग मे जयवत सत ।
फिर तुम विहार करि धर्मवृष्टि,
सब जोग निरोध्यो परम इष्ट ॥१४॥
सम्मेदथकी लिय मुकतिथान,
जय सिद्धशिरोमन गुणनिधान ।
वृन्दावन वन्दत बारबार,
भवसागरते मो तार तार ॥१५॥

छन्द घत्तानन्द

जय अजित कृपाला गुनर्णिमाला,
सजमशाला बोधपती ।
वर सुजस उजाला हीरहिमाला,
ते अधिकाला स्वच्छ अती ॥१६॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथजिनेन्द्राय महार्घम् ।

छन्द मदावलिप्तकपोल

जो जन अजित जिनेश जजै है मनवचकाई,
ताको होय अनन्द ज्ञान सम्पति सुखदाई।
पुत्र मित्र धनधान्य सुजय त्रिभुवनमह छावै,
सकल शत्रु छय जाय अनुक्रमसो शिव पावै ।।१७।

पुष्पाजलिम् क्षिपेत्, इत्याशीर्वाद ।

—०—

श्री संभवनाथ जिनपूजा

छन्द मदावलिप्तकपोल

जय सभव जिनचन्द सदा हरिगनचकोरनुत,
जयसेना जसु मातु जैति राजा जितारसुत।
तजि ग्रीवक लिये जन्म नगर सावत्री आई,
सो भवभजनहेत भगंतपर होहु सहाई ।।१।।

ॐ ह्री श्री सभवनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर, सवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ । अत्र मम सन्निहितो भव भव, वषट् ।

अष्टक

छन्द चौबोला

मुनिमनसम उज्जल जल लेकर, कनक कटोरी मे धारा।
जनमजरामृतु नाशकरनको, तुम पदतर ढारो धारा ।।

सभवजिनके चरन चरचते, सब आकुलता मिट जावै ।
निजनिधि ज्ञानदरशसुखवीरज, निरावाध भविजन पावै ।।
ॐ ह्री श्री सभवजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युबिनाशनाय जलम् ।

तपतदाहको कदन चदन, मलयागिरिको घसि लायो ।
जगवदन भौफदनखदन, समरथ लखि शरनै आयो ।।स०।।
ॐ ह्री श्री सभववजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चदनम् ।

देवजीर सुखदास कनलवासित, सित सुन्दर अनियारे ।
पुज धरो इन चरनन आगे, लहो अखयपदको प्यारे ।।स०।।
ॐ ह्री श्री सभवजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतम् ।

कमल केतकी बेल चमेली, चपा जूही सुमन वरा ।
तासो पूजत श्रीपति तुमपद, मदनबान विध्वसकरा ।।स०।।
ॐ ह्री श्री शभवदेवजिनेन्द्राय कामबाणविध्वसनाय पुष्पम् ।

घेवर बावर मोदन मोदक, खाजा ताजा सरस बना ।
तासो पद श्रीपतको पूजत, छुधारोग ततकाल हना ।।स०।।
ॐ ह्री श्री सभवजिनेद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् ।

घटपटपरकाशक भ्रमतनाशक तुम ढिग ऐसो दीप धरो ।
केवलजोत उदोत होहु मोहि, यही सदा अरदास करो ।।स०।।
ॐ ह्री श्री सभवजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् ।

अगर तगर कृसनागर, श्रीखडादिक चूर हुतासन मे ।
खवत हो तुम चरनजलज ढिग, कर्म छार जरि ह्वै छनमे ।।स०।।
ॐ ह्री श्री सभवजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम् ।

श्रीफल लौंग बदाम छुहारा, एला पिस्ता दाख रमैं ।
लै फलप्राशुक पूजो तुमपद, देहु अखयपद नाथ हमैं ।।स०।।

ॐ ह्री श्री सभवजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम् ।

जल चन्दन तन्दुल पुष्प चरु, दीप धूप फल अर्घ किया ।
तुमको अरपो भावभगतिधर, जैजैजै शिवरमनिपिया ।।स०।।

ॐ ह्री श्री सभवजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घम् ।

पञ्चकल्याणक

छद हसी मात्रा १५

माता गर्भविषै जिन आय, फागुनसित आठै सुखदाय ।
सेयो सुरतिय छप्पन वृद नानाविधि मै जजौ जिनद ।।१।।

ॐ ह्री फाल्गुनशुक्लाष्टम्या गर्भमगलमडिताय श्री सभवनाथजिनेन्द्राय अर्घम् ।

कातिक सित पूनम तिथी जान, तीन ज्ञानजुत जनम प्रमान ।
धरि गिरिराज जजे सुरराज,तिन्हे जजौ मै निजहित काज ।२।

ॐ ह्री कार्तिकशुक्लपूर्णिमाया जन्ममगलमडिताय श्री सभवजिनेन्द्राय अर्घम् ।

मगसिरसित पून्यो तपधार, सकलसग तजि जिन अनगार ।
ध्यानादिक बल जीते कर्म, चर्चौ चरन देहु शिवशर्म ।।३।।

ॐ ह्री मार्गशीर्षशुक्लपूर्णिमाया तपोमगलमडिताय श्री सभवजिनेन्द्राय अर्घम् ।

कातिककलि तिथिचौथ महान, घातिघात लिय केवलज्ञान ।
समवशरनमह तिष्ठे देव, तुरिय चिहन चर्चो वसुभेव ॥४॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णचतुर्थ्यां ज्ञानमंडलमंडिताय श्री संभव-जिनेन्द्राय अर्घ्यम् ।

चैतशुक्ल तिथिषष्ठी चोख, गिरसम्मेदतैं लीनों मोख ।
चार शतक धनु अवगाहना, जजों तासपद थुतिकर घना ॥५॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लषष्ठम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्री संभवजिनेन्द्राय अर्घ्यम् ।

जयमाला

दोहा

श्रीसंभव के गुन अगम, कहि न सकत सुरराज ।
मैं वशभक्ति सुधीठ ह्वै, विनवों निज हितकाज ॥१॥

छंद मोतियादाम

जिनेश महेश गुनेश गरिष्ट,
सुरासुर सेवित इष्ट वरिष्ट ।
धरे वृषचक्र करे अघ चूर,
अतत्त्वछपातममर्द्दन सूर ॥२॥
सुतत्त्व प्रकाशन शासन शुद्ध,
विवेक विराग बढ़ावन बुद्ध ।

दयातरु-तर्पन मेघ महान,
कुनयगिरिगजन वज्रसमान ॥३॥
सुगर्भरु जन्ममहोत्सव माहि,
जगज्जन आनदकद लहाहि ।
सुपूरब साठहि लच्छ जु आय,
कुमार चतुर्थम अश रमाय ॥४॥
चवालिस लाख सुपूरब एव,
निकटक राज कियो जिनदेव ।
तजे कछु कारन पाय सुराज,
धरे व्रत सजम आतमकाज ॥५॥
सुरेन्द्र नरेन्द्र दियो पयदान,
धर्यो वन मे निज आतमध्यान ।
कियो चव घातिय कर्म विनाश,
लियो तव केवलज्ञान प्रकाश ॥६॥
भई समवस्रत ठाट अपार,
खिरै धुनि झेलहि श्री गनधार ।
भने षट द्रव्य तने विसतार,
चहू अनुयोग अनेक प्रकार ॥७॥
कहे पुनि त्रेपन भाव विशेष,
उभे विधि है उपशम्य जु भेष ।

सुसम्यक चारित्र भेद स्वरूप,
अबै इमि छायक नौ सुअनूप ॥८॥
दृगौ बुधि सम्यकचारित दान,
सुलाभरु भोगुपभोग प्रमान ।
सुवीरज गजुत ए नव जान,
अठार छयोपशम इम प्रमान ॥९॥
मति श्रुति औधि उभैविधि जान,
मन परजै चखु और प्रमान ।
अचक्खु तथा विधि दान रु लाभ,
सुभोगुपभोगरु वीरज साभ ॥१०॥
व्रताव्रत सजम और सु धार,
धरे गुन सम्यक चारित भार ।
भये वसु एक समापत येह,
इकीश उदीक सुनो अब जेह ॥ ॥११॥
चहू गति चारि कषाय त्रिवेद,
छलेश्यय और अज्ञान विभेद ।
असजम भाव लखो इस माहि,
असिद्धित और अतत्त कहाहि ॥१२॥
भये इकबीस सुनो अब और,
विभेद त्रिय पारिनामिक ठौर ।
सुजीविन भव्यत और अभव्व,

तरेपन एम भने जिन सब्ब ।।१३।।
तिन्हो मह केतक त्यागन जोग,
किंतेक गहेतै मिटै भवरोग ।
कह्यो इन आदि लह्यो फिर मोख,
अनत गुनातम मडित चोख ।।१४।।
जजो तुम पाय जपा गुन सार,
प्रभू हमको भवसागर तार ।
गही शरनागत दीन दयाल,
बिलब करो मति हे गुनमाल ।।१५।।

छन्द घत्तानन्द

जै जै भवभजन जनमनरजन, दयाधुरधर कुमतिहरा ।
वृन्दावनवदत मन आनदित, दीजे आतमज्ञानवरा ।।१६।।
ॐ ह्रीं श्री सभवनाथ जिनेन्द्राय महार्घम् ।

छन्द अडिल्ल

जो वाचै यह पाठ सरम सभवतनो ।
सो पावै धनधान्य सरिस सपित घनो ।।
सकल पाप छै जाय सुजस जग बढै ।
पूजत सुरपद होय अनुक्रम शिव चढै ।।१७।।
पुष्पाञ्जलिम् क्षिपेत्, इत्याशीर्वाद ।

—०—

श्री अभिनन्दन जिनपूजा

छन्द मदाविलिप्तकपोल

अभिनदन आनदकद, सिद्धारथ नन्दन,
सवरपिता दिनन्द चन्द, जिहि आवत वदन ।
नगर अजोध्या जनम इद, नागिद जु ध्यावैं,
तिन्है जजत के हेत थापि, हम मगल गावैं ॥१॥

ॐ ह्री श्री अभिनदनजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर सवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक

छन्द गीता, हरिगीता तथा रूपमाला

पदमद्रहगत गगचग, अभग, धार सुधार है,
कनकमणिगनजडित झारी, द्वारधार निकार है ।
कलुषताप निकन्द श्री अभिनन्द, अनुपम चन्द है,
पदवद वृद जजे प्रभु भवदद फद निकन्द है ॥१॥

ॐ ह्री श्री अभिनदनजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम् ।

शीतचदन कदलिनदन, सुजलसग घसायकैं ।
ह्वै सुगध दशोदिशामे, भमे मधुकर आयकैं ॥क० ॥२॥

ॐ ह्री श्री अभिनदनजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनम् ।

हीर हिमशशिफेन मुक्ता, सरिस तन्दुल सेत है ।
तासको ढिग पुज धारौ, अखयपदके हेत है ॥क० ३॥

ॐ ह्री श्री अभिनदनजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतम् ।

समरभटनिघटन सुकारन, सुमन सुमन समान है ।
सुरभितैं जापै करै झकार, मधुकर आन है ।।क० ।।४।।
ॐ ह्री श्री अभिनन्दनजिनेन्द्राय कामबाणविध्वसनाय पुष्पम् ।

सरस ताजे नव्य गव्य मनोज्ञ, चितहर लेयजी ।
छुधाछेदन छिमाछितिपतिके, चरन चरचेयजी ।।क० ५।।
ॐ ह्री श्री अभिनन्दनजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् ।

अततततममर्दनकिरनवर, बोधभानुविकाश है ।
तुम चरनढिग दीपक धरो, मोहि होहु स्वपरकाश है ।।क०।६।।
ॐ ह्री श्री अभिनन्दनजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् ।

भूर अगर कपूर चूर सुगध, अगिनी जराय है ।
सब करमकाष्ठ सुकाष्ठमे मिस, धूमधूम उडाय है।।क० ।।७।।
ॐ ह्री श्री अभिनन्दनजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम् ।

आम निबु सदा फलादिक, पक्क पावन आनजी ।
मोक्षफलके हेत पूजौ जोरिकै जुगपानजी ।।क०।।८।।
ॐ ह्री श्री अभिनन्दनजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम् ।

अष्टद्रव्य सवारि सुन्दर, सुजय गाय रसाल ही ।
नचत रचत जजो चरनजुग, नाय नाय सुभाल ही ।।क० ।।९।।
ॐ ह्री श्री अभिनन्दनजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घम् ।

पंचकल्याणक

छन्द हरिपद

शुकलछट्ठ वैशाख विषै तजि, आये श्रीजिनदेव ।
सिद्धारथमाता के उर मे, करै शची शुचि सेव ।।

रतनवृष्टि आदिक वर मंगल होत अनेक प्रकार ।
ऐसे गुननिधिको मैं पूजौं ध्यावों बारबार ॥१॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लषष्ठम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्री अभिनन्दन-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

माघशुक्ल तिथिद्वादशिके दिन, तीनलोक हितकार ।
अभिनंदन आनंदकंद तुम, लीन्हो जग अवतार ॥
एक महूरत नरकमांहि हू, पायो सब जिन चैन ।
कनकवरन कपि चिन्हधरनपद, जजों तुमैं दिन रैन ॥२॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लद्वादशम्यां जन्ममंगलमंडिताय श्री अभिनन्दन-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

साढ़े छत्तिसलाख सुपूरब राजभोग वर भोग ।
कछु कारन लखि माघशुक्ल, द्वादशिको धार्यो जोग ॥
षष्टम नेम समापत करि लिय, इंद्रदत्तधर छीर ।
जय धुनि पुष्प रत्न गंधोदक, वृष्टि सुगंध समीर ॥३॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लद्वादशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्री अभिनन्दन-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

पौषशुक्ल चौदशिको घाते, घातिकरम दुखदाय ।
उपजायो वरबोध जास को, केवल नाम कहाय ॥
समवसरन लहि बोधिधरम कहि, भव्यजीव सुखकन्द ।
मोकों भवसागरतें तारो जय जय जय अभिनंद ॥४॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लचतुर्दशम्यां ज्ञानमंगलमंडिताय श्री अभिनन्दन जिनेन्द्राय अर्घम् ।

जोगनिरोध अघाति घाति लहि, गिरसम्मेदतैं मोख ।
माससकल सुखरास कहे, वैसाखशुकल छठ चोख ॥
चतुरनिकाय आय तित कीनो, भगत भाव उमगाय ।
हम पूजैं इत अरघ लेय जिमि विघन सघन मिट जाय ॥५॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लषष्ठम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्री अभिनन्दन जिनेन्द्राय अर्घम् ।

जयमाला

दोहा

तुंग सु तन धनु तीनसौ, औ पचास सुखधाम ।
कनकवरन अवलौकिकैं पुनि पुनि करूं प्रणाम ॥१॥

छंद लक्ष्मीधरा

सच्चिदानन्द सद्ज्ञान सद्दर्शनी,
सत्स्वरूपा लई सत्सुधासर्सनी ।
सर्वआनन्दकंदा महादेवता,
जास पादाब्ज सेवैं सबै देवता ॥२॥
गर्भ औ जन्म निःकर्मकल्यान में,
सत्त्व को शर्म पूरै सबै थानमें ।
वंशइक्ष्वाकुमें आपु ऐसे भये,
ज्यों निशाशर्दमें इंदु स्वेच्छै गये ॥३॥

छंद लक्ष्मीवती

होत वैराग लौकांतसुर बोधियो,
फेरि शिविकासु चढि गहन निज सोधियो ।
घाति चौघातिया ज्ञानकेवल भयो,
समवसरनादि धनदेव तब निरमयो ॥४॥
एक है इन्द्रनीली शिला रत्न की,
गोल साढे दशे जोजने जत्न की ।
चारदिश पैंडिका बीस हज्जार है,
रत्नके चूरका कोट निरधार है ॥५॥
कोट चहुँओर चहुँद्वार तोरन खचे,
तास आगे चहूँ मानथंभा रचे ।
मान मानी तजै जास ढिग जायकै,
नम्रता धार सेवै तुम्हें आयकै ॥६॥

छंद लक्ष्मीधरा

बिंब सिंघासनो पै जहां सोहही,
इन्द्र नागेन्द्र केते मनै मोहही ।
वापिका वारिसो जत्र सोहै भरी,
जासमे न्हात ही पाप जावै टरी ॥७॥
तास आगे भरी खातिका वारिसो,
हंस सूआदि पखी रमै प्यारसो ।
पुष्पकी वाटिका बागवृच्छे जहां,

फूल औ श्रीफले सर्वही है तहा ॥८॥
कोट सौवर्ण का तास आगे खडा,
चार दर्वाज चौ ओर रत्नो जडा।
चार उद्यान चारो दिशामे गना,
है धुजा पक्ति औ नाटशाला बना ॥९॥
तासु आग त्रिती कोट रूपामयी,
तूप नौ जास चारो दिशामे ठयी।
धाम सिद्धातधारीन के है जहा,
औ सभाभूमि है भव्य तिष्ठै तहा ॥१०॥
तास आगे रची गधकूटी महा,
तीन है कट्टिनी सारशोभा लहा।
एकै तौ निधै ही धरी ख्यात है,
भव्य प्रानी तहा लौ सबै जात है ॥११॥
दूसरी पीठपे चक्रधारी गमैं,
तीसरे प्रातिहार्ये लसैं भागमे।
तासपै वेदिका चार थभानकी,
है बनी सर्व कल्याण के खानकी ॥१२॥
तासपै है सुसिघासन भासन,
जासपै है पद्म प्राफुल्ल है आसन।
तासुपै अतरीक्ष विराजै सही,
तीन छत्रे फिरे शीस रत्नै मही ॥१३॥

वृक्ष शोकापहारी अशोक लसै,
दुदुभी नाद औ पुष्प खते खसै ।
देह की ज्योति सो मडलाकार है,
सात भौ भव्य तामे लखैं सार है ।।१४।।
दिव्यवानी खिरै सर्वशंका हरै,
श्री गनाधीश झेलै सुशक्ती धरै ।
धर्मचक्री तुही कर्मचक्री हने,
सर्वशक्री नमै मोद धारै घने ।।१५।।
भव्य को बोधि सम्मेदतै श्यौ गये,
तत्र इन्द्रादि पूजे सुभक्तीमये ।
हे कृपासिधु मोपै कृपा धारिये,
घोर ससारसो शीघ्र मो तारिये ।।१६।।

छन्द घत्तानन्द

जै जै अभिनदा आनदकदा, भवसमुद्र बर पोत इवा ।
भ्रमतमशतखडा, भानुप्रचडा, तारि तारि जग रैनदिवा ।।१७।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दनजिनेन्द्राय पूर्णार्घम् ।

छन्द कवित्त

श्री अभिनदन पापनिकदन तिन पद जो भवि जजै सुधार,
ताके पुन्नभानु पर उग्गै दुरित तिमिर फाटै दुखकार ।
पुत्र मित्र धन धान्य कमल यह विकसै सुखद जगतहित प्यार,
कछुककालमेसो शिवपावै पढै सुने जिन जजै निहार ।१८।।

पुष्पाजलिम् क्षिपेत्, इत्याशीर्वाद ।

—०—

श्री सुमतिनाथ जिनपूजा

कवित्त रूपक मात्रा ३१

सजमरतन विभूषन भूषित, दूषन दूषन श्री जिनचद ।
सुमतिरमारजन भवभजन, सजयत तजि मेरुनरिद ।।
मातु मगला सकल मगला, नगर बिनीता जयै अमद ।
सो प्रभु दयासुधारस गर्भित, आय तिष्ठ इत हरि दुखदद ।।

ॐ ह्री श्री सुमतिजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर सवौषट । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक

छन्द कवित्त तथा कुसुमलता

पचमउदधि तनो सम उज्वल,
जल लीनो वरगध मिलाय ।
कनकटोरी माहि धारि करि,
धारि देहु सुचि मन वच काय ।।
हरिहर वदित पापनिकदित,
सुमतिनाथ त्रिभुवन के राय ।
तुम पदपद्म सद्मशिवदायक,
जजत मुदितमन उदित सुभाय ।।१।।

ॐ ह्री श्री सुमतिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम् ।

मलयागर घनसार घसौ वर,
केशर अर करपूर मिलाय।
भवतप हरन चरन पर धारो,
जनम जरा मृत ताप पलाय ॥हरि० २॥

ॐ ह्री श्री सुमतिनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चदनम्।

शशि सम उज्ज्वल सहित गध तल,
दोनो अनी शुद्ध सुखदास।
सो ले अखय सपदाकारन,
पुज धरो तुम चरनन पास ॥हरि० ३॥

ॐ ह्री श्री सुमतिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतम्।

कमल केतकी बेल चमेली,
करना अरु गुलाब महकाय।
सो ले समरशूल छयकारन,
जजो चरन अति प्रीत लगाय ॥हरि० ४॥

ॐ ह्री सुमतिनाथजिनेन्द्राय कामवाणविध्वसनाय पुष्पम्।

नव्य गव्य पकवान बनाऊ,
सुरस देखि दृगमन ललचाय।
सो लै क्षुधारोग छयकारन,
धरो चरण ढिग मन हरषाय ॥हरि० ५॥

ॐ ह्री श्री सुमतिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम्।

रतनजडित अथवा घृतपूरित,
वा कपूरमय जोति जगाय ।
दीप धरो तुम चरनन आगे,
जातै केवलज्ञान लहाय ॥हरि०६॥

ॐ ह्री श्री सुमतिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् ।

अगर तगर कृष्णागर चन्दन,
चूरि अगनि मे देत जराय ।
अष्ट करम यै दुष्ट जरतु हैं,
धूम धूम यह तासु उडाय ॥हरि०७॥

ॐ ह्री श्री सुमतिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम् ।

श्रीफल मातुलिग वर दाडिम,
आम निबु फल प्रासुक लाय ।
मोक्ष महाफल चाखन कारन,
पूजत हो तुमरे जुग पाय ॥हरि०८॥

ॐ ह्री श्री सुमतिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम् ।

जल चदन तदुल प्रसून चरु,
दीप धूप फल सकल मिलाय ।
नाचि राचि शिरनाय समरचो,
जय जय जय जय जय जिनराय ॥हरि०६।

ॐ ह्री श्री सुमतिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घम्।

पंचकल्याणक

रूप चौपाई

सजयत तजि गरभ पधारे,
सावनसेत दुतिय सुखकारे ।
रहे अलिप्त मुकुर जिमि छाया,
जजो चरन जय जय जिनराया ।।१।।

ॐ ह्री श्रावणशुक्लद्वितीया गर्भमंगलमंडिताय श्री सुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घम् ।

चैतसुकुल ग्यारस कह जानो,
जनमे सुमति सहित त्रयज्ञानो ।
मानो धर्यो धरम अवतारा,
जजो चरन जुग अष्टप्रकारा ।।२।।

ॐ ह्री चैत्रशुक्लैकादश्या जन्ममंगलमंडिताय श्री सुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घम् ।

वैसाखसुकल नौमि तिथि भाखा,
तादिन तप धरि निजरस चाखा ।
पारन पद्मसद्म पय कीनो,
जजत चरन हम समता भीनो ।।३।।

ॐ ह्री वैशाखशुक्लैनवम्या तपोमंगलमंडिताय श्री सुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घम् ।

सुकलवैसाख एकादशि हाने,
घाति सकल जे जुगपति जाने ।

समवसरनमह कहि वृषसार,
जजहुँ अनन्तचतुष्टयधार ॥४॥

ॐ ह्री चैत्रशुक्लैकादश्या ज्ञानमगलमडिताय श्री सुमतिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

चैतसुकल ग्यारस निरवान,
गिरि समेदतै त्रिभुवन मान ।
गुनअनन्त निज निरमल धारी,
जजो देव सुधि लेहु हमारी ॥५॥

ॐ ह्री चैत्रशुक्लैकादश्या मोक्षमगलमडिताय श्री सुमतिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घम ।

जयमाला

दोहा

सुमति तीनसौ छत्तिसौ, सुमतिभेद दरसाय ।
सुमति देहु विनती करो सुमति विलब कराय ॥१॥
दयाबेलि तह सुगुननिधि, भवि-कमोद-गण-चन्द ।
सुमतिसती सुमतिको, ध्यावो धरि आनन्द ॥२॥
पच परावरतन हरन, पचसुमति सित दैन ।
पचलब्धिदातार के, गुन गाऊ दिनरैन ॥३॥

छद भुजगप्रयात

पिता मेघराजा सबै सिद्धकाजा,
जपे नाम जाको सबै दुख भाजा ।
महासूर इक्ष्वाकवशी विराजै,
गुणग्राम जाको सबै ठौर छाजै ॥४॥

तिन्हो के महापुण्यसों आप जाये,
तिहूलोक मे जीव आनन्द पाये ।
सुनासीर ताही धरी मेरु धायो,
क्रिया जन्मकी सर्व कीनी यथा यो ॥५॥
बहुरि ताको सौपि सगीत कीनो,
नमे हाथ जोरे भली भक्ति भीनो ।
बिताई दशै लाख ही पूर्व बालै,
प्रजा लाख उन्तीस ही पूर्व पालै ॥६॥
कछू हेतु तै भावना बार भाये,
तहा ब्रह्मलौकातकेदेव आये ।
गये बोधि ताही समै इन्द्र आयो,
धरे पालकी मे सु उद्यान ल्यायो ॥७॥
नमे सिद्ध को केशलोचे सबै ही,
धर्‌यो ध्यान शुद्ध जु घाती हने ही ।
लह्यो केवल औ समोसर्न साज,
गणाधीश जु एकसौसोल राज ॥८॥
खिरै शब्द तामै छहो द्रव्य धारे,
गुनौपर्जउत्पादव्यय ध्रौव्य सारै ।
तथा कर्म आठो तनी थित्ति गाज,
मिलै जासुके नाशते मोच्छराज ॥९॥

धरै मोहिनी सत्तर कोडकोडी ।
सरित्पत्प्रमाण तिथि दीर्घ जोडी ।
अवर्ज्ञानदृग्वेदनी अन्तराय,
धरे तीस कोडाकुडी सिंधुकाय ॥१०॥
तथा नामगोत कुडाकोडि बीस,
समुद्रप्रमाण धरे सत्तईस ।
सु तेंतीस अब्धि धरे आयु अब्धि,
कहे सर्व कर्मो तनी वृद्धलब्धि ॥११॥
जघन्य प्रकारै धरे भेद ये ही,
मुहूर्त वसू नामगोत गने ही ।
तथा ज्ञानदृग्मोह प्रत्यूह आय,
सुअन्तर्मुहूर्त धरै थित्ति गाय ॥१२॥
तथा वेदनी बारहे ही मुहूर्त,
धरै थित्त ऐसे भन्यो न्यायजुत्त ।
इन्है आदि तत्त्वार्थ भाख्यो अशेसा,
लह्यो फेरि निर्वानमाही प्रवेसा ॥१३॥
अनत महत सुसत सुतत,
अमद अफद अनद अभत ।
अलक्ष विलक्ष सुलक्ष सुदक्ष,
अनक्ष अवक्ष अभक्ष अतक्ष ॥१४॥

अवर्ण अघर्ण अमर्ण अकर्ण,
अभर्ण अतर्ण अशर्ण सुशर्ण ।
अनेक सदेक चिदेक विवेक,
अखड सुमड प्रचड तदेक ॥१५॥
सुपर्म सुधर्म सुशर्म अकर्म,
अनत गुनाराम जैवत वर्म ।
नमै दास वृन्दावन शर्न आई,
मबै दुखते मोहि लीजै छुडाई ॥१६॥

छन्द घत्तानन्द

तुव सुगुन अनता ध्यावत सता,
भ्रमतम-भजनमार्तडा ।
सतमतकरचडा भवि-कज मडा,
कुमति कुबल इन गन हडा ॥१७॥

ॐ ह्री श्री सुमतिनाथजिनेन्द्राय महार्घम् ।

छन्द रोडक

सुमति-चरन जो जजै, भविकजन मनवचकाई,
तासु सकल दुखदददफद, ततछिन छय जाई ।
पुत्र मित्र धन धान्य, शर्म अद्भुत सो पावै,
वृन्दावन निर्वान लहै, जो निहचै ध्यावै ॥१८॥

पुष्पाञ्जलिम् क्षिपेत्, इत्याशीर्वाद ।

—०—

श्री पद्मप्रभ जिनपूजा

छन्द रोडक (मदावलिप्त कपोल)

पदमरागनिवरन-धरन, तनतुग अढाई,
शतक दण्ड अघ खड, सकल सुर सेवत आई ।
धरनि तात विख्यात, सुसीमा जू के नन्दन,
पदमचरन धरि राग, सु थापो इति करि वन्दन ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर, संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठ ठ । अत्र मम सन्निहितो भव भव, वषट् ।

अष्टक

चाल होली की ताल जत्त

पूजो भावसो, श्रीपदमनाथपद सार, पूजो भावसो ॥टेक॥
गगाजल अति प्रासुक लीनो, सौरभ सकल मिलाय ।
मन वच तन त्रय धार देत हो, जनम जरा मृत जाय ॥
पूजो भावसो, श्री पदमनाथपद सार, पूजो भावसो ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम् ।

मलयागर चदन कपूर घसि, केशर रग मिलाय ।
भवतपहरन चरनपर वारो, मिथ्याताप मिटाय ॥पूजो० २॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चदनम् ।

तदुल उज्ज्वल गध अनी जुत कनकथार भर लाय ।
पुज धरो तुव चरनन आगै, मोहि अखयपद दाय ॥पू० ३॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतम् ।

पारिजात मंदार कलपतरु जनित, सुमन शुचि लाय ॥
समरशूल निरमूलकरन को, तुम पद पद्म चढ़ाय ॥पू० ४॥
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पम् ।
घेवर बावर आदि मनोहर, सद्य सजे शुचि भाय ।
छुधा रोग विर्नाशन कारन, जजों हरष उर लाय ॥पू० ५॥
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् ।
दीपक जोति जगाय ललित वर, धूमरहित अभिराम ।
तिमिरमोह नाशन के कारन जजों चरन गुनधाम ॥पू० ६॥
ॐ ह्रीं पद्मप्रभजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् ।
कृष्णागर मलयागर चंदन, चूर सुगंध बनाय ।
अगिनि माहि जारों तुम आगे, अष्टकरम जरि जाय ॥पू० ७॥
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम् ।
सुरस वरन रसना मन भावन, पावन फल अधिकार ।
तासों पूजों जुगम चरन यह, विघन करम निरवार ॥पू० ८॥
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम् ।
जल फल आदि मिलाय गाय गुन, भगत भाव उमगाय । ।
जजों तुमहि शिवतियवर जिनवर, आवागमन मिटाय ॥पू० ९॥
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घम् ।

पञ्चकल्याणक

छंद द्रुतबिलम्बित

असित माघसु छट्ट बखानिये, गरभ मंगल ता दिन मानिये ।
उरध ग्रीवकसों चय राजजी, जजत इन्द्र जजैं हम आजजी ।
ॐ ह्रीं माघकृष्णषष्टम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घम् ।

कातिक वदि तेरस को जये, त्रिजगजीव सुआनद को लये।
नगर स्वर्ग समान कुसंविका, जजत है हरि सजुत अम्बिका ॥

ॐ ह्री कार्तिक कृष्णत्रयोदश्या जन्ममगलमंडिताय श्री पद्मप्रभ-जिनेन्द्राय अर्घम्।

वदि तेरस कातिक भावनी, तप धर्यो वन पष्टम पावनी।
करत आतम ध्यान धुरधरो, जजत है हम पाप सबै हरो ॥

ॐ ह्री कार्तिककृष्णत्रयोदश्या तपोमगलमंडिताय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घम्।

सुकल पूनम चैत सुहावनी, परम केवल ता दिन पावनी।
सुर सुरेश नरेश जजैं तहा, हम जजैं पदपकज को इहा ॥

ॐ ह्री चैत्रशुक्लपूर्णिमाया ज्ञानमगलमंडिताय श्री पद्मप्रभ-जिनेन्द्राय अर्घम्।

असित फागुन चौथ सुजानियो, सकल कर्ममहारिपु हानियो।
गिरिसमेद थकी शिवको गये, हम जजैं पद ध्यानविषै लये ॥

ॐ ह्री फाल्गुनकृष्णचतुर्थ्यां मोक्षमगलमंडिताय श्री पद्मप्रभ-जिनेन्द्राय अर्घम्।

जयमाला

छन्द घत्तानन्द

जय पद्मजिनेशा शिवसद्वेशा, पाद पद्म जजि पद्मेशा।
जय भवतमभजन मुनिमनकजन-रजनको दिवसाधेशा ॥१॥

छद रूपचौपाई

जय जय जिन भविजनहितकारी,
जय जय जिन भवसागरतारी ।
जय जय समवसरन धनधारी,
जय जय वीतराग हितकारी ।।२।।
जय तुम सात तत्त्व विधि भाख्यो,
जय जय नवपदार्थ लखि आख्यो ।
जय षटद्रव्य पच जुतकाया,
जय सबभेदसहित दरशाया ।।३।।
जय गुनथान जीव परमानो,
जय पहिले अनत जिय जानो ।
जय दूजे सासादन माही,
तेरहकोडि जीवथित आही ।।४।।
जय तीजे मिश्रित गुणथाने,
जीव सु बावनकोडि प्रमाने ।
जय चौथे अविरतिगुन जीवा,
चारअधिक शतकोडि सदीवा ।
जय जिय देशवरतमे शेषा,
कोडि सातसौ है थिति वेशा ।
जय प्रमत्त षटशून्य दोयदसु,
पाच तीन नव पाच जीव लसु ।।६।।

जय जय अपरमत्तगुन कोर,
लच्छ छानवैं सहस बहोर ।
निन्यानवे एकशत तीना,
एते मुनि तित रहहि प्रवीना ॥७॥
जय जय अष्टममे दुई धारा,
आठशतक सत्तानो सारा ।
उपशम मे दुइसो निन्यानो,
छपक माहि तसु दूने जानों ॥८॥
जय इतने इतने हितकारी,
नवे दशे जुगश्रेणी धारी ।
जय ग्यारे उपशममगगामी,
दुइसै निन्यानो है अधमामी ॥९॥
जय जय छीनमोह गुनधानो,
मुनिशतपाच अधिक अट्ठानो ।
जय जय तेरहमे अरहंता,
२ ० ५ ८ ९ ८
जुग नभ पन वसु नव वसु तंता ॥१०॥
एते राजतु है चतुरानन,
हम वंदैं पद थुतिकरि आनन ।
हैं अजोगगुन मे जे देबा,
पनसौ ठानो करो सुसेवा ॥११॥

तित तिथि अइउऋऌ भाषत,
करि थिति फिरि शिव-आनन्दचाखत ।
ए उतकृष्ट सकलगुन थानी,
तथा जघन मध्यम जे प्रानी ।।१२।।
तीनो लोकसदन के वासी,
निज गुनपरजभेदमय राशी ।
तथा और द्रव्यन के जेते,
गुन परजाय भेद हैं तेते ।।१३।।
तीनो कालतने जु अनन्ता,
सो तुम जानत जुगपत सता ।
सोई दिव्य वचनके द्वारे,
दै उपदेश भविक उद्धारे ।।१४।।
फेरि अचलथलबासा कीनो,
गुन अनत निजआनन्द भीनों ।
चरमदेहते किंचित ऊनो,
नर-आकृति तितहै नित गूनो ।।१५।
जय जय सिद्धिदेव हितकारी,
बार बार यह अरज हमारी ।
मोको दुखसागरतै काढो,
वृंदावन जाचतु है ठाढौ ।।१६।।

छंद घत्तानन्द

जय जय जिनचंदा पद्मानन्दा,
परम सुमति पद्माधारी ।
जय जनहितकारी दयाविचारी,
जय जय जिनवर अधिकारी ।।१७।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय महार्घम् ।

छंद रोडक

जजत पद्मपद पद्मसद्म ताके सुपद्म अत,
होत वृद्ध सुतमित्र सकल आनन्दकन्द शत ।
लहत स्वर्गपदराज तहां तें चय इत आई,
चक्रीको सुखभोगि, अन्त शिवराज कराई ।।

परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्, इत्याशीर्वाद

श्री सुपार्श्वनाथ जिनपूजा

छंद हरिगीता तथा गीता

जय जय जिनिंद गनिंद इन्द, नरिंद गुन चिंतन करैं,
तन हरीहरमनसम हरत मन, लखत उर आनन्द भरैं ।
नृप सुपरतिष्ठ वरिष्ठ इष्ट, महिष्ट शिष्ट पृथी प्रिया,
तिन नन्दके पद वंद वृन्द, अमंद थापत जुतक्रिया ।।१।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ ठ ठ । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक

तुम पद पूजो मनवचकाय, देव सुपारस शिवपुरराय ।
दयानिधि हो, जय जगबंधु दयानिधि हो ।।
उज्जल जल शुचि गंध मिलाय, कंचनझारी भर कर लाय ।
दयानिधि हो, जय जगबंधु दयानिधि हो ।।तुम० १।।
ॐ ह्री श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम् ।

मलयागरचंदन घसि कर सार, लीनो भवतपभंजनहार ।
दयानिधि हो, जय जगबंधु दयानिधि हो ।।तुम०।।२।।
ॐ ह्री श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनम् ।

देवजीर सुखदास अखंड, उज्जल जलछालित सित मंड ।
दयानिधि हो, जय जगबंधु दयानिधि हो ।।तुम० ।।३।।
ॐ ह्री श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतम् ।

प्रासुक सुमन सुगंधितसार, गुंजत अलि मकरध्वजहार ।
दयानिधि हो, जय जगबंधु दयानिधि हो ।।तुम० ।।४।।
ॐ ह्री श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पम् ।

छुधाहरन नेवज वर लाय, हरो वेदनी तुम्हे चढाय ।
दयानिधि हो, जय जगबंधु दयानिधि हो ।।तुम० ५।।
ॐ ह्री श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् ।

ज्वलित दीप भरकरि नवनीत, तुम ढिग धारतु हो जगमीत ।
दयानिधि हो, जय जगबंधु दयानिधि हो । तुम० ।।६।।
ॐ ह्री श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् ।

दशविधि गध हुताशनमाहिं, खेवत कूर करम जरि जाहिं ।
दयानिधि हो, जय जगबधु दयानिधि हो ॥तुम०॥७॥
ॐ ह्री श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम् ।
श्रीफल केला आदि अनूप, लै तुम अग्र धरो शिवभूप ।
दयानिधि हो, जय जगवधु दयानिधि हो ॥तुम० ॥८॥
ॐ ह्री श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम् ।
आठो दरब साजि गुनगाय, नाचत राचत भगति बढाय ।
दयानिधि हो, जय जगबधु दयानिधि हो ॥तुम० ॥९॥
ॐ ह्री श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घम् ।

पंचकल्याणक

छन्द द्रुतविलम्बित

सुकल भादव छट्ठ सुजानिये,
　　गरभमङ्गल तादिन मानिये ।
करत सेव सची रचि मात की,
　　अरघ लेय जजौ वसुभाति की ॥१॥

ॐ ह्री भाद्रपदशुक्लषष्ठम्या गर्भमगलमडिताय श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घम् ।

सुकल जेठ दुवादशि जन्मये,
　　सकल जीव सु आनन्द तन्मये ।
त्रिदशराज जजै गिरिराजजी,
　　हम जजै पद मगल साज जी ॥२॥

ॐ ह्री ज्येष्ठशुक्लद्वादशम्या जन्ममगलमडिताय श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घम् ।

जनमके तिथि श्रीधर ने धरी,

तप समस्त प्रमादनको हरी ।

नृप महेन्द्र दियो पय भावसो,

हम जजैं इत श्रीपद चावसो ॥ ३॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लद्वादश्या तपोमंडलमंडिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घम् ।

भ्रमर फागुन छट्ट सुहावनो,

परम केवलज्ञान लहावनो ।

समवसर्न विषैं वृष भाखियो,

हम जजैं पद आनन्द चाखियो ॥४॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णषष्ठ्या ज्ञानमंडलमंडिताय श्री सुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

असितफागुण सातयैं पावनो,

सकल कर्म कियो छय भावनो ।

गिरिसमेदथकी शिव जातु है,

जजत ही सब विघ्न विलातु है ॥५॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णसप्तम्या मोक्षमंगलमंडिताय श्री सुपार्श्व-नाथ जिनेन्द्राय अर्घम् ।

जयमाला

दोहा

तुङ्ग अग धनु दोयसौ, शोभा सागरचन्द ।
मिथ्यातपहर सुगुनकर, जय सुपास सुखकन्द ।।१।।

छन्द कामनीमोहनी

जैति जिनराज शिवराज हितहेत हो,
परम वैराग आनद भरि देत हो ।
गर्भ के पूर्व षटमास धनदेव ने,
नगर निरमापि वाराणसी सेवने ।।२।।
गगनसों रतन की धार बहु वरषही,
कोडि त्रैअर्द्ध त्रैवार सब हरषहीं ।
तातके सदन गुन वदन रचना रची,
मातु की सर्वविधि करत सेवा रची ।।३।।
भयो जब जनम तब इन्द्र आसन चल्यो,
भयो चक्रित तुरित अवधितै लखि भल्यो ।
सप्त पग जाय शिर नाय वन्दन करी,
चलन उमग्यो तबै मानि धनि धनि घरी ।।४।।
सातविधि सैन गज वृषभ रथ बाज लै,
गधरव नृत्यकारी सबे साज लै ।
गलितमदगड ऐरावती साजियो,
लच्छजोजन सुतन वदन सत राजियो ।।५।।

वदन वसुदत प्रतिदत सरवर भरे,
तासुमधि शतकपनवीस कमलिनि खरे ।
कमलनी मध्य पनवीस फूले कमल,
कमलप्रति कमलमह एकसौ आठदल ॥६॥
सर्वदल कोडशतवीस परमान जू,
तासुपर अपछरा नर्चहि जुतमान जू ।
तततता तततता विततता ताथई,
धृगतता धृगतता धृगतता मे लई ॥७॥
धरत पग सनन नन सनन नन गगन मे,
नूपूर झनन नन झनन नन पगन मे ।
नचत इत्यादि कई भातिसो मगन मे,
केइ तित बजत बाजे मधुर पगन मे ॥८॥
केइ दृम दृम सुदृम दृम मृदगनि धुनै,
केइ झल्लारि झझन झझनन झझनै ।
केइ ससागृदि ससागृदि सारगि सुर,
केइ बीनापटह बमि बाजै मधुर ॥९॥
केइ तननन तननन तानै पुरे,
शुद्ध उच्चारी सुर केइ पाठै फुरे ।
केइ झुकि झुकि फिरै चक्रसी भामनी,
धृगतता धृगतगत परम शोभा बनी ॥१०॥

केइ छिन निकट छिन दूर छिन थूल लघु,
धरत वैक्रियकपरभावसो तन सुभगु ।
केइ करताल करतालतलमे धुनं,
तत वितत घन सुखारि जात बाजै मुनै ॥११॥

इन्हे आदिक सकल साज सग धारिकै,
आय पुर तीन फेरी करी प्यारकै ।
सचिय तब जाय परसूतथल मोद मे,
मातु करि नीद लीनो तुम्हे गोद मे ॥१२॥

आन गिरवानननाथहि दियो हाथ मे,
छत्र अर चमर वर हरि करत माथ मे ।
चढे गजराज जिनराज गुन जापियो,
जाय गिरिराज पाडुकशिला थापियो ॥१३॥

लेय पचमउदधिउदक कर कर सुरनि,
सुरन कलशनि भरे सहित चर्चित पुरनि ।
सहस अरु आठ शिर कलश ढारे जबै,
अघघ घघ घघघघ भभभ भभ भौ तबे ॥१४॥

धधध धध धधध धध धुनि मधुर होत है,
भव्यजन हस के हरष उद्योत है ।
भयै इमि न्हौन तब सकल गुन रगमे,
पोछि श्रृगार कीनो सची अग मे ॥१५॥

आनि पितुसदन शिशु सौंपि हरि थल गयो,
बालवय तरुन कहि राजसुख भोगयो ।
भोग तज जोग गहि चार अरिको हने,
धारि केवल परम धरम दुइविधि भने ।।१६।।
नाशि अरि शेष शिवथानवासी भये,
ज्ञान-दृग-शर्म-वीरज अनन्ते लये ।
सो जगतराज यह अरज उर धारियो,
धरम के नन्द को भवउदधि तारियो ।।१७।।

छद घत्तानन्द

जय करुनाधारी शिवहितकारी, तारनतरन जिहाजा हो ।
सेवक नित वदै मन आनन्दै, भव भय मेटनकाजा हो ।।१८।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय महार्घम् ।

दोहा

श्री सुपार्श्वपदजुगल जो, जजै पढै यह पाठ ।
अनुमोदै सो चतुर नर, पावै आनन्द ठाठ ।।

पुष्पाजलिम् क्षिपेत्, इत्याशीर्वाद ।

—०—

श्री चन्द्रप्रभ जिनपूजा

चारुचरन आचरन, चितहरनचिहनचर,
चन्दचन्दतनचरित, चदथल चहत चतुर नर ।
चनुक चन्ड चकचूरि, चारि चिदचक्र गुनाकर,
चचल चलितसुरेश, चूलनुत चक्र धनुरहर ।।

चरअचरहितू तारनतरन, सुनत चहकि चिननद शुचि ।
जिनचदचरन चरच्यो चहत, चितचकोर नचि रचि रुचि ।।

दोहा

धनुष डेढसौ तुग तन, महासेन नृपनन्द ।
मातु लछमना उर जये, थापो चन्दजिनद ।।२।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर, सवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ । अत्र मम सन्निहितो भव भव, वषट् ।

अष्टक

गगाहृद निरमलनीर, हाटक भृग भरा,
तुम चरन जजो वर वीर, मेटो जनमजरा ।
श्रीचदनाथ दुति चद, चरनन चद लगै,
मनवचतन जजत अमद, आतमजोति जगै ।।१।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम् ।

श्रीखड कपूर सुचग, केशर रगभरी ।
घसि प्रासुक जल के सग, भव-आतापहरो ।।श्री० २।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनम् ।

तदुल सित सोमसमान, सम ले अनियारे ।
दिय पुज मनोहर आन, तुम पदतर प्यारे ।।श्री० ३।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रभप्रजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतम ।

सुरद्रुम के सुमन सुरग, गंधित अलि आवै ।
तासो पद पूजत चग, कामबिथा जावै ।।श्री०।।४।।

ॐ ह्री श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पम् ।

नेवज नाना परकार, इन्द्रिय बलकारी।
सो लै पद पूजो सार, आकुलताहारी ।।श्री०।।५।।

ॐ ह्री श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् ।

तम भजन दीप सवार, तुम ढिग धारतु हो ।
मम तिमिरमोह निरवार, यह गुन धारतु हो ।।श्री०।।६।।

ॐ ह्री श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् ।

दशगध हुतासन माहि, हे प्रभु खेवतु हौ ।
मम करम दुष्ट जरि जाहि, यातै सेवतु हौ ।।श्री० ।।७।।

ॐ ह्री श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम् ।

अति उत्तम फल सु मगाय, तुम गुन गावतु हौ ।
पूजो तनमन हरषायो, विघन नशावतु हो ।।श्री० ।।८।।

ॐ ह्री श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम् ।

सजि आठो दरब पुनीत, आठो अग नमो ।
पूजो अष्टम जिन मीत, अष्टम अवनी गमो ।।श्री० ।।९।।

ॐ ह्री श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घम् ।

पञ्चकल्याणक

कलि पचमचैत सुहात अली,
गरभागम मगल मोद भली ।

हरि हर्षित पूजत मातु पिता,
हम ध्यावत पावत शर्मसिता ॥१॥

ॐ ह्री चैत्रकृष्णपचम्या गर्भमगलमडिताय श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घम् ।

कलि पौष इकादशि जन्म लयो,
तब लोकविषै सुख थोक भयो ।
सुरईश जजे गिरशीश तबै,
हम पूजत है नुतशीस अबै ॥२॥

ॐ ह्री पौषकृष्णैकादश्या जन्ममगलमडिताय श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घम् ।

तप दुद्धर श्रीधर आप धरा,
कलि पौष अग्यारसि पर्व वरा ।
निज ध्यानविषै लवलीन भये,
धनि सो दिन पूजत विघ्न गये ।३॥

ॐ ह्री पौषकृष्णैकादश्या तपोमगलमडिताय श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घम् ।

वर केवलभानु उद्योत कियो,
तिहुँ लोक तणो भ्रम मेट दियो ।
कलि फाल्गुनसप्तमी इन्द्र जजे,
हम पूजहि सर्व कलङ्क भजे ॥४॥

ॐ ह्री फाल्गुनकृष्णसप्तम्या ज्ञानमगलमडिताय श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घम् ।

सित फाल्गुण सप्तमि मुक्त गये,
गुणवन्त अनन्त अबाध भये ।
हरि आय जजे तित मोद धरे,
हम पूजत ही सब पाप हरे ॥५॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लसप्तम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घम् ।

जयमाला

दोहा

हे मृगांकअङ्कित चरण, तुम गुण अगम अपार ।
गणधरसे नहिं पार लहिं, तौ को वरनत सार ॥१॥
पै तुम भगति हियै मम, प्रेरै अति उमगाय ।
तातैं गाऊं सुगुण तुम, तुम हौ होउ सहाय ॥२॥

छन्द पद्धडी

जय चन्द्र जिनेन्द्र दयानिधान,
भवकानन हानन दवप्रमान ।
जय गरभ जनम मंगल दिनन्द,
भवि जीवविकाशन शर्मकन्द ॥३॥
दशलक्ष पूर्वकी आयु पाय,
मनवांछित सुख भोगे जिनाय ।
लखि कारण ह्वै जगतैं उदास,
चिंत्यो अनुप्रेक्षा सुखनिवास ॥४॥

तित लौकांतिक बोध्यो नियोग,
हरि शिविका सजि धरियो अभोग ।
तापै तुम चढि जिन चन्दराय,
ता छिनकी शोभा को कहाय ॥५॥
जिन अंग सेत सित चमर ढार,
सित छत्र शीस गलगुलकहार ।
सित रतन जडित भूषण विचित्र,
सित चन्द्रचरण चरचैं पवित्र ॥६॥
सित तन द्युति नाकाधीश आप,
सित शिवका कांधे धरि सुचाप ।
सित सुजस सुरेश नरेश सर्व,
सित चितमे चिन्तत जात पर्व ॥७॥
सित चन्दनगरतैं निकसि नाथ,
सित वन में पहुँचे सकल साथ ।
सित सिला शिरोमणि स्वच्छ छांह,
सित तप तित धार्यो तुम जिनाह ॥८॥
सित पय को पारण परम सार,
सित चन्द्रदत्त दीनो उदार ।
सित कर में सो पयधार देत,
मानो बांधत भवसिंधु सेत ॥९॥

मानो सुपुण्यधारा प्रतच्छ,
तित अचरज पन सुर किय ततच्छ ।
फिर जाय गहन सित तप करत,
सित केवलज्योति जग्यो अनन्त ॥१०॥
लहि समवसरण रचना महान,
जाके देखत सब पापहान ।
जह तरु अशोक शोभै उतग,
सब शोकतनो चूरै प्रसग ॥११॥
सुर सुमनवृष्टि नभतै सुहात,
मनु मन्मथ तज हथियाय जात ।
बानी जिन मुखसौ खिरत सार,
मनु तत्त्वप्रकाशन मुकुरधार ॥१२॥
जह चौसठ चमर अमर ढुरत,
मनु सुजसमेघ झरि लगिय तत ।
सिहासन है जह कमलजुक्त,
मनु शिवसरवर को कमलशुक्त ॥१३॥
दुदभि जित बाजत मधुर सार,
मनु करमजीत को है नगार ।
सिर छत्र फिरै त्रय श्वेतवर्ण,
मनु रतन तीन त्रयताप हर्ण ॥१४॥
तन प्रभातनो मण्डल सुहात,
भवि देखत निज भव सात सात ।

मनु दर्पणद्युति यह जगमगाय,
भविजन भव सुख देखत सुआय ॥१५॥
इत्यादि विभूति अनेक जान,
वाहिज दीसत महिमा महान ।
ताको वरणत नहि लहत पार,
तौ अन्तरग को कहै सार ॥१६॥
अनअन्त गुणनिजुत करि विहार,
धरमोपदेश दे भव्य तार ।
फिर जोगनिरोधि अघाति हान,
सम्मेदथकी लिय मुकतिथान ॥१७॥
बृन्दावन वन्दत शीश नाय,
तुम जानत हो मम उर जु भाय ।
तातै का कहो सु वार वार,
मनवाछित कारज सार सार ॥१८॥

छन्द घत्तानन्द

जय चद जिनदा आनदकदा, भवभय भजन राजै है ।
रागादिकद्व दा हरि सब फदा, मुकति माहि थिति साजै है ॥१९॥

ॐ ह्री श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय महार्घम् ।

छन्द चौवोला

आठो दरव मिलाय गाय गुण, जो भविजन जिनचन्द जजै ।
ताके भवभव के अघ भाजै, मुक्त सारसुख ताहि सजै ॥२०॥

जमके त्रास मिटै सब ताके, सकल अमंगल दूर भजै ।
वृन्दावन ऐसो लखि पूजत, जातैं शिवपुरि राज रजै ॥२१॥

पुष्पांजलिम् क्षिपेत्, इत्याशीर्वाद ।

—०—

श्री पुष्पदन्त जिनपूजा

छंद मदावलिप्तकपोल (रोडक)

पुष्पदन्त भगवंत सन्त सुजपंत तन्त गुन,
महिमावन्त महंत कन्त शिवतियरमंत मुन,
काकन्दीपुर जन्म पिता सुग्रीव रमासुत,
स्वेतवरन मनहरन तुम्हें थापों त्रिवार नुत ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्तजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर, संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव, वषट् ।

अष्टक

चाल होली की ताल जत्त

मेरी अरज सुनीजे, पुष्पदन्त जिनराय, मेरी० ॥टेक॥
हिमवनगिरिगत गंगाजल भर, कंचनभृंग भराय ।
करम कलंक निवारनकारन जजों तुम्हारे पाय ॥मेरी०॥१॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्तजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम् ।

बावन चन्दन कदलीनंदन, कुंकुम संग घसाय ।
चरचों चरन हरन मिथ्यातप, वीतराग गुणगाय ॥मेरी०॥२॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्तजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनम् ।

शालि अखंडित सौरभमंडित, शशिसम द्युति दमकाय ।
ताको पुंज धरो चरननढिग, देहु अखयपद राय ॥मेरी०॥३॥
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्तजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतम् ।

सुमन सुमनसम परिमलमंडित, गुंजत अलिगन आय ।
ब्रह्मपुत्रमदभंजन कारन, जजों तुम्हारे पाय ॥ मेरी०॥४॥
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्तजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् ।

घेवर बाबर फेनी गोझा, मोदन मोदक लाय ।
छुधावेदनी रोगहरनको, भेंट धरों गुण गाय ॥ मेरी०॥५॥
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्तजिनेन्द्राय कामवाणविध्वंसनाय पुष्पम् ।

वाति कपूर दीप कंचनमय उज्ज्वल ज्योति जगाय ।
तिमिरमोहनाशक तुमको लखि, धरों निकट उमगाय ॥मेरी०॥६॥
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्तजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् ।

दशवर गंध धनंजयके संग, खेवत हों गुन गाय ।
अष्टकर्म ये दुष्ट जरें सो, धूम धूम सु उडाय ॥मेरी०॥७॥
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्तजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम् ।

श्रीफल मातुलिंग शुचि चिरभट, दाडिम आम मंगाय ।
तासों तुम पदपद्म जजत हों विघनसघन मिट जाय ॥मेरी०॥८॥
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्तजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम् ।

जल फल सकल मिलाय मनोहर मनवचतन हुलसाय ।
तुम पद पूजों प्रीति लायकै जय जय त्रिभुवनराय ॥मेरी०॥९॥
ॐ ह्रीं श्री पुष्पजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घम् ।

पञ्चकल्याणक

छंद स्वयम्भू

नवमी तिथिकारी फागुन धारी, गरभ मांहि थितिदेवा जी,
तजि आरणथान कृपानिधान, करत सची तित सेवा जी।
रतनन की धारा परमउदारा, परी व्योमतें सारा जी,
मैं पूजौ ध्यावौ भगत बढावौ, करो मोहि भवपारा जी ॥१॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णनवम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं।

मगसिर सितपच्छ परिवा स्वच्छ जनमे तीरथनाथा जी,
तब हो चवभेवा निरजर येवा, आय नये निज माथा जी।
सुरगिर नहवाये, मङ्गल गाये, पूजे प्रीति लगाई जी,
मैं पूजो ध्यावौं भगत बढावौ, निजनिधिहेत सहाई जी ॥२॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लप्रतिपदि जन्मगलमंडिताय श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घम्।

सित मगसिर मासा तिथिसुखरासा, एकमके दिन धाराजी,
तप आतमज्ञानी आकुलहानी, मौनसहित अविकारा जी।
सुरमित्र सुदानी के घर आनी, गो-पय-पारन कीना है,
तिनको मै वन्दौ पापनिकन्दौ, जो समतारस भीना है ॥३॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लप्रतिपदि तपोमंगलमंडिताय श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घम्।

सितकातिक गाये दोइज धाये, घातिकरम परचडा जी,
केवल परकाशे भ्रमतमनाशे, सकलसार सुखमण्डा जी।
गनराज अठासी आनन्द भासी, समवसरण वृषदाता जी,
हरि पूजन आयो शीश नमायो, हम पूजै जगत्राता जी ॥४॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लद्वितीयायां ज्ञानमगलमंडिताय श्री पुष-दन्तजिनेन्द्राय अर्घम्।

भादव सित सारा आठै धारा, गिरिसम्मेद निरवाना जी,
गुन अष्ट प्रकारा अनुपमधारा, जै जै कृपानिधाना जी।
तित इन्द्र सु आयौ पूज रचायौ, चिन्ह तहा करि दीना है,
मैं पूजत हो गुन ध्याय महीसौ, तुमरे रसमैं भीना है ॥५॥

ॐ ह्रीं भादवशुक्लाष्टम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्री पुषदन्त जिनेन्द्राय अर्घम्।

जयमाला

दोहा

लच्छन मगर सुश्वेत तन तुग धनुष शतएक।
सुर नर वंदित मुकतपति नमो तुम्हे शिर टेक ॥१॥
पुहुपरदन गुन वदन है, सागर तोय समान।
क्योंकर कर अंजुलिनकर, करिये तासु प्रमान ॥२॥

छन्द तामरस

पुष्पदंत जयवंत नमस्ते, पुण्य तीर्थंकर संत नमस्ते।
ज्ञान ध्यान अमलान नमस्ते, चिद्विलास सुखज्ञान नमस्ते ॥३॥

भवभयभंजन देव नमस्ते, मुनिगनकृतपदसेव नमस्ते ।
मिथ्यानिशिदिनइन्द्र नमस्ते, ज्ञानपयोदधिचन्द्र नमस्ते ॥४॥
भवदुखतरुनिकंद नमस्ते, रागदोष-मदहद नमस्ते ।
विश्वेश्वर गुनभूर नमस्ते, धर्मसुधारसपूर नमस्ते ॥५॥
केवल ब्रह्मप्रकाश नमस्ते, सकल चराचरभास नमस्ते ।
विघ्नमहीधरबिज्जु नमस्ते, जय ऊरधगतिरिज्जु नमस्ते ॥६॥
जय मकराकृतपाद नमस्ते, मकरध्वजमदवाद नमस्ते ।
कर्मभर्मपरिहार नमस्ते, जय जय अधमउधार नमस्ते ॥७॥
दयाधुरधर धीर नमस्ते, जय जय गुनगम्भीर नमस्ते ।
मुक्तिरमनिपति वीर नमस्ते, हरता भवभयपीर नमस्ते ॥८॥
व्ययउतपतिथितिधार नमस्ते, निज अधार अविकार नमस्ते ।
भव्यभवोदधितार नमस्ते, वृन्दावन निसतार नमस्ते ॥९॥

छन्द घत्ता

जय जय जिनदेव हरिकृतसेव, परमधरमधनधारी जी ।
मै पूजौ ध्यावौ गुनगन गावौ मेटो विथा हमारी जी ॥१०॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्तजिनेन्द्राय महार्घम् ।

मदावलिप्तकपोल

पुहुपदंतपद संत, जजें जो मनवचकाई,
नाचैं गावैं भगति करैं, शुभ परनति लाई ।
सो पावै सुख सर्व इन्द अहिमिंद तनो वर,
अनुक्रमतैं निरवान, लहै निहचै प्रमोद धर ॥११॥

परिपुष्पांजलिम क्षिपेत्, इत्याशीर्वाद ।

श्री शीतलनाथ जिनपूजा

छन्द मत्ताम तग

शीतलनाथ नमो धरि हाथ,
सुमाथ जिन्हो भवगाथ मिटाये।
अच्युततें च्युत मात सुनन्द के,
नन्द भये पुरभद्दल भाये॥
वश इख्वाक कियो जिन भूषित,
भव्यनको भव पार लगाये।
ऐसे कृपानिधि के पदपंकज,
थापतु हो हिय हर्ष बढाये॥१॥

ॐ ह्री श्री शीतलनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

छंद वसततिलका

देवापगा सुवरवारि विशुद्ध लायो,
भृंगार हेम भरि भक्ति हिये बढायो।
रागादिदोष मलमर्द्दनहेतु येवा,
चर्चो पदाब्ज तव शीतलनाथ देवा॥१॥

ॐ ह्री श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम्

श्रीखडसार वर कुकुम गारि लीनो ।
कसग स्वच्छ घसि भक्ति हिये धरीनो ॥रा० ॥२॥

ॐ ह्री श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनम् ।

मुक्तासमान सित तदुल सार राजै ।
धारत पुज कलिकुज समस्त भाजै ॥ रा० ॥३॥

ॐ ह्री श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतम् ।

श्रीकेतकी प्रमुख पुष्प अदोष लायो ।
नौरग जगकरि भृग सुरग पायो ॥रा० ॥४॥

ॐ ह्री श्री शीयलनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पम् ।

नैवेद्य सार चरु चारु सवारि लायो ।
जाबूनप्रभृति भाजन शीस नायो ॥रा० ॥५॥

ॐ ह्री श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् ।

स्नेह प्रपूरित सुदीपक जोति राजै ।
स्नेह प्रपूरित हिये जजतेऽघ भाजै ॥रा० ॥६॥

ॐ ह्री श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् ।

कृष्णागुरु प्रमुखगध हुताश माही ।
खेवो नवाग्र वसुकर्म जरत जाही ॥रा० ॥७॥

ॐ ह्री श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम् ।

निम्बाम्र कर्कटि सु दाडिम आदि धारा ।
सौवर्ण गध फल सार सुपक्व प्यारा ॥रा० ॥८॥

ॐ ह्री श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम् ।

कश्रीफलादि वसु प्रासुक द्रव्य साजे ।

नाचे रचे मचत बज्जत सज्ज बाजे ॥रा० ॥९॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घम् ।

पंचकल्याणक

छंद इंद्रवज्रा तथा उपेन्द्रवज्रा

आठैं वदी चैत सुगर्भ माहीं,
आये प्रभू मंगलरूप थाहीं ।
सेवै सची मात अनेक भेवा,
चर्चों सदा शीतलनाथ देवा ॥१॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाष्टम्यां गर्भमङ्गलमंडिताय श्री शीतलनाथ-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

श्री माघ की द्वादशि श्याम जायो,
भूलोक में मंगल सार आयो ।
शैलेन्द्र पै इन्द्र फनिन्द्र जज्जै,
मैं ध्यान धारों भवदुःख भज्जै ॥२॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णद्वादश्यां जन्ममङ्गलमंडिताय श्री शीतलनाथ-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

श्री माघ की द्वादशि श्याम जानो,
वैराग्य पायो भवभाव हानो ।
ध्यायो चिदानन्द निवार मोहा,
चर्चों सदा चर्न निवारि कोहा ॥३॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णद्वादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्री शीतलनाथ-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

चतुर्दशी पौषवदी सुहायो,
ताही दिना केवललब्धि पायो ।
शोभै समोसत्य बखानि धर्म,
चर्चो सदा शीतल पर्म शर्म ॥४॥

ॐ ह्री पौषकृष्णचतुर्दश्या ज्ञानमगलताय श्री शीतलनाथ-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

कुवार की आठय शुद्ध बुद्धा,
भये महामोक्षसरूप शुद्धा ।
सम्मेदतै शीतलनाथ स्वामी,
गुनाकर तासु पद नमामी ॥५॥

ॐ ह्री आश्विनशुक्लाष्टम्या मोक्षमगलमडिताय श्री शीतलनाथ-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

जयमाला

छद लोलतरग

आप अनत गुनाकर राजै, वस्तुविकाशन भानु समाजै ॥
मै यह जानि गही शरना है, मोहमहारिपुको हरना है ॥१॥

दोहा

हेम वरन तन तुग धनु, नव्वै अति अतिराम ।
सुर तरु अक निहारी पद, पुन पुन करो प्रणाम ॥२॥

छद तोटक

जय शीतलनाथ जिनन्द वरं,
भवदाघदवानल मेघझर ।

दुखभूभृतभजन वज्रसमं,
भवसागर नागरपोतपमं ।।३।।
कुहमानमयागदलोभ हर,
अरि विघ्न गयद मृगिद वर ।
वृष-वारिदवृष्टन सृष्टिहितू,
परदृष्टि-विनाशन सुष्टु पितू ।।४।।
समवस्रतसजुत राजतु हो,
उपमा अभिराम विराजतु हो ।
वर बारहभेद सभाथितको,
तित धर्मबखानि कियौ हितको ।।५।।
पहले महि श्रीगनराजरजै,
दुतिये महि कल्पसुरी जु सजै ।
त्रितिये गणनी गुन भूरि धरैं,
चवथे तिय जोतिष जोति भरैं ।।६।।
तिय-वितरनी पनमे गनिये,
छहमे भुवनेसुर ती भनिये ।
भुवनेश दशो थित सत्तम है,
वसुमे वसु-वितर उत्तम है ।।७।।
नव मे नभजोतिष पच भरे,
दशमे दिविदेव समस्त खरे ।

नरवृन्द इकादशमे निवसै,
अरु बारहमे पशु सर्व लसै ॥८॥
तजिवैर, प्रमोद धरै सब ही,
समतारस मग्न लसै तब ही ।
धुनि दिव्य सुनै तजि मोहमल,
गनराज असी धरि ज्ञानबल ॥९॥
सबके हित तत्त्व वखान करैं,
करुनामनरंजित शर्म भरै ।
वरने षटदर्व तने जितने,
वर भेद विराजतु है तितने ॥१०॥
पुनि ध्यान उभै शिवहेत मुना,
इक धर्म दुती सुकल अधुना ।
तित धर्म सुध्यान तणो गनियो,
दशभेद लखे भ्रमको हनियो ।११॥
पहलो अरि नाश अपाय सही,
दुतियो जिनवैन उपाय गही ।
त्रिति जीवविचै निजध्यावन है,
चवथो सु अजीव रमावन है ॥१२॥
पनमो सु उदै बलटारन है,
छहमो अरिरागनिवारन है ।
भवत्यागन चितन सप्तम है,

वसुमो जितलोभ न आतम है ॥१३॥
नवमो जिनकी थुति सीस धरै
दशमो जिनभाषित हेत करै ।
इमि धर्म तणो दश भेद भन्यो ॥१४॥
पुनि शुक्लतणो चदु येम गन्यो ॥१४॥
सुपृथक्तवितर्कविचार सही,
सुइकत्ववितर्कविचार गही ।
पुनि सूक्ष्मक्रियाप्रतिपात कही,
विपरीतक्रियानिरवृत्त लही ॥१५॥
इन आदिक सर्व प्रकाश कियो,
भवि जीवनको शिव स्वर्ग दियो ।
पुनि मोच्छविहार कियो जिनजी,
सुखसागर मग्न चिर गुनजी ॥१६॥
अब मैं शरना पकरी तुमरी,
सुधि लेहु दयानिधिजी हमरी ।
भव व्याधि निवार करो अब ही,
मति ढील करो सुख द्यो सब ही ॥१७॥

छन्द घत्तानन्द

शीतल जिन ध्याऊं भगति बढाऊं, ज्यों रतनत्रयनिधि पाऊं ।
भवदद नशाऊं शिवथल जाऊं, फेर न भौवनमे आऊं ॥१८॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय महार्घम् ।

छन्द मालिनी

दिढरथ सुत श्रीमान्, पचकल्याणक धारी,
तिनपद जुगपद्म, जो जजै भक्तिधारी।
सहसुख धनधान्य, दीर्घ सौभाग्य पावै,
अनुक्रम अरिदाहै, मोक्षको सो सिधावै ॥१९॥

पुष्पाजलिम् क्षिपेत्, इत्याशीर्वाद।

—o—

श्री श्रेयांसनाथ जिनपूजा

छन्द रूपमाला

विमलनृप विमलासुअन, श्रेयासनाथ जिनन्द,
सिघपुर जनमे सकल हरि, पूजि धरी आनन्द।
भयबधध्वसनहेत लखिँ मैं, शरन आयो येव,
थापौ चरन जुग उरकमल मे, जजनकारन देव ॥१॥

ॐ ह्री श्री श्रेयासनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर, सवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठ ठ। अत्र मम सन्निहितो भव भव, वषट्।

अष्टक

छन्द गीता तथा हरिगीता

कल धौतवरन उतगहिमगिरि पदमद्रहतै आवई।
सुरसरितप्रासुक उदकसो भरी भृङ्ग धार चढावई ॥

श्रेयांसनाथ जिनन्द त्रिभुवन वन्द आनन्दकन्द है।
दुखदन्दफदनिकन्द पूरन चन्द जोति अमन्द है ॥१॥
ॐ ह्री श्री श्रेयासनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम्।

गोशीर वर करपूर कुंकुम नीर संग घसो सही।
भवतापभंजन हेत भवदधिसेत चरन जजो सही ॥श्रे०॥२॥
ॐ ह्री श्री श्रेयांसनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनम्।

सितशालि शशिदुत शुक्तिसुन्दर मुक्तिकी उनहार है।
भरि थार पुंज धरत पदतर अखयपद करतार है ॥श्रे०॥३॥
ॐ ह्री श्री श्रेयासनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतम्।

सद सुमन सुमनसमान पावन, मलयतैं अलि झंकरैं।
पदकमलतर धरतैं तुरित सो मदनको मद खंकरैं ॥श्रे०॥४॥
ॐ ह्री श्री श्रेयासनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पम्।

यह परममोदक आदि युत रस सुवारि सुन्दर चरु लियौ।
तुम वेदनीमदहरन लखि, चरचोचरन शुचिकर हियौ ॥श्रे०॥५॥
ॐ ह्री श्री श्रेयासनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम्।

संशयविमोहविभरतम भंजन दिनंद समान हो।
तातैं चरनढिग दीप जोऊं देहु अविचल ज्ञान हो ॥श्रे०॥६॥
ॐ ह्री श्री श्रेयासनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम्।

वर अगर तगर कपूर चूर सुगंध भूर बनाइया।
दहि अमर जिह्वविषै चरनढिग करमभरम जराइया ॥श्रे०॥७॥
ॐ ह्री श्री श्रेयासनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम्।

सुरलोक अरु नरलोकके फल पक्क मधुर सुहावने ।
लै भगतिसहित जजो चरन शिव परमपावन पावने ।श्रे०।।८।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयासनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम् ।

जलमलयतंदुलसुमनचरु अरु दीपधूपफलावली ।
करि अरघ चरचो चरनजुग प्रभु मोहि तार उतावली ।श्रे०।९।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयासनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घम् ।

पञ्चकल्याणक

छन्द आर्या

पुष्पोत्तर तजि आये, विमला उर जेठकृष्ण छट्टको ।
सुरनर मङ्गल गाये, मैं पूजो नासि कर्मकाठैको ।।१।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाषष्ठी दिने गर्भमंगलमंडिताय श्री श्रेयास-नाथजिनेन्द्राय अर्घम् ।

जनमे फागुनकारी, एकादशि तीनग्यानदृगधारी ।
इख्वाकवंशतारी, मैं पूजो घोर विघ्न दुखटारी ।।२।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णैकादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्री श्रेयास नाथजिनेन्द्राय अर्घम् ।

भवतनभोग असारा, लख त्याग्यो धीर शुद्ध तपधारा ।
फागुनवदि इग्यारा, मैं पूजो पाद अष्ट परकारा ।।३।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णैकादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्री श्रेयासनाथ-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

केवलज्ञान सुजानन माघवदी पूर्णतिथ्थको देवा।
चतुराननं भवभानन, वंदौ ध्यावौ करौ सुपद सेवा ॥४॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णामावस्या ज्ञानमंगलमंडिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घं ।

गिरिसमेदतैं पायो, शिवथल तिथि पूर्णमासि सावनको।
कुलिशायुध गुनगायो, मैं पूजों आपनिकट आवनको ॥५॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्ल पूर्णिमायां मोक्षमंगलमंडिताय श्री श्रेयांस-नाथ जिनेन्द्राय अर्घम ।

जयमाला

छन्द लोलतरंग

शोभित तुंग शरीर सुजानो,
चाप असी शुभलच्छन मानो।
कंचन वर्ण अनूपम सोहै,
देखत रूप सुरासुर मोहै ॥१॥

छन्द पद्धडी

जै जै श्रेयांस जिन गुनगरिष्ठ,
तुम पदजुग दायक-इष्टमिष्ट।
जै शिष्ट शिरोमनी जगतपाल,
जै भवसरोजगन प्रातकाल ॥२॥
जै पंचमहाव्रत गज सवार,
लै त्यागभाव दलबल सु लार।

जै धीरजको दलपति बनाय,
सत्ता छितिमह रनको मचाय ॥३॥
जै रतन तीन तिहुँ शक्ति हाथ,
दश धरम कवच तप टोप माथ ।
जै शुकलध्यान कर खड्ग धार,
ललकारे आठो अरि प्रचार ॥४॥
तामें सबको पति मोह चंड,
ताको ततछिन करि सहस खण्ड ।
फिर ज्ञानदरश प्रत्यूह हान,
निजगुनगढ लीनो अचल थान ॥५॥
शुचि ज्ञान दरस सुख वीर्य सार,
हुव समवसरणरचना अपार ।
तित भाषै तत्त्व अनेक धार,
जाको सुनि भव्य हिये विचार ॥६॥
निज रूप लह्यौ आनन्दकार,
भ्रम दूर करनको अति उदार ।
पुनि नय-प्रमान-निच्छेप सार,
दरसायो करि संशय प्रहार ॥७॥
तामै प्रमान जुगभेद एव,
परतच्छ परोछ रजैं सुमेव ।
तामैं प्रतच्छके भेद दोय,
पहिलो है सविवहार सोय ॥८॥

ताके जुग भेद विराजमान,
मति श्रुति सोहैं सुन्दर महान ।
है परमारथ दुतियो प्रतच्छ,
हैं भेद जुगम तामहि दच्छ ॥९॥
इक एकदेश इक सर्वदेश,
इकदेश उभैविधिसहित वेश ।
वर अवधि सु मनपरजै विचार,
है सकलदेश केवल अपार ॥१०॥
चरअचर लखत जुगपत प्रतच्छ,
निरद्व द रहित परपच पच्छ ।
पुनि है परोच्छमह पंच भेद,
समिरति अरु प्रत्यभिज्ञान वेद ॥११॥
पुनि तरक और अनुमान मान,
आगमजुत पन, अब नय बखान ।
नैगम, सग्रह, व्यौहार गूढ,
रिजुसूत्र, शब्द अरु समभिरूढ ॥१२॥
पुनि एवभूत सु सप्त एम,
नय कहे जिनेसुर गुन जु तेम ।
पुनि दरव क्षेत्र अर काल भाव,
निच्छेप चार विधि इमि जनाव ॥१३॥
इनको समस्त भाष्यौ विशेष,

जा समुझत भ्रम नहि रहत लेश ।
निज ज्ञानहेत ये मूलमन्त्र,
तुम भाषे श्री जिनवर सु तन्त्र ।।१४।।
इत्यादि तत्त्व उपदेश देय,
हनि शेष करन निरवान लेय ।
गिरवान जजत वसु दरव ईश,
वृन्दावन नित प्रति नमत शीश ।।१५।।

छन्द घत्तानन्द

श्रेयास महेशा सुगुन जिनेशा, वज्र धरेशा ध्यावतु है ।
हम निशदिन वदैं पापनिकदैं, ज्यौ सहजानद पावतु है ।।१६।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयासनाथजिनेन्द्राय महार्घम् ।

सोरठा

जो पूजै मन लाय, श्रेयनाथ पदपद्मको ।
पावै इष्ट अघाय, अनुक्रमसौ शिवतिय वरै ।।१।।

परिपुष्पाञ्जलिम् क्षिपेत् इत्याशीर्वाद ।

—०—

श्री वासुपूज्य जिनपूजा

छन्द रूपकवित्त

श्री मत वासुपूज्य जिनवर पद, पूजन हेत हिये उमगाय,
थापो मनवचतन शुचि करिकै, जिनकी पाटलदेव्या माय ।

महिष चिन्ह पद लसै मनोहर, लाल वरन तन समतादाय,
सोकरुनानिधि कृपादिष्टकरि, तिष्ठहु सुपरितिष्ठ यह आय ।।

ॐ ह्री श्री वासुपूज्यजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर, मवौषट् ।
अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठ ठ । अत्र मम सन्निहितो भव भव, वषट् ।

अष्टक

छद जोगीरामा । आचलीबध "जिनपद पूजो लव लाई ।"

गगाजल भरि कनककुभ मे, प्रासुक गध मिलाई,
करम कलक विनाशकारन, धार देत हरषाई ।
वासपूज बसुपूजत नुजपद, वासव सेवत आई,
बालब्रह्मचारी लखि जिनको, शिवतिय सनमुख धाई ।जिन०१।

ॐ ह्री श्री वासुपूज्यजिनेन्दाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम् ।

कृष्णागरु मलयागिरचदन, केशरसग घसाई ।
भवआताप विनाशनकारन, पूजो पद चित लाई ।।वासु०।।२।।

ॐ ह्री श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चदनम ।

देवजीर मुखदास शुद्ध वर, सुवरन थार भराई ।
पुज धरत तुम चरनन, आगै, तुरित अखय पद पाई ।बासु०।३।

ॐ ह्री श्री वामुपूज्यजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतम् ।

पारिजात सतानकल्पतरु-जनित सुमन बहु लाई ।
मीनकेतु मदभजनकारन, तुम पदपद्म चढाई ।।वासु०।।४।।

ॐ ह्री श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय कामबाणविध्वसनाय पुष्पम् ।

नव्यगव्यआदिक रसपूरित, नेवज तुरित उपाई ।
क्षुधारोग निवारनकारन, तुम्हे जजो शिर नाई ॥वासु०॥५॥
ॐ ह्री श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् ।

दीपकजोत उदोत होत वर, दशदिश मे छबि छाई ।
तिमिरमोहनाशक तुमको लखि, जजा चरन हरषाई॥वासु०॥६॥
ॐ ह्री श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् ।

दशविध गध मनोहर लेकर, वातहोत्रमे डाई ।
अष्टकरम ये दुष्ट जरतु है, धूम सुधूम उडाई ॥वासु०॥७॥
ॐ ह्री श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम् ।

सुरस सुपक्क सुपावन फल लै, कचनथार भराई ।
मोच्छ महाफलदायक लखि प्रभु, भेट धरो गुनगाई॥वासु०८॥
ॐ ह्री श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम् ।

जलफल दरब मिलाय गाय गुन आठो अग नमाई ।
शिवपदराज हेत हे श्रीपति ! निकट धरो यह लाई ।वासु०९॥
ॐ ह्री श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घम् ।

पंचकल्याणक

छन्द पाईता (मात्रा १४)

कलि छट्ठ असाढ सुहायो, गरभागम मगल पायो ।
दशमे दिविते इत आयै, शतइन्द्र जजे सिर नाये ॥१॥

ॐ ह्री आषाढकृष्णषष्ठ्या गर्भमगलमडिताय श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

कलि चौदश फागुन जानो, जनमे जगदीश महानो ।
हरि मेर जजे तब जाई, हम पूजत है चित लाई ॥२॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

तिथि चौदस फागुन श्यामा, धरियो तप श्रीअभिरामा ।
नृप सुन्दर के पय पायो हम पूजत अतिसुख थायो ॥३॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां तपोमंडलमंडिताय श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

सुदि माघ दोइज सोहै, लहि केवल आतम जो है ।
अनअन्त गुनाकर स्वामी, नित वंदो त्रिभुवन नामी ॥४॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लद्वितीयायां ज्ञानमंडलमंडिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घम् ।

सितभादव चौदशि लीनो, निरवान सुथान प्रवीनो ।
पुर चंपाथानक सेती, हम पूजत निजहित हेती ॥५॥

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लचतुर्दश्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

जयमाला

दोहा

चंपापुर में पंचवर, कल्याणक तुम पाय ।
सत्तर धनु तन शोभनो, जय जय जय जिनराय ॥१॥

छन्दमोतियादाम

महासुखसागर आगर ज्ञान,
अनन्त सुखामृतामुक्त महान ।
महाबलमंडित खंडित काम,
रमाशिवसंग सदा विसराम ॥२॥
सुरिंद फनिंद खगिंद नरिंद,
मुनिंद जजै नित पादरविंद ।
प्रभू तुव अन्तर भाव विराग,
सुबालहि ते व्रतशीलसो राग ॥३॥
कियो नहि राज उदाससरूप,
सुभावन भावत आतमरूप ।
अनित्य शरीर प्रपञ्च समस्त,
चिदातम नित्यसुखाश्रित वस्त ॥४॥
अशर्न नही कोउ शर्नसहाय,
जहा जिय भोगत कर्म विपाय ।
निजातम के परमेसुर शर्न,
नही इनके बिन आपद हर्न ॥५॥
जगत्त जथा जलबुद्बुद येव,
सदा जिय एक लहै फलभेव ।
अनेकप्रकार धरी यह देह,
भमे भव कानन आन न नेह ॥६॥

अपावन सात कुधात भरीय ।
चिदातम शुद्धसुभाव धरीय ।
धरै इनसो जब नेह तबेव,
सुआवत कर्म तबै वसुभेव ।।७।।
जबै तनभोगजगत्त उदास,
धरै तब संवर निर्जर आस ।
करै जब कर्मकलंक विनाश,
लहै तब मोक्ष महासुखराश ।।८।।
तथा यह लोक नराकृत नित्त,
विलोकियते षटद्रव्यविचित्त ।
सु आतमजानन बोधविहीन,
धरै किन तत्त्व प्रतीत प्रवीन ।।९।।
जिनागमज्ञानरु संजमभाव,
सबै निज ज्ञान बिना विरसाव ।
सुदुर्लभ द्रव्य सुक्षेत्र सुकाल,
सुभाव सबै जिहते शिव हाल ।।१०।।
लयो सब जोग सुपुन्य वशाय,
कहो किमि दीजिय ताहिगवाय ।
विचारत यों लवकान्तिक आय,
नमे पदपंकज पुष्प चढाय ।।११।।
कह्यो प्रभु धन्य किया सुविचार,

प्रबोधि सु येम कियो जु विहार ।
तबै सौधर्म तनो हरि आय,
रच्यौ शिविका चढि आप जिनाय ॥१२॥
धरे तप, पाय सुकेवलबोध,
दियो उपदेश सुभव्य सबोध ।
लियो फिर मोच्छ महासुख राश,
नमैं नित भक्त सोई सुखआश ॥१३॥

छंद घत्तानन्द

नित वासवन्दत, पापनिकदत, वासुपूज्य व्रत ब्रह्मपती ।
भवसकलखंडित आनन्दमण्डित, जै जै जै जैवन्ती जती ॥१४॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय महार्घम् ।

सोरठा

वासपूज पद सार जजो दरबविधि भावसो ।
सो पावै सुखसार भुक्ति मुक्ति को जो परम ॥१५॥

पुष्पांजलिं क्षिपेत्, इत्याशीर्वाद ।

—०—

श्री विमलनाथ जिनपूजा

छन्द मदावलिप्तकपोल

सहस्रार दिवि त्यागि, नगर कम्पिला जनम लिय,
कृतवर्मानृपनंद, मातु जयसेन धर्मप्रिय ।

तीन लोक वरनद, विमल जिन विमल विमलकर,
थापो चरनसरोज, जजनके हेत भाव धर ॥१॥

ॐ ह्री श्री विमलनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर, संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ । अत्र मम सन्निहितो भव भव, वषट् ।

अष्टक

सोरठा छन्द

कचन झारी धारि, पदमद्रह को नीर ले ।
तृषा रोग निरवारि, विमल विमलगुन पूजिये ॥१॥

ॐ ह्री श्री विमलनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम् ।

मलयागर करपूर, देववल्लभा सग घसि ।
हरि मिथ्यातमभूर, विमल विमलगुन जजतु हो ॥२॥

ॐ ह्री श्री विमलनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चदनम् ।

बासमती सुखदास, श्वेत निशपतिको हसै ।
पूरै वाछित आस, विमल विमलगुन जजत ही ॥३॥

ॐ ह्री श्री विमलनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतम् ।

परिजात मदार, सतानक सुरतरुजनित ।
जजो सुमन भरि थार, विमल विमल सुन मदनहर ॥४॥

ॐ ह्री श्री विमलनाथजिनेन्द्राय कामवाणविध्वंसनाय पुष्पम् ।

नव्य गव्य रसपूर, सुवरन थार भरायकै ।
छुदावेदनी चूर, जजो विमलपद विमलगुन ॥५॥

ॐ ह्री श्री विमलनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् ।

मानिक दीप अखंड, गो छाई वर गो दशो।
हरो मोहतम चंड, विमल विमलमति के धनी ॥६॥
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम्।
अगर तगर घनसार देवदार कर चूर वर।
खेवो वसु अरि जार, विमल विमल पदपद्मढिग ॥७॥
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम्।
श्रीफल सेव अनार, मधुर रसीले पावने।
जजो विमलपद सार, विघ्न हरै शिवफल करै ॥८॥
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम्।
आठो दरब सवार, मनसुखदायक पावने।
जजो अरघ भरथार, विमल विमलशिवतिय-रमन ॥९॥
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घम्।

पंचकल्याणक

छंद द्रुतविलम्बित तथा सुन्दरी

गरभ जेठ वदी दशमी भनो, परम पावन सो दिन शोभनो।
करत सेव सची जननीतणी, हम जजै पदपद्म शिरोमणी ॥१॥
ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णदशम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घम्।

शकलमाघ चतुर्थी तिथि जानिये, जनममङ्गल तादिन मानिये।
हरि तबै गिरिराज विषै जजे, हम समर्चत आनदको सजे ॥२॥
ॐ ह्रीं माघशुक्लचतुर्थ्यां जन्ममंगलमंडिताय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घम्।

तप धरे सितमाघ चतुर्थी भली, निज सुधातम ध्यावत है रली ।
हरि फनेश नरेश जजे तहा, हम जजै नित आनदसो इहा ॥३॥

ॐ ह्री माघशुक्लचतुर्थ्यां तपोमंगलमंडिताय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घम् ।

विमल माघरसी हनि घातिया, विमलबोध लयो सब भासिया
विमल अर्घ चढाय जजो अबै, विमलआनद देहु हमै सबै ॥४॥

ॐ ह्री माघशुक्लषष्ठ्यां ज्ञानमंगलमंडिताय श्री विमलनाथ-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

भ्रमरसाढरसी अति पावनो, विमल सिद्ध भये मनभावनो ।
गिरसमेद हरी नित पूजिया, हम जजे इत हर्ष धरै हिया ॥५॥

ॐ ह्री आषाढकृष्णाष्टम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्री विमलनाथ-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

जयमाला

छंद दोहा

गगन चहत उडगन गगन छिति थितिके छह जेम ।
तिमि गुन बरनन बरनन,-माहि होय तब केम ॥१॥
साठ धनुष तन तुङ्ग है, हेमवरन अभिराम ।
वर बराह पद अंक लखि, पुनि पुनि करौं प्रनाम ॥२॥

छंद त्रोटक

जय केवल ब्रह्म अनंतगुनी, तुम ध्यावत शेष महेश मुनी ।
परमातम पूरन पाप हनी, चितचिंतितदायक इष्ट धनी ॥३॥
भवआतपध्वंसन इन्दुकरं, वर सारसायन शर्मभरं ।

सब जन्मजरामृतदाघहर, शरनागत पालन नाथ वर ॥४॥
नित सत तुमे इन नामनितैं, चितचितत है गुनमाननितैं ।
अमल अचल अटल अतुल, अरस अछल अथल अकुल ॥५॥
अजर अमर अहर अडर, अपर अभर अशर अनर ।
अमलीन अछीन अरीन हने, अमत अगत अरत अघने ॥६॥
अछुदा अतृषा अभयातम हो, अमदा अगदा अवदातम हो ।
अविरुद्ध अक्रुद्ध अमान धुना, अतल अशल अनअन्त गुना ॥७॥
अरस सरस अकल सकल, अवच सवच अमन सबल ।
इन आदि अनेक प्रकार सही, तुमको जिन सत जपै नित ही ॥८॥
अब मैं तुमरी शरना पकरी, दुख दूर करो प्रभुजी हमरी ।
हम कष्ट सहे भवकानन मे, कुनिगोद तथा थल आननमे॥९।
तित जामनमर्न सहे जितने, कहि केम सकै तुमसो नितने ।
समुहूरत अन्तरमाहि धरे, छह त्रै छ छह काय खरे ॥१०॥
छिति वन्हि वयारिक साधरन, लघु थूल विभेदनिसो भरन ।
परतेक वनस्पति ग्यार भये, छ हजार दुवादश भेद लये ॥११॥
सब द्वै त्रय भू षट छ सुभया, इक इन्द्रियकी परजाय लया ।
जुगइन्द्रियकायअसीगहियो, तियइद्रिय साठनिमे रहियो ॥१२॥
चतुरिंदिय चालिस देह धरा, पनइदियके चवबीस बरा ।
सब ये ननधार तहा सहियो, दुखघोरचितारित जान हियो।१३।
अब मो अरदास हिये धरिये, सुखदंद सबै अब ही हरिये ।
मनवांछितकारज सिद्ध करो, सुखसार सबै घर रिद्ध भरो ।१४।

छन्द घत्तानन्द

जय विमल जिनेशा, नुतनाकेशा, नागेशा नरईश सदा ।
भवताप अशेषा हरन निशेशा, दाता चिंतित शर्म सदा ॥१५॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथजिनेन्द्राय महार्घम् ।

छन्द दोहा

श्रीमत विमल जिनेश पद, जो पूजौ मन लाय ।
पूजै वांछित आश तसु, मैं पूजौ गुनगाय ॥१६॥

पुष्पांजलिं क्षिपेत्, इत्याशीर्वाद ।

—०—

श्री अनन्तनाथ जिनपूजा

छन्द कवित्त

पुष्पोत्तर तजि नगर अजुध्या जनम लियो सूर्याउर आय,
सिंघसेन नृपके नन्दन, आनन्द अशेष भरे जगराय ।
गुन अनंत भगवंत धरे, भवदंद हरे तुम हे जिनराय,
थापतु हौ त्रय बार उचरिकै, कृपासिन्धु तिष्ठहु इत आय ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक

छन्द गीता तथा हरिगीता

शुचि नीर निरमल गंगको लै, कनकभृंग भराइया,
मल करम धोवन हेत मन, वचकाय धार ढराइया ।

जगपूज परमपुनीत मीत, अनत सत सुहावनो ।
शिवकतवत महत ध्यावो, भ्र ततन नशावनो ।।१।।
ॐ ह्री श्री अनन्तनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम् ।

हरिचन्द कदलीनद कुकुम, ददताप निकद है ।
सब पापरुजसतापभजन, आपको लखि चद है ।। ज० ।।२।।
ॐ ह्री श्री अनन्तनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनम् ।

कनशाल दुति उजियाल हीर, हिमालगुलनिते घनी ।
तसु पुज तुम पदतर धरत पद लहत स्वच्छ सुहावनी ।। ज०।।३
ॐ ह्री श्री अनन्तनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतम् ।

पुष्कर अमरतर जनित वर, अथवा अवर कर लाइया ।
तुम चरनपुष्करतर धरत, सरशूल सकल नशाइया ।।ज०।।४।।
ॐ ह्री श्री अनन्तनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वसनाय पुष्पम् ।

पकवान नैना घ्रानरसना-को प्रमोद सुदाय है ।
सो ल्याय चरन चढाय रोग, छुधाय नाश कराय हैं ।।ज० ।।५।।
ॐ ह्री श्री अनन्तनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् ।

तममोह भानन जानि आनन्द आनि सरन गही अबै ।
वर दीप धारो वारि तुमढिग, सुपरज्ञान जु द्यो सबै ।ज०।।६।।
ॐ ह्री श्री अनन्तनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् ।

यह गध चूरि दशाग सुन्दर धूम्रध्वजमे खेय हो ।
वसुकर्म भर्म जराय तुम ढिग, निज सुधातम वेय हो ।।ज० ।।७।।
ॐ ह्री श्री अनन्तनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम् ।

रसथक्व पक्व सुभक्व चक्व, सुहावने मृदु पावने ।
फलसार वृन्द अमद ऐसो, ल्याय पूज रचावने ।।ज०८।।

ॐ ह्री श्री अनतनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम् ।

शुचि नीर चन्दन शालिशदन, सुमन चरु दीवा धरो ।
अरु धूप जुत मै अरघ करि, करजोरजुग विनति करो ।।ज०९।।

ॐ ह्री श्री अनतनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घम् ।

पञ्चकल्याणक

छंद सुन्दरी तथा द्रुतविलंवित

असित कातिक एकम भावनो गरभको दिन सो गिन पावनो ।
किय सची तित चर्चन चावसो, हम जजे इत आनद भावसो ।।१।।

ॐ ह्री कार्तिककृष्णप्रतिपदि गर्भमङ्गलमडिताय श्री अनन्तनाथ-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

जनम जेठवदी तिथि द्वाद्वशी, सकल मङ्गल लोकविषै लशी ।
हरि जजे गिरिराजसमाजतै, हम जजै इत आतम काजतै ।।२।।

ॐ ह्री ज्येष्ठकृष्णद्वादश्या जन्ममङ्गलमडिताय श्री अनन्तनाथ-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

भवशरीर विनम्वर भाइयो, असित जेठदुवादशि गाइयो ।
सकल इद्र जजे तित आइकै, हम जजै इत मगल गाइकै ।।३।।

ॐ ह्री ज्येष्ठकृष्णद्वादश्या तपमगलमडिताय श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घम् ।

असित चैत अमावसको सही, परम केवलज्ञान जग्यो कही ।
लही समोसृत धर्म धुरधरो, हम समर्चत विघ्न सबै हरो॥४॥

ॐ ह्री चैत्रकृष्णामावस्याया ज्ञानमगलमडिताय श्री अनन्त-जिनेन्द्राय अर्घन् ।

असित चैत अमावस गाइयौ, अघतघाति हने शिव पाइयौ ।
गिरि समेद जजे हरि आयके, हम जजै पद प्रीति लगाइकै ॥५॥

ॐ ह्री चैत्रकृष्णामावस्या मोक्षमगलमडिताय श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घम् ।

जयमाला

छद दोहा

तुम गुण बरनन येम जिम, खविहाय करमान ।
तथा मेदिनी पदनिकरि, कीनो चहत प्रमान ॥१॥
जय अनन्त रवि भव्यमन, जलज वृन्द विहसाय ।
सुमति कोकतियथोक सुख, वृद्ध कियो जिनराय ॥२॥

छन्द नयमालनी, चडी तथा तामरस

जै अनन्त गुनवत नमस्ते, शुद्ध ध्येय नित सन्त नमस्ते ।
लोकालोक विलोक नमस्ते, चिन्मूरत गुनथोक नमस्ते ॥३॥
रत्नत्रयधर धीर नमस्ते, करमशत्रुकरि कीर नमस्ते ।
चार अनत महन्त नमस्ते, जय जय शिवतियकत नमस्ते ॥४॥
पचाचार विचार नमस्ते, पच कर्ण मदहार नमस्ते ।

पञ्च परावृत-चूर नमस्ते, पञ्चमगति सुखपूर नमस्ते ॥५॥
पञ्चलब्धि-धरनेश नमस्ते, पञ्च-भाव सिद्धेश नमस्ते ।
छहों दरब गुनजान नमस्ते, छहों कालपहिचान नमस्ते ॥६॥
छहों काय रच्छेश नमस्ते, छह सम्यक उपदेश नमस्ते ।
सप्तविशनवनवन्हि नमस्ते, जय केवलअपरन्हि नमस्ते ॥७॥
सप्ततत्त्व गुनभनन नमस्ते, सप्त शुभ्रगतहनन नमस्ते ।
सप्तभंगके ईश नमस्ते, सातों नय कथनीश नमस्ते ॥८॥
अष्टकरममदल्ल नमस्ते, अष्टजोगनिरशल्ल नमस्ते ।
अष्टधराधिराज नमस्ते, अष्टगुननिसिरताज नमस्ते ॥९॥
जय नवकेवल प्राप्त-नमस्ते, नव पदार्थथिति आप्त नमस्ते ।
दशों धरमधरतार नमस्ते, दशों बधपरिहार नमस्ते ॥१०॥
विघ्न महीधर बिज्जु नमस्ते, जय ऊरधगतिरिज्जु नमस्ते ।
तन कनकदुति पूर नमस्ते, इख्वाकज गनसूर नमस्ते ॥११॥
धनु पचासतन उच्च नमस्ते, कृपासिंधु गुन शुच्च नमस्ते ।
सेही अङ्क निशंक नमस्ते, चितचकोरमृगअङ्क नमस्ते ॥१२॥
राग दोषमदटार नमस्ते, निजविचार दुखहार नमस्ते ।
सुर-सुरेश-गन-वृन्द नमस्ते, 'वृन्द' करो सुखकंद नमस्ते ॥१३॥

छन्द घत्तानन्द

जय जय जिनदेव सुरकृतसेव, नितकृतचित्तहुल्लासधर ।
आपदउद्धार समतागार, वीतराग विज्ञानभर ॥१४॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथजिनेन्द्राय महार्घम् ।

छन्द मदावलिप्तकपोल तथा रोडक

जो मनवचकाय लाय, जिन जजै नेह धर,
वा अनुमोदन करै करावै पढै पाठ वर।
ताके नित नव होय, सुमगल आनन्ददाई,
अनुक्रमतै निवारन, लहै सामग्री पाई ॥१५॥

परिपुष्पाञ्जलिम् क्षिपेत्, इत्याशीर्वाद।

—०—

श्री धर्मनाथ जिनपूजा

छन्द माधवी तथा किरीट

तजिके सरवारथ सिद्ध विमान,
सुभानके आनि अनन्द बढाय।
जगमातसुव्रत्ति के नन्दन होय,
भवोदधि डूबत जतु कढाव ॥
जिनको गुन नामहि माहि प्रकाश है,
दासिनको शिवस्वर्ग मढाय।
तिनके पद पूजन हेत त्रिवार,
सुथापतु हो यह फूल चढाय ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर, सवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठ ठ। अत्र मम सन्निहितो भव भव, वषट्।

अष्टक

छंद जोगीरासा

मुनि मनसम शुचि शीर नीर अति, मलय मेलि भरिझारी,
जनमजरामृत तापहरनको, चरचो चरन तुम्हारी ।
परमधरम-शम-रमन धरम-जिन अशरन शरन निहारो,
पूजो पाय गाय गुन सुन्दर, नाचौ दै दै तारी ।।१।।
ॐ ह्री श्री धर्मनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युनिनाशनाय जलम् ।
केशर चन्दन कदली नन्दन, दाह निकन्दन लीनो ।
जलसमघस लसि शसिसमशमकर, भवआतापहरीनो ।पर०।।२।।
ॐ ह्री श्री धर्मनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनम् ।
जलज जीर सुखदास हीर हिम, नीर किरनसम लायो ।
पुज धरत आनन्द भरत भव-दद हरत हरषायो ।।पर०।।३।।
ॐ ह्री श्री धर्मनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतम् ।
सुनन सुमनसम सुमनथाल रम, सुमनवृन्द विहसाई ।
सुनन-मथ-मदमथन के कारन, चरचो चरन चढाई ।।पर०।।४।।
ॐ ह्री श्री धर्मनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वसनाय पुष्पम् ।
घेवर बावर अर्द्ध चन्द्र सम, छिद्र सहस्र विराजै ।
सुरस मधुर तासो पद पूजत, रोग असाता भाजै ।।पर०।।५।।
ॐ ह्री श्री धर्मनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नवेद्यम् ।
सुन्दर नेह सहित वर दीपक, तिमिर हरन धरि आगै ।
नेह सुहित गाऊ गुण श्रीधर, ज्यो सुबोध उर जागै ।।पर०।।६।।
ॐ ह्री श्री धर्मनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् ।

अगर तगर कृष्णागर तरदिव, हरि चदन करपूरं ।
चूर खेय जलजवनमाहि जिमि, करम जरे वसु कूर ॥पर०॥७॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम्

आभ्र काम्रक अनार सार फल, भार मिष्ट सुखदाई ।
सो लै तुमढिग धरहु कृपानिधि, देहु मोच्छ ठकुराई ॥पर०।८।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम् ।

आठो दरब साज शुचि चितहर, हरषि हरषि गुन गाई ।
बाजत दृमदृम दृम मृदगगत, नाचत ता थेई थाई ॥पर०९॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घम्

पंचकल्याणक

राग टप्पा की चाल 'खोयो रे गवार तै सारो दिन योही खोयो'

पूजो हो अबार, धरम जिनेसुर पूजो । पूजो हो ॥टेक॥
आठें सित वैसाख की हो, गरभ दिवस अविकार ।
जगजन वछित पूजो पूजोहो अबार, धरम जिनेसुर पूजो ॥१॥

ॐ ह्री वैशाखशुक्लाष्टम्या गर्भमगलमडिताय श्री धर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घम् ।

शुकल माघ तेरस लयो हो, धरम धरम अवतार ।
सुरपति सुरगिर पूज्यो, पूजो हो अबार ॥धर्म० ॥२॥

ॐ ह्री माघशुक्लत्रयोदश्या जन्ममगलमडिताय श्री धर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घम् ।

माघ सुकल तेरस लयो हो, दुद्धर तप अविकार ।
सुररिषि सुमनन पूज्यो, पूजो हो अबार ॥धरम० ॥३॥

ॐ ह्री माघशुक्लात्रयोदश्यां तपोमंगलमंडिताय श्री धर्मनाथ-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

पौष शुकल पूनम हने अरि, केवल लहि भवतार ।
गनसुर नरपति पूज्यो, पूजो हो अबार ॥धरम० ॥४॥

ॐ ह्री पौषशुक्लपूर्णिमायां ज्ञानमंगलमंडिताय श्री धर्मनाथ-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

जेठशुकल तिथि चौथ की हो, शिव समेदतैं पाय ।
जगतपूजपद पूजो, पूजो हो अबार धरम० ॥५॥

ॐ ह्री ज्येष्ठशुक्ल चतुर्थ्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घम् ।

जयमाला

छन्द दोहा (विशेषोक्ति अलंकार)

घनाकार करि लोक पट, सकल उदधि मसि तंत ।
लिखै शारदा कलम गहि, तदपि न तव गुन अन्त ॥१॥

छन्द पद्धरी

जय धरमनाथ जिन गुन महान,
तुम पदको मैं नित धरों ध्यान ।
जय गरभ जनम तप ज्ञान जुक्त,
वर मोच्छ सुमंगल शर्म-भुक्त ॥२॥

जय चिदानन्द आनन्दकन्द,
गुनवृंद सुध्यावत मुनि अमन्द ।
तुम जीवनिके बिनु हेत मित्त,
तुम ही हो जगमे जिन पवित्त ॥३॥

तुम समवरण मे तत्त्वसार,
उपदेश दियो है अति उदार ।
ताको जे भवि निजहेत चित्त,
धारै ते पावै मोच्छवित्त ॥४॥

मै तुम मुख देखत आज पर्म,
पायो निज आतमरूप धर्म ।
मोको अब भौभयतै निकार,
निरभयपद दीजे परम सार ॥५॥

तुम सम मेरो जग मे न कोय,
तुमही तै सब विधि काज होय ।
तुम दयाधुरधर धीर वीर,
मेटो जगजनकी सकल पीर ॥६॥

तुम नीतिनिपुन बिन रागदोष,
शिवमग दरसावतु हो अदोष ।
तुमरे ही नामतने प्रभाव,
जगजीव लहैं शिव-दिव-सुराव ॥७॥

तातै मैं तुमरी शरण आय,
यह अरज करतु हो शीश नाय।
भवबाधा मेरी मेट मेट,
शिवराधासो करि भेट भेट ॥८॥
जजाल जगतको चूर चूर,
आनद अनूपम पूर पूर।
मति देर करो सुनि अरज एव,
हे दीनदयाल जिनेशदेव ॥९॥
मोको शरना नहि और ठौर,
यह निहचै जानो सुगुन-मौर।
वृन्दावन वदत प्रीति लाय,
सब विघन मेट हे धरम राय ॥१०॥

छन्द घत्तानन्द

जय श्री जिन धर्म, शिवहितपर्म, श्रीजिनधर्म उपदेशा।
तुम दयाधुरधर विनतपुरदर, कर उरमदर परवेशा ॥११॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथजिनेन्द्राय महार्घम्।

छद मदावलिप्तकपोल

जो श्रीपतिपद जुगल, उगल मिथ्यात जजै भव,
ताके दुख सब मिटहि, लहै आनद समाज सब।
सुर-नर-पति-पद भोग, अनुक्रमतै शिव जावै,
वृन्दावन यह जानि धरम, जिनके गुन ध्यावै ॥१॥

परिपुष्पाञ्जलिम् क्षिपेत्, इत्याशीर्वाद।

श्री शान्तिनाथ जिनपूजा

छन्द मत्तागयद

या भवकानन मे चतुरानन, पापपनानन घेरी हमेरी,
आतमजानन मान ठान न, बान न होई दई सठ मेरी ।
ता मद भानन आपहि हो यह छान न आन न आनन टेरी,
आन गही शरनागत को अब श्रीपतजी पत राखहु मेरी ।।

ॐ ह्री श्री शान्तिनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर, सवौषट् ।
अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठ ठ । अत्र मम सन्निहितो भव भव, वषट् ।

अष्टक

छन्द त्रिभगी

हिमगिरिगतगगा, धार अभङ्गा प्रासुक सगा भरि भृगा,
जरमरनमृतुगा, नाशि अघगा, पूजि पदगा मृदुहिगा ।
श्री शान्तिजिनेश, नुतशक्रेश, वृषचक्रेश, चक्रेश,
हनि अरिचक्रेश हे गुनधेश दया तेश, मक्रेश ।।१।।

ॐ ह्री श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम् ।

वर बावन चदन, कदली नदन,
घन आनदन सहित घसो ।
भवतापनिकदन, ऐरानदन,
वदि अमदन, चरन वसो ।।श्री० ।।२।।

ॐ ह्री श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनम् ।

हिमकर करि लज्जत, मलय सुसज्ज,
अच्छत जज्जत, भरि थारी ।
दुखदारिद गज्जत, सदपदसज्जत
भवभयभज्जत, अतिभारी ॥श्री० ३॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतम् ।

मन्दार सरोज, कदली जोज,
पुञ्ज भरोज, मलयभर ।
भरि कञ्चनथारी, तुम ढिग धारी,
मदनविदारी, धीर धर ॥श्री०॥४॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय कामवाणविध्वसनाय पुष्पम् ।

पकवान नवीने पावन कीने,
षटरस भीने, सुखदाई ।
मनमोदन हारे, छुधा विदारे,
आगै धारे गुन गाई ॥श्री० ॥५॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय क्षधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् ।

तुम ज्ञानप्रकाशे, भ्रमतमनाशे,
ज्ञेयविकाशे सुखरासे ।
दीपक उजियारा यातैं धारा,
मोह निवारा, निज भासे ॥श्री०॥६॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् ।

चन्दन करपूर, करि वर चूर,
पावक भूर, माहि जुर ।
तसु धूम उडावै, नाचत जावै,
अलि गुजावै, मधुर सुर ।।श्री०।।७।।

ॐ ह्री श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम् ।

बादाम खजूर, दाडिम पूर,
निबुक भूर लै आयो ।
तासो पद जज्जो शिवफल सज्जो,
निजरसरज्जो, उमगायो ।।श्री०।।८।।

ॐ ह्री श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम् ।

वसु द्रव्य सवारी, तुम ढिग धारी,
आनन्दकारी दृग प्यारी ।
तुम हो भवतारी, करुनाधारी,
यातै थारी, शरनारी ।।श्री० ।।९।।

ॐ ह्री श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घम् ।

पंचकल्याणक

छद सुन्दरी तथा द्रुतविलवित

असित सातय भादव जानिये, गरभ मगल ता दिन मानिये ।
सचि किया जननी पद चर्चन, हम करै इत ये पद अर्चन ।।१।।

ॐ ह्री भाद्रपदकृष्णसप्तम्या गर्भमगलमडिताय श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घम् ।

जन्म जेठ चतुर्दशी श्याम है, सकल इन्द्र सु आगत धाम है।
गजपुरै गज साजि सबै तबै, गिरि जजे इत मैं जजि हो अबै ॥२॥

ॐ ह्री ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्या जन्ममगलमडिताय श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घम्।

भव शरीर सुभोग असार है, इमि विचार तबै तप धार है।
भ्रमर चौदस जेठ सुहावनी, धरमहेत जजो गुन पावनी ॥३॥

ॐ ह्री ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्या तपोमडलमडिताय श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घम्।

शुकल पौष दशै सुखरास है, परम केवलज्ञान प्रकाश है।
भवसमुद्रउधारन देवकी, हम करै नित मगल सेवकी ॥४॥

ॐ ह्री पौषशुक्लदशम्या ज्ञानमडलमडिताय श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घम्।

असित चौदसि जेठ हने अरी, गिरिसमेदथकी शिवतिय वरी।
सकल इद्र जजै तित आइकै, हम जजै इन मस्तक नाइकै ॥५॥

ॐ ह्री ज्येष्ठशुक्लचतुर्दश्या मोक्षमगलमडिताय श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घम्।

जयमाला

छन्द रथोद्धता, चन्द्रवत्स तथा चन्द्रबर्त्म

शान्ति शान्तिगुनमडिते सदा, जाहि ध्यावत सुपडिते सदा।
मै तिन्हे भगत मडिते सदा, पूजिहो कलुषहडिते सदा ॥१॥

मोच्छहेत तुम ही दयाल हो, हे जिनेश गुन रत्नमाल हो ।
मैं अबै सुगुनदाम ही धरो, ध्यावते तुरित मुक्ति-ती वरो ।।२।।

छन्द पद्धडी

जय शान्तिनाथ चिद्रूपराज,
भवसागर मे अद्भुत जहाज ।
तुम तजि सरवारथसिद्ध थान,
सरवारजुत गजपुर महान ।।१।।
तित जन्म लियौ आनद धार,
हरि ततछिन आयो राजद्वार ।
इन्द्रानी जाय प्रसूत-थान,
तुमको कर मे ले हरष मान ।।
हरि गोद देय सो मोदधार,
सिर चमर अमर ढारत अपार ।
गिरिराज जाय तित शिला पाडु,
तापै थाप्यो अभिषेक माडु ।।३।।
तित पचम उदधितनो सुवार,
सुर कर कर करि ल्याये उदार ।
तब इन्द्र सहसकर करि अनन्द,
तुम सिर धारा ढार्यौ सुमन्द ।।४।।
अघघघ घघघघ धुनि होत घोर,
भभभभ भभ धध धध कलश शोर ।

दृमदृम दृमदृम बाजत मृदग,
झन नन नन नन नन नू पुरग ॥५॥
तन नन नन नन नन तनन तान,
घन नन नन घटा करत ध्वान ।
ताथेई थेइ थेइ थेइ थेइ सुचाल,
जुत नाचत नावत तुमहि भाल ॥६॥
चट चट चट अटपट नटत नाट,
झट झट झट हट नट शट विराट ।
इमि नाचत राचत भगत रग,
सुर लेत जहा आनद सग ॥७॥
इत्यादि अतुल मगल सुठाट,
तित बन्यो जहा सुरगिरि विराट ।
पुनि करि नियाग पितुसदन आय,
हरि सौप्यौ तुम तित वृद्ध थाय ॥८॥
पुनि राजमाहि लहि चक्ररत्न,
भोग्यौ छखड करि धरम जत्न ।
पुनि तप धरि केवलरिद्धि पाय,
भविजीवनको शिवमग बताय ॥९॥
शिवपुर पहुँचे तुम हे दिनेश,
गुनमण्डित अतुल अनत भेष ।
मैं ध्यावतु हौ नित शीश नाय,

हमरी भवबाधा हरि जिनाय ॥१०॥

सेवक अपनो निज जान जान,
करुना करि भौभय भान भान ।
यह विघन मूल तरु खण्ड खण्ड,
चितचिन्तित आनन्द मड मड ॥११॥

छन्द घत्तानन्द

श्री शान्ति महता, शिवतियकता, सुगुन अनन्ता, भगवन्ता ।
भवभ्रमन हनता, सौख्य अनन्ता, दातार तारनवन्ता ॥१२॥

ॐ ह्री श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय महार्घम् ।

छन्द रूपक सवैया

शातिनाथ जिन के पद पकज, जो भवि पूजै मनवचकाय,
जनम जनमके पातक ताके, ततछिन तजिकै जाय पलाय ।
मनवाछित सुख पावौ सौ नर, बाचै भगतिभाव अतिलाय,
तातै 'वृन्दावन' नित बदै, जातै शिवपुरराज कराय ॥१॥

पुष्पाजलिम् क्षिपेत्, इत्याशीर्वाद ।

—०—

श्री कुन्थुनाथ जिनपूजा

छन्द माधवी तथा किरीट

अजअङ्क अजैपद राजै निशक
हरै भवशक निशकित दाता ।
मतमत्त मतङ्गके माथे गथे,
मतवाले तिन्है हने ज्यो हरिहाता ॥

गजनागपुरै लियो जन्म जिन्हौ,
रविके प्रभुनन्दन श्रीमति माता।
सह कुन्थु सुकुन्थुनिके प्रतिपालक,
थापो तिन्हे जुतभक्ति विख्याता ।।१।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथजिनेन्द्र। अत्र अवतर अवतर, सवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठ ठ। अत्र मम सन्निहितो भव भव, वषट्।

अष्टक

चाल लावनी मरहठी की, लाला मनसुखराय जी कृत

कुथु सुन अरज दासकेरी, नाथ सुनि अरज दासकेरी।
भवसिन्धु पर्‌यो हो नाथ, निकारो, बाह पकर मेरी ।।
प्रभू सुन अरज दासकेरी, नाथ सुनि अरज दासकेरी।
जगजाल पर्‌यो हो बेग निकारो, बाह पक रमेरी ।।टेक।।
सुरतरनीको उज्जल जल भरि, कनकभृग भरी।
मिथ्यातृषा निवारन कारन, धरो धार नेरी ।।कुथु० ।।१।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम्।

बावन चदन कदलीनन्दन, घसिकर गुन टेरी।
तपत मोहनाशनके कारन, धरो चरन नेरी ।।कुथु० ।।२।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चदनम्।

मुक्ताफलसम उज्वल अक्षत, सहित मलय लेरी।
पुज धरो तुम चरनन आगै, अखय सुपद देरी ।।कुथु०।।३।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तय अक्षतम्।

कमल केतकी बेला दौना, सुमन सुमनसेरी ।
समरशूलनिरमूल हेत प्रभु, भेट करो तेरी ।।कुंथु ।।४।।
ॐ ह्री श्री कुन्थुनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पम् ।
घेवर बावर मोदन मोदक, मृदु उत्तम पेरी ।
तासो चरन जजो करुणानिधि, हरो क्षुधा मेरी ।।कुंथु।।५।।
ॐ ह्री श्री कुन्थुनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् ।
कंचन दीपमई वर दीपक, ललित जोति घेरी ।
सौ लै चरन जजो भ्रमतम रवि, निज सुबोध देरी ।।कुंथु।।६।।
ॐ ह्री श्री कुन्थुनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् ।
देवदारु हरि अगर तगर करि चूर अगनि खेरी ।
अष्टकरम ततकाल जरे ज्यो धूम धनजेरी ।।कुंथु०।।७।।
ॐ ह्री श्री कुन्थुनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम् ।
लोंग लायची पिस्ता केला, कमरख शुचि लेरी ।
मोक्ष महाफल चाखन कारन, जजो सुकरि ढेरी ।।कुंथु।।८।।
ॐ ह्री श्री कुन्थुनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम् ।
जल चंदन तंदुल प्रसून चरु, दीप धूप लेरी ।
फलजुत जजन करो मन सुख धरी, हरो जगत फेरी ।।कुंथु०।९।
ॐ ह्री श्री कुन्थुनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घम् ।

पंचकल्याणक

छन्द मोतियादाम

सुसावनकी दशमी कलि जान, तज्यो सरवारथसिद्ध विमान ।

भयो गरभागम मगल सार, जजै हम श्रीपद अष्टकार ।।१।।

ॐ ह्री श्रावणकृष्णदशम्या गर्भमगलमडिताय श्री कुन्थुनाथ-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

महा बयशाख सु एकम शुद्ध,
भयो तव जन्म तिज्ञानसमुद्ध ।
कियो हरि मगल मन्दिर शीस,
जजै हम अत्र तुम्हे नुत शीस ।।२।।

ॐ ह्री वैशाखशुक्लप्रतिपदि जन्ममङ्गलमडिताय श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घम् ।

तज्यो खटखड विभौ जिनचन्द,
विमोहित चित चितारि सुछद ।
धरे तप एकम शुद्ध विशास,
सुमग्न भये निज आनन्द चाख ।।३।।

ॐ ह्री वैशाखकृष्णप्रतिपदि तपोमगलमडिताय श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घम् ।

सुदी तिय चैत सु चेतन शक्त
चहू अरि छै करि तादिन व्यक्त ।
भई समवस्रत भाखि सुधर्म,
जजो पद ज्यो पद पाइय पर्म ।।४।।

ॐ ह्री चैत्रशुक्लतृतीयाया ज्ञानमगलमडिताय श्री कुन्थुनाथ निजन्द्राय अर्घम् ।

सुदी बयसाख सु एकम नाम,
लियौ तिहि द्यौस अभै शिवधाम ।
जजे हरि हर्षित मगल गाय,
समर्चतु हौ सु हिया वच काय ॥५॥

ॐ ह्री वैसाखशुक्लप्रतिपदि मोक्षमङ्गलमडिताय श्री कुन्थुनाथ-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

जयमाला

अडिल्ल छद

खट खडन के शत्रु राजपद मे हने,
धरि दीक्षा खटखडन पाप तिन्हे दने ।
त्यागि सुदरशनचक धरमचक्री भये,
करमचक्र चकचूर सिद्ध दिढ गढ लये ॥१॥
ऐसे कुन्थु जिनेश तने पदपद्मको,
गुन अनत भडार महासुखसद्मको ।
पूजो अरघ भडार पूरणानन्द हो,
चिदानन्द अभिनन्द इन्दगन वन्द हो ॥२॥

छन्द पद्धरि

जय जय जय जय श्री कुन्थ देव,
तुम ही ब्रह्मा हरि त्रिबुकेव ।
जय बुद्धि विदावर विष्णु ईस,
जय रमाकत शिवलोक शीस ॥३॥

जय दयाधुरधर सृष्टिपाल,
जय जय जगबधू सुगुणमाल ।
सरवारथसिद्ध विमान छार,
उपजे गजपुर मे गुन अपार ।।४।।
सुरराज कियो गिर न्हौन जाय,
आनद सहत जुत भगत भाय ।
पुनि पिता सौपि कर मुदित अग,
हरि ताडव निरत कियो अभग ।।५।।
पुनि स्वर्ग गयो, तुम इत दयाल,
वय पाय मनोहर प्रजापाल ।
खठखडविभौ भोग्यौ समस्ते,
फिर त्याग जोग धारयो निरस्त ।।६।।
तब घाति घात केवल उपाय,
उपदेश दियो सब हित जिनाय ।
जाके जानत भ्रम-तम विलाय,
सम्यक् दरशन निरमल लहाय ।।७।।
तुम धन्य देव किरपा-निधान,
अज्ञान-क्षमा-तमहरन भान ।
जय स्वच्छगुनाकर शुक्लशुक्ल,
जय स्वच्छ सुखामृत भुक्तभुक्त ।।८।।
जय भौभयभजन कृत्यकृत्य,

मैं तुमरो हो निज भृत्यभृत्य ।
प्रभु अशरन शरन अधार धार,
मम विघ्न तूलगिरि जार जार ॥९॥
जय कुनय-यामिनी सूर सूर,
जय मनवाछित सुख पूर पूर ।
मम करमबन्ध दिढ चूर चूर,
निज सम आनन्द है भूर भूर ॥१०॥
अथवा जबलो शिव लहौ नाहि,
तबलौ ये तो नित ही लहाहि ।
भव भव श्रावक-कुल जनम सार,
भव भव सतमत सतसग धार ॥११॥
भव भव निज आतम-तत्त्व ज्ञान,
भव भव तप सजम शील दान ।
भव भव अनुभव नित चिदानद,
भव भव तुम आगम हे जिनद ॥१२॥
भव भव समाधिजुत मरन सार,
भव भव व्रत चाहो अनागार ।
यह मोको हे करुणानिधान,
सब जोग मिलो आगम प्रमान ॥१३॥
जबलौ शिव सम्पति लहो नाहि,
तबलो मै इनको नित लहाहि ।

यह अरज हिये अवधारि नाथ,
भवसकट हरि कीजै सनाथ ॥१४॥

छद घत्तानन्द

जय दीनदयाला वरगुणमाला, विरद विशाला, सुख आला ।
मैं पूजो ध्यावो, शीश नवावो, देहु अचल पद की चाला ॥१५॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथजिनेन्द्राय महार्घम् ।

छन्द रोडक

कुन्थुजिनेवर पादपदम, जो प्रानी ध्यावै,
अलि समकर अनुराग, सहज सो निजविधि पावै ।
जो बांचै सरदहै, करै अनुमोदन पूजा ।
वृन्दावन तिह पुरुष सदृश सुखिया नहि दूजा ॥१६॥

परिपुष्पाजलिम् क्षिपेत्, इत्याशीर्वाद ।

—०—

श्री अरहनाथ जिनपूजा

छन्द छप्पय

तप तुरग असवार धार, तारन विवेक कर ।
ध्यान शुकल असि धार, शुद्ध सुविचार सुबखतर ॥
भावन सेना धरम, दशो सेनापति थापे ।
रतन तीन धर सकति, मत्रि अनुभो निरमापे ॥

सत्तातल सोह सुभट धुनि, त्याग केतु शत अग्र धरि ।
इहविध समाज सज राजको, अरजिन जीते करम अरि ।।१।।

ॐ ह्री श्री अरहनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर, सवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ । अत्र मम सन्निहितो भव भव, वषट् ।

अष्टक

छन्द त्रिभङ्गी

कनमणिमय झारी, दृगसुखकारी, सुरसरितारी नीर भरी ।
मुनिमनसम उज्वल, जनमजरादल, सो लै पदतल धार करी ।।
भु दीनदयाल अरिकुलकाल विरदविशाल सुकुमालम् ।
हनि मम जजाल, हे जगपाल, अरगुनमाल वरभालम् ।।१।।

ॐ ह्री श्री अरहनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम् ।

भवताप नशावन, विरद सुपावन,
सुनि मनभावन मोद भयो ।
तातै घसि बावन, चदन पावन,
तरहि चढावन उमगि अयो ।।प्रभु०।।२।।

ॐ ह्री श्री अरहनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चदनम् ।

तदुल अनियारे, श्वेत सवारे,
शशिदुति टारे, थार भरे ।
पद अखय सुदाता, जगविख्याता,
लखि भवताता, पुज धरे ।।प्रभु०।।३।।

ॐ ह्री श्री अरहनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतम् ।

सुरतरुके शोभित, सुरन मनोभित,
सुमन अछोभित, ले आयौ ।
मनमथ के छेदन, आप अवेदन,
लखि निरवेदन गुन गायौ ।।प्रभु०।।४।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथजिनेन्द्राय कामवाणविध्वसनाय पुष्पम् ।

नेवज सज भक्षक, प्रासुक अक्षक,
पक्षक रक्षक, स्वक्ष धरी ।
तुम करम निकक्षक, भस्म कलक्षक
दक्षक पक्षक रक्षकरी ।।प्रभु० ।।५।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् ।

तुम भ्रमतमभजन मुनिमनकजन
रजन गजन मोहनिशा ।
रवि केवलस्वामी दीप जगामी
तुम ढिग आमी पुन्यदृशा ।।प्रभु० ६।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् ।

दशधूप सुरगी गध अभगी, बह्निबरगीमाहि हवै ।
वसुकर्म जरावै धूम उडावै ताडव भावै नृत्य पवै ।।प्रभु०।।७।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम् ।

रितुफल अतिपावन नयनसुहावन,
रसनाभावन, कर लीने ।

तुम विघनविदारक शिवफलकारक,

भवदधि-तारक चरचौनें ॥प्रभु०॥८॥

ॐ ह्री श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम् ।

सुचि स्वच्छ पटीर गधगहीर, तदुलशोर पुष्पचरु ।

वर दीप धूप आनदरूप, लै फल भूप अर्घकर ॥प्रभु० ॥६॥

ॐ ह्री श्री अरहनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घम् ।

पञ्चकल्याणक

छन्द चौपाई

फागुन सुदी तीज सुखदाई, गरभ सुमगल ता दिन पाई ।

मित्रादेवी उदर सु आये, जजे इन्द्र हम पूजन आये ॥१॥

ॐ ह्री फाल्गुणकृष्णतृतीयाया गर्भमगलमडिताय श्री अरहनाथ-जिनन्द्राय अर्घम् ।

मगसिर शुद्ध चतुर्दशि सोहै, गजपुर जनम भयो जग मोहै ।

सुर गुरु जजे मेरु पर जाई, हम इत पूजे मनवचकाई ॥२॥

ॐ ह्री मार्गशीर्षशुक्लचतुर्दश्या जन्ममंगलमडिताय श्री अरहनाथ-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

मगसिर सित चौदस दिन राजै, तादिन सजम धरे विराजै ॥

अपराजित घर भोजन पाई, हम पूजै इत चित हरषाई ॥३॥

ॐ ह्री मार्गशीर्षशुक्लचतुर्दश्या तपोमगलमडिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घम् ।

कातिक सित द्वादसि अरि चूरे, केवलज्ञान भयो गुन पूरे।
समवरसनथित धरम बखाने, जजत चरन हम पातक भाने ।।४।।

ॐ ह्री कार्तिकशुक्लद्वादश्या ज्ञानमगलमडिताय श्री अरहनाथ-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

चैतकृष्ण अमाशय दिन सब कर्म, नाशि वास किय शिव-थल पर्म।
निह्चल गुन अनत भडारी, जजो देव सुधि लेहु हमारी ।।५।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णामाश्या मोक्षमगलमडिताय श्री अरहनाथ-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

जयमाला

दोहा छद

बाह्र भीतर जिते, जाहर अर दुखदाय ।
ता हर कर अर जिन भये, साहर शिवपुर राय ।।१।।
राय सुदरशन जासु पितु, मित्रादेवी माय ।
हेमवरन तन बरप वर, नब्वै सहस सुआय ।।२।।

छद तोटक

जय श्रीधर श्रीकर श्रीपति जी,
जय श्रीवर श्रीभर श्रीमति जी,
भव भीम भवोदधि तारन है,
अरनाथ नमो सुखकारन है ।।३।।
गरभादिक मगल सार धरे,
जग जीवनके दुखदद हरे ।

कुरुवश शिखामनि तारन हैं,
अरनाथ नमो सुखकारन है ॥४॥
करि राज अखड बिभूति मई,
तप धारत केवलबोध ठई ।
गण तीस जहा भ्रमवारन है,
अरनाथ नमो सुखकारन है ॥५॥
भविजीवनको उपदेश दियौ,
शिवहेत सबै जन धारि लियौ ।
जगके सब सकट तारन है,
अरनाथ नमो सुखकारन हैं ॥६॥
कहि बीस प्ररूपन सार तहा,
निजशर्म सुधारस धार जहा ।
गति चार हृषी पन धारन हैं,
अरनाथ नमो सुखकारन है ॥७॥
खट काय तिजोग तिवेद मथा,
पनवीस कषा वसु ज्ञान तथा ।
सुर सजम भेद पसारन है,
अरनाथ नमो सुखकारन है ॥८॥
रस दर्शन लेश्यय भव्य जुग,
खट सम्यक सौनिय भेद युग ।
जुग हार तथा सु अहारन है,

अरनाथ नमो सुखकारन है ॥९॥
गुन थान चतुर्दश मारगना,
उपयोग दुवादश भेद भना ।
इमि वीस विभेद उचारन है,
अरनाथ नमो सुखकारन है ॥१०॥
इन आदि समस्त बखान कियौ,
भवि जीवनने उर धार लियौ ।
कितने शिववादिन धारन है,
अरनाथ नमो सुखकारन है ॥११॥
फिर आप अघाति विनाश सबै, शिवधामविषै थित कीन तबै ।
कृतकृत्य प्रभू जगतारन है, अरनाथ नमो सुखकारन है ॥१२॥
अब दीनदयाल दया धरिये, मम कर्मकलंक सबै हरिये ।
तुमरे गुनको कछु पार न हैं, अरनाथ नमो सुखकारन है ॥१३॥

छन्द घत्तानन्द

जय श्री अरदेव, सुरकृतसेव, समताभेव, दातार ।
अरिकर्मविदारन, शिवसुखकारन, जयजिनवर जगत्रातार ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथजिनेन्द्राय महार्घम् ।

छन्द आर्या

अरजिनके पदसार, जो पूजै द्रव्यभावसो प्रानी ।
सो पावै भवपार, अजरामर मोच्छथान सुखखानी ॥

परिपुष्पाञ्जलिम् क्षिपेत्, इत्याशीर्वाद ।

श्री मल्लिनाथ जिनपूजा

छन्द रोडक

अपराजिततैं आय नाथ मिथिलापुर जाये,
कुभराय के नन्द, प्रजापति मात बताये।
कनक वरन तन तुङ्ग, धनुष पच्चीस विराजै,
सो प्रभु तिष्ठहु आय निकट मम ज्यो भ्रम भाजै॥

ॐ ह्री श्री मल्लिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर, सवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठ ठ। अत्र मम सन्निहितो भव भव, वषट्।

अष्टक

छद जोगीरासा

सुर-सरिता-जल उज्जल लै कर, मनिभृङ्गार भराई,
जनम जरामृत नाशनकारन, जजहु चरन जिनराई।
राग-दोष-मद-मोहहरनको, तुम ही हौ वरवीरा।
याते शरन गही जगपतिजी, वेग हरो भवपीरा॥१॥

ॐ ह्री श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम्।

बावनचदन कदली नन्दन, कुकुमसग घसायो।
लेकर पूजौ चरनकमल प्रभु, भवआताप नशायौ॥रा०२॥

ॐ ह्री श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनम्।

तदुलशशिसम उज्जुल लीने, दोने पुज सुहाई।
नाचत राचत भगति करत ही, तुरित अखैपद पाई॥रा०॥३॥

ॐ ह्री श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतम्।

पारिजातमदार सुमन, सतानजनित महकाई ।
मार सुभट मदभजनकारन, जजहु तुम्हे शिरनाई ।।रा०।।४।।
ॐ ह्री श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय कामवाणविध्वसनाय पुष्पम् ।
फेवी गोझा मोदन मोदक, आदिक सद्य उपाई ।
सो लै क्षुधा निवारन कारन, जजहुँ चरन लवलाई ।।रा०।।५।।
ॐ ह्री श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् ।
तिमिरमोह उरमन्दिर मेरे छाय रह्यो दुखदाई ।
तासु नाशकारनको दीपक, अद्मुत ज्योति जगाई ।।रा०।।६।
ॐ ह्री श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् ।
अगर तगर कृष्णागर चदन चूरि सुगध बनाई ।
अष्टकर्म जारनको तुमढिग खेवतु हौ जिनराई ।।रा०।।७।।
ॐ ह्री श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम् ।
श्रीफल लौग बदाम छुहारा, एला केला लाई ।
मोखमहाफलदाय जानिकै, पूजो मन हरखाई ।।रा०।।८।।
ॐ ह्री श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम् ।
जल फल अरघ मिलाय गाय गुन, पूजो भगति बढाई ।
शिवपदराज हेत हे श्रीधर, शरन गही मैं आई ।।रा०।।९।।
ॐ ह्री श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घम् ।

पंचकल्याणक

छन्द लक्ष्मीधरा

चैत की शुद्ध एकै भली राजई,
गर्भकल्यान को साजई ।

कुम्भराजा प्रजाप्रति माता तने,
देवदेवो जजे शीस नाये घने ।।१।।

ॐ ह्री चैत्र शुक्ल प्रतिपदा दिने गर्भमगलमडिताय श्री मल्लिनाथ जिनन्द्राय अर्घम् ।

मार्गशीर्षे सुदी ग्यारसी राजई,
जन्मकल्यान को द्यौस सो छाजई ।
इन्द्र नागेन्द्र पूजे गिरेन्द्र जिन्हे,
मै जजौ ध्यायके शीस नावो उन्हे ।।२।।

ॐ ह्री मार्गशीर्षशुक्लैकादश्या जन्ममगलमडिताय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घम् ।

मार्गशीर्षे सुदी ग्यारसीके दिना,
राज को त्याज दीच्छा धरी है जिना ।
दान गोछीर को नदसेने दयौ,
मैं जजो जासुके पचचर्जे भयौ ।।३।।

ॐ ह्री मार्गशीर्षशुक्लैकादश्या तपोमडलमडिताय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घम् ।

पौषकी श्यामदूजी हने घातिया,
केवलज्ञानसाम्राज्यलक्ष्मी लिवा ।
धर्मचक्री भये सेव शक्री करे,
मैं जजो चर्न ज्यो कर्मवक्री टरै ।।४।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णद्वितीयायां ज्ञानमंगलमंडिताय श्री मल्लिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

फाल्गुनी सेत पांचैं अघाति हते ।
सिद्ध आलै बसे जाय सम्मेदतें ।
इन्द्र नागेन्द्र कीन्हीं क्रिया आयके,
मैं जजौं सो मही ध्यायके गायके ।।५।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लपंचम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घम् ।

जयमाला

छन्द घत्तानन्द

तुअ नमित सुरेशा, नरनागेशा, रजत नगेशा भगति भरा ।
भवभयहरनेशा, सुखभरनेशा, जैं जै जे शिवरमनिबरा ।।१।।

छन्द पद्धरी

जय शुद्ध चिदातम देव एव,
निरदोष सुगुन यह सहज टेव ।
जय भ्रमतम भंजन मारतंड,
भविदधिधातारनो तरंड ।।२।।
जय गरभजनमंडित जिनेश,
जय छायक समकित बुद्ध भेस ।
चौथे किय सातों प्रकृति छीन,
चौ अनंतानु मिथ्यात तीन।।३।।

सातय किय तीनो आयु नाश,
　　फिर नवैं अंश नवमे विलास ।
तिन माहि प्रकृति छत्तीस चूर,
　　या भांति कियौ तुम ज्ञान पूर ।।४।।
पहिले मह सोलह कह प्रजाल,
　　निद्रानिद्रा प्रचलाप्रचाल ।
हनि थानगृद्धिको सकल कुब्ब,
　　नर तिर्यंग्गति गत्यानुपुब्व ।।५।।
इक वे ते चौ इन्द्रिय जात,
　　थावर आतप उद्योत घात ।
सूच्छम साधारन एम चूर,
　　पुनि दुतिय अंश बसु कर्‌यो दूर ।।६।।
चौ प्रत्याप्रत्याख्यान चार,
　　तीजे सु नपुंसकवेद टार ।
चौथे तियवेद विनाश कीन,
　　पाचे हास्यादिक छहो छीन ।।७।।
नरवेद छठे छय नियत धीर,
　　सातय सज्वलन क्रोध चीर ।
आठवे सज्वलन मान भान,
　　नवमे माया सज्वलन हान ।।८।।
इमि घात नवे दशमे पधार,

सज्वलनलोभ तित हु विदार ।
पुनि द्वादशके द्वय अशमाहि,
सोरह चकचूर कियो जिनाहि ॥९॥
निद्रा प्रचला इक भागमाहि,
दुति अश चतुर्दश नाश जाहि ।
ज्ञानावरनी पन दरश चार,
अरि अन्तराय पाचो प्रहार ॥१०॥
इमि छय त्रेशठ केवल उपाय,
धरमोपदेश दीन्हो जिनाय ।
नव केवललब्धि विराजमान,
जय तेरमगुन थिति गुन अमान ॥११॥
गत चौदह मे द्वै भाग तत्र,
छय कीन बहत्तर तेरहत्र ।
वेदनी आसातको विनाश,
औदारि विक्रियाहार नाश ॥१२॥
तैजस्यकार मानो मिलाय,
तन पचपच बधन विलाय ।
संघात पच घाते महत ।
त्रय अङ्गोपाग सहित भनत ॥१३॥
सठान सहनन छह छहेव,
रसवरन पच वसु फरस भेव ।

जुग गंध देवगति सहित पुव्व,
पुनि अगुरुलघु उस्वास दुव्व ॥१४॥
परउपघातक सुविहाय नाम,
जुत अशुभगमन प्रत्येक खाम।
अपरज थिर अथिर अशुभ सुमेव,
दुरभाग सुसुर दुस्सुर अमेव ॥१५॥
अन आदर और अजस्य कित्त,
निरमान नीच गोतौ विवित्त।
ये प्रथम बहत्तर दिय खपाय,
तब दूजे मे तेरह नशाय ॥१६॥
पहले सातावेदनी जाय,
नर आयु मनुषगति को नशाय।
मानुषगत्यानु सुपूरवीय,
पचेन्द्रिय जात प्रकृती विधीय ॥१७॥
त्रसवादर परजापति सुभाग,
आदरजुत उत्तम गोतपाग,
जस कीरत तीरथ प्रकृत जुक्त,
ए तेरह छय करि भये मुक्त ॥१८॥
जय गुन अनत अविकार धार,
वरनत गनधर नहि लहत पार।

ताको मै बन्दौं बारबार,
मेरो आपद उद्धार धार ॥१९॥
सम्मेदशैल सुरपति नमत,
तब मुकतथान अनुपम लसत।
वृन्दावत वदत प्रीत लाय,
मम उर मे तिष्ठहु हे जिनाय ॥२०॥

छन्द घत्तानन्द

जय जय जिनस्वामी, त्रिभुवन नामी,
मल्ल विमलकल्यान करा।
भवददविदारन आनन्दकारन,
भविकुमोद निशिईश वरा। २१॥।

ॐ ह्री श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय महार्घम्।

छन्द शिखरणी

जजै है जो प्रानी दरब अरु भावादि विधिसो।
करे नानाभाँती भगति थुति औ नौति सुधिसो।
लहै शक्री चक्री सकल सुख सौभाग्य तिनको।
तथा मोक्ष जावै जजत जन जो मल्लिजिनको।२२॥

परिपुष्पाजलिम् क्षिपेत्, इत्याशीर्वाद:।

—०—

श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनपूजा

छन्द मत्तगयन्द

प्रानत स्वर्ग विहाय लियो जिन, जन्म सु राजगृहीमह आई,
श्री सुहमित्त पिता जिनके गुनवान महापवमा जसु माई ।
बीस धनू तनु श्याम छबी, कछु अङ्क हरी वर वंश बताई,
सो मुनिसुव्रतनाथ प्रभू कह, थापतु हौ इत प्रीति लगाई ।।१।।

ॐ ह्री श्री मुनिसुव्रतजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर, सवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठ ठ । अत्र मम सन्निहितो भव भव, वषट् ।

अष्टक

छद गीतिका

अव श्री मुनिसुव्रत मैं पायनि परो, सुखदाय लखि पायनि परो।।टेक।।
उज्जल सुजल जिमि जस तिहारौ, कनक झारी मे भरों ।।
जरमरनजामन हरन कारन, धार तुम पदतर करों ।।
शिवसाथ करत सनाथ सुव्रतनाथ, मुनिगुन माल है ।
तसु चरन आनन्दभरन तारन, तरन विरद विशाल है ।।१।।

ॐ ह्री श्री मुनिसुव्रतजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम् ।

भवतापघायक शांतिदायक, मलय हरि घसि ढिग धरो ।
गुन गाय शीस नमाय पूजत, विघनताप सबै हरो।। शि० ।।२।।

ॐह्री श्री मुनिसुव्रतजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनम् ।

तदुल अखडित दमक शशि सम, गमक जुत थारी भरो ।
पद अखयदायक मुकतिनायक, जानि पद पूजा करो ।।शि० ३।।
ॐ ह्री श्री मुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तय अक्षतम् ।
बेला चमेली रायबेली, केतकी करना सरो ।
जगजीत मनमथहरन लखि प्रभु तुम निकट ढेरी करो ।।शि०४।।
ॐ ह्री श्री मुनिसुव्रतजिनेन्द्राय कामवाणविध्वंसनाय पुष्पम् ।
पकवान विविध मनोज्ञ पावन, सरस मृदु गुन विस्तरो ।
सो लेय तुम पदतर धरत ही, छुधा डाइनको हरो ।शि०।।५।।
ॐ ह्री श्री मुनिसुव्रतजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् ।
दीपक अमोलिक रतन मनिमय, तथा पावन घृत भरो ।
सो तिमिर मोह विनाश आतम, भासकारन ज्वै धरो ।।शि० ६।।
ॐ ह्री श्री मुनिसुव्रतजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् ।
करपूर चन्दन चूर भूर, सुगन्ध पावक मे धरो ।
तसु जरत जरत समस्त पातक, सार निजसुखको भरो ।।शि०७।।
ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम् ।
श्रीफल अनार सु आम आदिक, पक्क फल अति विस्तरो ।।
सो मोक्षफलके हेतु लेकर, तुम चरन आगे धरो शि० ।।८।।
ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम् ।
जल गंध आद मिलाय आठो, दरब, अरघ सजो वरो ।
पूजौ चरनरज भगत जुत, जाते जगत सागर तरो ।।शि० ।।९।।
ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घम ।

पंचकल्याणक

छंद तोटक

तिथि दोयज सावन श्याम भयो,
गरभागम मगल मोद थयो ।
हरिवृन्द सची पितु मातु जजे,
हम पूजत ज्यौं अघ ओघ भजे ॥१॥

ॐ ह्री श्रावणकृष्णद्वितीयाया गर्भमगलमडिताय श्री मुनिसुव्रत-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

वयसाख वदी दशमी वरनी,
जनमे तिहि द्यौस त्रिलोकधनी ।
सुरमन्दिर ध्याय पुरन्दर ने,
मुनिसुव्रतनाथ हमें सरने ॥ २ ॥

ॐ ह्री वैशाखकृष्णदशम्या जन्ममङ्गलमडिताय श्री मुनिसुव्रत-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

तप दुद्धर श्रीधर ने गहियो,
वयसाख वदी दशमी कहियो ।
निरुपाधि समाधि सुध्यावत है,
हम पूजत भक्ति बढावत है ॥३॥

ॐ ह्री वैशाखकृष्णदशम्या तपोमगलमडिताय श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घम् ।

वर केवलज्ञान उद्योत किया,
नवमी वयसाख वदी सुखिया ।
घनि मोहनिशाभनि मोखमगा,
हम पूजि चहै भवसिन्धु थगा ।।४।।

ॐ ह्री वैशाखकृष्णनवम्यां ज्ञानमगलमडिताय श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अर्घम् ।

वदि वारस फागुन मोच्छ गये,
तिहुँ लोक शिरोमनि सिद्ध भये ।
सु अनन्त गुनाकर विघ्न हरी,
हम पूजत है मनमोद भरी ।।५।।

ॐ ह्री फाल्गुनकृष्णद्वादश्या मोक्षमगलमडिताय श्री मुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अघम् ।

जयमाला

दोहा

मुनिगननायक मुक्तिपति, सूक्त व्रताकरयुक्त ।
भुक्तमुक्त दातार लखि, बन्दो तन मन उक्त ।।१।।

छन्द तोटक

जय केवलभान अमान धर,
मुनि स्वच्छसरोज विकासकर ।

भव संकट भंजन लायक है,
मुनिसुव्रत सुव्रतदायक है ॥२॥
घनघातव नन्दवदोप्त भन,
भविबोधत्रपातुरमेघघन ।
नित मङ्गलवृन्द बधायक है,
मुनिसुव्रत सुव्रतदायक है ॥३॥
रभादिक मगलसार धरे,
जगजीवन के दुखदद हरे ।
सब तत्त्वप्रकाशन वायक है,
मुनिसुव्रत सुव्रतदायक है ॥४॥
शिवमारगमडन तत्त्व कह्यो,
गुनसार जगत्रय शर्म लह्यो ।
रुज रागरु दोष मिटायक है,
मुनिसुव्रत सुव्रतदायक है ॥५॥
समवस्रतमे सुरनार सही,
गुन गावत नावत भालमही ।
अरु नाचत भक्ति बढायक है,
मुनिसुव्रत सुव्रतदायक है ॥६॥
पगनूपुरकी धुनि होत भन,
झनन झनन झनन झमन ।
सुरलेत अनेक रमायक है,

मुनिसुव्रत सुव्रतदायक है ॥७॥
घनन घनन घन घट बजै,
तनन तनन तनतान सजै ।
द्रिमद्री मिरदग बजायक है,
मुनिसुव्रत सुव्रतदायक है ॥८॥
छिन मे लघु औ छिन थूल बने,
जुत हावविभाव विलासपने ।
मुखतें पुनि यो गुनगायक है,
मुनिसुव्रत सुव्रतदायक है ॥९॥
धृगता धृगता पग पावत है,
सनन सनन सुनचावत है ।
अति आनन्द को पुनि पायक है,
मुनिसुव्रत सुव्रतदायक है ॥१०॥
अपने भवको फल लेत सही,
शुभ भावनिते सब पाप दही ।
तित ते सुखको सब पायक है,
मुनिसुव्रत सुव्रतदायक है ॥११॥
इन आदि समाज अनेक तहा,
कहि कौन सकै जु विभेद यहा ।
धन श्री जिनचन्द सुधायक है,
मुनिसुव्रत सुव्रतदायक है ॥१२॥

पुनि देश विहार कियौ जिनने,
वृष अमृतवृष्टि कियो तुमने ।
हमको तुमरी शरनायक है,
मुनिसुव्रत सुव्रतदायक है ॥१३॥

हमपै करुना करि देव अबै,
शिवराज समाज सु देहु सबै ।
जिमि होहु सुखाश्रमदायक है,
मुनिसुव्रत सुव्रतदायक है ॥१४॥

भवि वृन्दतनी विनती जु यही,
मुझ देहु अभैपद राज सही ।
हम आनि गही शरनायक है
मुनिसुव्रत सुव्रतदायक है ॥१५॥

छन्द घत्तानन्द

जयगुनधारी, शिवहितकारी, शुद्धबुद्ध चिद्रूपपती ।
परमानन्ददायक दाससहायक, मुनिसुव्रत जयवन्त जती ॥

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतजिनेन्द्राय महार्घम् ।

दोहा छन्द

श्री मुनिसुव्रत के चरन, जो पूजै अभिनन्द ।
सो सुरनर सुख भोगके, पावै सहजानन्द ॥१७॥

परिपुष्पाजलिम् क्षिपेत्, इत्याशीर्वाद ।

—०—

श्री नमिनाथ जिनपूजा

रोडक

श्री नमिनाथजिनेन्द्र नमो विजयारथनन्दन,
विख्यादेवी मातु सहज सब पापनिकन्दन ।
अपराजित तजि जये मिथुलपुर वर आनन्दन,
तिन्हे सु थापो यहा त्रिधाकरिके पदवन्दन ॥१॥

ॐ ह्री श्री नमिनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर, सवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठ ठ । अत्र मम सन्निहितो भव भव, वषट् ।

अष्टक

छन्द द्रुतविलवित

सुरनदी जल उज्जल पावन, कनकभृग भरो मनभावन ।
जजतु हौ नमिके गुन गायके, जुगपदाबुज प्रीति लगायके ॥१॥

ॐ ह्री श्री नमिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम् ।

हरि मलै मिलि केशरसो घसो, जगतनाथ भवातापको नसो ।
जजतु हौ नमिके गुन गायके, जुगपदाबुज प्रीति लगायके ॥२॥

ॐ ह्री श्री नमिनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनम् ।

गुलकके सम सुन्दर तन्दुल, धरत पुञ्ज सुभुञ्जत सकुल ।
जजतु हौ नमिके गुन गायके, जुगपदाबुज प्रीति लगायके ॥३॥

ॐ ह्री श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतम् ।

कमल केतुकि बेलि सुहावनी, समरसूल समस्त नसावनी ।

जजतु हौ नमिके गुन गायके, जुगपदांबुज प्रीति लगायकें ॥४॥
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पम् ।

शशि सुधासम मोदक मोदन, प्रबल दुष्ट छुदामद खोदन ।
जजतु हौ नमिके गुन गायके, जुगपदाबुज प्रीति लगायके ॥५॥
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् ।

शुधि घृताश्रित दीपक जोइया, असममोह महत्तम खोइया ।
जजतु हौ नमिके गुन गायके, जुगपदाबुज प्रीति लगायके ॥६॥
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् ।

अमर जिह्वविषे दशगंधको, दहत दाहत कर्म कबंधको ।
जजतु हौ नमिके गुन गायके, जुगपदाबुज प्रीति लगायके ॥७॥
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम् ।

फल सुपक्व मनोहर पावने, सकल विघ्नसमूह नशावने ।
जजतु हौ नमिके गुन गायके, जुगपदाबुज प्रीति लगायके ॥८॥
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम् ।

जलफलादि मिलाय मनोहरं अरघ धारत ही भय भौ हरं ।
जजतु हौ नमिके गुन गायके, जुगपदाबुज प्रीति लगायके ॥९॥
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घम् ।

पंचकल्याणक

छन्द पाईता

गरभागम मंगलाचारा, जुग आश्विन श्याम उदारा ।
हरि हर्षि जजे पितुमाता, हम पूजें त्रिभुवन ताता ॥१॥

ॐ ह्री आश्विनकृष्णद्वितीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अर्घम् ।

जनमोत्सव श्याम असाढा, दशमी दिन आनन्द बाढा ।
हरि मन्दर पूजे जाई, हम पूजे मनवचकाई ।।२।।

ॐ ह्री आषाढकृष्णदशम्या जन्ममगलमडिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घम् ।

तप दुद्धर श्रीधर धारो दशमीकलि षाढ उदारा ।
निज आतम-रस झर लायौ, हम पूजत आनद पायौ ।।३।।

ॐ ह्री आषाढकृष्णदशम्या तपोमगलमडिताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घम् ।

सित मगसिरग्यारस चूरे, चवघाति भये गुनपूरे ।
समवस्रत केवलधारी, तुमको नित नौति हमारी ।।४।।

ॐ ह्री मार्गशीर्षशुक्लैकादश्या ज्ञानमगलमडिताय श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अर्घम् ।

वयसाख चतुर्दशि श्यामा, हनि शेष वरी शिववामा ।
सम्मेद थकी भगवता, हम पूजै सुगुन अनता ।।५।।

ॐ ह्री वैशाखकृष्णचतुर्दश्या मोक्षमगलमडिताय श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अर्घम् ।

जयमाला

दोहा

आयु सहसदश वर्ष की, हेमवरन तन सार ।
धनुष पचदश तुग तन, महिमा अपरपार ।।१।।

छन्द चौपाई

जै जै जै नमिनाथ कृपाला,
अरिकुलगहन दहन दवज्वाला ।
जै जै धरमपयोधर धीरा,
जय भवभंजन गुनगंभीरा ॥२॥
जै परमानन्द गुन धारी,
विश्वविलोकन जनहितकारी ।
अशरन शरन उदार जिनेशा,
जै जै समवशरन आवेशा ॥३॥
जै जै केवलज्ञानप्रकाशी,
जै चतुरानन हनि भव-फांसी ।
जै त्रिभुवनहित उद्यमवंता,
जै जै जै जै नमि भगवंता ॥४॥
जै तुम सप्ततत्त्व दरशायो,
तास सुनत भवि निजरस पायो ॥
एक शुद्ध अनुभव निज भाखे,
दो विधि राग दोष छै आखे ॥५॥
द्वै श्रेणी द्वै नय द्वै धर्म,
दो प्रमाण आगमगुन शर्म ।
तीनलोक त्रयजोग तिकाल,
सल्ल पल्ल त्रय वात बलाल ॥६॥

चार बन्ध सञ्ज्ञागति ध्यान,
आराधन निछेप चउ दानं ।
पचलब्धि आचार प्रमाद,
बन्धहेतु पैताले साद ॥७॥
गोलक पचभाव शिव भौने,
छहो दरब सम्यक अनुकौने ।
हानि वृद्धि तप समय समेता,
सप्तभग वानी के नेता ।८॥
सजम समुदघात भय सारा,
आठ करम मद सिध गुनधारा ।
नवो लवधि नव तत्व प्रकाशे,
नोकषाय हरि तूप हुलाशे ॥६॥
दशो बन्धके मूल नशाये,
यो इन आदि सकल दरशाये ।
फेर विहिर जगजन उद्धारे,
जै जै ज्ञान दरश अविकारे ॥१०॥
जै बीरज जै सूच्छमवन्ता,
जै अवगाहन गुन वरनन्ता ।
जै जै अगुरुलघू निरबाधा,
इन गुनजुत तुम शिव सुखसाधा ॥११॥
ताको कहत थके गन धारी,

तौ को समरथ कहै प्रचारी ।
तातै मै अब शरनै आया,
भवदुख मेटु देहु शिवराया ॥१२॥
बारबार येह अरज हमारी,
हे त्रिपुरारी हे शिवकारी ।
परपरनति को वेगि मिटावो,
सहजानन्द सरूप मितावो ॥१३॥
वृन्दावन जाचत शिरनाई,
तुम मम उर निवसौ जिनराई ।
जबलो शिव नहि पावो सारा,
तबलो यही मनोरथ म्हारा ॥१४॥

घत्तानन्द

जय जय नमिनाथ, हो शिवसाथ, औ अनाथके नाथ सद ।
तातै शिरनायौ, भगति बढाऔ, चिहन चिह्न शतपत्र पद ॥१५॥
ॐ ह्रो नमिनाथजिनेन्द्राय महार्घम् ।

दोहा

श्री नमिनाथतने जुगल, चरन जजै जो जीव ।
सो सुरनर सुख भोगवर, हौवै शिवतिय पीव ॥१६॥
परिभुष्पाजलिम् क्षिपेत्, इत्याशीर्वाद ।

—०—

श्री नेमिनाथ जिनपूजा

छन्द लक्ष्मी, तथा अर्द्ध लक्ष्मीधरा

जैति जै जैति जै जैति जै नेमकी,
धर्म औतार दातार श्यौचैन की।
श्री शिवानन्द भौफन्द निकन्द ध्यावैं,
जिन्हे इन्द्र नागेन्द्र ओ मैनकी ॥
पर्मकल्याणके देनहारे तुम्ही,
देव हो एव तातै करौ ऐनकी।
थापि हौ वार त्रै शुद्ध उच्चार त्रै,
शुद्धता धार भौ पारकू लेनकी ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर, संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठ ठ। अत्र मम सन्निहितो भव भव, वषट्।

अष्टक

चाल होली, ताल जत्त

दाता मोक्ष के श्री नेमिनाथ जिनराय, दाता० ॥टेक॥
निगमनदी कुश प्राशुक लीनौ, कंचनभृंग भराय।
मनवचतनतैं धार देत ही, सकल कलंक नशात ॥
दाता मोक्ष के, श्री नेमिनाथ जिनराय, दाता० ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम्।

हरिचन्दनजुत कदलीनन्दन कुंकुमसंग घसाय ।
विघनतापनाशन के कारन, जजौं तिहारे पाय ॥दा०॥२॥
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनम् ।
पुण्यराशि तुम जससम उज्ज्वल, तन्दुल शुद्ध मगाय ।
अखय सौख्य भोगनके कारन, पुंज धरों गुन गाय ॥दा०॥३॥
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतम् ।
पुण्डरीकतृणद्रुम के आदिक, सुमन सुगंधित लाय ।
दर्प्पकमनमथ भजनकारन, जजहुं चरन लव लाय ॥दा॥४॥
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पम् ।
घेवर बावर खाजे साजे, ताजे तुरित मगाय ।
क्षुधावेदनी नाश करनको, जजहुं चरन उमगाय ॥दा०॥५॥
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् ।
कनकदीप नवनीत पूरकर उज्ज्वल जोति जगाय ।
तिमिरमोहनाशक तुमकौ लखि, जजहुँ चरन हुलसाय ॥दा०॥६॥
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् ।
दशविधि गन्ध मगाय मनोहर गुंजत अलिगन आय ।
दशों बन्ध जारन के कारन, खेवौं तुम ढिग लाय ॥दा० ॥७॥
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम् ।
सुरस वरन रसना मन भावन पावन फल सु मगाय ।
मोक्षमहाफल कारन पूजौं, हे जिनवर तुम पाय ॥दा०॥८॥
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम् ।
जलफल आदि साज शुचि लीने, आठो दरब मिलाय ।

अष्टमछितिके राजकरनको जजो अग वसु नाय ॥दा०॥६॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घम् ।

पञ्चकल्याणक

छन्द पाइता

सित कातिक छट्ट अमन्दा, गरभागम आनदकन्दा ।
शचि सेय सिवापद आई, हम पूजत मनवचकाई ॥१॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लषष्ठया गर्भमगलमंडिताय श्री नेमिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

सित सावन छट्ट अमदा, जनमे त्रिभुवनके चन्दा ।
पितु समुद महासुख पायो, हम पूजत विघन नशायो ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लषष्ठया जन्ममगलमंडिताय श्री नेमिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

तजि राजमती व्रत लीनौ, सितसावन छट्ट प्रवीनो ।
शिवनारी तबै हरषाई, मै पूजै पद शिरनाई ॥३॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लषष्ठया तपोमगलमंडिताय श्री नेमिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

सित आशिन एकम चूरे, चारो घाती अति कूरे ।
लहि केवल महिमा सारा, हम पूजै अष्ट प्रकारा ॥४॥

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लप्रतिपदि ज्ञानमगलमंडिताय श्री नेमि-नाथजिनेन्द्राय अर्घम् ।

सितषाढ सप्तमी चूरे, चारो अघातिया कूरे ।
शिव उर्ज्जयनतै पाई, हम पूजै ध्यान लगाई ॥५॥

ॐ ह्रीं आषाढशुक्लसप्तम्या मोक्षमगलमंडिताय श्री नेमिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

जयमाला

दोहा

श्याम छबी तन चाप दश, उन्नत गुननिधिधाम ।
शख चिन्ह पदमे निरखि, पुनि पुनि करो प्रनाम ।।१।।

पद्धरी छन्द

जै जै जै नेमि जिनिंद चद, पितु समुद देन आनदकन्द ।
शिवमात कुमुदमनमोददाय, भविवृन्दचकोर सुखी कराय ।।२
जय देव अपूरब मारतड, तम कोन ब्रह्मसुत सहस खड ।
शिवतिय मुखजलजविकाशनेश, नहीरही सृष्टि मे तम अशेष ।३
भविभीत कोक कीनों अशोक, शिवमग दरशायो शर्मथोक ।
जै जै जै जै तुम गुनगंभीर, तुम आगम निपुन पुनीत धीर ।।४
तुम केवलजोति विराजमान, जै जै जै जै करुनानिधान ।
तुम समवसरन भे तत्वभेद, दरशायो जाते नशत खेद ।।५
तित तुमको हरि आनद धार, पूजत भगतोजुत बहु प्रकार ।
पुनि गद्यपद्यमय सुजस गाय, जै बल अनत गुनवतराय ।।६
जय शिवशकर ब्रह्मा महेश, जय बुद्ध विधाता विष्णुवेष ।
जय कुमतिमतगनको मृगेन्द्र, जय मदनध्वातको रवि जिनेन्द्र।।७
जय कृपासिधु अविरुद्ध बुद्ध, जय रिद्ध सिद्ध दाता प्रबुद्ध ।
जय जगजनमनरजन महान, जय भवसागरमह सुष्टु यान ।।८
तव भगति करै ते धन्य जीव, ते पावै दिव शिवपद सदीव ।

तुमरो गुन देव विविधप्रकार, गावत नित किन्नरकी जु नार ॥९

वर भगति माहि लवलीन होय, नाचैं ताथेइ थेइ बहोय ।

तुम करुणासागर सृष्टिपाल, अब मोको वेगि करो निहाल ॥१०

मैं दुख अनन्त वसु करम जोग, भोगे सदीव नहि और रोग ।

तुमको जगमे जान्यौ दयाल, हो वीतराग गुन रतनमाल ॥११

तातै शरना अब गही आय, प्रभु करो वेगि मेरी सहाय ।

यह विघन करम मम खडखड, मनवांछितकारज मडमड ॥१२

ससार कष्ट चकचूर चूर, सहजानन्द मम उर पूर पूर ।

निज पर प्रकाशबुधि देह देह, तजिके बिलब सुधि लेह लेह ॥१३

हम जाँचत है यह बार बार, भवसागरते मो तार तार ।

नहि सह्यो जात यह जगतदुःख, ताते विनवो हे सुगुनमुक्ख ॥१४

छन्द घत्तानन्द

श्रीनेमिकुमार जितमदमार, शीलागार सुखकार ।
भवभयहरतार, शिवकरतार, दातार धर्माधार ॥१५॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय महार्घम् ।

मालिनी

सुख धन जस सिद्धि पुत्र पौत्रादि वृद्धि ।
सकल मनसि सिद्धि होतु है ताहि रिद्धि ॥
पूजत हरषधारी नेमि को जो अगारी ।
अनुक्रम अरि जारी सो वरे मोक्षनारी ॥१६॥

परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् इत्याशीर्वादः ।

—०—

श्री पार्श्वनाथ जिनपूजा

छन्द कवित्त

प्रानत देवलोकतैं आये, वामादे उर जगदाधार,
अश्वसेन सुत नुत हरिहर हरि, अंक हरिततन सुखदातार।
जरत नागजुग बोधि दियो जिहु, भुवनेसुरपद परमउदार,
ऐसे पारसको तजि आरस, थापि सुधारस हेत विचार ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर, संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठ ठ। अत्र मम सन्निहितो भव भव, वषट्।

अष्टक

छन्द प्रमिताक्षर

सुर दीरधि कानन कुंभ भरों,
तव पादपद्मतर धार करों।
सुखदाय पाय यह सेवत हों।
प्रभु पार्श्व सार्श्व गुन बेवत हौं ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम्।

हरि गंध कुंकुम कर्पूर घसों।
हरि चिन्ह हेरि अरचों सुरसौं ॥सु०॥२॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनम्।

हिम हीर निरज समान शुचं।
वर पुंज तंदुल तवाग्र मुचं ॥सु० ॥३॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतम्।

कमलादि पुष्प धनु पुष्प धरी ।
मदभजहेत पुज करी ॥सु० ॥४॥
ॐ ह्री श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वसनाय पुष्पम् ।
चरु नव्य गव्य रस सार करो ।
धरि पादपद्मतर मोद भरो ॥सु० ॥५॥
ॐ ह्री श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् ।
मनि दीप जोत जगमग्ग मई ।
ढिग धारते स्वपर बोध ठई ॥सु० ॥६॥
ॐ ह्री श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् ।
दश गध खेय मन माचत है ।
वह धूम धूम मिसि नाचत है ॥सु० ॥७॥
ॐ ह्री श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम् ।
फल पक्व शुद्ध रस जुक्त लिया ।
पद पज पूजत हौ खोलि हिया ॥सु० ॥८॥
ॐ ह्री श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम् ।
जल आदि साजि सब द्रव्य लिया ।
कनथार धार नुत नृत्य किया ॥सु० ॥९॥
ॐ ह्री श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घम् ।

पंचकल्याणक

लक्ष्मीधरा

पक्ष वैसाखकी श्याम दूजी भनो,
गर्भकल्यानको द्यौस सोही गनो ।

देव देवेन्द्र श्री मातु सेवैं सदा,
मै जजो नित्य ज्यो विघ्न होवे विदा ॥१॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णद्वितीयाया गर्भमगलमडिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घम् ।

पौषकी श्याम एकादशीको स्वजी,
जन्म लीनो जगन्नाथ धर्मध्वजी ।
नाक नागेन्द्र नागेन्द्र पै पूजिया,
मै जजो ध्यायके भक्त धारो हिया ॥२॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्या जन्ममङ्गलमडिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घम् ।

कृष्णा एकादशी पोषकी पावनी,
राजको त्याग बैराग धार्यो बनी ।
ध्यान चिद्रूप को ध्याय साता मई,
आपको मै जजो भक्ति भावे लई ॥३॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्या तपोमगलमडिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घम् ।

चैतकी चौथि श्यामा महाभावनी,
तादिना घातिया घाति शोभा बनी ।
बाह्य आभ्यन्तरे छन्द लक्ष्मीधरा,
जैति सर्वज्ञ मै पादसेवा करा ॥४॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णचतुर्थ्यां ज्ञानमगलमडिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घम् ।

सप्तमी शुद्ध शोभै महासावनी,
तादिना मोक्ष पायो महापावनी ।।
शैलसम्मेदते सिद्ध राजा भये,
आपको पूजते सिद्ध काजा ठये ।।५।।

ॐ ह्री श्रावणशुक्लसप्तम्या मोक्षमगलमडिताय श्री पार्श्वनाथ जिनन्द्राय अर्घम् ।

जयमाला

छन्द दोहा (जमकालकार)

पाश पर्म गुनराश है, पाशकर्म हरतार ।
पाश धर्म निजवास द्यो, पाश धर्म धरतार ।।१।।
नगर बनारसि जन्म लिया वश इखवाक महान ।
आयु वरष शत तुग तन, हाथ मुनौ परमान ।।२।।

छन्द पद्धरी

जय श्रीधर श्रीकर श्रीजिनेश, तुव गुन गन फणि गावत अशेश ।
जय जय जय आनद कन्दचद, जय जय भवि पकजको दिनन्द ।३
जय जय शिवतिय वल्लभ महेश, जय ब्रह्मा शिवशकर गनेश ।
जय स्वच्छचिदग अनगजीत, तुव ध्यावत मुनिगन सुहृद मीत ।४
जय गरभागनमडित महन्त, जग जननमोदन परम मत ।
जय जनम महोक्षव सुखद धार, भवि मारगको जलधर उदार।५
हरिगिरिवरपर अभिषेक कीन, झट ताडव निरत अरभ दीन।
बाजन बाजत अनहद अपार, को पार लहत वरनत अपार ।।६।।

दृमदृम दृमदृम दृमदृम मृदंग, घननन्न नननन घंटा अभंग।
छमछम छमछम छम छुद्र, घंट, टमटम टमटम टंकोर तंट ॥७॥
झननन झननन नूपुर झकोर, तननन तननन तन तान शोर।
सननननननननन गगनमांहि, फिरिफिरिफिरिफिर फिरिकी लहांहि
ताथेइ थेइ थेई थेई धरत पाव, चटपट अटपट झट त्रिदशराव।
करिके सहस्र करको पसार, बहुभांति दिखावत भाव प्यार ॥६॥
निज भगति प्रगट जित करतइंद्र, ताको क्या कहि सकि है कविंद्र
जहँ रंगभूमि गिरिराज पर्म, अरु सभाईश तुम देव शर्म ॥१०॥
अरु नाचत मघवा भगति रूप, बाजे किन्नर बज्जत अनूप।
सो देखत ही छवि बनत वृन्द, मुखसों कैसे वरनै अमंद ॥११॥
धन घड़ी सोय धनदेव आप, धन तीर्थंकर प्रकृती प्रताप।
हम तुमको देखत नयन द्वार, मनु आज भये भवसिंधुपार ॥१२॥
पुनि पिता सौंपि हरि स्वर्ग जाय, तुम सुखसमाज भोग्यौ जिनाय।
फिर तपधरि केवलज्ञान पाय, धरमोपदेश दे शिव सिधाय ॥१३॥
हम सरनागत आये अबार, हे कृपासिंधु गुन अमल धार।
सो मनमें तिष्ठहु सदाकाल, जबलौं न लहों शिवपुर रसाल ॥१४॥
निरवान थान सम्मेद जाय, 'वृन्दावन' वंदत शीश नाय।
तुम ही हो सब दुख दंद हर्न, ताते पकरी यह चर्न शर्न ॥१५॥

घत्तानन्द

जय जय सुखसागर, त्रिभुवन आगर, सुजस उजागर पार्श्वपती।
वृन्दावन ध्यावत, पूज रचावत, शिवथल पावत, शर्म अती ॥१६॥

ॐ श्री ह्रीं पार्श्वनाथजिनेन्द्राय महार्घम्।

छन्द कवित्त (मात्रा ३१)

पारसनाथ अनाथनिके हित, दारिदगिरिको वज्र समान,
सुखसागरवद्ध न को शशिसम, दवकषायको मेघ महान ।
तिनको पूजै जो भवि प्रानी, पाठ पढ़ै अति आनद आन,
सो पावै मनवाछित सुख सब, ओर लहै अनुक्रम निरवान॥१७॥

परिपुष्पाजंलिम् क्षिपेत्, इत्याशीर्वाद ।

—०—

श्री वर्द्धमान जिनपूजा

छन्द मत्तगयद

श्रीमत वीर हरै भव पीर, भरै सुख सीर अनाकुलताई,
केहरि अक अरीकरदक, नये हरिपकति मौलि सुआई ।
मैं तुमको इत थापतु हो प्रभु, भक्ति समेत हिये हरषाई,
हे करुणाघनधारक देव, इहाँ अब तिष्ठहु शीघ्रहि आई ॥

ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमानजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर, सवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठ ठ । अत्र मम सन्निहितो भव भव, वषट् ।

अष्टक

छन्द अष्टपदी

क्षीरोदधि सम शुचि नीर, कचन भृग भरो ।
प्रभु वेग हरो भवपीर, यातै धार करो ॥

श्रीवीर महा अतिवीर, सन्मतिनायक हो ।
जय वर्द्धमान गुणधीर, सन्मतिदायक हो ॥१॥
ॐ ह्री श्री वर्धमानजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम् ।

मलयागिर चदन सार, केसर सग घसा ।
प्रभु भव आताप निवार, पूजत हिय हुलसा ॥श्री० ॥२॥
ॐ ह्री श्री वर्धमानजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चदनम् ।

तन्दुल सित शशि सम शुद्ध, लीनो थार भरी ।
तसु पुज धरो अविरुद्ध, पावो शिवनरी ॥श्री० ॥३॥
ॐ ह्री श्री वर्धमानजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतम् ।

सुरतरु के सुमन समेत, सुमन सुमन प्यारे ।
सो मनमथ-भजन हेत, पूजो पद थारे ॥श्री॥४॥
ॐ ह्री श्री वर्धमानजिनेन्द्राय कामवाणविध्वसनाय पुष्पम् ।

रस रञ्जत सञ्जत सद्य, मञ्जत थार भरी ।
पद जज्जत रज्जत अद्य, भज्जत भूख अरी ॥श्री०॥५॥
ॐ ह्री श्री वर्धमानजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् ।

तम खडित मडित नेह, दीपक जोवत हो ।
तुम पदतर हे सुखगेह, भ्रमतम खोवत हो ॥श्री ॥६॥
ॐ ह्री श्री वर्धमानजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् ।

हरिचन्दन अगर कपूर, चूर सुगध करा ।
तुम पदतर खेवत भूरि, आठो कर्म जरा ॥श्री० ॥७॥
ॐ ह्री श्री वर्धमानजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम् ।

रितुफल कलवर्जित लाय, कंचन थाल भरा।
शिवफल हित हे जिनराय, तुम ढिग भेट धरा ॥श्री० ॥८॥
ॐ ह्रीं श्री वर्धमान जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम्।
जलफल वसु सजि हिमथार, तन मन मोद धरो।
गुण गाऊं भवदधितार, पूजत पाप हरो ॥श्री०॥९॥
ॐ ह्रीं श्री वर्धमानजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घम्।

पञ्चकल्याणक

राग टप्पाचाल में

गरभ साढसित छट्ठ लियो तिथि, त्रिशला उर अघ हरना
सुर सुरपति तित सेवकर्‌यो नित, मे पूजो भव तरना ॥१॥
मोहिराखो, हो, सरना, श्रीवर्द्धमान जिनरायजी, मोहि रखो०
ॐ ह्रीं आषाढशुक्लषष्ठ्या गर्भमंगलमंडिताय श्री वर्धमान जिनेन्द्राय अर्घम्।
जनम चैतसित तेरस के दिन, कुंडलपुर कन वरना।
सुरगिर सुरगुरु पूज रचायो, मैं पूजौ भव हरना ॥मो०॥२॥
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लत्रयोदश्या जन्ममंगलमंडिताय श्री वर्धमान जिनेन्द्राय अर्घम्।
मगसिर असित मनोहर दशमी, ता दिन तप आचरना।
नृपकुमारघर पारन कीनो, मै पूजो तुम चरना ॥मो० ॥३॥
ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णदशम्या तपोमंगलमंडिताय श्री वर्धमान जिनेन्द्राय अर्घम्।
शुकलदशे वैसाख दिवस अरि, घात चतुक छय करना।

केवल लहि भवि भवसर तारे, जजो चरन सुख भरना ॥मो०॥४

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लदशम्यां ज्ञानमंगलमंडिताय श्री वर्द्धमान-जिनेन्द्राय अर्घम् ।

कातिक श्याम अमावस शिवतिय, पावापुरतें परना ।
गनफनिवृन्द जजै तित बहुविधि, मैं पूजों भव हरना ॥मो०॥५

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णामावस्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्री वर्धमान जिनेन्द्राय अर्घम् ।

जयमाला

छन्द हरिगीता (२८ मात्रा)

गनधर असनिधर, चक्रधर हरधर गदाधर वरवदा,
अरु चापधर विद्यासुधर तिरसूलधर सेवहिं सदा ।
दुखहरन आनन्द भरन तारन, तरन चरन रसाल है,
सुकुमाल गुनमनिमाल उन्नत, भालकी जयमाल है ॥१॥

छन्द घत्तानन्द

जय त्रिशलानंदन, हरिकृतवंदन, जगदानंदन चन्दवरं ।
भवतापनिकंदन, तनकनमंदन, रहितसपंदन नयन धरं ॥२॥

छन्द तोटक

जय केवलभानुकलासदनं, भविकोकविकाशन कदवनं ।
जगजीत महारिपु मोहहरं, रजज्ञानदृगावर चूर करं ॥१॥
गर्भादिकमंगलमंडित हो, दुख दारिद को नित खंडित हो ।
जगमांहि तुमी सतपंडित हो तुम ही भवभाव विहंडित हो ॥२॥

हरिवंश सरोजनको रवि हो, बलवन्त महंत तुमी कवि हो ।
लहि केवल धर्मप्रकाश कियो, अबलो सोई मारग राजतियो ॥३
पुनि आप तने गुन माहि सही, सुर मग्न रहै जितने सब ही ।
तिनकी वनिता गुन गावत हैं, लय माननिसो मन भावत है ॥४
पुनि नाचत रंग उमंग भरी, तुअ भक्ति विषै पग येम धरी ।
झनन झनन झनन झनन, सुर लेत तहाँ तनन तनन ॥५
घनन घनन घनघंट बजै दृमदृम दृमदृम मिरदंग सजै ।
गगनागनभंगता सुगता, ततता ततता अतता वितता ॥६
धृगता धृगता गति बाजत है, सुरताल रसाल जु छाजत है ।
सनन सनन सनन नभ मे, इकरूप अनेक जु धारी भमे ॥७
कइ नारी सुवीन बजावति हैं, तुमरो जस उज्जल गावति है ।
करताल विषै करताल धरै, सुरताल विशाल जु नाद करे ॥८
इन आदि अनेक उछाह भरी, सुर भक्ति करै प्रभुजी तुमरी ।
तुमही जग जीवनि के पितु हो, तुम ही बिन कारनने हितु हो ॥९
तुमही सब विघ्नविनाशन हो तुम ही निज आनंद भासन हो ।
तुमही चितचिंतितदायक हो, जगमाहि तुमी सब लायक हो॥१०
तुमरे पन मंगल माहि सही, जिय उत्तम पुन्न लियो सब ही ।
हमको तुमरी सरनागत है, तुमरे गुन मे मन पागत है ॥११
प्रभु मो-हिय आप सदा बसिये, जबलौ वसुकर्म नहीं नसिये ।
तबलो तुम ध्यान हिये वरतो, तबलो श्रुतचिंतन चित्तरतो ॥१२
तबलो व्रत चारित चाहतु हो, तबलो शुभ भाव सुगाहतु हो ।

तबलो सद्संगति नित्य रहो, तबलो मम संजम चित्त गहो ॥१३॥
जबलो नहि नाश करो अरिको शिवनारि वरो समता धरिको ।
यह द्यो तबलो हमको जिनजी, हम जाचतु है इतनी सुनजी ।१४।

छन्द घत्तानन्द

वीरजिनेशा नमित सुरेशा, नागनरेशा भगति भरा ।
वृन्दावन ध्यावै विघन नशावै, वांछित पावै शर्म वरा ॥१५॥

ॐ ह्री श्री वर्द्धमानजिनेन्द्राय महार्घम् निर्वपामीति स्वाहा ।

छन्द दोहा

श्री सनमति के जुगलपद, जो पूजै धर प्रीत ।
'वृन्दावन' सो चतुर नर, लहै मुक्ति नवनीत ॥१६॥

परिपुष्पाञ्जलिम् क्षिपेत्, इत्याशीर्वाद ।

श्री समुच्चय अर्घ

छन्द तोटक

सुनिये जिनराज त्रिलोक धनी, तुममे जितने गुण है तितनी ।
कहि कौन सकै मुखसो सबही, तिहि पूजत हौ गहि अर्घ यही ॥

ॐ ह्री श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो चतुर्विंशतिजिनेभ्य पूर्णार्घम् ।

रिखबदेव को आदि अंत, श्री वरधमान जिनवर सुखकार ।
तिनके चरनकमल को पूजे, जो प्रानी गुणमाल उचार ॥
ताके पुत्र मित्र धन जोवन, सुखसमाज गुन मिलै अपार ।
सुरपद भोगभोगि चक्री ह्वै, अनुक्रम लहै मोक्षपद सार ॥

परिपुष्पाजलिम् क्षिपेत्, इत्याशीर्वाद

कवि-नामग्रामादि परिचय

छन्द मनहरन

काशीजी मे काशीनाथ नन्हूजी, अनतराम,
मूलचद, आढतसुराम आदि जानियौ ।
सज्जन अनेक तहाँ धर्मचदजी को नद,
वृन्दावन अग्रवाल गोयल गोती बानियौ ॥
ताने रचे पाठ पाय मन्नालालको सहाय,
बालबुद्धि अनुसार सुनो सरधानियो ।
यामे भूलचूक होय ताहि शोध शुद्ध कीज्यो,
मोहि अलपज्ञ जानि छिमा उर आनियौ ॥१॥

इति याह श्री कविवर वृन्दावनकृत लिखित निजपरोपकारार्थम्
श्रीवर्तमान चतुर्विंशतिजिनपूजा समाप्त ।
सवत् अट्ठारहसौ पचहत्तर १८७५ कार्तिककृष्ण अमावस्या गुरुवार
पाठ पूर्ण भया ।
श्रेयमस्तु । मगलमस्तु । शुभम् भूयात् ।

--०--

निर्वाणक्षेत्र पूजा

सोरठा

परम पूज्य चौबीस, जिह् जिहँ थानक शिव गये ।
सिद्धभूमि निसदीस, मनवचतन पूजा करौ ।।१।।

ओ ह्री चतुर्विशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्राणि ! अत्रअवतरत भवतरत सवौषट् । ओ ह्री चतुर्विशनितीर्थङ्करनिर्वाणक्षेत्राणि ! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठ ठ । ओ ह्री चतुर्विशतितीर्थङ्करनिर्वाण क्षेत्राणि ! अत्र मम सन्निहितानि भवत भवत वषट् ।

गीता छन्द

शुचि छीरदधि सम नीर निरमल, कनकझारी मे भरौ ।
ससार पार उतार स्वामी, जोर कर विनती करौ ।।
समेदगढ गिरनार चम्पा पावापुर कैलासको ।
पूजो सदा चौबीस जिन निर्वाण भूमिनिवासको ।।१।।

ओ ह्री श्री चतुर्विशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो जल नि० स्वाहा

केशर कपूर सुगन्ध चन्दन सलिल शीतल विस्तरौ ।
भव ताप को सन्ताप मेटो, जोर कर विनती करौ ।समेद०।२।

ओ ह्री श्री चतुर्विशनितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो चन्दन नि० स्वाहा ।

मोतीसमान अखण्ड तन्दुल, अमल आनन्द धरि तरौ ।
औगुन हरौ गुन करौ हमको जोरकर विनती करौ ।समेद।३।

ओ ह्री चतुर्विशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्योअक्षतान् । नि० स्वाहा

शुभ फूलरास सुवासवासित, खेद सब मनकी हरौं ।
दुखधाम काम विनाश मेरो जोरकर विनती करौ ।समेद।४।

ओ ह्री चतुर्विशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो पुष्प नि० स्वाहा ।

नेवज अनेक प्रकार जोग, मनोग धरि भय परिहरौ ।
यह भूखदूषन टार प्रभुजी, जोरकर विनती करौ ।।समेद।।५।

ओ ह्री श्री चतुर्विशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो नेवेद्य नि० स्वाहा

दीपक प्रकाश उजास उज्ज्वल, तिमिरसेती नहि डरौ ।
सशयविमोह विभरम तमहर जोरकर विनती करौ ।।समेद६।

ओ ह्री श्री चतुर्विशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो दीपम् नि० स्वाहा।

शुभधूप परमअनूप पावन, भानपावन आचरौ ।
सब करमपुज जलाय दीज्यौ, जोरकर विनती करौ ।समेद०।७

ओ ह्री चतुर्विशतितीर्थङ्करनिर्वाणक्षेत्रभ्यो धूप नि० स्वाहा ।

बहुफलमगाय चढाय उत्तम, चारगतिसो निरवरौ ।
निहचै मुकति फल देहु मोकौ जोर कर विनती करौ ।।
सम्मेद० ।।८।।

ओ ह्री चतुर्विशतितीर्थकरनिर्वाक्षेत्रेभ्यो फलम् नि० स्वाहा ।

जल गध अच्छत फूल चरु फल, दीप धूपायन धरौ ।
'द्यानत' करो निरभय जगतसो जोरकर विनती करौ ।।
सम्मेद० ।।९।।

ओ ह्री चतुर्विशतितीर्थकरनिर्वाक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं नि० स्वाहा ।

अथ जयमाला

सोरठा

श्री चौबीस जिनेश गिरिकैलाशादिक नमों ।
तीरथ महाप्रदेश, महा-पुरुष निरवाणतै ॥

चौपाई १६ मात्रा

नमो ऋषभ कैलासपहार । नेमिनाथ गिरनार निहार ॥
वासुपूज्य चपापुर वदौ । सनमति पावापुर-अभिनदौ ॥२।
बन्दौ अजित अजितपद दाता । बन्दौ सभव भवदुखघाता ॥
बदौ अभिनन्दन गुणनायक । बन्दो सुमति सुमति के दायक ॥।
बदौ पदममुकति पदमाकर । बदूसुपास आशपासाहर ॥
बदौ चन्द्रप्रभ प्रभुचदा । बदोसुविधि सुविधिनिधि कदा ॥४।
बदौ शीतल अघतपशीतल । बदू श्रियास श्रियास महीतल ॥
बदौ विमल विमल उपयोगी । वदू अनन्त अनन्त सुख भोगी ।५।
बदौ धर्म-धर्म विस्तारा । बदौ शांति शांति मन धारा ॥
बदौ कुन्थु कुन्थु रखवाल । बन्दो अर अरिहर गुणमाल ॥६॥
बदौ मल्लि काम मल चूरन । बदौ मुनिसुव्रत व्रतपूरन ।
बदौ नमि जिन नमित सुरासुर । बदौं पास पास भ्रम जगहर।७।
वीमो सिद्धभूमि जा ऊपर । शिखर सम्मेद महागिर भूपर ॥
एकवार बन्दै जो कोई । ताहिनरकपशुगति नहि होई ॥८॥
नरपति नृप सुर शक्र कहावै । तिहुजग भोग भोगि शिव पावै ॥
विघनविनाशन मगलकारी । गुणविलास बन्दो भवतारी ॥९॥

घत्ता--जो तीरथ जावै पाप मिटावै, ध्यावै गावै भगति करैं।
ताको जस कहिये सपति लहिये गिरिके गुण को बुध उचरै।१०।
ओ ह्री चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो पूर्णार्घं नि० स्वाहा ॥

— —

श्री सम्मेदाचल पूजा

दोहा--सिद्धक्षेत्र तीरथ परम है उत्कृष्टसुथान ।
शिखरसमेद सदा नमो, होय पाप की हान ॥१॥
अगणित मुनि जहतैं गये, लोक शिखर के तीर ।
तिनके पदपकज नमू, नाशै भव की पीर ॥२॥
अडिल्ल--है उज्वल वह क्षेत्र सुअति निरमल सही ।
परम पुनीत सुठौर महा गुण की मही ।
सकल सिद्धिदातार महा रमणीक है ।
बदो निज सुखहेत अचल पद देत है ॥३॥
सोरठा--सिखरसम्मेद महान, जगमे तीर्थप्रधान है।
महिमा अद्भुत जान, अल्पमती मैं किमि कहो ॥
सुन्दरी छन्द--सरस उन्नत क्षेत्र प्रधान है ।
अति सु उज्वल तीर्थ महान है ॥

करहि भक्ति सु जे गुण गायके ।
वरहि सुर शिव के सुख जायके ॥६॥
अडिल्ल--सुर हरि नर इन आदि और बदन करे ।
भवसागरतै तिरै, नही भव मे परै ॥
सफल होय तिन जन्म शिखर दरशन करै ।
जनम जनम के पाप सकल छिनमे टरे ॥६॥
पद्धरी छन्द--श्री तोर्थकर जिनवर जु बीश ।
अरु मुनि असख्य सब गुणन ईश ॥
पहुचे जहतै कैवल्य धाम ।
तिनको अब मेरी है प्रणाम ॥७॥

गीतिका छन्द

सम्मेदगढ है तीर्थ भारी सबहिको उज्वल करै ।
चिरकाल के जे कर्म लागे दर्शतै छिन मे टरै ॥
है परमपावन पुण्यदायक अतुल महिमा जानिये ।
अरु है अनूप सरूप गिरिवर तास पूजन ठानिये ॥८॥
दोहा--श्रीसम्मेदशिखर सदा, पूजो मन वचकाय ।
हरत चतुर्गतिदु खको, मनवाछित फलदाय ॥

ओ ह्री सम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्र ! अत्र अवतर अवतर । सवौषट् ।
ओ ह्री सम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्र । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ ।
ओ ह्री सम्येदशिखरसिद्धक्षेत्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक

अडिल्ल--क्षीरोदधिसम नीर सुनिरमल लीजिये ।
कनक कलश मे भरकै धारा दीजिये ॥
पूजौ शिखरसमेद सुमनवचकाय जी ॥
नरकादिक दुख टरै अचलपद पाय जी ॥

ओ ह्रीं विंशतितीर्थकराद्यसख्यातमुनिसिद्धपदप्राप्तेभ्यो सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जल निर्वपामी० ।

पयसो घसि मलियागिरचदन लाइये ।
केसरि आदि कपूर सुगध मिलाइये ॥पूजो ॥ चदन ॥२॥
तदुल धवलसुवासित उज्वल धोयकै ।
हेमरतन के थार भरो शुचि होयकै ॥पूजो ॥ अक्षतान् ॥३॥
सुरतरु के सम पुष्प अनूपम लीजिये ।
कामदाहदुखहरणचरण प्रभु दीजिये ॥पूजो ॥ पुष्प ॥४॥
कनकथार नैवेद्य सु षटरसतै भरे ।
देखत क्षुधा पलाय सुजिन आगै धरे ॥पूजो ॥ नैवेद्य०॥५॥
लेकर मणिमय दीप सुज्योति प्रकाश है ।
पूजत होत सुज्ञान मोहतम नाश है ॥पूजो ॥ दीप० ॥६॥
दशविधधूप अनूप अबनिमै खेबहूँ ।
अष्टकर्म को नाश होत सुख लेवहू ॥ पूजो॥धूप ॥७॥
एला लौंग सुपारी श्रीफल ल्याइये ।
फल चढाय सुख वाछ मोक्षफल पाइये ॥पूजौ॥ फल०॥८॥

जल गधाक्षतपुष्पसुनेवज लीजिये ।
दीप धूप फल लेकर सु दीजिये ।।पूजो ।।अर्घ०।।६।।

पद्धरि छन्द

श्रीविशति तीर्थकर जिनेन्द्र ।
अरु असख्यात जहँते मुनेन्द्र ।।
तिनको करजोरि करौ प्रणाम ।
जिनको पूजो तजि सकल काम ।।महार्घ०।।

अडिल्ल--जे नर परम सुभावनतैं पूजा करैं ।
हरि हलि चक्री होय राज छह खड करैं ।
फेरि होय धरणेंद्र इन्दपदवी धरै ।
नानाविधि सुख भोगि वहुरि शिवतिय वरै ।।

इत्याशीर्वाद (पुष्पाजलिक्षिपेन्) छन्द जोगीरासा ।

श्रीसम्मेदशिखरगिरि उन्नत, शोभा अधिक प्रमानो ।
विशति तिहिपर कूट मनोहर अद्भुत रचना जानौ ।।
श्रीतीर्थकर बीस तहा तै, शिवपुर पहुचे जाई ।
तिनके पदपकज जुग पूजौ, अर्घ प्रत्येक चढाई ।।

पुष्पाजलि क्षिपेत् ।

श्री अजितनाथ सिद्धवरकूट ।।न० २४।।

प्रथम सिद्धवरकूट सुजानो, आनन्द मगलदाई ।
अजितनाथ जहँतै शिव पहुचे पूजोमनवच काई ।।
कोडि जु अस्सी एक अरब मुनि चौवन लाख जु गाई ।
कर्म काटि निर्वाण पधारे, तिनको अर्घ चढाई ।।

ओ ह्री श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रसिद्धवर कूटते, अजितनाथ जिनेन्द्रादि मुनि एक अर्घ अस्सी कोटि चौवनलाख सिद्धपद प्राप्तभ्य सिद्धक्षेत्रभ्यो अर्घ निवपामति स्वाहा।

श्री सभवनाथ धवलकूट ।।न०

धवलदत्त है कूट दूसरो, सब जिय को सुखकारी ।
श्रीसभवप्रभु मुक्ति पधारे पापतिमिरको टारी ।।
धवलदत्त दे आदि मुनी, नवकोडा कोडी जानो ।
लाख वहत्तरि सहस वियालिस पचशतक ऋषि मानो ।।
कर्म नाशकरि शिवपुर पहुचे, बन्दौ शीश नवाई ।
तिनके पदजुग जजहु भावसो हरषि हरषि चितलाई ।।

श्री ह्री श्री सम्मेदशिखरसिद्धक्षत्रधवलकूटते सम्भवनाथ जिनेन्द्रादि मुनि नौकोडाकोडी वहत्तरलाखब्यालीसहजार पाँचसौ सिद्धपदप्राप्त य सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।।

श्री अभिनन्दननाथ आनन्दकूट ।।न० १६।।

चौपाई-आनन्दकूट महासुखदाय ।
अभिनन्दन प्रभु शिवपुर जाय ।।
कोडाकोडि बहत्तरजान ।
सत्तर कोडि लखछत्तिस मान ।
सहस वियालिस शतक जु सात ।
कहे जिनागम मे इह भात ।।
ये ऋषि कर्म काटि शिव गये ।
तिनके पदजुग पूजत भये ।।

ओ ह्रीं सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेआनन्दकूटतें श्रीअभिनदनजिनेन्द्रादि मुनि वहत्तरकोडाकोडीसत्तरकोडिछत्तीमलाख व्यालीसहजार सातमौ सिद्धपदप्राप्तेभ्यो सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री सुमतिनाथ अविचलकूट ।।न० १६।।

अविचल चौथो कूट महासुख धामजी ।
सुमतिजिनेश गये निर्वाणजी ।।
कोडाकोडीएक मुनीश्वर जानिये ।
कोटि चुरासी लाख बहत्तरि मानिये ।।
सहस इक्यासी ओर सातसो गाइये ।
कर्म काटि शिवगये तिन्हे शिरनाइये ।।
सो थानक मैं पूजू मनवचकायजी ।
पाप दूर हो जाय अचलपदपायजी ।।

ओ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रअविचलकूटतें सुमतिनाथजिनेंद्रादि मुनि एक कोडाकोडी चौरासीकोडि वहत्तरलाख इक्यासीहजार सातसौ सिद्धपदप्राप्तेभ्य सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ निर्वपामीतिस्वाहा ।

श्री पद्मप्रभ मोहनकूट ।।न० ८।।

मोहन कूट महान परम सुन्दर कह्यो ।
पद्मप्रभ जिनराज जहा शिवपुर लह्यो ।।
कोटि निन्यावन लाख सतासी जानिये ।
सहस तियालिस और मुनीश्वर मानिये ।।

सप्त सैकरा सत्तर ऊपर बीस जू ।
मोक्ष गए मुनि तिन्हे नमू नित शीस जू ।
कहै जवाहरलाल दोय कर जोरि कै ।
अनिवाशी पद दे प्रभु कर्मन तोरिकै ।।

ओ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेमोहनकूटतै पद्मप्रभजिनेन्द्रादि मुनि निन्यानवे कोडि सताखीलाख तेतालीसहजार सातसौ नव्वे सिद्धपद प्राप्तेभ्य सिद्धक्षेत्रेभ्यौ अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।।

श्री सुपार्श्वनाथ प्रभासकूट ।।न० २२ सोरठा।।

कूट प्रभास महान, सुन्दर जनमन-मोहनो ।
श्रीसुपार्श्व भगवान, मुक्ति गये अघ नाशिकै ।।
कोडाकोडि उनचास, कोडि चुरासी जानिये ।
लाख बहत्तर खास, सात सहस है सात सौ ।।
और कहे ब्यालीस, जहतै मुनि मुक्ती गए ।
तिनहिं नमे नित शीश, दास जवाहर जोरकर ।।

ओ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धप्रभासकूटतै श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्रादि मुनि उनचास कोडा कोडि चौरासी कोडि बहत्तरलाख सात हजार सातसौ बियालीस सिद्धपदप्ताप्तेभ्य सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।।

श्री चन्द्रप्रभ ललितकूट ।।न० ६।।

दोहा-पावन परम उतङ्ग है, ललितकूट है नाम ।
चन्द्रप्रभ शिवको गये, बन्दौ आठो जाम ।।
कोडा कोडी जानिये, चौरासी ऋषिमान ।
कोडि बहत्तर अरु कहे, अस्सीलाख प्रमान ।।

सहस चुरासी पचशत, पचपन कहे मुनिद्र ।
वसुकरमनको नाशकर, पायो सुखको कद ।।
ललितकूटतै शिवगये, बदौ शीश नवाय ।
जिनपद पूजौ भावसो निजहित अर्घ चढाय ।

ओ ह्री श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रे ललितकूटतै चन्द्रप्रभजिनेन्द्रादि मुनि चौरासीकोडाकोडीवहत्तरकोडिअसीलाख चौरासी हजार पाचसौ पचपन सिद्धपदप्राप्तेभ्य सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ निर्वपामीति०

पुष्पदत सुप्रभकूट । न० ७।।पद्धरी छन्द ।।

श्री सुप्रभकूट सु नाम जान । जहँ पुष्पदतको मुकति थान ।।
मुनि कोडाकोडी कहे जु भाख । नव ऊपर नवधर कहे लाख ।।
सतचारि कहे अरु सहससात । ऋषिअस्सी ओर कहे विख्यात ।।
मुनि मोक्षगए हनि कर्मजाल । बदो कर जोरि नमाय भाल ।।

ओ ह्री श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेसुप्रभकूटतै पुष्पदन्तजिनेन्द्रादि मुनि एककोडाकोडीनिन्यानवेलाख सातहजार चारसौ अस्सी सिद्धपदप्राप्तेभ्यो अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।।

श्री शीतलनाथ विद्युतकूट ।।न० १२ ।।सुन्दरी छद

सुभग विद्युत कूट सुजानिये । परम अद्भुत तापर मानिये ।।
गये शिवपुर शीतलनाथजी ।नमहु तिन इह करधर माथजी ।।
मुनि जु कोडाकोडि अठारहू । मुनि जु कोडि बियालिस जानहू ।।
कहे और जु लाख बत्तीस जू । सहसब्यालिस कहे यतीस जू ।।

अबर नौसौ पाच जुजानिये । गए मुनि शिवपुर को मानिये ॥
करहिजे पूजा मन लायकें । धरहि जन्म न भव मे आयकें ॥

ओ ह्री श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रविद्यु तकूटते श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्रादि मुनि अठारहकोडाकोडी व्यालीसकौडि वत्तीसलाखव्यालीसहजार नौसौ पॉच सिद्ध पदप्राप्तेभ्य सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ० ।

श्री श्रेयासनाथ सकुलकूट । न० ६ जोगीरासा—

कूट जु सकुल परममनोहर, श्री श्रेयान् जिनराई ।
कर्मनाशकर शिवपुर पहुचे, वदौमनबच काई ॥
छियानव कोडाकोडी जानो, छियानव कोडि प्रमानो ।
लाख छियानवे सहस मुनीश्वर साढे नव अब जानो ॥
ताऊपर व्यालीस कहे है श्रीमुनिके गुण गावे ।
त्रिविधयोग करि जो कोइ पूजै, सहजानद तह पावै ॥
सिद्ध नमोसुखदायक जगमे, आनन्दमंगलदाई ।
जजौ भावमौ चरण जिनेश्वर, हाथ जोड शिरनाई ।
परममनोहर थान सु पावन देखत विघन पलाई ।
तीन काल नित नमत जवाहर मेटो भवभटकाई ।
जहते जे मुनिसिद्ध भये है तिनको शरण गहाई ।
जापदको तुम प्राप्त भए हो सो पददेहु मिलाई ।११।

ओ ह्री श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रसकुलकूटते श्रीश्रेयासनाथजिनेन्द्रादि मुनिछ्यानवेकोडा कोडी छयानवेकोटि छयानवेलाखदोहजरा पाचसौबियालिस सिद्धपदप्रातेभ्य सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ० ।

विमलनाथ सुवीरकुलकूट । न० २३ कुसुमलता छन्द ।

श्रीसुबीरकुलकूट परम सुन्दर सुखदाई ।
विमलनाथ भगवान् जहा पचमगति पाई ।।
कोडिसु सत्तर सातलाख षठसहस जु गाई ।
सात सतक मुनि और ब्यालिस जानो भाई ।।
दोहा-अष्टकर्मको नष्टकर, मुनि अष्टमछित पाय ।
तिनप्रति अर्घ चढाबहू, जनम मरण दुख जाय ।।
बिमलदेव निरमल करण, सब जीवन सुखदाय ।
मोतीसुत वदत चरण, हाथ जोर शिरनाय ।।

ओ ह्री श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रसुवीरकुलकूटतै श्रीविमलनाथ-जिनेन्द्रादि मुनि सत्तरकोडि मातलाख छहहजार मातसौब्यालीम सिद्धपद प्राप्तेभ्य सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ निर्वपामीतिस्वाहा ।

श्री अनतनाथ स्वयभूकूट । न० १३ अडिल्ल—

कूट स्वयभू नाम परम सुन्दर कह्यो ।
प्रभु अजित जिननाथ जहा शिवपद लह्यो ।
मुनि जु कोडाकोडि जानिये ।
सत्तर कोडि जु सत्तरलाख प्रमानिये ।
सत्तर सहस जु और मुनीश्वर गाइय ।
सात सतक ता ऊपर तिनको गाइये ।।
कहै जवाहरलाल सुनो मनलायकं ।
गिरवरकौ नित पूजो अति सुखपायकं ।।

सो०-पूजत विघन पलाय, ऋद्धि सिद्धि आनद ।
करै सुरशिवको सुखदाय, जो मनवचपूजा करै ॥

ओ ह्री श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेस्वयंभूकूटतै अनन्तनाथजिनेन्द्रादि मुनि छियानवे कोडाकोडी सत्तरकोडि सत्तरहजार सात सौ सिद्धपद प्राप्तेभ्य सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ निर्वपामीति० ।

धर्मनाथ सुदत्तकूट । न० १८ चौपाई—

कूट सुदत्त महाशुभजान । श्रीजिनधर्मनाथ को थान ॥
मुनि कोडाकोडी उनईस । और कहे ऋषि कोडि उनीश ॥
लाखजु नव नवसहस सु जान । सात शतक पचावन मान ॥
मोक्ष गये वे कर्मनचूर । दिवसरु रयन नमो भरपूर ॥
महिमा जाकी अतुल अनूप । ध्यावत वर इन्द्रादिक भूप ॥
शोभत महा अचलपद पाय । पूजौ आनद मगल गाय ॥

दोहा-परम पुनीति पवित्र अति, पूजत शत सुरराय ॥
तिह थानकको देख कर मोतीसुत गुण गाय ।
पावन परम सुहावनी, सब जीवन सुखदाय ।
सेवत सुरहरि नर सकल मनवाछित पदपाय ॥

ओ ह्री श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेसुदत्तकूटतै धर्मनाथजिनेन्द्रादिमुनि उन्नीस कोडाकोडी उन्नीसकोडि नौलाख नौहजारसातसौ पचानवे सिद्धपदप्राप्तेभ्योअर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री शांतिनाथ—शातिप्रभ कूट ॥न० २६॥ सुगीतिका छन्द ।

श्री शान्तिप्रभ है कूट सुन्दर अति पवित्र सुजानिये ।
श्री शातिनाथ जिनेन्द्र जहतै परमधाम प्रमानिये ।
नवजु कोडाकोडि मुनि वर लाख नव अब जानिये ।
नौ सहस नवसै मुनिनिन्यानव हृदय मे धर मानिये ॥
दोहा-कर्मनाश शिवको गए, तिन प्रति अर्घ चढाय ।
त्रिविधयोग करि पूज है मनवाँछित फल पाय ।

ओ ह्री श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रशान्तिप्रभकूटतै शान्तिनाथजिनेन्द्रादि मुनि नौ कोडाकोडि नौलाख नौ हजार नौसै निन्यानवे सिद्ध पदप्राप्तेभ्य सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ निवपामी।तस्याहा ।

श्री कुन्तुनाथ ज्ञानधरकूट न० ? गीतिका छन्द ।

ज्ञानधर शुभकूट सुन्दर, परम मनमोहन सही ।
जहँतै प्रभु श्रीकुन्थु स्वामी, गये शिवपुर की मही ॥
कोडा सु कोडि छयानवै मुनिकोडि छयानव जानिये ।
अर लाख बत्तिस सहस छयानव, शतक प्रमानिये ॥
दोहा-ओर कहै व्यालीस मुनि, सुमिरो हिये मझार ।
तिनपद पूजो भावसौ, करै जु भवदधिपार ॥

ओ ह्री श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्र ज्ञानधरकूटतै श्रीकुन्थुनाथ जिनेन्द्रादिमुनि छ्यानवे कोडा कोडि छयानवे कोडि वत्तीसलाख छयानवे हजार सातसौ बियालीस सिद्धपदप्राप्तेभ्यसिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ६ निर्वपामीति ॥स्वाहा॥

श्री अरहनाथ नाटककूट ॥न० ४॥ दोहा—

कूट जु नाटक परमशुभ, शोभा अपरपार ।
जहंतै अरजिनराजजी, पहुचे मुक्ति-मझार ॥
कोडिनिन्यानव जानि मुनिलाख निन्यानव और ।
कहे सहस निन्यानवे बन्दौ कर जुगजोर ॥
अष्टकर्म को नष्ट करि, मुनि अष्टमक्षिति पाय ।
गुरु मो हिरदै बसो, भवदधि पार लगाय ॥
सोरठा-तारणतारण जिहाज, भव समुद्र के बीच मे ।
पकरौ मेरी बाह, डूबत से राखो मुझे ।
अष्टकरम दुखदाय, ते तुमने चूरे सबै ।
केवल ज्ञान उपाय, अबिनाशी पद पाइयो ॥
मोती मुत गुणगाय, चरणन शीश नवायके ॥
मेटो भव भटकाय, मागत अब वरदान यो ॥

ओ ह्री श्री सम्मदशिखरसिद्धक्षेत्रनाटककूटतै अरहनाथ जिनेन्द्रादि मुनि निन्यानवैकोडि निन्यानवेलाख निन्यानवैहजार सिद्धपदप्राप्तेभ्यो सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥

श्री मल्लिनाथ सम्वलकूट । न० ५ सुन्दरी छन्द ।

कूट सम्बल परमपवित्र जू । गये शिवपुर मल्लिजिनेश जू ॥
मुनि जु छयानवकोडि प्रमानिये । पदजजतहिरदय सुख आनि ॥
मोतीदाम छन्द-भजो प्रभुनाम सदा सुखरूप ।
जजौ मन मे धर भाव अनूप ॥
टरै अघपातिक जाहिसुदूर ।
सदा जिनको मुख आनन्दपूर ॥

डरै ज्यो नाग गरुड को देख। भजे गजजुत्थ जु सिहहि पेखि ।।
तुम नाम प्रभु दुखहरण सदा । सुखपूर अनूप होय मुदा ।।
तुम देव सदा अशरणशरण । भट मोहवली प्रभुजी हरण ।।
तुम शरण गही हम आय अवै । मुझ कर्मवली दिढ चूर सबै ।।
ओ ह्री श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्र सम्वलकूटतै मल्लिनाथ जिनेन्द्रादि छ्य।नवेकोडि मुनिसिद्धपदप्राप्तेभ्य सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।।

श्री मुनिसुव्रतनाथ निर्जररकूट । न० ६ । मदअवलिप्तकपोल छन्द—

मुनिव्रत जिननाथ सदा आनन्द के दाई ।
सुन्दर निर्जरकूट जहातै शिवपुर जाई ।।
निन्यानव कोडाकोडि कहे मुनिकोडि सत्याना ।।
नवलख जोडि मुनिद कहे नौसौ निन्याना ।।

सोरठा—कर्मनाशि ऋषिराज, पचमगति के सुखल है ।
तारणतरण जिहाज, मो दुख दूर करो सकल ।

भुजग प्रयात

वली मोह की फौज प्रभुजी भगाई ।
जग्यो ज्ञानपचम महा सुक्खदाई ।।
समोशरण धरणेद्र ने तब बनायो ।
तबै देव सुरपति शीस नायो ।।
जयो जय जिनेन्द्र सुशब्द उचारी ।
भए आज दरशन सबै सुखकारी ।।
गए सर्व पातिक प्रभू दूर ही तै ।
जबै दर्श कीने प्रभू दूर ही तै ।।

ओ ह्री श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रनिर्जरकूटतें मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्रादि मुनि निन्यानवेकोडाकोडीसत्तानवेकोडिनौलाखनौसोनिन्यावे सिद्धपदप्रातेभ्य सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ निर्वपामिति स्वाहा ।

श्री नमिनाथ मित्रधरकूट । न० ३ । जोगीरासा ।

कूट मित्रधर परम मनोहर सुन्दर अति छवि दाई ।
श्रीनमिनाथ जिनेश्वर जहतें अविनाशी पद पाई ।।
नौसौ कोडा कोडी मुनिवर एक अरव ऋषि जानो ।
लाख पैंतालिस सात सहस अरु नौसै व्यालिस मानो ।।
दोहा-वसू करमन को नाश कर, अविनाशी पदपाय ।
पूजो चरण सरोज रज को, मन वाछित फलदाय ।।

ओ ह्री श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रमित्रधरकूटतें नमिनाथजिनेन्द्रादि मुनि नौ सौ कोडाकोडी एक अरव पैंतालीस लाखसातहजार नौसो व्यालीस सिद्धपदप्राप्तेभ्य सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।।

श्री पार्श्वनाथ स्वर्णभद्रकूट । न० २६ ।

दोहा-सुवरणभद्र जु कूट पै, श्री प्रभु पारसनाथ ।
जहतै शिवपुर को गये, नमो जोरि जुग हाथ ।।

त्रिभगी छन्द

मुनि कोडि वियासी लाख चुरासी, शिवपुर वासी सुखदाई ।
सहसहि पैतालिस सातसौ व्यालिस, तजि के आलस गुण गाई ।।
भव ददधि तैं तारण पतित उधारण, सब दुखहारण सुख कीजै ।
यह अचरज हमारी सुनि त्रिपुरारी शिवपद भारी मो दीजै ।।
यह दर्शन कूट अनन्त लह्यो । फल षोडशकोटि उपास कह्यो ।।
जग में यह तीर्थ कह्यो भारी । दर्शन करि पाप कटै सारी ।।

मोतीदाम छन्द

टरै गति वन्दत नर्क तिर्यच । कबहु दुख को नहि पावै रच ।।
यही शिव को जग मे है द्वार । अरे नर बन्दो कहत 'जवार' ।
दोहा-पारश प्रभु के नामतै, विघन दूरि जाय ।
ऋद्धि सिद्धि निधि तास को, मिलि है निस दिन आय ।।

ओ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रसुवर्णकूटतै श्रीपार्श्वनाथदिमुनि बियासी करोड चुरासीलासपैतालिसहजारसातसौ छियालीस सिद्धपदप्रातेभ्य सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।

अलिडल-जे नर परभ सुभावतै पूजा करै ।
हरि हलि चक्री होय राज्य षटखड करै ।।
फेरि होय धरणेद्र इन्द्रपदवी धरै ।
नानाविधि सुख भोगि बहुरि शिवतिय वरै ।।

अथाशीर्वाद (पुष्पाजलि क्षिपेत्)

— —

श्री गिरनारक्षेत्र पूजा

वदो नेमि जिनेश पद, नेमि-धर्म-दातार ।।
नेमि धुरधर परम गुरु, भविजन सुखकर्तार ।।
जिनवाणी को प्रणमिकर गुरुगणधर उरधार ।
सिद्धक्षेत्र पूजा रचौ सब जीवन हितकार ।।
उर्जयत गिरनाम तस, कह्यो जगत विख्यात ।
गिरनारी तासो कहत, देखत मन हर्षात ।।

दुतविलंवित तथा सुन्दरी छन्द

गिरिसुउन्नत सुभगाकार है। पचकूट उतग सुधार है।।
वन मनोहर शिला सुहावनी। लखत सुन्दर मन को भावनी।।
अवर कूट अनेक वने तहा। सिद्ध थान सु अति सुन्दर जहा।।
देखि भविजन मन हर्पावते। सकल जन वन्दन को आवते।।

त्रिभगी छन्द

तहँ नेमकुमारा व्रत धारा, कर्म विदारा शिव पाई।
मुनि कोडि बहत्तार, सात शतक धर तागिरि ऊपर सुखदाई।।
ह्वै शिवपुरवासी गुण के राशी विधितिथि नाशी ऋद्धिधरा।।
तिनके गुण गाऊ पूजा रचाऊ मन हर्षाऊ सिद्धकरा।।

दोहा-ऐसे क्षेत्र महान तिहि, पूजो मनवचकाय।।
थापना त्रयवार कर, तिष्ठ तिष्ठ इत आय।।

ओ ह्री श्रीगिरनारसिद्धक्षेत्र अत्र अवतर अवतर। सवौषट्।
ओ ह्री श्रीगिरनारसिद्धक्षेत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ।
ओ ह्री श्रीगिरनारसिद्धक्षेत्र अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट्।

अष्टक कवित्त

लेकर नीर सुक्षीर समान महासुख दान सुप्रासुक लाई।
दे त्रय धार जजों चरणा हरना मम जन्म जरा दुखदाई।।
नेमिपती तज राजमती भये बालयती तहतै शिवपाई।।
कोडि बहत्तरि सातसौ सिद्ध मुनीश भये सु जजो हरषाई।।

ओ ह्री श्रीगिरनारसिद्धक्षेत्रेभ्यो जल निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

चदनगारि मिलाय सुगध सु, ल्याय कटोरी मे धरना।
मोहमहातममेटनकाज सु चर्चतु हो तुम्हरे चरना।।
नेमि०।। ।चदनं

अक्षत उज्वल ल्याय धरो, तह पुज करो मम को हर्षाई ।
देहु अखयपद प्रभु करुणाकर, फेर न या भववासक राई ।।
नेमि०।।अक्षदान्।।

फूल गुलाब चमेली वेल कदव सु चपक बीन सु ल्याई ।
प्राशुकपुष्पवग चढाय सु गाय प्रभू गुण काम नशाई ।।
नेमि०।।पुष्प।।

नेवज नव्य करो भरथाल सुकचन भा जनमे धर भाई ।।
मिष्ट मनोहर क्षेपत हो यह रोग क्षुधा हरियो जिनराई ।।
।।नेमि०।। नैवेद्य।।

धूप दशाग सुगध कर खेवहु अग्निमझार सुहाई ।
शीघ्रहि अर्ज सुनो जिनकी मम कर्म महावन देउ जराई ।।
।।नेमि०।। धूप।।

ले फल सार सुगधमई रसनाहद नेत्रन को सुखदाई ।
क्षेपत हो तुम्हरे चरणा प्रभु देहु हमै शिव की ठकुराई ।।
।।नेमि०।। फल०

लेवसु द्रब्यमु अर्घ करो धर थाल सुमध्य महा हरपाई ।
पूजत हो तुमरे चरणा हरिये वसुकर्मबलि दुखदाई ।।
।।नेमि०।।अर्घ।।

दोहा-पूजत हो वसु द्रव्य ले, सिद्धक्षेत्र सुखदाय ।
निज हित हेतु सुहाबनो, पूरण अर्घ चढाय ।। पूर्णार्घ।।

पचकल्याणक अर्घ । छन्द पाइता ।

कार्तिक सुदी की छठि जानो । गर्भागम तादिन मानो ॥
उत इद्र जजे उस थानी । इत पूजत हम हरषानी ॥१॥
ओ ह्री कार्तिकशुक्लाषटयागर्भमगलप्राप्ताय नेमिनाथ जिनेन्द्रायअर्घ
श्रावण सुदि छठि सुखकारी । तव जन्म महोत्सव धारी ।
सुरराज सुमेर न्हवाई । हम पूजत इत सुखपाई ॥२॥
ओ ह्री श्रावणशुक्लाषटयाजन्ममगलप्राप्ताय नेमिनाथ जिनेन्द्रायअर्घ
सित सावन की छठि प्यारी । तादिन दीक्षा धारी ॥
तपघोर वीर तहँ करना । हम पूजत तिनके चरणा ॥३॥
ओ ह्री श्रावणशुक्लाषष्ट्यानपमगलमडिताय नेमिनाथ जिने०
एकम सुदि आश्विन भाषा । तब केवल ज्ञान प्रकाशा ॥
हरि समवसरण तव कीना । हम पूजत इत सुख लीना ॥४॥
ओ ह्री आश्विन शुक्ल प्रतिपदा केवलज्ञानमगलप्राप्तायनेमिनाथ जिने०
सित अष्टमि मास अषाढा । तब योग प्रभु ने छाडा ॥
जिन लई मोक्ष ठकुराई । इत पूजत चरणा भाई ।५॥
ओ ह्री आश्विन आषाढशुक्लाअष्टमीमोक्षपदप्राप्तायनेमिनाथ जिने०

अडिल्ल-कोडि वहत्तरि सप्त सैकडा जानिये ।
मुनिवर मुक्ति गये तहँतै सु प्रमाणिये ॥
पूजौ तिनके चरण सु मन बच कायके ।
वसुविध द्रव्य मिलाय सुगाय बजायके ॥पूर्णार्घ॥

जयमाला । दोहा ।

सिद्धक्षेत्र गिरनार शुभ, सब जीवन सुखदाय ।
कहो तासु जय मालिका, सुनतहिपाप नशाय ॥

पद्धरी छन्द

जय सिद्धक्षेत्र तीरथ महान । गिरिनार सुगिरि उन्नत बखान ॥
तह झूनागढ है नगर सार । सौराष्ट्र देश के मधिविथार ॥२॥
तिस झूनागढ से चले सोइ । समभूमि कोसवर तीन होइ ॥
दरवाजे से चल कोस आध । इक नदी बहत है जल अगाध ।३॥
पर्वत उत्तर दक्षिण सु दोय । मधि बहत नदी उज्वल सु तोय ॥
ता नदी मध्य कइ कुड जान । दोनो तट मदिर बने मान ॥४॥
तह वैरागी वैष्णव रहाय । भिक्षा कारण तीरथ कराय ॥
इक कोस तहा यह मच्यो ख्याल । आगै इक वरनदि बहत नाल
तह श्रावकजन करते सनान । धो द्रव्य चलत आगै सुजान ॥
फिर मृगीकुड इक नाम जान । तई वैरागिनके बने थान ॥६॥
वैष्णव तीरथ जहर च्यो सोइ । वैष्णव पूजत आनन्द होइ ॥
आगै चल डेढ सु कोस जाव । फिर छोटे पर्वत को ढाव ॥७॥
तह तीन कुड सौ है महाम । श्रीजिन के युग मदिर बखान ॥
मदिर दिगम्वरी दो जान । श्वेताम्बर के बहुते प्रमान ॥८॥
जहँ बनी धर्मशाला सु जोय । जलकुड तहा निर्मल सु तोय ॥
तहँ श्वेताम्बरगण दिशा जाय । ताकु डमाहिं नित ही नहाय ।९
फिर आगै पर्वत पर चढाउ । चढि प्रथम कूट को चले जाउ ॥
तह दर्शन कर आगै सु जाय । तह दुतिय टोकके दर्शन पाय ।१०
तह नेमनाथ के चरण जान । फिर है उतार भारी महान ॥
तह चढकर पचम टोक जात । अति कठिन चढाव तहां लखाय ॥
श्री नेमिनाथ का मुक्ति थान । देखत नयनो अति हर्षमान ॥

इद बिंव चरन युग तहां जान। भवि करत वदना हर्ष ठान ।।
कोउ करते जय जय भक्ति लाइ। कोउ थुति पढते तह सुनाय ।।
तुम त्रिभुवनपति त्रैलोक्यपाल। मम दुख दूर कीजै दयाल।।१३
तुम राजऋद्धि भुगती न कोइ। यह अथिर रूप ससार जोइ।।
तज मात पिता घर कुटुम द्वार। तज राजमतीसी सती नार।१४
द्वादश भावन भाई निदान। पशुमदि छोड दे अभय दान ।।
शोसावन मै दीक्षा सुद्धार। तप करके कर्म किये सुछार।१५
ताही वन केवल ऋिद्ध पाय। इद्रादिक पूजे चरण आय।
तह समवशरण रचियो विशाल। मणि पच वर्ण कर अति रसाय
तह वेदी कोट सभा अनूप। दरवाजे भूमि बनी सुरूप ।।
वसुप्रातिहार्य छत्रादि सार। वर द्वादश सभा बनी अपार ।।१७
करके विहार देशो मझार। भवि जीव करे भवसिधु पार।
पुन टोक पचमी को सु जाय। शिव नाथ लह्यो आनद पाय।१८
सो पूजनीक वह थान जान। वदत जन तिनको पाप हान ।।
तहतै सु बहत्तर कोडि और। मुनि सातशतक सब कहे जोर।१९
उस पर्वतसो सब मोक्ष पाय। सब भूमि सु पूजन योग्य थाय।।
तह देश देश के भव्य आय। बदन कर बहु आनद पाय ।।२०
पूजन कर कीने पाप नाश। बहु पुण्य बध कीनो प्रकाश ।।
यह ऐसो क्षेत्र महान जान ।। हम करी वदना हर्ष ठान ।।२१
उनईस शतक उनतीस जान। सवत अष्टमि सित फाग मान।
सब सग सहित बदन कराय। पूजा तीनो आनद पाय ।।२२

अब दुख दूर कीजै दयाल । कहै 'चद्र' कृपा कीजे कृपाल ।।
मैं अल्प बुद्धि जयमाल गाय । भवि जीव शुद्ध लीज्यो बनाय।।२

घत्ता-तुम दयाविशाला सब क्षितिपाला,
तुम गुणमाला कठ धरी ।
ते भव्य विशाला तज जग जाला,
नावत भाला मुक्तिवरी ।।२४।।

ओ ह्री श्री गिरनारसिद्धक्षेत्रेभ्योअर्घम् पूर्ण निर्वपामीति स्वाहा ।समाप्त।

—०—

श्री पावापुर सिद्धक्षेत्र पूजा

जिहि पावापुर छित अघति, हत सन्मति जगदीश ।
भयो सिद्ध शुभथान सो, जजोनाय निज शीश ।।

ओ ह्री श्री पावापुर सिद्धक्षेत्र, अत्र अवतर २ । सवौषट् ।।
ओ ह्री श्री पावापुर सिद्धक्षेत्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठ ठ ।
ओ ह्री पावापुर सिद्धक्षेत्र ! अत्र मम सन्निहितो भय २ वषट् ।

अथ अष्टकगीता छन्द ।

शुचि सलिल शीतौ कलिल रीतौ श्रमन चीतो लैजिसो ।
भर कनक झारी त्रिगद हारी दै त्रिधारी जिततृषो ।।
वरपद्मवन भर पद्म सरवर वहिर पावाग्राम ही ।
शिवधाम सन्मत स्वामि पायो, जजो सो सुखदा मही ।।१।।

ओ ह्री श्रीपावापुर सिद्धक्षेत्रेभ्यो वीरनाथ जिनेन्द्रस्य जन्मजरा-मृत्यु विनाशनाय जल निर्वपामीति स्वाहा ।

भव भ्रमन भ्रमत अशर्म तपको, तपन कर तप ताइयो ।
तसु बलयकदन मलय-चदन, उदक गग घिस ल्याइयो ।।
वरपद्म०।।चन्दन०।।

तदुल नवीन अखड लीने, ले महीने ऊजरे।
मणिकुन्द इन्दु तुषार द्युति-जित, कनर कावी मे धरे ॥
वरपद्म०॥अक्षतान्०॥

मकरदलोभन सुमन शोभन चोभन लेय जी।
मद समर हरवर अमर तरु के, घ्रान-दृग हरखेय जी ॥
वरपद्म०॥पुष्प०॥

नैवेद्य पावन छुधा मिटावन सेव्य भावन युत किया।
रस मिष्ट पूरति इष्ट सूरति लेयकर प्रभु हित हिया ॥
वरपद्म॥नैवेद्य०॥

तम अज्ञ नाशक स्वपर भाशक ज्ञेत परकाशक सही।
हिमपात्र मे धर मौल्यविन वर द्योतधर मणि दीप ही ॥
॥वरपद्म०॥दीप०॥

आमोदकारी वस्तुसारी विध दुचारी जारनी।
तसु तूप कर कर धूप ले दश दिश-सुरभि-विस्तारनी।
वरपद्म०॥धूप॥

कल भक्व पक्व सुचक्य सोहन, सुक्क जनमन मोहने।
वर सुरस पूरित त्वरित मधुरत लेयकर अति सोहने ॥
वरपद्म०॥फल॥

जल गध आदि मिलाय वसुविध थारस्वर्ण भरायकै ॥
मन प्रमुद भाव उपाय कर ले आय अर्घ बनायकै ॥
॥वरपद्म०॥अर्घ० ॥९॥

अथ जयमाला

दोहा-चरम तीर्थंकरतार श्री वर्द्धमान जगपाल।
कलमलदलविध विकल है गाऊतिन जयमाला ॥

जय जय सुबीर जिन मुक्तिथान ।
पावापुरवनसर शोभावान ॥
जे सित अषाढ छठ स्वर्गधाम ।
तज पुष्पोत्तर सुविमान ठाम ॥१॥
कुडलपुर सिद्धारथ नृपेश ।
आये त्रिशला जननी उरेश ॥
सित चैत्र त्रयोदशि युत त्रिज्ञान ।
जनमे तम अज्ञ-निवार भान ॥२॥
पूर्वान्हि धवल चउदिश दिनेश ।
किय नव्हन कनकगिरि शिर सुरेश ॥
वय वर्ष तीस पद पद कुमरकाल ।
सुख दिव्य भोग भुगते विशाल ॥३॥
मारगसिर अलि दशमी पवित्र ।
चढ चन्दप्रभा शिविका विचित्र ॥
चलि पुरसो सिद्धन शीशनाथ ।
धार्यो सजम वर शर्मदाय ॥४॥
गतवर्ष दुदशकर तप-विधान ।
दिन सित वैशाख दशै महान ॥
रिजुकूला सरिता तटस्व सोघ ।
उपजायो जिनबर बोघ ।
चरम वोध तब ही हरि आज्ञा सिर चढाय ।
रचि समवशरण वर धनदराय ॥
चउसघ प्रभृति गौतम गनेश ।
युत तीस वरष विहरे जिनेश ॥

भवि जीब देशना विविध देन ।।
आये वर पावानगर खेत ।
कार्तिक अलि अन्तिम दिवसहश ।
फर गोगनिरोध अघाति पीस ।।७।।
व्है अकल अमल इक समय माहि ।
पचम गति पाई श्री जिनाह ।।
तब सुरपति जिनरवि अस्त जान ।
आये तुरन्त चढि निज विमान ।।
करवपु अरचा थुति विविधभात ।
लै विविधद्रव्य परिमल विख्यात ।।
तब ही अगनीद्र नवायशीश ।
सस्कार देह की ज्ञिजगदीश ।।
कर भस्म वदना निजमहीय ।
निमसे प्रभुगुन चितदान स्वहीय ।।
पुनि नर मुनि गनपति आय आय ।
बदौ सो रज शिरनाय नाय ।।
तव ही सो दिन पूज्य मान ।
पूजत जिनग्रह जनहर्ष मान ।।
मै पुन-पुन तिस भुवि शीशधार ।
बदौ तिन गुणधर उर मझार ।।
तिनही का अब भी तीर्थ एह ।
बरतत दायक अति शर्म गेह ।।
अरु दुख मकाल अवसान ताहि ।
वर्तेगो भवतिथिहर सदाहि ।।१२।।

कुसुमलता छन्द

श्री सन्मति जिन अघ्रिपद्म युगजजे भव्य जो मन वचकाय ।
ताके जन्म जन्म सचित अघ जावहि इक छिन माहि पलाय ।।

धनधान्यादिक शर्म इद्रपद लहै सो शर्म अतीन्द्री थाय।
अजर अमर अविनाशी शिवथल वर्णो दौल रहे शिर नाय।।
ओ ह्री श्रीपावापुर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

—०—

श्री चम्पापुर सिद्धक्षेत्र पूजा

उत्सव किय पनवार जह, सुरगणयुत हरि आय।
जजो सुथल वसुपूज्यसुत, चम्पापुर हर्षाय ।।१।।
ओ ह्री श्री चम्पापूर सिद्धक्षेत्र अव अवतर २। सवौषट्।
ओ ह्री श्री चम्पापुर सिद्धक्षेत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठ ठ।
ओ ह्री श्री चम्पापुर भिद्धक्षेत्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक। चाल नदीश्वरपूजन की

सम अमिय विगतत्रस गारि, लै हिम कुम्भभरा।
लख सुखद त्रिगदहरतार, दै त्रय धार धरा ।।
श्रीवासुपूज्य जिनराय, निर्वृतिथान प्रिया ।।१।।
चम्पापुर थल सुखदाय, पूजो हर्ष हिया ।।
ओ ह्री श्री चम्पापु सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामत्युविनाशनाय जल।
कश्मीरी केशर सार, अति ही पवित्र खरी।
शीतल चन्दनसग सार, लै भव तापहरी ।। श्रीवासु०।चदनं०।
मणिद्युतिसम खडविहीन, तदुल लै नीके।
सौरभयुत नव वर वीन, शालि महानीके ।।
।।श्रीवासुपूज्य०।अक्षतान्।।३।।

अलि लुभन सुभन दृग घ्राण, सुमन जु सुरद्रुम के ।
लै बाह्निम अर्जुनबान, सुमन दमन झुमके ॥
॥श्रीवासुपूज्य०॥पुष्पं०॥४॥

रस पुरित तुरित पकवान, पक्व यथोक्त घृती ।
क्षुधगदमदप्रदमन जान, लै विध युक्तकृती ॥
॥श्रीवासुपूज्ध०॥नैबेद्य॥५॥

तमअज्ञप्रनाशक सूर, शिवमग परकाशी ।
लैं रत्नदीप द्युतिपूर अनुपम सुखराशी ॥
श्रीवासुपूज्य०॥दीप॥

वर परिमल द्रव्य अनूप सोध पवित्र करी ।
तस चूरणकर कर धूप लै विधिकुजहरी ॥
॥श्रीवासुपूज्य०॥धूप॥७॥

फल पक्वमधुरसवान प्रासुक बहुविधके ।
लखि सुखद रसन दृग घ्रान ले प्रद पद सिध के ॥
॥श्री वासुपूज्य॥फल०॥८॥

जलफलवसु द्रव्य मिलाय लै भर हिमधारी ॥
बसु अग धरापर ल्याय प्रमुदित चितधारी ॥
॥श्री वासुपूज्य०॥अर्घ॥

अथ जयमाला

दोहा-भये द्वादशम तीर्थपति चम्पापुर निर्वान ।
तिनगुण की जयमाल कछु कहो श्रवण सुखदान ॥

पद्धरी छन्द

जय जय श्रीचम्पापुर सुधाम ।
जह राजतनृप वसुपूज नाम ॥
जव पौन पल्य से धर्महीन ।
भवभ्रमन दुखमय लख प्रवीन ॥१॥
उर करुणाधर सो तम विडार ।
उपजे किरण वलिधर अपार ॥
श्रीवासुपूज्य तिनके जुवाल ।
द्वादशतीर्थकर्त्ता विशाल ॥२॥
भवभोग देहतै विरत होय ।
वय बाल माहि ही नाथ सोय ॥
सिद्धन नमि महाव्रत भार लीन ।
तप द्वादश विधि उग्रोग्र कीन ॥३॥
तहँ मोक्ष सप्तत्रय आयु येह ॥
दश प्रकृति पूर्व ही क्षय करेह ॥
श्रेणीजु क्षपक आरूढ होय ।
गुण नवम भाग नव माहि सोय ॥४॥
सोलह वसु इक इक षट इकेय ॥
इक इक इक इम इन क्रम सहेय ॥
पूनि दशम थान इक लोभ टार ।
द्वादशमथान सोलह विडार ॥५॥
व्है अनन्त चतुष्टय युक्त स्वाम ।
पायो सब सुखद सयोग ठाम ॥

तह काल त्रिगोचर सर्व ज्ञेय।
युगपतहि समय इकमहि लखेय ॥
कुछ काल दुविध वृप अभिय वृष्टि।
कर पोपे भवि भुवि धान्यसृष्टि ॥
इक मास आयु अवशेष जान।
जिन योगन की सुप्रवृत्ति हान ॥
ताही थल तृतिशित ध्यान घ्याय।
चतुदश मथान निवसे जिनाय ॥
तह दुचरम समयझार ईश।
प्रकृती जु बहत्तर तिनहि पीस ॥
तेरह नठ चरमसमयमझार ॥
करके श्रीजगतेश्वर प्रहार ॥
अष्टमि अवनी इक समयवद्ध।
निवसे पाकर निज अचल रिद्ध ॥
युतगुणवसुप्रमुख अमित गुणेश।
व्है रहे सदा ही इमहि वेश ॥
तब ही तै सो थानक पवित्र।
त्रैलोक्यपूज्य गायो विचित्र ॥
मै तस् रज निज मस्तक लगाय।
बदौ पुन पुन भुवि शीश नाय ॥
ताही पद बाछा उरमझार।
धर अन्य चाहवुद्धी विडार ॥

दोहा-श्री चम्पापुर जो पुरुष, पूजे मन वच काय।
वर्णि 'दौल' सो पाय ही, सुख सम्पति अधिकाय ॥

इत्याशीर्वाद।

श्री कैलाशगिरि पूजा

श्री कैलाश पहाड जगत परधान कहा है।
आदिनाथ भगवान जहाँ शिववास लहा है।
नाग कुमार महाबल व्याल आदि मुनिराई।
गये तिहि गिरिसो मोक्ष थाप पूजो शिरनाई॥
श्री कैलाश पहाड सो आदिनाथ जिनदेव।
मुनि आदि जे शिव गये, थापि करौ पद सेव।

ॐ ह्रीं कैलाश पर्वत से श्री आदिनाथ स्वामी और नागकुमारादि मुनि मोक्षपद प्राप्त अत्र अवतर अवतर सवौषट्। तिष्ठ तिष्ठ ठः ठ। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

नदगङ्ग सु निर्मल नीरलाय, करि प्रासुक मरुकुम्भन भराय।
जिन आदि मोक्ष कैलाशथान, मुन्यादि पाद जजु जोरि पानि॥

ॐ ह्रीं श्री कैलाश पर्वत से आदिनाथ भगवान और नागकुमारादि मोक्षफल प्राप्तये जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिर चन्दन को घसाय, कुकमयुत मरुकुभन भराय।
जिन आदि मोक्ष कैलाश नाम, मुन्यादि पाद०॥ चन्दन
जिनवर कमोद वर शालिलाय, खन्ड हीन धोय थारा भराय।
जिन आदि मोक्ष कैलाश थान, मुन्यादि। अक्षत।
सुबेल चमेली जूही लेय, पाटिल बारिज थारी भरेय।
जिन आदि मोक्ष कैलाश थान, मुन्यादि०। पुष्प
मोदक घेवर खाजे बनाय, गोजा सुहालि भरि थाल लाय।
जिन आदि मोक्ष कैलाश थान, मुन्यादि॥ नैवेद्य
घृत कपूर मणि के दीप जोय, जिनमें प्रकाश तम क्षीण होय।

जिन आदि मोक्ष कैलाश थान, मुन्यादि पाद जजु जोरि पानि ।

ॐ ह्रीं श्री कैलाश पर्वत से आदिनाथ भगवान और नागकुमारादि मोक्षफलप्राप्तये दीप निर्वपामीति स्वाहा ।

वर धूप दशांगी अग्नि धार, जस धूम छटा छाये अपार ।
जिन आदि मोक्ष कैलाश थान, मुन्यादि० ॥ धूप०

फल चोच मोच नारियार लेय, दाडिम नारग भर थाल लेय ।
जिन आदि मोक्ष कैलाश थान, मुन्यादि० ॥ फल

जल आदिक आठो द्रव्य लेय, भरि स्वर्णथार अर्घहि करेय ।
जिन आदि मोक्ष कैलाश थान, मुन्यादि० ॥ अर्घ्यं

चौपाई

अयोध्यापुरी बहु शोभमान, है आदिनाथ जिन जन्म थान ।
भये भोग भूमि को अन्तजान, प्रभु कर्मभूमि रचना करान ॥
असि मसि कृषि वाणिजयुत जान, पशु पालन बतलायो जनान ।
करि राज जगत् सो ह्वै उदास, दे सुतहि कियो जा वन निवास ।
तप धारत मन पर्यय लहाय, रिपु घाति नाश केवल लहाय ॥
हरि आज्ञा सो धन देव आय, तिन समवसरण रचना कराय ॥
ता मधि गन्ध कुटी बनाय, मणि सिहासन तापर दिपाय ।
ता ऊपर वारिज हेम मान, अन्तरीक्ष बिराजे देव जान ॥
प्रभु वाणि खिरै वृष वृष्टि होय, सुनि २ समझे सब जीव सोय
निज वैभवयुत भरतेश आय, है पूजो जिनपद शीश नाय ॥
हरि आन जजत जिन चरण कीन, कर वे विहार हित विनय कीन
प्रभु विहरे आरज देश जान, कैलाश शैल दिय ध्यान आन ॥
प्रभु कर्म अघाती घात कीन, पञ्चम गति स्वामी प्राप्त कीन ।

हरि आन चिता रचि दाह कीन, धरि क्षार शीश सुर गमनकीन।
ह्यां सो औरहु मुनि सुजान हनि, कर्म लयो है मोक्ष थान।
गिरि को बैठे खातिक सुजान, अरु मानसरोवर झील मान ॥
तासो यात्रा है कठिन जान, नहि सुलभ किसी दिशसो बखान।
हैं आठ सहस्र पेडी प्रमान, तासो अष्टापद नाम जान ॥
सुत कन्हईलाल भगवानदास, कर जोरि नमैं थल शिव निवास।
मागत जिनवर मुनिवर दयाल, भव भ्रमण काटदो शिव बिठाल ॥

आदीश्वर ध्यावे भाव लगावे, पूज रचावे चावन सो।
सो होय निरोगी, बहुसुख भोगी, पुण्य उपावे भावन सो ॥

ॐ ह्री श्री कैलाश पर्वत से श्री आदिनाथ भगवान और नागकुमारादि मुनि मोक्षपद प्राप्तेभ्य अर्घ्यं निर्वपा० ॥

जे पूजै कैलाश आदि जिनराय को,
पढै पाठ बहु भाति सुझाव लगायको।
ते धन धान्यहि पुत्र पौत्र सम्पति लहै,
नर सुर सुख को भोगि अन्त शिवपुर लहे।

इत्याशीर्वाद ।

श्री तारगागिरि पूजा

(श्रीयुत प० दीपचन्दजी कृत)

वर दत्तादिक हूठ कोटि मुनि जानिए,
मुक्ति गए तारगा गिरि से मानिए,

तिन सबको सिर नाय सु पूजा ठानिए,
भवदधि तारन जान सु बिरद बखानिए,

ॐ ह्री तारगागिरि से वरदत्तादि साढे तीन कोटि मुनी समूह मोक्षपद प्राप्त अत्र अवतर २ स वौषट् आह्वानन। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापन। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरण।

शीतल प्रासुक जल लाय, भाजन मे भरके,
जिन चरनन देत चढाय, रोग त्रिविध हरके,
तारगागिरि से जान वरदात्तादि मुनी,
सब हूठ कोटि परमान, ध्याऊ मोक्ष धनी ॥टेक

ॐ ह्री तारगागिरि सिद्ध क्षत्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जल निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

मलयागिरि चन्दन लाय, केशर माँहि घसे।
जिन चरण जजू चितलाय, भव आताप नसे। तारगा ॥ चन्दन

तन्दुल अखण्ड भर थार, उज्जवल अति लीजे।
अक्षयपद कारणसार, पुञ्ज सुढिग कीजे। तारगा ॥अक्षत

चम्पागुलाब जुहि आदि, फूल बहुत लीजे।
पूजो श्री जिनवर पाद, कामविथा छीजे। तारगा ॥पुष्प

नाना पकवान बनाय, सुवरण थाल भरे।
प्रभु को अरचो चितलाय, रोग क्षुधादि टरे। तारगा ॥नैवेद्य

दीप कपूर जलाय जगमग जोति जले।
करू आरति जिन चितलाय, मिथ्यातिमिर नसे। तारगा ॥ दीप ॥

कृष्णागरु धूप सुवास खेऊ प्रभ आगे।
जलजाय कर्म की राशि, ज्ञानकला जागे। तारगा। धूप

श्रीफल कदली बादाम पूँगीफल लीजे।

पूजो श्रीजिनवर धाम, शिवफल पालोजै । तारगा ॥फल
शुचि आठो द्रव्य मिलाय, तिनको अर्घ करो ।
मन वच तन देहु चढाय, भवतर मोक्ष वरो । तारगा० ॥अर्घ्यं

जयमाला

सोरठा—वर दत्तादि मुनीद्र, हूठ कोटि मुक्तहि गये ।
वन्दत सुर नर इन्द्र, मुक्ति रमन के कारणे ॥१॥

चौपाई—गुजरात देश के मध्य जान, इक साहे ईडर सस्थान ।
ताकी दिशि पच्छिम मे बखान, गिरि तारग सोहे महान ।
तहते मुनि ऊठ करोड सोय, हनि कर्म गए सब मोक्ष सोय ।
ता गिरि पर मन्दिर है विशाल, दशनते चित्र होवे खुशाल ॥२॥
नायक सुमूल सम्भव अनूप, देखत भवि ध्यावत निज स्वरूप ।
पुनि तीन टोकपर दश जान, भविजन बदत उर हर्ष ठान ॥३॥
तहा कोटि शिला पहलो प्रसिद्ध, दूजी तीजो है मोक्ष सिद्धि ।
तिन पर जिनचरण विराजमान, दर्शन फल इम सुनिए सुजान ।४
जो बन्दे भविजन एक बार, मनवाछित फल पावे अपार ।
वसुविधि पूजे जो प्रीत लाय, दारिद तिनको क्षण मे पलाय ॥५
सब रोग शोक नाश तुरन्त, जो ध्यावे प्रभुको पुण्यवत ।
अरु पुत्र पौत्र सम्पत्ति होय, भव भव के दुख डारे सुखोय ॥६॥
इत्यादिक महिमा है अपार, वर्णन कर कवि को लहे पार ।
अब बहुत कहा कहिए बखान, कहे 'दीप' लहे ते मोक्षथान ॥७॥

ॐ ह्री श्री तारगागिरि से वरदत्त सागरदत्तादि साढ तीन कोटि मुनि मोक्षपदप्राप्तये पूर्णार्घ्यं नि० ।

तारगा बन्दा, मन आनन्दो, मन वच शुद्ध करा ।
सब कर्म नशाऊँ, शिव फल पाऊँ, ऊठ कोटि मुनि राजवर ॥

इत्याशीर्वाद ।

श्री पावागढ़ पूजा

(श्रीयुत धर्मचन्दजी कृत)

श्री पावागिरि मुकति शुभ, पाच कोडि मुनिराय।
लाड नरेन्द्र को आदि दे शिवपुर पहुचे जाय ॥१॥

तिनको आह्वानन करो, मन वच काय लगाय।
शुद्ध भावकर पूजजो, शिव सन्मुख चितलाय ॥२॥

ॐ ह्री श्रीपावागिरिसिद्धक्षेत्र से लाड नरेन्द्र आदि पाच करोड मुनि सिद्धपदप्राप्त अत्र अवतर २ सवौषट् आह्वानन। अत्र तिष्ठ-तिष्ट ठ· ठ स्थापन। अत्र मम सान्निहितो भव भव वषट् सान्निधि०।

जल उज्ज्वल लीनी प्रासुककीनो, धारसु दीनी हितकारी।
जिन चरन चढाऊँ कर्मनशाऊँ, शिवसुख पाऊँ बलिहारी ॥
पावागिरि बन्दो मन आनन्दो, भवदुखखदो चितधारी।
मुनिपाँचजुकोड भवदुखछोढ, शिवमुखजाड सुखभारी ॥टक

ॐ ह्री श्री पावागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विन शनाय जल निर्वपा०।

चन्दन घसि लाऊँ गन्ध मिलाऊँ, सब सुख पाऊँ दर्ष बडो।
भवबाधा टारो पतन निवारो, शिवसुखवारो मोद बडो।पा०। च०

गजमुक्ता चोखे बहुत अनोखे, लख निरदोखे पुञ्ज करूँ।
अक्षयपद पाऊ और न चाऊ, कर्मनशाऊ चरणपरू।पा०। अक्षतं

शुभ फूल मगाऊ गन्ध लखाऊ, बहु उमगाऊ भेट धरू।
ममकर्म नशावो, दाह मिटाओ, तुमगुणगाऊ ध्यान धरू।पा०। पुष्प

नेवज बहुताजे उज्ज्वल साजे, सब रुख काजे चरन धरू।
मो भूख नशावे ज्ञान जगावे, धम बढावे चैन करू।पा०। नैवेद्य

दीपक की ज्योतं तम छय होत, बहुत उद्योत लाय धरूं
तुम आरति गाऊ भक्ति बढ़ाऊ, खूब नचाऊ प्रेम भरू ।पा०। दी०
बहु धूप मगाऊ गन्ध लगाऊ, बहु महकाऊ दश दिशिको ।
धर अग्नि जलाई कर्मखिपाई, भविजन भाई सब हितको ।पा०।धू०
फल प्रासुक लाई भविजन भाई, मिष्ट सुहाई भेट करू ।
शिवपदकी आशा मनहुल्लासा, करजु हुलासा, मोक्ष करू ।पा०।फ०
वसुद्रव्य मिलाई भविजन भाई, धर्म सहाई अर्घ करू ।
पूजाको गाऊ हर्ष बढाऊ, खूब नचाऊ प्रेम भरू ।पा०।अर्घ्यं ।।

जयमाला

सोरठा—करके चोखे भाव, भक्ति भाव उर लायके ।
पूजो श्रीजिनराय पावागिरि बन्दो सदा ।।

चाल जोगीरासा

श्री पावागिरि तीर्थ बडो है, बन्दत शिवसुख होई ।
रामचन्द्र के सुत दोय जनो, लाड नरेन्द्र जु सोई ।।
इनहि आदि दे पाच कोटि मुनि, शिवपुर पहुचे जाई ।
सेवक दुई कर जोर बीनवे, मन, वच कर चितलाई ।।१।।

कर्म काट जे मुक्ति पधारे, सब सिद्धन मे जोई ।
सुख सत्ता अरु बोध ज्ञानमय, राजत सब सुख होई ।।
दर्श अनन्तो ज्ञान अनन्तो, देखे जाने सोई ।
समय एक मे सबही झलके, लोकालोक जु दाई ।।२।।

ज्ञान अतेन्द्री पूरन तिनके, सुक्ख अनन्तो होई ।
लोक शिखर पर जाय विराजे, जामन मरन न होई ।
जा पद को तुम प्राप्त भये हो, सो पद मोहि मिलाई ।
भक्ति भावकर निशिदिन बन्दो, निशिदिन शीश नवाई ।।३।।

'धर्मचन्द्र' श्रावक की बिनती, धर्म बडो हितदाई।
जो कोई भविजन पूजन गावे, मनमन प्रीति लगाई।
सो तैसो फल जल्दी पावै, पुण्य बढे दुख जाई।
सेवक को सुख जल्दी दीजो, सम्यक् ज्ञान जगाई।४॥

ॐ ह्री श्रीपावागढ से लाड नरेन्द्र और पाच करोड मुनि मोक्ष पद प्राप्तये महार्घ्य नि०।

श्री जिनवरराई कर मन भाई, धर्म सहाई, दुख छीजे।
पूजा नित चाहू भक्ति बढाऊ, ध्यान लगाऊ सुख कीजे॥
सुन भविजन आई द्रव्य मिलाई, बहु गुन गाई, नृत्य करो।
सबही दुख जाई बहु उमगाई, शिवसुख पाई चरन परो॥५॥

इत्याशीर्वाद।

श्री कुण्डलगिरि क्षेत्र पूजा

(श्री प० मूलचन्द जी वत्सलकृत)

श्री कुण्डलपुर क्षेत्र, सुभग अति सोहनो।
कुण्डल सम सुख सदन हृदय मन मोहनो।
पावन, पुण्य निदान, मनोहर धाम है।
सुन्दर आनन्दभरन, मनोज्ञ ललाम है॥१॥
धवल शिखर अतिशय उतग, सुख पुज है।
ललित सरोवर विमल वारि के कुज है॥
उज्ज्वल जलमय स्वच्छ वापिका मनहरन।
बन उपवन युत लसत भूमि शोभासदन॥२॥
गिरि ऊपर जिन भवन पुरातन है सही।
नरखि मुदित मन भविक लहत आनन्द मही॥

अतिविशाल जिन बिंब ज्ञानकी ज्योती है।
दर्शन से चिर संचित, अघ क्षय होत है ।।३।।

दोहा—भक्ति सहित हर्षितहृदय, करि तिनको आह्वान ।
हे जिनवर करुणा सदन, तिष्ठ तिष्ठ इत आन ।।४।।

ॐ ह्रीं श्रीकुंडलगिरि वीरनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठ । अत्र मम सन्निहितो भवभव वषट् सन्नि० ।

अथाष्टक (हरिगीतिका)

हेम झारी मे मनोहर क्षीर जल भर लीजिए।
त्रय दोष नाशन हेतु श्रीजिन अग्र धारा दीजिए ।।
श्री क्षेत्र कुंडलगिरि मनोहर पुण्य को भंडार है।
प्रभु वीरनाथ जिनेन्द्र पूजो, मोक्ष सुखदातार है ।।

ॐ ह्रीं श्री कुंडलगिरि वीरनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरामृत्युविनाशनाय जल० ।

अतिरम्य, शीतल, दाहनाशक मलय चंदन गारिए।
संसार ताप विनाश हेतु, जिनेश पद तल धारिए ।।श्री०।। चंदन

मणिचन्द्रकांति समान श्वेत अखंड अक्षत लाइए ।
अक्षय अबाधित, मोक्ष पद की प्राप्ति हेतु चढाइए ।।श्री०।। अक्षत

शुभ अमल कमल सुचारु चंपा सुमन गंधित ले धरो।
खल काम मद भंजन श्रीजिन देव पद अर्पण करो ।। पुष्प

घृत पक्व सुन्दर सद्य मोदक कनक भाजन मे भरो ।
सन्मति पदाब्ज चढाय, चिर दुख, मूल भूख व्यथा हरो ।।श्री०।। नैवेद्य

जिन चन्द्र त्रिभुवन नाथ सन्मुख रत्न दीप प्रकाशिये ।
अति मोद युत करि आरती, अज्ञान तिमिर विनाशिये ।।
श्री क्षेत्र कुडलगिरि मनोहर पुण्य को भडार है ।
प्रभु वीरनाथ जिनेन्द्र पूजो, मोक्ष सुख दातार है ।।

ॐ ह्री श्री कुडलगिरि वीरनाथजिनेन्द्राय मोहाधकार विनाशनाय दीपं

शुचि मलय अगुरु, सुवास पूरित चूरि अनल प्रजालिए ।
सुख धाम, शिव रमणी वनो, अरि अष्ट कर्म जलाइये ।।श्री०।।धूप

श्रीफल बादाम, मनोज्ञ, दाडिम, मधुर फल सुख मूल ले ।
प्रभु पद सरोज चढाय अनुपम, मोक्ष फल अनुकूल ले ।।श्री०।। फल

अत्यन्त निर्मल पूर्व, आठा द्रव्य एकत्रित करो ।
अरि अष्ट हनि गुण अष्ट सयुक्त शीघ्र मुक्ति रमा वरो ।।श्री।।अर्घ

अडिल्ल—उज्ज्वल नीर सुगध धवल अक्षत लिए ।
पुष्पं सुवासित, चरुयुत दीप प्रजालिए ।।
अगरु धूप, षट् रितु फल सुन्दर लाइये ।
पूर्ण अर्घं कहि जिनवर चरन चढाइये ।।पूर्णार्घ्य ।।

जयमाला

दोहा—श्री कुण्डलगिरि क्षेत्र शुभ, जिनवर भवन विशाल ।
शक्ति हीन प्रभु भक्तिवश गूथत गुण मणिमाल ।।१।।

पद्धरी छन्द

जय कुडलगिरि तीरथ पवित्र, कुण्डल सम मन मोहक विचित्र ।
द्वाविशति जिनवर भवन सार, पर्वत ऊपर मन हरन हार ।।
छैघरिया जिन मन्दिर प्रसिद्ध, अति तुंग लसत पावन विशुद्ध ।
सोपान बने सुन्दर स्वरूप, शोभा निकेत उन्नत अनप ।।

भवि प्रथम द्वारतें चढत धाय, पुनि द्वितीय द्वार पहुचे सुजाय।
तहाँ बनो सुभग बैठक महान यात्रीगण शुभ विश्राम ठान ॥
जिन भवन पुन कीनो प्रवेश, मन हर्षित ह्वै पूजत जिनेश।
जिनबिंब मनोज्ञ विराजमान, दर्शन से चिर अघ होत हान ॥
अवशेष जिनेश भवन सुभव्य, बंदन करि भक्ति समेत सर्व।
श्री वीरजिनेश्वर गृह उदार, अवलोकि हर्ष छायो अपार ॥
चारो दिशि गुमठो सुभग चार, जिनवर प्रतिमा मन हरन हार।
अति तुंग शिखर नभमें लसत, शुचि कनक कलश तिनपर धरत ॥
फहरात ध्वजा ऊपर मनोग, सकेत करत मिस पवन योग।
आवहु पूजो जिनधर विवेक, काटो चिर संचित अघ अनेक ॥
जिन चैत्य सुभग तामधि अभग, निरखत ह्वै पुलकित अंग अंग।
पद्मासन वीर विराजमान तनु तुंग हस्त नवके प्रमान ॥
द्वय और तुङ्ग जिन बिंब दोय, खड्गासन लखि मन मुदित होय।
रमणीक मनोहर छवि अनूप, अवलोक शुद्ध आतम स्वरूप ॥
उमडो उर मे आनन्द सिंधु, लखिकर चकोर जिमि शरद इन्दु।
पद कमल बंदि उर हर्ष लाय, स्तुति कीनी बहु विधि बनाय ॥
जय जय जय श्री सन्मति जिनेश, तुव चरण कमल पूजत सुरेश।
जय अरिगिरि खंडन वज्रदण्ड, जय अजय अचर सुखमय अखंड ॥
जय मोह गजेन्द्र मृगेन्द्र वीर, जय काल नाग हित गरुड धीर।
जय करुणा सदन अजय अदोष, अक्षय अनन्तगुण विमल कोष ॥
कुण्डलपुर जन्म लिया पवित्र, सुरपति कीनो उत्सव विचित्र।
ऐरावत सजि अति मोदधार, सुर ताडव नृत्य कियो अपार ॥
पाडुकशिल पर थाप्यो जिनेश, मधवा कीनो कलशाभिषेक।
गृह लाये उत्सव सहित इन्द्र, माता कर सौपे श्रीजिनेन्द्र ॥
बालक वय मे प्रभु धारि मोद, कीनी अनेक क्रीडा विनोद।
इक दिवस सखानि समेत वीर, क्रीडा करन वन मे सुधीर ॥

प्रभु शक्ति परीक्षा हेतु देव, धरि नाग रूप आयो स्वमेव ।
बालकगण अजगर लखि विचित्र, भागे भय सयुत्त यत्र तत्र ।।
नहिं भयो वीर चित चलित नेक, तिहिं पकड करी क्रीडा अनेक ।
लखि शक्ति अनन्त सुबल अशेष, महावीर नाम धारो विशेष ।।
जल विलग कमलवत जगत ईश, गृह मे निवास कीनो अधीश ।
लखि जगत जाल विकरालरूप, चित्यो निज प्रभु आतम स्वरूप ।।
यह जगत मोहग्रह ग्रसित होय, निज अनुपम ज्ञान विवेक खोय ।
गृह पुत्रादिक मे भयो लिप्त, विस्मृति अनत जिन आत्मशक्ति ।।
प्रभु आत्मप्रबोध विज्ञानयुक्त, गृह जगत जाल से भये मुक्त ।
लौकातिक ऋषि कीना प्रबुद्ध, सबोध्यो प्रभुवर स्वयबुद्ध ।।
गृह त्याग भये शुचि ध्यान लीन, ज्ञानामृत छकि ह्वै निजाधीन ।
अध्यात्ममग्न प्रभु भाव भद्र, निश्चल निर्भर अवलोक रुद्र ।।
उपसर्ग किये दुस्सह अनेक, प्रभु अचल चित्त नहि चल्यो नेक ।
अरिघात चतुष्क किये विनाश, पायो अक्षय केवल प्रकाश ।।
लहि समवसरन महिमा महेश, धर्मामृत बरसायो जिनेश ।
भवि जीव श्रवण करि धर्मसार, ससार जलधि से भये पार ।।
अवशेष अघाति चतुष्क नाश, कीनो प्रभु अचल मुक्तिवास ।
सुन विरद शरण आयो दयाल, हे दीनबन्धु गुणगण विशाल ।।
चिरदुरित अमित अरि कर विनष्ट, प्रभु मेटो मम ससार कष्ट ।
महिमा अद्भुत हे जगत नाथ, भवदधि से तारो पकड हाथ ।।
सुरताल साजि अनुपम अभग, कीनी प्रभु विनय हृदय उमग ।
पुनि शेष जिनेश्वर भवन बदि, आये नाचे उर धरि आनन्द ।।
विशति अरु एक जिनेश थान, ह्वै पुलकित वदे हर्ष ठानि ।
इम क्षेत्र बदना करि उदार, लूटो शुभ पुण्य तनो भण्डार ।।

धत्ता—कुडलगिरि वीर गुणगभीर, नाशक पीर अतिवीर ।
केवल पदधारी, सुखभडारी, आनन्दकारी मतिधीर ।।

ॐ ह्रीं श्रीकुडलगिरि वीरनाथजिनेन्द्राय महार्घ निर्वपामीति स्वाहा ।

अघगिरि खण्डन, सन्मति वज्र समान हैं।
वश इक्ष्वाक सरोज, विकाशन भानु हैं ।।
भवभ्रम ताप विनाशन, निर्मल चन्द्र है।
आत्मज्ञान लवलीन, अमित गुण वृन्द है।।
काट कटक करि विचलित, मद मर्दन किया।
अजयमोह करि विजय, अखय शिवपद लिया ।।
नमन करहु करजोड, विनय सुन लीजिए।
अष्ट कर्म करि नष्ट अक्षय पद दीजिये ।।

इत्याशीर्वाद ।

श्री मन्दारगिरिजी पूजन

(मुनीम श्री मुन्नालालजी परवार कृत)

दोहा—अङ्ग देश के मध्य है चम्पापुर सुख खानि।
राय तहाँ वसुपूज्य है, विजया देवी रानि ।।१।।

अडिल्ल—वासुपूज्य तसु पूज्य तीर्थपद धार जी।
गर्भ जन्म तिन चम्पानगर मँझार जी ।।
तप करने यह वन चम्पापुर के सही।
ज्ञान ऊपज्यो ताहि वन के मध्य ही ।।२।।
मोक्ष गये मंदार शैल के शिखर ते।
पर्वत चम्पा पास सु दीसत दूर ते ।।
सो पंच कल्याणक भूमि पूजना चावसा।
वासुपूज्य जिनराज तिष्ठ इत आवसा ।।३।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनपंचकल्याणक भूमि अत्र अवतर अवतर संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

पदम द्रहको नीर उज्ज्वल, कनक भाजन मे भरो ।
मम जन्ममृत्यु जरा निवारन, पूज प्रभु पदकी करों ।।
श्री वासुपूज्य जिनेन्द्रने गर्भ, जन्म लिया चम्पापुरी ।
श्री तपसु ज्ञान अरन्य शैल, मदारतै शिव तिय वरी ।।टेक

ॐ ह्री श्री वासुपूज्य जिन पचकल्याणक भूमिभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जल निर्वपामीति ।

केशर कपूर वो मलय वावन, घिस सुगन्ध बनाइया ।
ससार ताप विनाश कारण भर कटोरि चढाइया । श्री० । चदन
देव जोर सुवास तदुल, अमल भवि मन मोहिये ।
सो हेम थारहि धरत पदढिग, अखय शिवपद चाहिये । श्री० । अक्षत
बेला चमेलो चम्पा जूही, गुलाब कुन्द मगाय के ।
चुन चुन धरू अति शुद्ध पहुपहि, काम मूल नशाय के । श्री० । पुष्प
फैनी सु बावर लाडू घेवर, पूवा शुद्ध बनाइया ।
वर हेम भाजन धरत पग ढिग, जजत भूख भगाइया । श्री० । नैवेद्य
वाती कपूर की धार घृत मे, दीप ले आरति करो ।
अज्ञान मोहनि अध भाजत, ज्ञान भानु उदय करो । श्री० । दीप
ले गन्ध दशविधि चूर भूर, सु अग्नि मध्य जरावही ।
मम कर्म दुष्ट अनादि जलते, धूम तिन सु उडावही । श्री० । धूप
श्रीफल सु आम्र नारग केला, जायफल धो लाइये ।
ते धरत प्रभु ढिग चरण भेट सु, मोय शिवफल चाहिये । श्री० । फलं
जल फल मिलाय सु अर्घ लेकर, कनक भाजन मे धरो ।
मम दुःख भव भव दूर भाजत, पूज प्रभ पदकी करो । श्री० । अर्घं

अथ जयमाला

सत्तर धनु तन तुग है, वर्ण सु छवि है लाल ।
दशवे दिव ते चय भये लक्ष बहत्तर साल ।।१

जन्मे शतभिषा नक्षत्र मे, बाल ब्रह्म व्रत लेय।
महिष चिह्न पद पद लसे, गाऊ गुण सुख देय ।।२
जय बासुपूज्य करुणानिधान, भवदधि से तारन हार जान।
वसुपूज्य नृपति चम्पापुरीश, विजया देवी रानो सुधोश ।।
ताके शुभ गरभ रह्यो महान, वदि छट अषाढ की तिथो जान।
तब छप्पन देवी रहत लार, माता को सेवत अधिक प्यार ।।
सुख मे नव मास भये व्यतीत फागुन वदि चौदस दिन सुचोत।
प्रभु जन्म भयो आनन्दकार, तब इन्द्रनि मुकुट नये सुवार ।।
स्वर्गनवासी घर घण्ट नाद, ज्योतिष इन्द्रनि घर सिंहनाद।
पुनि भवनवासी घर बजे शङ्ख, व्यंतर घर पट पट बजे झङ्ख ।।
अनहद सुनि प्रभु का जन्म जान, चल सात पैड कीनो प्रणाम।
पुनि परिजन युत सजि चले सोय, चतुरनिकायनि हरि हर्ष होय ।।
ऐरावत गज चढि स्वर्गराय, पुरि परदक्षिण दी तीन जाय।
तब शची प्रसूतहि थान जाय, माता को सुख निद्रा कराय ।।
दूजो सुन धरि प्रभु गोद लेय, सौधर्म ईश कर प्रभुहि देय।
हरि नेत्र सहस करि रूप देख, नहि तृप्त होत फिर-फिर सु देख ।।
ईशान इन्द्र सिर छत्र धार, तीजे चौथे हरि चवर ढार।
जय जय नभ मे करि शब्द जोय, गये पाडुक वन हरि प्रमुद होय ।।
तित शिला पाडुपर प्रभु बिठाय, क्षीरोदधि जल निजकर सु लाय।
सिर सहस कलश अरु आठ ढार, आभूषण सचि पहिराये प्यार ।।
पुनि अष्ट द्रव्य युत पूज कीन, निज जन्म सफल सब हरि गिनीन।
बहु उत्सव करत जु नगर आय, पितु गोद धार हरि थान जाय ।।
प्रभु लाल वरण छवि शोभ लीन, नहि राज किया नहि भोग कीन।
सो कुवरकाल वैराग्य धार, फागुन बदि चोदस सुक्खकार ।।
भावन भाया बारह प्रकार, दिव ब्रह्म रिषि चलि हर्ष धार।
तिन आय विराग प्रशस कीन, देवनि हरि युत चलि हर्ष लीन ।।
प्रभु सुख पालहि चढ गमन कीन, चम्पा वन मे कललोच कीन।

तवही मनपर्यय ज्ञान धार, तप करत प्रभु बारह प्रकार ।।
बाईस परीषह वह सहत, पुनि क्षपकश्रेणि चढ़ि घात हत ।
सुदि माघ द्वितीय कर्म जार, उपजो पद केवल सुक्खकार ।।
तब इन्द्र हुकम धरनेन्द्र चाल, देवनि जानी मन हर्ष धार ।
समोसृत बहु विधि युत सो बनाय, वेदी सुकोट बारह सभाय ।।
प्रभु दिव्यध्वनि उपदेश देय, मुनि भविजन मन आनन्द लेय ।
केई मुनिवर केई गृह्यो व्रत, केई अर्जिक श्रावकनी पवित्र ।।
सो कर विहार प्रभु देश देश, मेटे भवि जीवनि के कलेश ।
रहि आयु शेष जब मास एक, तब आगे गिरि मन्दार टेक ।।
तह धार योग अघाति नाश, भये सिद्ध अनन्ते गुणनि-रास ।
भादो सुदि चौदह राह्न काल, मुनि चौरानव युत शिव विशाल ।।
रह गये केश अरु नख जु शेष, उडि गये सर्व पुद्गल प्रदेश ।
तब इन्द्र अवधि प्रभु मोक्ष जान, मन्दार शिखर आये सु जान ।।
चतुरनिकायनि मन हर्ष धार, प्रभु को शरीर रचियो जु सार ।
वसुविधि से तिनकी पूज कीन, पुनि अग्निकुमार पद धोक दीन ।।
तिन मुकुट से अग्नि भई तैयार, ताकर कीना प्रभु संस्कार ।
जय जय करते निज थान जाय, सो पूज्य क्षेत्र भवि सुक्खदाय ।।
ता पर्वत पर मन्दिर विशाल, तामे युग चरण चतुर्थकाल ।
पुनि छोटा मन्दिर एक ओर, त्रय युगल चरण है भक्ति ठोर ।।
प्रभु पचकल्याणक युत जिनेश, मेटो हमरे भव भव कलेश ।
सो चरण शीस धारत त्रिकाल, नमि अरज करत है 'मुन्नालाल' ।।
वंदित मनवांछित फल लहाय, पूजते वसुविधि अरि नशाय ।
हम अल्प बुद्धि जयमाल गाय, भवि करो शुद्ध पंडित सुभाय ।।

घत्ता—मन वच तन वंदित कर्म, निकन्दित जन्म २ दुख जाय पलाय ।
श्री गिरिमंदारा, दुख हरतारा, सुख दातारा मोक्ष दिलाय ।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिन पचकल्याणक भूमिभ्यो महार्घ नि० ।

सोरठा—वासुपूज्य जिनराज, तुम पद युग पर शीश धरू ।
सरें हमारे काज, याते शिवपद सुख लहू ॥
इत्याशीर्वाद. ।

श्री नयनागिरि पूजा

दोहा—पावन परम सुहावनो, गिरि रेशिन्दि अनूप ।
जजहु मोद उर धार अति, कर त्रिकरण शुचिरूप ॥

ॐ ह्री श्री नयनागिरो सिद्ध क्षेत्र से वरदत्तादि पञ्च ऋषिराज सिद्ध पदप्राप्त अत्र अवतर २ सवौषट् आह्वानन । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ स्थापन । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

अति निर्मल क्षोरधि वारो, भर हाटक झारी ।
जिन अग्र देय त्रय धार, करन त्रिरुग छारी ॥
पन वरदतादि मुनोन्द्र शिवथल सुखदाई ।
पूजो श्री गिरिरेशिन्द प्रमुदित चित थाई ॥

ॐ ह्री गिरिरेशिन्दसिद्धक्षेत्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जल ।

मलयागिर चन्दन सार, केशर सघ घसो ।
शीतल वासित सुखकार, जन्माताप कसो । पन वर० ॥ चदन

शुचि विमल नवल अति श्वेत, द्युति जित सोमतनी ।
सोले पद अक्षय हेत, अक्षत युक्त अनी । पन वर० ॥ अक्षत

शुभ सुमन त्रिदश-तरुकेय, स्वच्छ करण्ड भरी ।
मदब्रह्म तनुज हरनेय, भेट जिनाग्र धरी । पन वर० ॥ पुष्प

क्षुध फणहि विहगमनाथ, नेवज सद्यानी ।
कर विविध मधुर रस साथ, विधयुत अमलानी । पन वर० ॥नैवेद्यं

मिथ्यातम भावन भानु, स्वपर उजास कृति ।
ले मणिमय दीप सुभानि, विमल प्रकाश धृती ।
पन वरदत्तादि मुनीन्द्र, शिवथल सुखदाई ।
पूजो श्रीगिरिरेशिन्द, प्रमुदित चित थाई ।
ॐ ह्रीं गिरिरेशिन्दसिद्धक्षेत्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय दीप ।
कर्मेन्धन जारन काज, पावक भाव मही ।
वर दश विधि धूपहि साज, खेय उछाह गही । पन वर० ॥ धूप
दृग घ्रान रसन मन प्रीय, प्रासुक रस भीने ।
लखदायक मोक्ष प्रदीप, लै फल अमलीने । पन वर० ॥ फल
शुचि अमृत आदि, समग्र, सजि वसु द्रव्य प्रिया ।
धारो त्रिजगपति अग्र, धर वर भक्त हिया । पन वर० ॥ अर्घ

जयमाला

दोहा—जग बाधक विधि बाधकर, है अबाध शिव धाम ।
निवसे तिन गुण धर सुहृद, गाऊ वर जयदाम ॥ १

जय जय जिन पार्श्व जगत्रि-स्वाम, भवदधि तारण तारी ललाम ।
हति घाति चतुक है युक्त सन्त, दृगज्ञान शर्म वीरज अनन्त ॥
सो समवसरण कमला समेत, विहरत विहरत पुर ग्राम खेत ।
सुर नर मुनिगण सेवन कृपाल, आये भवहितु तिहि अचल भाल ॥
अरु वरदत्तादि मुनीन्द्र पच, चतुविधि हनि केवल ज्ञान सच ।
लख सर्व चराचर त्रिजग केय, त्रैकालिक युगपत पद अमेय ॥
निज आनन द्वैविध वृषस्वरूप, उपदेश भरण भवि मर्म कूप ।
दृगज्ञान चरण सम्यक प्रकार, शिवपथ साधक कह त्रिजग तार ॥
अरु सप्त तत्त्व षट् द्रव्य केव, पचास्तिकाय नव पदन भेव ।
कारण सो दरसाय ईश, तिहि भूधर शिर पुनि अघति पीश ॥
पचमगति निवसे तव सुरेश, आके ले सुरगण सग अशेष ।
रैशिन्दि शिखर रज शीश ल्याय, किये पचम कल्यान कर उछाय ॥

मैं तिन पद पावन चाह ठान, बन्दो पुनि पुनि सो सुखद थान।
मन वच तन तिन गुण स्व उरधार, 'वर्णी दौलत' अनचाह हार ॥
ॐ ह्री श्रीगिरिरेशिन्दसिद्धक्षेत्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा—आनन्द कन्द मुनीन्द्र गुण, उर धर कोष मझार।
पूजे ध्यावे सो सुधा, है लघु महि भव पार ॥८

इत्याशीर्वाद ।

श्री गजपंथ पूजा

(श्रीयुत जी किशोरीलालकृत)

श्री गजपथ त्रि जग मे सुखदाय जी,
आठ कोडि मुनिराय परमपद पायजी।
और गये बलभद्र सात शिवधाम जी,
आह्वानन विधि करू त्रिविध धर ध्यानजो।

ॐ ह्री श्री गजपथाचल से सप्त बलभद्र आदि आठ कोडि मुनि सिद्धपद प्राप्त अत्रावतार अवतर सवौषट् आह्वानन। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ स्थापन। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

कञ्चन मणिमय झारी लेके, गङ्गाजल भरि ल्याई।
जन्म जरा मृत नाशन कारन, पूजो गिरि सुखदाई।
बलभद्र सात वसु कोडि मुनीश्वर, यहा पर करम खपाई।
केवल लहि शिवधाम पधारे, जजू तिन्हे शिर नाई ॥

ॐ ह्री श्री गजपथ सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जल०

मलयागिरि चन्दन घसि केसर सङ्ग, सुवरण भृङ्ग भराई।
भव आतापनिवारन कारन, श्री जिनचरण चढाई। बल०। चदन

अक्षत उज्ज्वल चन्द्रकिरण सम, कनक थाल भर लाई।
अक्षय सुख भोगन के कारन, पूजूं देह हुलसाई।
बलभद्र सात वसु कोडि मुनीश्वर, यहाँ पर करम खपाई।
केवल लहि शिवधाम पधारे, जजूं तिन्हे शिर नाई।
ॐ ह्री श्री गजपथ सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय अक्षतं
पुष्प मनोहर रग सुरगी, आवे बहु महकाई।
कामवाण के नाशन कारन, पूजूं आवे हुलसाई। बल०। पुष्प
घेवर, बावर लाडू फेनी, नेवज शुद्ध कराई।
क्षुधावेदनी रोग हरन को, पूजो श्री जिनराई। बल०। नैवेद्य
बाति कपूर दीप कञ्चनमय, उज्ज्वल ज्योति जगाई।
मोहतिमिर के दूर करन को, करो आरती भाई। बल०। दीप
अगर तगर कृष्णागरु लेके, दश गन्ध धूप बनाई।
खेय अगनि मे श्री जिन आगे, करम जरे दुखदाई। बल०। धूप
फल अति उत्तम पूगी खारक, श्री फल आदि सुहाई।
मोक्षमहाफल चाखन कारन, भेट धरो गुणगाई। बल०। फलं
जलफल आदि दरव वसु उत्तम, मणिमय थाल भराई।
नाच नाच गुण गाय गायके, श्रीजिन चरण चढाई। बल०। अर्घं

जयमाला (गीता छन्द)

गजपथ गिरिवर शिखर उन्नत, दरश लख सब अघ हरे।
नर नारि जे तिन करत वदन, तिन सुजस जग विस्तरे।।
इस थानते मुनि आठ कोडी, परमपदकूं पायके।
तिनकी अबै जयमाल गाऊँ, सुनो हित हुलसाय के।।१

(पद्धरि छन्द)

जय गजपथ गिरिशिखर सार, अति उन्नत है शोभा अपार।
ताकी दक्षिण दिश नगर जान, मसरूल नाम ताको प्रधान।।२
तहाँ बनी धर्मशाला महान, ता मध्य लसे जिनवर सुथान।
तहा बने शिखर शोभित उतङ्ग, यह चित्र विचित्र नाना सुरग।।३

चारो दिशि गुमठी लसत चार, चित्राम रचित नाना प्रकार।
तितके ऊपर जे ध्वज फहरात, मानुषही बुलावत करत हाथ ॥४
तह गुम्मज में श्रीपार्श्वनाथ, राजत पुनि प्रतिमा है विख्यात।
तिन दर्शन वदन करन जात, पूजत हैं नितप्रति भव्य भ्रात ॥५
जिन मन्दिर मे रचना विशेष, आराम रचित अद्भुत अनेक।
वेदी उज्ज्वल राजत रगीन, अति ऊँचे सोहे शिखर तीन ॥६
तिनके ऊपर कलशा लसत, चन्द्रोपम ध्वज दर्शन दिपत।
त्रय कटनी खभा चारमाय, इन्द्रन को छवि वरनी न जाय ॥७
ऊपरली कटनी मध्य जान, अन्तिम तीर्थेश विराजमान।
भामडल चंवर सु छत्र तीन, पुनि चरण पादुका द्वय नवीन ॥८
पुनि पद्मावति अरु क्षेत्रपाल, तिष्ठत ता आगे रक्षपाल।
सन्मुख हस्ती घूमे सदीव, जहा पूजा करते भव्य जीव ॥९
आगे मडल रचना विशाल, तहा सभा भरे है सदा काल।
जहा बाचत पण्डित शास्त्र आय, कोई जिनवर गुण मधुरगाय ॥१०
कोई जाप जपे चरचा करत, कोई नृत्य करत बाजा बजत।
नौबत झालर घण्टा सु झाझ, पुनि होत आरती नित्य साझ ॥११
मन्दिर आग सुन्दर अरण्य, तरु फल फूलत दीमे रमण्य।
अति सघन वृक्ष शोतल सु छाय, जहा पथिक लेत विश्राम आय ॥१२
इस उपवन मे बहुविधि रसाल, चाखत यात्री होवे खुशाल।
नीबू नारगी अनार जाम, सीताफल श्रीफल केला आम ॥१३
अमली जामन ककडी अरड, कैथोडी ऊचे लगे झुण्ड।
शहतूत लेसवो अरु खजूर, खारक अजीर अरोठ पूर ॥१४
फफनेश बोर बड नाम जान, पुनि पुष्पवाटिका शोभमान।
चपा जु चमेली गुलाब कुञ्ज, जाई जु मोगरो भ्रमर गुञ्ज ॥१५
गुलमेहदी और अनेक बेल, तिन ऊपर पक्षी करत केल।
या बाग माहि गभोर कप, शीतल जल मिष्ट सु दुग्धरूप ॥१६

ता पीवत हो गद सकल नाश, वह अतिशय क्षेत्रतनो प्रकाश।
बगला विशाल रमणीक जान, भट्टारक तिष्ठनको सुथान ॥१७
परकोट बनो चउ तरफ सार, मध दरबाजो अति शोभकार।
ताके ऊपर नोबत बजत, सुनके यात्री आनन्द लहन्त ॥१८
यहा दण्डकवनकी भूमि मत, तसु निकट शहर नासिक बसत।
तहा गगा नाम नदो पुनीत, वैष्णवजन ठाने धर्म तीर्थ ॥१९
पुनि त्रिम्बक सीता गुफा कीन, गजपथ धाम सबमे प्राचीन।
भट्टारक जा हिमकीर्ति आय, बन्दे गजपथा शिखर जाय ॥२०
मन्दिर की नीव दई लगाय, पुनि पैडी ऊपर को चढाय।
दो शतक पिचात्तर हैं सिवान, तस आगे मोटी भीत जान ॥२१
इक हौद भरयो निर्मल सु नीर, शीतल सुमिष्ट राजत गहीर।
भवि प्रक्षालित वसु दरब आन, कोई तीर्थ जान करहै सनान ॥२२
त्रय गुफामध्य दरशन करन्त, बलभद्र सात तिष्ठत महन्त।
इक बिम्ब लसत उन्नत विशाल, श्री पार्श्वनाथ नदत त्रिकाल ॥२३
द्वय मानभद्र इन चरण पाद, मुनि आठ कोटि थल है अनाद।
बदन पूजन कर धरत ध्यान, जिन जन्म सुफल मानत सुजान ॥२४
यहा से उतरत गिरि नट सुथान, इक कुण्ड नीर निर्मल बखान।
इक छत्रो उज्ज्वल हैं पुनीत, भट्टारकजी क्षेमेन्द्रकीर्ति ॥२५
तिनके सुचरण पादुका रचाय, अवलोकनकर निजथल सुआय।
कोई फेरी पर्वत की करन्त, इमि बन्दन कर अति सुख लहत ॥२६
श्रीमुनिकीर्ति महाराज आय, श्रावकजनको उपदेश थाय।
पुनि नानचन्द अरु फतहचन्द, शोलापुरवासी धरमकन्द ॥२७
हूमड जैनी उपदेश धार, करवाई प्रतिष्ठा बिम्बसार।
सबत उगणीसा अरु तियाल, सु तेरस माघतनी विशाल ॥२८
कल्यान पाच कीनो उछाव, करबाये अति उत्तम सुनाव।
श्री महावार अन्तिम तिर्थेश, पधराये वेदी मे जिनेश ॥२९

भट्टारकजी दियो सूरमन्त्र, कीने पुनि जन्त्र अनेक तन्त्र।
मानस सु थम्भ रचिये उतग, कञ्चन कलशा शोभे उतङ्ग ।।३०

बहु सग जुरे तिनकू बलाय, भक्ती कीनी उर हरष लाय।
बहुविधि पकवान बनाय सार, जौनार दई आनन्द धार ।।३१

सुदी पूनम माघतनी सुजान, पूरण हुयो उत्सव महान।
याहि तिथि कू उत्तम सजोय, यात्रा उत्सव हर साल होय ।।३२

पुनि सदावरत नितप्रति बटत, कोई विमुख जाय नही साधुसत।
यहा देश देश के सघ आय, उत्सव करते पूजन कराय ।।३३

दे दरब करत भडार सोय, कोई करत रसोई मुदित होय।
बहु मर्यादा अद्भुत सु ठाठ, आवे यात्री मुख करत पाठ ।।३४

सवत उणचचास उधचास, वदि अष्टम रवि दिन पौष मास।
ये पूजन विधि कीना बनाय, सज्जन प्रति विनती यही भाय ।।३५

जो भूल चूक तुम भग होय, तुम शुद्ध करो बुधिवान लोय।
गजपथ शिखरमुनि आठ कोड, बलभद्र सात नमि हाथ जोड ।।३६

यह गजपथा शिखर की, पूज रची सुखदाय।
'लालकिशोरी' तुच्छबुध, हाथ जोड शिरनाय ।।३७

ॐ ह्रीं श्री गजपथ सिद्धक्षेत्र से सात बलभद्र और आठ करोड़ मुनि मोक्षपद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जय जय भगवता श्री गजपथा, बदत सता भाव धर।
सुर नर खग ध्यावे भगत बढावै, पूज रचाव प्रीति कर ।।
फल सुरपद पावे अमर कहावै, नरपद पावे शिव पावे।
यह जान सभाई जात्र कराई, जग जस थाई सुख पावे ।।३८

इत्याशीर्वाद ।

श्री मुक्तागिरि पूजा

स्व० कवि जवाहरलाल जी कृत)

मुक्तागिरि तीरथ परम, सकल सिद्ध दातार।
तातें पावन होत निज, नमो शीश कर धार ॥१

ये ही जम्बूद्वीप माहि, भरत क्षेत्र सो जानिए।
आरज सो खड मझार, जाके परम सुन्दर मानिये।
ईशान दिशि अचला जु पुरकी, नाम मुक्तागिरि तहा।
कोडि साढे तीन मुनिवर, शिवपुरी पहुचे जहा ॥२
पारस प्रभु को आदि दे, चौबीसो जिनराग।
पूजो पद जुग पद्म सम, सुर शिवपद सुखराय ।

ॐ ह्री श्री मुक्तागिरि सिद्धक्षेत्र से साढे तीन करोड मुनि मोक्षपद प्राप्तये अत्र अवतर २ सवौषट् आह्वानन। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठः स्थापन। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

परम प्रासुक नीर निर्मल, क्षीर दधि सम लीजिए।
हेम झारी माहि भरके धार सुन्दर दीजिए ॥
तीर्थ मुक्तागिरि मनोहर, परम पावन सुभ कहो।
कोडि साढे तीन मुनिवर, जहाँ ते शिवपुर लहो ॥

ॐ ह्री श्री मुक्तागिरि सिद्धक्षेत्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जल निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन सु पावन दुख मिटावन अति सुगन्ध मिलाइये।
डार कर कर्पूर केसर, नीर सो घिस लाइये। तीर्थ०। चदन
विमल तन्दुल ले अखण्डित, ज्योति निशपति सम धरे।
कनक थारी माहि करके, पूज कर पावन करे। तीर्थ०। अक्षत

सुरवृक्ष के सम फूल लेकर, गन्धकर मधुकर करे ।
मदनकामबाण विनाशवेको, प्रभु चरण पूजा करे । तीर्थ० । पुष्प०
छहो रसकर युक्त नेवज, कनक थारी मे भरो ।
भाव से प्रभु चरण पूजो, क्षुधादिक मन की हरो । तीर्थ० । नैवेद्य
रतनदीप कपूर बाती, ज्योति जगमग होत है ।
मोहतिमिर विनाशबेको, भानु सम उद्योत हैं । तीर्थ० । दीप
कूट मलयगिरि सो चन्दन, अगर आदि मिलाइये ।
ले दशागी धूप सुन्दर, अगन माहि जराइये । तीर्थ० । धूप
ल्याय एला लोग दाडिम, और फल बहुते घने ।
नेत्र रसना लगे सुन्दर, फल अनूप चढाइये । तीर्थ० । फल
जल गन्ध आदिक द्रव्य लेके, अर्घ करले आपने ।
लाय चरन चढाय भविजन, मोक्षफल को पावने । तीर्थ० । अर्घ

जयमाला

दोहा—मुक्तागिरि के शीश पर, बहुत जिनालय जान ।
तिनकी अब जयमालिका, सुनो भव्य दे कान ॥१
श्री मुक्तागिरि तीरथ विशाल, महिमा जाकी अद्भुत रसाल ।
नग पर्वत बीच परे दो कोन, मुक्तागिरि जहाँ सुखको सु भौन ॥२
चढि सिवान जह ऊपर सो भान, दहलाने पर सो सार जान ।
यात्री जहा डेरा करे आय, अति मुदित ह्वै चित उमगाय ॥३
ऊपर शुचि जल सो भरे कुण्ड, जहं सगरे यात्रिन के सु झुण्ड ।
बहुविधि की द्रव्यधरी सो धोय, पूजन को भविजन चले सोय ॥४
जहाँ मन्दिर बीच बने रसाल, पारश प्रभु की मूरत विशाल ।
पूजत जह भविजन हरष धार, भव भव को पुण्य भरे भडार ॥५
बावन जगह दर्शन दिनेश, पूजत जिनवर को सुर महेश ।
इक मन्दिर मे भयो जु सोय, प्रतिमा श्री शातिजिनेश होय ॥६

दर्शन कर नरभव सुफल सोय, जहा जन्म जन्म के पाप खोय।
मेढागिरि का है गुफा भाय, मन्दिर सुन्दर इक सामकाय ॥७
प्रतिमा श्री जिनवर देबराज, दर्शन कर पूरन होय काज।
मेढागिरि के ऊपर सुजान, द्वय टाक बनी अति सौम्यवान ॥८
इक पाड बालक मुनि कषाय, इक भागबली की जान रमाय।
जहा श्री जिनवर के चरण सार, बदत मनबाछित सुखदातार ॥९
बावन मन्दिर जह शोभकार, महिमा तिनकी अद्भुत अपार।
जहँ सुर नाचत नाना प्रकार, जै जै जै जै धुनि उचार ॥१०
थै थै थै अब नाचत सुचाल, अति हर्ष सहित नित नमत भाल।
मुहचग उपग सु तूर सजे, मुरली स्वर बीन प्रवीन बजे ॥११
दृम दृम दृम दृम बाजत मृदग, झननननननन नूपुर सुरग।
तननननननन परे तसु तान, घननननन घण्टा करत ध्वान ॥१२
इहिविधि वादित्र बाजे अपार, सुर गावत अब नाना प्रकार।
अतिशय जाके है अति विशाल, जहा केशर अब बरसे त्रिकाल ॥१३
अनहद नित बाजे बजे अपार, सुर गावत अब नाना प्रकार।
तहा मरुत मन्द सुगन्ध सोय, जिय जात जहाँ न विरोध होय ॥१४
अतिशय है जह नाना प्रकार, भविजन हिय मे अति हरष धार।
जहा कोउ जु साढ तीन मान, मुनि मोक्ष गये सुनिए सुजान ॥१५
बन्दत जवाहर अब बार बार, भवसागर से प्रभु तार तार।
प्रभु अशरन शरन अधार धार, अब विघ्न तूल गिरि जार जार ॥१६
तू धन्य देव कृपा निधान, अज्ञान मिथ्यातम हरन भान।
प्रभु दयासिंधु जै जै महश, भव बाधा अब मेटो जिनेश ॥१७
मै बहुत भ्रम्यो चिरकाल काल, अब हो दयाल मुझ पाल पाल।
तातै मैं तुमरे शरण आय, यह अरज करू हम शीश नाय ॥१८

मम कर्म देउ तुम चूर चूर, आनन्द अनूपम पूर पूर।

ॐ ह्री श्री मुक्तागिरि सिद्ध क्षेत्र से तीन करोड मुनि सिद्धपद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति।

मुक्तागिरि पूजे अति सुख हूजे, ऋद्धि होय है भवपुरी।
अतिकर्म विनाशे ज्ञान प्रकाशे, शिव पदवी को सुखकारी।
अठरा सो इक्यानवे, बैसाख माम तम लीन।
तिथि दशमी शनिवार को, पूजा पूरण कीन॥२०॥

इत्याशीर्वाद।

श्री तुँगीगिरि पूजन

(श्रीयुत स्व० प० सवाई सिघई गोपालसाहजी कृत)

सिद्धक्षेत्र उत्कृष्ट अति, तुङ्गीगिरि शुभ थान।
मुकति गये मुनिराज जे, ते तिष्ठहु इत आन॥.

ॐ ह्री श्री मागीतुंगी सिद्धक्षेत्र से राम, हनु, सुग्रीव, सुडील गव, गवाख्य, नील, महानील और निन्यानवे करोड मुनि मोक्षपद प्राप्त अत्र अवतर २ स वौषट् आह्वानन। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ स्थापन। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

गङ्गाजल प्रासुक भर झारी, तुव चरनन ढिग धारो।
परिग्रह तिसना लगी आदीकी, ताको ह्वै निरवारो॥
राम हनू सुग्रीव आदि जे, तुङ्गीगिरि थित थाई।
कोडि निन्यानवे मुकत गये मुनि, पूजों मन वच काई॥

ॐ ह्री श्री तुङ्गीगिरि सिद्धक्षेत्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

चन्दन केसर गार भली विधि, धार देत पग आगे।
भव भरमन आताप जासते, पूजत तुरतहि भागे।
राम हनू सुग्रीव आदि जे, तुङ्गीगिरि थित थाई।
कोडि निन्यानवे मुकत गये मुनि, पूजो मन वच काई।
ॐ, ह्रीं श्रीतुंगीगिरि सिद्धिक्षेत्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय चंदन नि०
मुक्ताफल सम उज्ज्वल अक्षत, थार धारकर पूजों।
अक्षयपदकी प्रापति कारन, या सम और न दूजो। राम०। अक्षत
कमल केतकी बेल चमेली, तापर अलि गुञ्जावे।
पुष्पनसो अरचो तुम चरनन, कामविथा मिट जाव। राम०। पुष्प
गूजा खाजे व्यञ्जन ताजे, तुरतहिं घृत उपराज।
दृग सुखकारन सन्मुख धारे, क्षुधावेदनी भाजे। राम०। नैवेद्य
दीप रतनकर सुरपति पूजत, हम कपूर धर खासे।
नाशे मिथ्यातम अनादिका, ज्ञान भानु परकाशे। राम०। दीप
अगर तगर कृष्णागरु चन्दन, जे सुवास मन भावे।
खेवत धूप धूमके मिसकर, दुष्ट करम उड़ जावे। राम०। धूप
श्रीफल पुङ्गी शुची नारङ्गी, केला आम्र सुवासो।
पूजत अष्ट करम दल धूजत, पाऊ पद अविनाशी। राम०। फल
जल फलादि वसु दरब साजके, हेमपात्र भर लाऊ।
मनवचकाय नमू तुव चरना, बार बार शिरनाऊ। राम०। अर्घ

जयमाला—दोहा

राम हनू सुग्रोव आदि जे, तुङ्गीगिर थ॰ थाय।
कोडि निन्यानवे मुकति गये मुनि, पूजो मनवचकाय॥
तुम पद प्रापत कारने, सुमरो तुम गुणमाल।
मति माफक वरनन करो, सार सुभग जयमाल॥१

धन्य धन्य मुनिराज, कठिन व्रतधारी।
भव भव मे सेवा चरन मिले मोहि थारी।

दो पर्वत हैं अति तुङ्ग चूलिका भारी।
मानो मेरु शिखर उनहार दृषन सुखकारी ॥२

पहलो है मागी नाम तुङ्गी है दूजो।
जहाँ चढत जीव थक जात करम चिर चूरो।
अति सुन्दर मन्दिर लखत भई सुध म्हारी।
भव भवमे सेवा चरन मिले मोहि थारी ॥३

जहाँ राम हनू सुग्रीव सु खग बलधारी।
अरु गव गबाक्ष महानील नील अघहारी।
इन आदि निन्यानवे कोडि मुनि तप कीना।
लयो पञ्चमगति को बास बहुरि गति रहो ना।
मै पूजो त्रिकरन शुद्ध नसे अघ भारी।
भव भव मे सेवा चरन मिले मोहि थारी ॥४

तुम विरत अहिसा लिया दया के कारन।
ता पोखन को बच झूठ किया निरवारन।
पुनि भये अदत्ता वस्तु सरब के त्यागी।
नव बाढ सहित व्रत ब्रह्मचर्य अनुरागी।
चउबीस परिग्रह त्याग भये अनुरागो।
भव भव मे सेवा चरन मिले मोहि थारी ॥५

षट्काय दया के हेतु निरख भू चाले।
वच शास्त्र उकत अनुसार असत को टाले।
भोजन के षट् चालिस दोष निरवारे।
लख जन्तु वस्तु को लेय देख भू धारे।
पन करन विषै चकचूर भये अविकारी।
भव भव मे सेवा चरन मिले मोहि थारी ॥६

षट् आवश्यक नित करे नेन निरवाहे।
तज न्हवन क्रिया जलकाय घात ना चाहे।

निज करसो लुंचे केश राग तन भाखी।
बालकवत निर्भय रहे वस्त्र के त्यागी।
कभी दन्तधवन नहीं करे दया व्रतधारी।
भव भवमे सेवा चरन मिले मोहि थारी।।७

बिन जाचे भोजन लेय उदण्ड अहारी।
लघु भुक्ति करे इक बार तपी अधिकारी।
जामे आलस नहि बढ रोग ह्वै हीना।
निशि दिन रस आतम चखे करे विधि छीना।
कर घात करम चउ नाश ज्ञान उजयारी।
भव भवमे सेवा चरन मिले मोहि थारी।।८

दे भव्यन को उपदेश अघाती जारे।
भये मुकति रमा के कंत अष्ट गुण धारे।
तिन सिद्धनि को मैं नमो सिद्ध के काजा।
सिधथल मे दे मुह वास त्रिजग के राज।
नावत नित माथ 'गुपाल' तुम्हे बहु भारी।
भव भवमे सेवा चरन मिले मोहि थारी।।९

ॐ ह्री श्री मागीतुङ्गी सिद्ध क्षेत्र से राम हनू सुग्रीव सुडील गव गवाख्य नील महानील और निन्यानवे करोड मुनि मोक्षपद प्राप्तये पूर्णार्घ नि०।

तुम गुनमाला परम विशाला, जो पहरे नित भव्य गले।
नाशे अघजाला ह्वै सुखहाला, नितप्रति मङ्गल होत भले।

इत्याशीर्वादः।

श्री शत्रुञ्जय पूजा

(श्रीयुत भगोतीलालजी कृत)

श्री शत्रुञ्जय शिखर अनूप, पाडव तीन बडे शुभ भूप ।
आठकोडि मुनि मुक्ति प्रधान, तिनके चरण नमू धर ध्यान ।
तहा जिनेश्वर बहुत सरूप, शान्ति शुभ मूल अनूप ।
तिनके चरण नमू त्रिकाल, तिष्ठ तिष्ठ तुम दीनदयाल ।।२

ॐ ह्री श्रीशत्रुञ्जय सिद्धक्षेत्र से आठ कोडि मुनि और तीन पाडव मोक्षपद प्राप्त अत्र अवतर २ ।वौषट् आह्वानन । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ स्थापन । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

क्षीरोदधि नीर उज्ज्वल सीर, गन्ध गहीर ले आया ।
मै सन्मुख आया धार दिवाया, शीश नवाया खोल हिया ।।
पाडव शुभ तीन सिद्ध लहीन, आठकोडि मुनि सिद्ध गये ।
श्रीशत्रुञ्जय पूजा सन्मुख हूओ, शातिनाथ शुभ मूलनये ।।

ॐ ह्री श्री शत्रुञ्जय सिद्धक्षेत्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जल निर्वपामीति स्वाहा ।।१

मलयगिरि लाऊ गध मिलाऊ, केशरडारी रगभरी ।
जिनचरन चढाऊ समुख जाऊ व्याधि नसाऊ तपत हरि । पाड० ।चदन
तन्दुल शुभ चोखे बहुत अनोखे, लखि निर्दोखे पुञ्ज धरू ।
अक्षयपद दीजो सब सुख कीजो, निजरस पीजो चरण परू ।पाड०।अक्षत
शुभ फूल सुवासी मधुर प्रकाशी, आनन्दरासी ले आयो ।
मोकाम नसाया शील बढायो, अमृत छायो सुखपायो । पाडव० । पुष्प
नेवज शुभ लाया थार भराया, मगल गाया भक्तिकरी ।
मो क्षुधा नशाया सुख उपजाया, ताल बजाया सेव करी । पाड० । नैवेद्य

दीपक ले आया जोति जगाया, तुम गण गाया चरण परू।
मैं शरणे आया शीश नवाया, तिमिर नशाया नृत्य करु।
पांडव शुभतीन सिद्ध लहीमं, आठकोडि मुनि मुक्ति गये।
श्री शत्रुञ्जय पूजो सन्मुख हूजो, शातिनाथ शुभ मूलनये।
ॐ ह्री श्रीशत्रुजय सिद्धक्षेत्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय दीप निर्व०
दशगन्ध कुटाई धूप बनाई, अग्नि डार जिन अग्र धरो।
तुम कर्म जराई शिव पहुचाई, होय सहाई कष्ट हरो। पाडव०। धूप
फल प्रासुक चोखे बहुत अनोखे, लख निर्दोखे भेट धरू।
सेवक की अरजी चितमे धरजी, कर अब मरजी मोक्ष वरू। पाड०।फल
वसु द्रव्य मिलाई थार भराई, सन्मुख आई नजर करी।
तुम शिव सुखदाई धर्म बढाई, हर दुखदाई अर्घ करो। पाडव । अर्घ०
दोहा—पूरण अर्घ बनाय कर, चरणन मे चित लाय।
भक्तिभाव जिनराज की, शिव रमणी दरशाय। पूर्णार्घ०

जयमाला

जय नमन करू शिर नाय, मोकू वर दीजे है जिनाय।
तुम भक्ति हिये मे रही छाय, सो उमग उमग अरु प्रीत लाय ॥१
जय तुम गुण महिमा है अपार, नहि कवि पडित जन लहे पार।
जय तुच्छबुद्धि मैं करत गान, तुम भक्ति हिये मे रही आन ॥२
जय श्री शत्रुञ्जय शिखर जोय, निर्वाण भूमि जानो जो सोय।
जहा पाडव तीन जु मुक्ति होय जय राय युधिष्ठिर भीम जोय ॥३
जय अरजुन जानो धनुष धीर, तासम नहि जाने कोई वीर।
जय आठकोडि मुनि और सोय, तिन वरी नारि रम्भा जु लोय ॥४
जय सही परीषह बीस दोय, जय यथाख्यात चारित्र होय।
जय कायर कपे सुनो जोय, वे ध्यानारूढ भये जु सोय ॥५
जय बारह भावन भाव सोय, तेरह विधि चारित धरो सोय।
जय कर्म करे चकचूर जोय, अरु सिद्ध भये ससार खोय ॥६

जय सेवक जन की करहु सोय, जय दर्शन ज्ञान चरित्र होय।
जय रूलों नही ससार माय, अरु थोडे दिन में मुक्ति पाय ॥७
जब धर्मचन्द' मुनीम सोय, मो अल्प बुद्धिसौ मेल होय।
वे धर्मीजन हैं बहुत जोय, सो कही उन्होने मोहि सोय ॥८
तुम शत्रुञ्जय पूजा बनाय, तो बाचे भविजन प्रीति लाय।
जय 'लाल भगोतीलाल' मोय, तिन रचो पाठ पूजन जु सोय ॥६
जय घाट बाढ कछु अर्थ होय, शोधो सभार जैसे जु सोय।
जय भूल चूक जामें जु होय, सो पडितजन शोधो जु लोय ॥१०
जय सम्बतशत गुन ईश जोय, अरु ता ऊपर गुनचास होय।
जय पौष सुदी द्वादस जु होय, अरु बार शुक्र जानो जु सोय ॥११
जय सेवक बिनवे जोर हाथ, मो मिले अखयपद वेग नाथ।
जय चाह रही नही और कोय, भवसिंधु उतारो पार मोय ॥१२
सोरठा—भक्ति भाव उर लाय, करके जिनगुण पाठको।
मगल आरती गाय, चरणन शीश नवाय के ॥

ॐ ह्री शत्रुञ्जय सिद्धक्षेत्र से तीन पाडव और आठ कोडि मुनि मोक्षपद प्राप्तये महार्घ नि०।

गीता—हरषाय गाय जिनेन्द्र पूजू, कृत कारित अनुमोदना।
शुभ पुण्य प्रापति अर्थ तिनकी, करी बहु विधि थापना ॥१३
जिनराज धर्म समान जग मे, और नाही हित घना।
ताते सुजानो भव्य तुम, नित पाठ पूजन भावना ॥१४
इत्याशीर्वाद।

श्री कुंथलगिरि पूजा

(श्री कन्हैयालालजी कृत)

तीरथ परम पवित्र अति, कुथ शैल शुभ थान।
जह ते मुनि शिवथल गये, पूजो थिर मन आन ॥

ॐ ह्रीं श्री कुथलगिरि सिद्धक्षेत्र से कुलभूषण देशभूषण मुनि मोक्षपद प्राप्त अत्र अवतर २ सवौषट् आह्वानन। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठ स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

उत्तम उज्ज्वल नीर क्षीर सब छानके।
कनक पात्र मे धार देत त्रय आनके॥
पूजो सिद्ध सु क्षेत्र हिये हरषाय के।
कर मन वच तन शुद्ध करमवश टारके॥

ॐ ह्रीं श्री कुथलगिरि सिद्धक्षेत्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जल

चदन दाह निकन्दन केशर गारके।
अरचो तुम ढिग आय शुद्ध मन धारके। पूजो०। चन्दन
तन्दुल सोम समान अखण्डित आनके।
हाटक थार भराय जजो शिर नायके। पूजो०। अक्षत
सुरद्रुम सम जे पुष्प सुगन्धित लायके।
दहन काम पन वाण धरौ सुख पायके। पूजो०। पुष्प
व्यञ्जन विविध प्रकार पगे घृत खाडके।
अरपत श्री जिनराज छुधा ढिग छाडके। पूजो०। नैवेद्य
कनक थार मे धार कपूर जलाय के।
बोध लह्यो तम नाश मिथ्या भ्रम जालके। पूजो०। दीप।
अगर आदि दश वस्तु गन्ध जुत मेलके।
करम दहन के काज दहौ ढिग शैलके। पूजो०। धूप
फल उत्कृष्ट सु मिष्ट जे प्रासुक लायके।
शिवफल प्रापति काज जजो उमगायके। पूजो०। फल
जल फलादि वसु दरब लेय थुत ठानके।
अर्घ जजो तुम पाय हरष मन आनके। पूजो०। अर्घ

जयमाला

तुम गुन अगम अपार गुरु, मैं बुधि कर हो बाल।
पै सहाय तब भक्तिवश, वरनत तुव गुणमाल ॥१

कुल ऊच रायसुत अति गम्भीर, कुलभूषण दिशभूषण है वीर।
लख राज-ऋद्धिको अति असार, वय बाल माहि तप कठिन धार ॥२
द्वादश विधि व्रतको सहत पीर, तेरह विधि चारित धरत बीर।
गुन मूल बीस अरु आठ धार, सहे परिसह दश अरु आठ चार ॥३
भू निरखि जतु तित कर विहार, धर्मोपदेश देते विचार।
मुनि भरमत पहुचे कुंथ शैल, पाहन तरु कटक कठिन गैल ॥४
निर्जन वन लख भये ध्यान लीन, सुर पूरव अरि उपसर्ग कीन।
बहु सिह सरप अरु दैत्य आय, गरजत फुकारत मुख चलाय ॥५
तहा राम लखन सीता समेत, ता दिन थिति कीनी थी अचेत।
मुनिपर वेदन यह लखत घोर, दोउ वीर उचारे वच कठोर ॥६
रे देव ! दुष्ट तू जाति नीच, मुनि दुखित किए तुझ आई मीच।
हम आगे तू कित भाग जाय, तुह देहे दुष्कृत की सजाय ॥७
यह कह दोऊ कर धनुष धार, हरि बल लख सुर डरपौ अपार।
तब भान सोख मुनिचरण धार, ता छिन घाते विधि घाति चार ॥८
उपजत केबल सुरकलप आय, रचि गधकुटी पर शीश नाय।
सुन निज भवसुर आनन्द पाय, जुग विद्या दे निज थल सिधाय ॥९
प्रभु भाखे दो विधि धर्म सार, सुन धारे जिनते भये पार।
मुनिराज अघाति घात कीन, गतिपचम थित अचल लीन ॥१०
पूजा सुर निरवान कीन, गत ऊच तनो फल सुफल लीन।
भव भरमत हम दुख पाय, पूजे तुम चरण चितलाय ॥११
अरजी सुन कीजे मेहर आप, तासो विनसे भव भ्रमन ताप।
बिनवे अधिकी क्या 'बनईलाल', दुख मेट सकल सुखदेव हाल ॥१२

ॐ ह्रीं श्री कुंथगिरि सिद्ध क्षेत्र से कुलभूषण देशभूषण मुनि मोक्ष-पद प्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति ।

तुम दुख हरता सब सुख करता, भरता शिवतिय मोखपति ।
मैं शरनै आयो तुम गुन गायो, उमगायो ज्यो हूती मती ॥१३

इत्याशीर्वाद ।

श्री सोनागिरि पूजा

अडिल्ल—जम्बू द्वीप मझार भरत क्षेत्र सु कहो ।
आर्य खण्ड शुभ जान, भद्रदेश लहो ॥
सुवर्णगिरि अभिराम सुपर्वत है तहा ।
पञ्चकोडि अरु अर्द्ध गये मुनि शिव जहा ॥१

दोहा—सोनागिरि के शीश पर, बहुत जिनालय जान ।
चन्द्रप्रभू जिनआदि दे, पूजो सब भगवान ॥२

ॐ ह्रीं श्री सोनगिरि क्षेत्रान्मुक्त जिनसमूह अत्रावतरावतर सवौषट् आह्वानन । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठ स्थापन । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

पद्मद्रह को नीर ल्याय गङ्गा से भरके ।
कनक कटोरी माहि हेम थारन मे धरके ॥
सोनागिरि के शीश भूमि निर्वाण सुहाई ।
पञ्चकोडि अरु अर्द्ध मुक्ति पहुचे मुनिराई ॥
चन्द्रप्रभु जिन आदि सकल जिनवर पद पूजो ।
स्वर्ग मुक्ति फल पाय जाय अविचल पद पूजो ॥

दोहा—सोनागिर के शीश पर, जेते सब जिनराज ।
तिनपद धारा तीन दे, तृषा हरण के काज ॥

ॐ ह्रीं श्री सोनागिरि निर्वाणक्षेत्रेभ्यो जल ।१

केशर आदि कपूर मिले मलयगिरि चन्दन।
परिमल अधिकी तास और सब दाह निकन्दन।
सोनागिरि के शीश पर, जेते सब जिनराज।
ते सुगन्धकर पूजिये, दाह निकन्दन काज। चन्दन।२
तन्दुल धवल सुगन्ध ल्याय, जल धोय पखारो।
अक्षय पद के हेतु पुञ्ज द्वादस तहा धारो।
सोनागिरि के शीश पर, जेते सब जिनराज।
तिन पद पूजा कीजिये, अक्षय पद के काज। ८ क्षत।३
बेला और गुलाब मालती कमल मगाये।
पारिजात के पुष्प ल्याय, जिन चरण चढाये।
सोनागिरि के शीश पर, जेते सब जिनराज।
ते सब पूजो पुष्पले, मदन बिनाशन काज। पुष्प।४
व्यञ्जन जो जगमाहि खाड घृत माहि पकाये।
मीठे तुरत बनाय, हेम थारी भर ल्याये।
सोनागिर के शाश पर, जते सब जिनराज।
ते पूजो नैवेद्य ले, क्षुधा हरण के काज। नैवेद्य।५
मणिमय द्वीप प्रजाल, धरो पङ्कति भर थारी।
जिन मन्दिर तम हार करहु दर्शन नरनारी।
सोनागिरि के शीश पर, जेते सब जिनराज।
करो दीप ले आरती, ज्ञान प्रकाशन काज। दीप।६
दशविधि धूप अनूप लेय भाजन मे डाबो।
जाकी धूप सुगन्ध रहे भर सर्व दिशालो।
सोनागिरि के शीश पर, जेते सब जिनराज।
धूप कुम्भ आगे धरो, कर्म दहन के काज। धूप।७
उत्तम फल जगमाहि बहुत, मीठे अरु पाके।
अमित अनार अचार आदि, अमृत रस छाके।

सोनागिरि के शीश पर, जेते सब जिनराज ।
उत्तम फल तिन ले मिलो, कर्म विनाशन काज ।
ॐ ह्रीं श्री सोनागिरि निर्वाणक्षेत्रेभ्यो । फलं ।८
जल आदिक वसु द्रव्य अर्घ करके धर नाचो ।
बाजे बहुत बजाय, पाठ पढ के मुख साचो ।
सोनागिरि के शीश पर, जेते सब जिनराज ।
ते हम पूजें अर्घ ले, मुक्ति रमण के काज । अर्घ ।९

जयमाला

दोहा—सोनागिरि के शीश पर, जिन मन्दिर अभिराम ।
तिन गुणको जयमालिका, वर्णत 'आशाराम' ।।१
गिरि नीचे जिनमन्दिर सुचार, ते बलिन रचे शोभा अपार ।
तिनके अति दीरघ चौक जान, जिनमे यात्रा मेले सु आन । २
गुम्बज छज्जे शोभित अनूप, ध्वज पकति सोहै विविध रूप ।
वसुप्रातिहार्य तहा धरे आन, सब मगलद्रव्यनि की सुखान ।।३
दरवाजो पर कलशा निहार, करजोर सुजय जय ध्वनि उचार ।
इक मन्दिर मे यति राजमान, आचार्य विजयकीर्ति सुजान ।४
तिन शिष्य भगीरथ बिवुध नाम, जिनराज भक्ति नहि और काम ।
अब पर्वतको चढ चलो जान, दरवाजा तहा इक शोभमान ।।५
तिस ऊपर जिन प्रतिमा निहार, तिन बदि पूज आगे सिधार
तहा दुखित भुखित को देत दान, याचकजन तहा अप्रमाण ।।६
आगे जिन मन्दिर दुहू ओर, जिन गान होत वादित्र शोर ।
माली बहु ठाडे चौक पौर, ले हार कलङ्गी देत दौर ।।७
जिन-यात्री तिनके हाथ माँहि, बखशीश रीझ तहाँ देत जाहि ।
दरवाजो तहाँ दूजो विशाल, तहाँ क्षेत्रपाल दोउ ओर लाल ।।८
दरवाजो भीतर चौक माँहि, जिन भवन रचे प्राचीन आहि ।
तिनकी महिमा बरणी न जाय, दो कुण्ड सुजलकर अति सुहाय ।।९

जिन मन्दिर की वेदी विशाल, दरवाजो तीजो बहु सुढाल।
ता दरवाजे पर द्वारपाल, ले लकुट खड़े अरु हाथ माल ॥१०

जे दुर्जन को नही जान देय, ते निबक को ना दरश देय।
चल चन्द्रप्रभ के चौक मांय, दालान तहाँ चोतर्फ आय ॥११

तहाँ मध्य सभामडप निहार, तिसकी रचना नाना प्रकार।
तहाँ चन्द्र प्रभ के दरश पाय, फलजात लही नर जन्म आय ।१२

प्रतिमा विशाल तहाँ हाथ सात, कायोत्सर्ग मुद्रा सुहात।
वन्दे पूजे तहाँ देय दान, जन नृत्य भजनकर मधुर गान ॥१३

ताथेई थेई थेई बाजत सितार, मिरदग बीन मुहचग सार।
तिनकी ध्वनि सुन भवि होत प्रेम, जयकार करत नाचत सुएम। १४

ते स्तुति कर फिर नाय शीश, भवि चले मनो कर कर्म सीख।
यह सोनागिरि रचना अपार, वरणन कर को कवि लहै पार ॥१५

अति तनक बुद्धि 'आशा' सुपाय, वश भक्ति कही इतनो सुगाय।
मैं मन्दबुद्धि किमि लही पार, बुधिवान चूक लीजो सुधार ॥१६

सोनागिरि जयमालिका, लघुमति कही बनाय।
पढे सुने जो प्रीत से, सो नर शिवपुर जाय ॥१७

ॐ ह्रीं श्री सोनागिरि निर्वाणक्षेत्रे पूर्णार्घ नि०।

अडिल्ल—श्री जिनवर की भक्ति सो जे जन करत है।
फल बाछा कुछ नाहिं प्रेम उर धरत हैं॥
ज्यो जगमाहिं किसान सु खेती को करे।
नाज काज जिय जान सुशुभ आपही झरे॥
ऐसे पूजादान भक्तिवश कीजिये।
सुख सम्पति गति मुक्ति सहज कर लीजिये॥

इत्याशीर्वादः।

श्री खंडगिरि क्षेत्र पूजा

(मुनीम श्री मुन्नालालजी कृत)

अङ्गबग के पास है देश कलिंग विख्यात।
तामे खण्डगिरि बसत हैं वर्णन भये सुखात ॥१

जसरथ राजा के सुत अतिगुणवान थी।
और मुनीश्वर पञ्च सेकड़ा जान थी ॥
अष्टकरम कर नष्ट मोक्षगामी भये।
तिनके पूजहु चरण सकल मम मल वये ॥२

ॐ ह्री श्री कलिङ्गदेश मध्ये खण्डगिरी जी सिद्ध क्षेत्र से सिद्धपद प्राप्त दशरथ राजा के सुत पञ्चशतक मुनि अत्र अवतर २ । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक—अति उत्तम शुचि जल ल्याय, कञ्चन कलश भरा।
कर धार सु मन वच काय, नाशत जन्म जरा ॥
श्री खण्डगिरि के शीशजसरथ तनय कहे।
मुनि पञ्चशतक शिवलीन देश कलिङ्ग दहे ॥

ॐ ह्री श्री खण्डगिरि क्षेत्र से दशरथ राजा के सुत तथा पाच-शतक मुनि सिद्धपदप्राप्तेभ्यो जन्मजरामृत्यु बिनाशनाय जल निर्व० ।

केशर मलयागिरि सार, घिसके सुगन्ध किया।
ससार ताप निरवार, तुम पद वसत हिया ।२। श्री० । चदन०

मुक्ताफल की उनमान, अक्षत शुद्ध लिया।
मम सर्व दोष निरवार, जिनगुण मोय दिया ।३। श्री० । अक्षत०

ले सुमन कल्पतरु थार, चुन चुन ल्याय धरू।
तुम पद ढिग धरतहि वाण काम समूल हरू ।४। श्री० ।पुष्पं०

लाडू घेवर शुचि ल्याय, प्रभुपद पूजन को।
थाल चरनन ढिग आय, ममक्षुध नाशन को।३। श्री० नैवेद्य
ले मणिमय दीपक थार, दोउ कर जोड धरो।
मम मोह अधेर निवार, ज्ञान प्रकाश करो।५। श्री०। दीप०
ले दशविधि गन्ध कुटाय, अग्नि मझार धरू।
मम अष्ट करम जल जाय, याते पाय परू।श्री०। धूप०
श्रीफल पिस्ता सु बादाम, आम नारगि धरू।
ले प्रासुक हेम के थार, भवतर मोक्ष वरू। श्री०। फल०
जल फल वसु द्रव्य पुनीत, लेकर अर्घं करू।
नाचू गाऊ इहभाँति, भवतर मोक्षवरू। श्री०। अर्घ्यं०

जयमाला

देश कलिंग के मध्य है, खण्डगिरि सुखधाम।
उदयगिरि तसु पास है, गाऊ जय जय धाम॥

श्री सिद्ध खण्डगिरि क्षेत्रपात, अति सरल चढाइ ताकी सुजात।
अति सघन वृक्ष फल रहे आय, ताकी सुगन्ध दसदिश जु छाय॥
ताके सुमध्य मे गुफा आय, तब मुनि सुनाम ताको कहाय।
तामे प्रतिमा दश योग धार, पद्मासन हैं हरि चवर ढार॥
ता दक्षिण हैं सु गुफा महान, तामे चौबीसो भगवान आन।
प्रतिप्रतिमा इन्द्र खडे दुओर, कर चवर घरे प्रभुभक्ति जोर॥
आजू बाजू खडि देवि द्वार, पद्मावति चक्रेश्वरी सार।
करि द्वादश भुजि हथियार धार मानहू निदक नहिं आवें द्वार॥
ताके दक्षिण चलि गुफा आय, सतबखरा है ताको कहाय।
तामे चौबीसो बनो सार, अरु त्रय प्रतिमा सब योग धार॥
तामे हरि चमर सु धरहि हाथ, नित आय भव्य नावहि सुमाथ।
ताके ऊपर मन्दिर विशाल, देखत भविजन होते निहाल॥

ता दक्षिण टूटी गुफा आय, तिनमे ग्यारह प्रतिमा सुहाय ।
पुनि पर्वत के ऊपर सु जाय, मन्दिर दीरघ बन रहा भाय ।।
तामे प्रतिमा मुनिराज मान, खड्गासन योग धरे महान ।
ले अष्टद्रव्य तसु पूज कीन, मन व च मन करि भव धोक दीन ।।
मानो जन्म सफल अपना सुभाय, दर्शन अनूप देखो है आय ।
अब अष्टकरम होगे चूर चूर, जाते सुख पावे पूर पूर ।।
पूरब उत्तर द्वय जिन सुधाम, प्रतिमा खड्गासन अति तमाम ।
पुनि चवनरा मे प्रतिमा बनीय, वे चार भुजी है दर्शनीय ।।
पुनि एक गुफा मे बिम्बसार, ताकी पूजनकर फिर उतार ।
पुनि और गुफा खाली अनेक, ते है मुनिजन के ध्यान हेत ।।
पुनि चलकर उदयागिरि सुजाय, भारी भारी है गुफा लखाय ।
एक गुफा मे बिम्ब विराजमान, पद्मासन धर प्रभु करत ध्यान ।।
ताको पूजत मन वचन काय, सो भवभव के दुख जाये पलाय ।
जिनमे एक हाथी गुफा महान, तामे इक लेख विशाल धाम ।।
पुनि और गुफा मे लेख जान, पढते जिनमत मानत प्रधान ।
तह जसरत नृपके पुत्र आय, सगमुनि पञ्चशतक जु ध्याय ।।
तप वारह विधि का यह करत, बाईस परीषह वह सहत ।
पुनि समिति पञ्चयुत चले सार, दोषा छचालिस टल कर अहार ।।
इस विधि तप दुद्धर करत जोय, सो उपजे केवलज्ञान सोय ।
सब इन्द्र आय अति भक्तिधार, पूजा कीनी ानन्द धार ।।
पुनि धर्मोपदेश दे भव्य सार, नाना देशन कर विहार ।
पुनि आय याहि शिखर थान, सो ध्यान योग्य अघाति हान ।।
भये सिद्ध अनन्ते गुणनि इस, तिनके युगपदपर धरत शीष ।
तिन सिद्धन को पुनि २ प्रणाम, सो सुक्खलेय अविचल सुधाम ।
बन्दन भवदुख जावे पलाय, सेवक अनुक्रम शिवपद लहाय ।
ता क्षेत्रको पूजत मैं त्रिकाल, कर जोड नमत है मुन्नालाल ।।

घत्ता-श्री खण्डगिरि क्षेत्र, अति सुख देत तुरतहि भवदधि पार करे।
जो पूजे ध्यावे करम नसावे, वाछित पावे मुक्ति वरे ॥
ॐ ह्री श्री खण्डगिरि सिद्धक्षेत्राय जयमाला अर्घ्यं निर्व० ।
श्रीखण्डगिरि उदयगिरि, जो पूजे त्रिकाल ।
पुत्र पौत्र सपति लहे, पावे शिवसुख हाल ॥

इत्याशीर्वाद ।

श्री सिद्धवरकूट पूजा

(स्व० भट्टारक महेन्द्रकीर्त्तिजी कृत)

सिद्धकूट तीरथ महा है उत्कृष्ट सुजान ।
मन वच काया कर नमो, होय पाप की हान ।१।
दो चक्रि मन्मथ जु दस, गये तह ते निर्वान ।
पद पङ्कज तिनके नमो, हरे कर्म बलवान ।२।
रेवाजी के तटनते, हूठ कोडि मुनि जान ।
कर्म काट तह ते गये, मोक्षपुरी शभथान ।३।
जगमे तीर्थ प्रधान है, सिद्धवर कूट महान ।
अल्पमति मे किम कहो, अद्भुत महिमा जान ।४।
इन्द्रादिक सुर जाय, तहा वन्दन करे ।
नगपति तह आय, बहुत थुति उच्चरे ।
नरपति नितप्रति जाय, तहा बहु भावसो ।
पूजन करहि त्रिकाल, भगत बहु चावसो ।

ॐ ह्री श्री सिद्धवरकूट से दो चक्री दश काम कुमारादि साढे तीन करोड मुनि सिद्धपद प्राप्त अत्र अवतर २ संवौषट् आह्वानन । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ स्थापन अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

उत्तम रेवा जल ल्याय, मणिमय भर झारी।
प्रभु चरनन देउ चढाय, जन्म जरा हारी।।
द्वय चक्री दश कामकुमार, भवतर मोक्ष गये।
तातें पूजो पद सार, मनमे हरष ठये।।
ॐ ह्रीं श्रीसिद्धवरकूट सिद्धक्षेत्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जल०
मलयागिरि चन्दन ल्याय, केशर शुभ डारो।
प्रभु चरनन देत चढाय, भव भव दुखहारी।द्वयचक्री०। चदन
तन्दुल उज्ज्वल अविकार, मुक्तासम सोहे।
भरकर कञ्चनमय थाल सुर नर मन मोहे।द्वयचक्री। अक्षत
ले पहुपसुगन्धित सार, तापर अलि गाजे।
जिन चरनन देत चढाय, कामव्यथा भाजे।द्वयचक्री। पुष्प
नेवज नाना प्रकार, षट्रस स्वाद मई।
पद पङ्कज देउ चढाय, सुवरन थार लई।
मणिमय दीपक को ल्याय, कदली सुत बाती।
ज्योति जगमग लहकाय, मोह तिमिर घाती।द्वयचक्री०। दीप
कृष्णागरु आदिक ल्याय, धूप दहन खेई।
वसु दुष्ट करम जर जाय, भव भव सुख लेई।द्वयचक्री। धूप
श्रीफल दाख बदाम, केला अमृत मई।
लेकर बहुफल सुखधाम, जिनवर पूज ठई।द्वयचक्री०। फल
जल चन्दन अक्षत लेय, सुमन महा प्यारी।
चरु दीप धूप फल सोय, अर्घ करो भारी।द्वयचक्री० अर्घ्यं

जयमाला

दोहा—सिद्धवर कूट सुथानकी, रचना कहू बनाय।
अति विचित्र रमनीक अति, कहत अल्प कर भाय।१

जय पर्वत अति उन्नत विशाल, तापर त्रय मन्दिर शोभकार।
तामे जिनबिम्ब विराजमान, जय रतनमई प्रतिमा बखान।२
ताकी शोभा किम कहे सोय, सुरपति मन देखत थकित होय।
तिन मन्दिरकी दिशि चार जान, तिनकू वरनू अब प्रीति ठान।३
ताकी पूरव दिशि ताल जान, तामे सुकमल फूले महान।
कमलन पर मधुकर भ्रमे जोय, ता धुनिकरि पूरित दिशा होय।४
ता सरवर पर नाना प्रकार, द्रुम फूल रहे अति शोभकार।
छह ऋतु के फल फूले फलाय, ऋतुराज सदा क्रीडा कराय।५
मन्दिरकी दक्षिण दिशा सार, सुन नदी बहे रेवा जु सार।
ताके तट दोनो अति पवित्र विद्याधर बहु विधि करे नृत्य।६
फिर तहते उत्तर दिशा जान, इक कुण्ड बना है शोभमान।
ता कुण्ड बीच यात्री नहाय, तिन बहुत जन्म के पाप जाय।७
ता कुण्ड जु ऊपर अति विचित्र, इक पाडुशिला है पवित्र।
तिस थान बीच देवेन्द्र सोय, जिनबिम्ब धरे है शीश जोय।८
ताकी पश्चिम दिशि अति विशाल, कावेरी सोभै अति रसाल।
इन आदि मध्य जे भूमि जान, जय स्वयसिद्ध परवत महान।९
तापर तप धार्यो दो चक्रीश, दशकामकुमार भये जगीश।
इन आदि मुनि आहूठ कोड, तिनको बन्दू मै हाथ जोड।१०
इनको केवल उपज्यो सुज्ञान, देवेन्द्र जु आसन कप्या जान।
तब अमरपुरीते इन्द्र आय, तह अष्टद्रव्य साजे बनाय।११
तब पूजा ठाने देव इन्द्र आय, सब मिलके गावे शतक इन्द्र।
तह यात्री आवे झुण्ड झण्ड, सब पूज धरे तन्दुल अखण्ड १२
केइ श्रीफल ल्यावै अरु बदाम, केई लावै पूगीफल सुनाम।
कोई अमृतफल केला सुल्याय, कोई अष्टद्रव्य ले पूज ठाय।१३
कोई सूत्र पढे अति हर्ष ठान, कोई शास्त्र सुने बहु प्रीति मान।
कोई जिन गुण गावै सुर सङ्गीत, कोई नाचे गावे धरे प्रीति।१४

इत्यादि ठाठ नितप्रति लहाय, वरनन किम मुखते कहो जाय।
सुरपति खगपति आदिक जु सोय, रचना देखत मनथकित होय।१५
सुरनर विद्याधर हर्ष मान, जिन गुन गावे हिय प्रीति ठान।
ॐ ह्री श्री सिद्धवरकूट सिद्धक्षेत्रभ्यो महार्घ्य निवपा०।
जो सिद्धवर पूजे, अति सुख हूजे, ता गृह सपति नाहि टरे।
ताको जस सुर नर मिल गावे, 'महेन्द्रकीर्त्ति' जिन भक्ति करे।१६
सिद्धवरकूट सुथान की महिमा अगम अपार।
अल्पमति मैं किमि कहो, सुरगुरु लहे न पार।१७

इत्याशीर्वादः।

श्री राजगृही क्षेत्र पूजा

(मुनीम श्री मुन्नालाल जी परवार कृत)

जम्बूदीप मझार, दक्षिण भरत सु क्षेत्र है।
ता मधि अति विख्यात, मगध सुदेश शिरोमणी।१
अडिल्ल—मगध देश की राजधानि सोहे सही।
राजगृही विख्यात पुरातन है मही।
तिस नगरी के पास महा गिरी पाच।
अति उतग तिन शिखर सु शोभ लहात है।२
विपुलाचल रतना, उदयागिरि जानिये।
सोनागिरि व्यवहार सुगिर शुभ नाम ये।
तिनके ऊपर मन्दिर परम विशाल जी।
एकोनविंशति बने सु पूजहु लालजी।३
तीर्थकर तेईस के, समोसरण सुखदाय।
कर विहार तह आय है, वासुपूज्य नहो आय।४

चौबीसो जिनराज के, बिम्ब चरण सुखदाय।
तिन सबकी पूजा करो, तिष्ठ तिष्ठ इत आग ।५

ॐ ह्री श्री राजगृही सिद्धक्षेत्र के पञ्च पर्वतो पर उनईस मन्दिरस्थजिनबिम्ब व चरण समूह अत्र अवतर २ सवौषट् आह्वानन। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ स्थापन। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

क्षीरोदधि पानी दूध समानी, तसु उनमानी जल लायो।
तसु धार करीजे, तृषा हरीजे, शाति सुदीजे गुण गायो ॥
श्री पञ्च महागिरि तिन पर, मन्दिर, शोभित सुन्दर सुखकारी।
जिनबिम्ब सुदर्शत, आनन्द बरसत जन्ममृत्यु—भय दुखहारी ॥

ॐ ह्री श्री राजगृही सिद्धक्षेत्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जल

मलयागिरि पावन, केशर बावन, गन्ध घिसाकर ले आयो।
मनदाह निकन्दो, भवदुख दन्दो, तुम पद बदो, सिरनायो। श्री०। च०
अक्षत अनियारे, जलसु पखारे, पुञ्ज निहारे, ढिग लाये।
अक्षय पद दीजे, निज सम कीजे दोष हरीज, गुण गाये। श्री०। अ०
बेला सुचमेली कुन्दबकोली, चप जही ले गुलाब धरो।
अति प्रासुक फूला, है गुण मूला काम समूला, नाश करो। श्री०। पुष्प
फैनी अरु बावर, लाडू घवर, तुम पद ढिग धर, सुखपाये।
मम क्षुधा हरीजे, समता दीजे, विनती लीजे गुण गाये। श्री०। नैवेद्य
दीपक उजियारा, कर्पूर प्रजारा, निजकर धारा, अर्ज करू।
मम तिमिर हरीजे, ज्ञान सु कीजे, कृपा करीजे, पाव परू। श्री०। दीप
दशगन्ध कुटाया धूप बनाया, अग्नि जलाया, कर्म नशै।
मम दुख कर दूरा, करमहि चूरा, आनदपूरा, सुख विलसे। श्री०। धूप
बादाम छुहारे, पिस्ता प्यारे, श्री फल धारे भेट करू।
मनवांछित दीजे, शिवसुख दीजे, ढील न कीजे, मोद धरू। श्री०। फल

वसु द्रव्य मिलाये, भवि मन भाये, प्रभु गुण गाये, नृत्यकरो।
भवभव दुखनाशा, शिवमगभासा, चित्तहुलासा, सुक्ख करो।श्री०।

ॐ ह्री श्रीराजगृही सिद्धक्षेत्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं अर्घं

अथ प्रत्येक अर्घ्यं

अन्तिम तीर्थङ्कर वीर स्वामी, समोसरण युत आय है।
तह राय श्रेणिक पूजकर, उन धर्म मुनि सुख पाय है॥
गौतम सु गणधर ज्ञान, चहु धर भव्य सबोधे तहा।
सो वाणि रचना ग्रथ माही, आज प्रचलित है यहा॥

दोहा—सो विपुलाचल सीस पर, छह मन्दिर विख्यात।
द्वय प्रतिमा शोभा धरे, चरणपादुका सात॥

ॐ ह्री श्री विपुलाचल पर्वत पर सात मन्दिरस्थ द्वय प्रतिमा व सात युगल चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपा०।

अडिल्ल—रतनगिरि पर दो मन्दिर सोहे सही।
प्रतिमा दो रमणीय परम शोभा लही।
चरण पादुका चार भीतरै सोहनी।
एक पादुका दूजे मन्दिर मे बनी।

दोहा—वसु विधि द्रव्य मिलायकर, दोउ जोडे कर सार।
प्रभु से हमारी बीनती, आवागमन निवार॥

ॐ ह्री श्री रतनागिरि पर्वत पर दो मन्दिरस्थ दो प्रतिमा व पाच युगल चरणकमलेभ्यो अर्घं निर्वपा०।

उदयागिरि पर दो मन्दिर हैं विशालजी।
श्री पारस प्रभु आदि बिब छह हाल जी।
चरण पादुका तीन विराजत है सही।
दर्शन है छह जगह परम शोभा लही।

सोरठा—अष्ट द्रव्य ले थार, मन वच तन से पूज हो।
जन्म मरण दुख टार, पाऊ शिवसुख परमगति।३।

ॐ ह्रीं श्री उदयागिरि पर्वत पर दो मन्दिरस्थ छह प्रतिमा व तीन युगल चरणकमलेभ्यो अर्घं निर्वपा० ।

श्रमणगिरि के शीश पर, दो मन्दिर सुविशाल ।
आदिनाथ जी मूल हैं, दर्शन भव्य निहाल ।।
द्वय प्रतिमा इक चरण तह राजत है सुखकार ।
अष्ट द्रव्य युत पूज है, ते उतरे भव पार ।।

ॐ ह्री श्री श्रमणागिरि पवत पर दो मन्दिरस्थ दो प्रतिमा व युगल चरण कमलेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

पद्धरी—श्री गिरि व्यवहार अनूप जान, तह मन्दिर सात बने महान ।
तिनके अति उन्नत शिखर सोय, देखत भविमन आनद होय ।
अरु टूटे मन्दिर पडे सार, पुनि गुफा एक अद्‌भुत प्रकार ।
सबमे प्रतिमा सु विराजमान, पुनि चरण तहा सु अनेक जान ।।
ले अष्ट द्रव्य युत पूज कीन, मन वच कर त्रय धोक दीन ।
सब दुष्ट करम भये चूर चूर, जासे सुख पाया पूर पूर ५

ॐ ह्री श्री व्यवहारगिरि पर्वत पर सात मन्दिर व टूटे मदिर एक गुफा मे अनेक प्रतिमा व चरणकमलेभ्यो अर्घं निर्वपामीति० ।

जयमाला

उन्नत पर्वत पाच पर उनईस जिनालय जान ।
मुनिसुव्रत जिनराजके, कल्याणक चहु जान ।।
बनो राजगृह नग्र अनूप, बनी तह खाई कोट सु कप ।
बने तह बाग महा रमनीक, फले फल फूल सुवृक्ष जु ठीक ।
तहा नरनार सु पडित जान, करे नित पात्रन को बहुदान ।
करै नित श्रावक शुभ षट् कर्म, सु पूजन वदन आदिक धर्म ।।
रहैं बन मुनिवर अर्जिका जान, करै नित भक्ति सु श्रावक आन ।
सु नारि पद्मावति नाम सु जान, सबै गुण पूरित रूप महान ।
जु श्रावण दोज वदी दिन सार, स्वप्ने सोलह देखे निश सार ।

सु होत प्रभात पति ढिग जाय, सुपन फल सुनि मन हर्ष लहाय।
प्रभु तीर्थंकर गर्भ मझार, अपराजित से आये गुणधार।
सु सेव करें नित देविन आय, नगर नरनार जु हर्ष लहाय।
यो सुख मे भये नव माह व्यतीत, वदी बैशाख दशमी शुभमीत ।।
सुजन्म प्रभु को भयो सुखदाय, सु आसन कपो तबै हरिराय।
अवधिकर इन्द्रजन्म प्रभु जान, किया परिवार सहित सुपयान ।।
प्रदक्षिण तीन नगर दी आय, शचीधर हर्ष प्रभू गृह जाय।
सु सुखनिद्रा माता को धार, प्रभु कर लेय किया नमस्कार।
सु लेय हरी निज गोदहिं धार, सुनेत्र सहस धर रूप निहार।
ऐरावत गज चढि मेरुपे जाय, सु पाडुक बन प्रभु को पधराय ।।
सहस अरु आठ कलश शुभ लेय, क्षीरोदधि नीरसे धार ढरैय।
सुभूषण बहु प्रभु को पहराय, सु नृत्य किया वादित्र बजाय ।।
सुपूजरु भक्ति तहाँ बहु कीन, सु जन्म सफल अपने करलीन।
सु लाय पिता कर सोप विराट, सु नृत्य किया अति आनन्द ठाठ ।।
मुनिसुव्रत नाम तबै हरि धार, जु श्यामवरण छवि है सुखकर।
प्रभु क्रमसो योवन पद धार, सु राजरु भोग अनेक प्रकार ।।
जु एक दिना सु महल मझार, बैठे शत खड पे थे सुखकार।
आकाश मझार बादल इक देख, तत क्षण चित्र लिखित शुभपेख ।।
जु लिखितहि ताहि बिलाय सुजान, लही वैराग्य परम सुख खानि।
सुभावत भावन बारह सार, वदी बशाख दशमो सुखकार ।।
सु आय लोकात नियोग सुकीन, सु इन्द्रहि कांध चले सु प्रवीन।
तहाँ वन जायके लुच विशाल, धरो तप दुद्धर बारह प्रकार ।।
सुघाति करम हनि ज्ञान सु पाय, वदी बैशाख की नौमि सुहाय।
समवसृति इन्द्र तहा रचि सार, प्रभु उपदेश दे भव्यहि तार ।।
यही कल्याण चहू सुखकार, सु राजगृही नगरी वो पहार।
प्रभ मुनिसुव्रत मेरे हो स्वाम, देवहु निज वास हमे अभिराम ।।

सु नाश अघाति सम्मेद से जाय, सु निरजर कूट ते मोक्ष सिधाय।
सु अन्तिम प्रभु महावीर जिनाय, आये विपुलाचलपै सुखदाय।
जु रायसु श्रेणिक भक्ति समेत, सु प्रश्न हजारो किये धर्म हेत।
सु गौतम गणधरजी सुखकार, सु उत्तर देयरु भव्यहि तार॥
जु श्रेणिक श्रावक सम्यक्धार, प्रकृति तीर्थंकर बंध जु सार।
वही जिनवानिका अबलो प्रकाश, सुग्रन्थन माहि जु देखो हुलास॥
जिनेश्वर और तहा इकवीस, विहार करत रहे गिरि सीस।
सु वानि खिरी भवि जीवनकाज, सुनो तब भव्य तजा गृहराज॥
सु पर्वत पास है कुण्ड अनेक, भरे जल पूरित गम सु टेक।
करै तह यात्री सु आय स्नान, सु द्रव्य मनोरम धोवत जान॥
सु चालत बदन हरषहि धार, सु बदन ते कर्म होवत छार।
करे पुनि लौट सु आय स्नान, थकावट जाय सु सुक्ख महान॥
बना धर्मशाला मह्गा रमणीय, सु यात्री तहा विश्राम सुलीय।
प्रभु पद बंदित मैं हरषाय, मुझे नित दर्शन दो सुखदाय।
जु अल्पहि बुद्धि थकी मैं बनाय, सुधारहु भूल जु पण्डित भाय॥
दुहू कर जोड नमैं 'मुन्नालाल', प्रभु मुझे वेग करो जु निहाल॥

मुनि सुव्रत बंदित, मन आनंदित, भव २ दंदहि जाय पलाय।
श्रीपच पहाडी, अति सुखकारी, पूजन भविजन शिवसुखदाय॥

ॐ ह्रीं श्रीराजगृही सिद्धक्षेत्रेभ्यो महार्घं निर्वपा०।

पञ्च महागिरि राजको, पूजे मन वच काय।
पुत्र पौत्र संपति लहे, अनुक्रम शिवपुर जाय॥

इत्याशीर्वादः।

श्री गुणावा जी सिद्धक्षेत्र की पूजा

(श्री बाबू पन्नालाल जी कृत)

धन्य गुणावा थान, गौतम स्वामी शिव गये।
पूजहु भव्य सुजान, अहि निशि करि उर थापना ॥१

ॐ ह्रीं श्री गुणावा सिद्धक्षेत्र से श्री गौतमस्वामी सिद्धपद प्राप्त अत्र अवतर २ संवौषट् आह्वानन। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापन ॥ अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अति शुद्धसुधा सम तोय, हेमाचल सोहे।
जर जनम मरन नहि होय, सबही मनमोहे ॥
जगकी भवताप निवार, पूजो सुखदाई।
धन नगर गुणावा सार, गौतम शिवपाई ॥
ॐ ह्रीं श्री गुणावा सिद्धक्षेत्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जल०
केशर करपूर मिलाय, चन्दन घिसवाई।
अरचो श्रीजिन ढिगजाय, सुन्दर महकाई। जग०। चन्दन
अति शुद्ध अखण्ड विशाल, तन्दुल पुञ्ज धरे।
भरि भरि कञ्चनमय थाल, पूजो रोग टरे। जग०। अक्षत
गेदा गुलाब कचनेर, पुष्पादिक प्यारे।
सो करिकरि ढेर सुढेर, कामानल जारे। जग०। पुष्प
अति घेवर फेनी ताप, नेवज स्वाद भरी।
सब भूख निवारन काज, प्रभु ढिग जाय धरी। जग । नैवेद्य
घृत से भरि सुवरण दीप, जगमग ज्योति लसे।
करि आरति जाय समीप, मिथ्या तिमिर नसे। जग०। दीप
कर्पूर सुगन्धित पूर अगर तगर डारो।
श्री चरनन खेवो धूप, करम कलङ्क जारो। जग०। धूप

पिस्ता बादाम सुपारी, श्री फल सुखदाई।
मनवाछित फल दातार, ऐसे जिनराई। जग०। फलं
सब अष्ट द्रव्य करि त्यार, प्रभु ढिग जोरि धरों।
'पन्ना' प्रति मङ्गलकार, शिवपद जाय वरो। जग०। अर्घं

जयमाला

गौतम स्वामीजी भये, गणधर वीर प्रधान।
तिनकी कछु जयमाल अब, सुनो भव्य धरि ध्यान॥१
वन्दो श्री महावीर जिनन्दा, पाप निकन्दन आनन्दकन्दा।
जिन परताप भये बहुनामी, जै जै जै श्री गौतम स्वामो॥२
भयो जहा पर केवल ज्ञाना, समोशरण इन्द्रादिक ठाना।
खिरो दिव्यध्वनि नहिं भगवान, गणधर नहि कोई गुणवान॥३
तब विद्यारथि भेष बनाई, बासव गौतम के ढिग जाई।
पूछत अर्थ सूत्र यो भाषित, षट्द्रव्य पञ्चास्तिकाय भाषित।४
यह सुनि गौतम वचन उचारे, तोसो करू वाद क्या प्यारे।
चलि अपने गुरु वीर नजीका, करिहैं शास्त्रार्थ तहं नीका।५
ऐसी कह ततकाल सिधारे, समोशरण मे आप पधारे।
देखत मानथम्भ को जोही, खण्डित भयो मान सब योही।६
भूल गये सब वाद विवादा, कीनो थुति सब छाडि विषादा।
सोई गणधर भये प्रधाना, धन्य धन्य जैवत सुजाना।७
धन्य गुणावा नगर सुहाई, जहते उन शिवलक्षमी पाई।
सुन्दर ताल नगर अति सोहै, ताबिच मन्दिर जन मन मोहे।८
चरणपादुका बने अनूपा, पूर्व धर्मशाला अरु कूपा।
सम्मुख वेदी अति सुखदाई, वीर चरण प्रतिमादि सुहाई।६
चारो ओर चरण चौबीसी, तिन लखि हर्ष होत अतिहोसी।
पूजनीक अति ठाम अपारा, दुखदारिद्र नशावन हारा।१०

जो पढै पढावें पूज रचावें, सो मनवांछित फल पावै।
सुत लाभ बिहारी आज्ञाकारी, 'पन्ना' जगत न भरमावै ॥११
ॐ ह्रीं श्रीगुणवासिद्धक्षेत्रेभ्यो महार्घं निर्वपा०।
शहर हाथरस पास, मनोहर ग्राम विसाना।
तामधि श्रावक लोग, बसे सबहि बुद्धिवाना॥
सवत् शत उनईश, तासुपै धारि बहत्तर।
विक्रम साल प्रमान, जेठ मासा बीतन पर॥१२

इत्याशीर्वादः।

श्री द्रोणागिरि पूजा

(पं० दरयावजी चौधरी कृत)

सिद्धक्षेत्र परवत कहो, द्रोणागिरि तसु नाम।
गुरुदत्तादि मुनीश नमि, मुक्ति गये इहि ठाम॥
इहि थल जिन प्रतिमा भवन, बने अपूरब धाम।
तिन प्रति पुष्प चढाइये, और सकल तज काम॥२

ॐ ह्रीं श्री द्रोणागिरि सिद्धक्षेत्र से सिद्धपद प्राप्त गुरुदत्तादि मुनि समूह अत्र अवतर २ सवौषट् आह्वानन। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्टक—सुन्दरी

सरस छीर सु नीर गहीर ले, जिन सुचरनन धारा दीजिए।
नशत जन्म जरा मृति रोग है, मिटत भवदुख शिवसुख होत है॥
ॐ ह्रीं श्रीद्रोणागिरि सिद्धक्षेत्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जल नि०

अगर कुमकुम चन्दन गारिये, जिन चढ़ाय सो ताप निवारिये।
नशत जन जे भव आताप ते, चर्चं जिनपद अघ इमि नाशते॥ चदनं

देवजीरो उर सुख दासके, पावनी घन केशर आदि के ।
सरस अनियारे अनबीध ले, पुञ्ज निजपद आनन तीनदे ॥ अक्षत
सरस बेजा और गुलाब ले, केवरो इत आदि सुवास ले ।
जिन चढाय सुहर्ष सुपावते, मदनकाम व्यथा सब नाशते ॥ पुष्प
पूरियां पेडादि सु आनिये, खोपरा खुरमादिक जानिये ।
सरस सुन्दर थार सु धारिये, जन चढाय छुधादि निवारिये ॥ नैवेद्य
रतन मणिमय जोति उद्योत हैं, मोहतम नशि ज्ञान हु होत हैं ।
करत जिन तट भविजन आरती, सकल जन्मन ज्ञानसु भासती ॥ दीप
कूट वसु विधि धूप अनूप है, महक रही अति सुन्दर अग्नि है ।
खेइये जिन अग्र सु आयके, ज्वलन मध्य सु कर्म नशायके ॥ धूप
नारियल सु छुहारे ल्याइये, जायफल बादाम मिलाइये ।
इलायची पुङ्गी फल ले सही, जजत शिवपुर की पावे मही ॥ फल
जल सु चन्दन अक्षत लीजिए, पुष्प धर नैवेद्य गनीजिये ।
दीप धूप सुफल वहु साजही, जिन चढाय सु पातक भाजही ॥ अर्घ
करत पूजा जे मन लायके, हेत निज कल्याण सु पायके ।
सरस मङ्गल निन नये होत है, जजत जिनपद ज्ञान उद्योत है ॥ अर्घं

जयमाला

दोहा—ये ही भावना भायके, करो आरती गाय ।
सिद्धक्षेत्र वर्णन करो, छद पद्धडी गाय ॥१

श्री सिद्धक्षेत्र पर्वत सु जान, श्री द्रोणागिरि ताको सु नाम ।
तह नदी चन्द्रभागा प्रमान, मगरादि मीन तामे सु जान ॥१
ताको अति सुन्दर बहे नीर, सरिता जु जान भारी गम्भीर ।
यात्रीजन सब देशन के आय, अस्नान करत आनन्द पाय ॥२
फलहोडी ग्राम कहो बखान, जिन मन्दिर तामे एक जान ।
पूजा सु पाठ तहाँ होत नित्त, स्वाध्याय वाचना मे सुचित्त ॥३

अब गिरि उतग जानो मुहान, ता ऊपर को लागे शिवान।
तरुवर उन्नत अति सघन पात, फल फूल लगे नाना सु भात ॥४
तह् गुफा रही सुन्दर गहीर, मुनिराज ध्यान धारे तपीस।
गिरि शीश बीस जिन बन धाम, अब और होय तिनको प्रणाम ॥५
तह् झालर घण्टा बजे सोय, वादित्र वजे आनन्द होय।
तह् प्रातिहार्य मङ्गल सुदर्व, भामण्डल चन्द्रोपम सु सर्व ॥६
जिनराज विराजत ठाम ठाम, बदत भविजन तज सकल काम।
पूजा सु पाठ तह् करे आय, ताथेई थेई थेई आनन्द पाय ॥७
अब जन्म सुफल अपनो सु जान, श्री जिनवर पद पूजे सु आन।
मैं भ्रम्यो सदा या जग मझार, नहिं मिली शरन तुमरी अपार ॥८
सोरठा—सिद्धक्षेत्र सु महान, विघन हरन मङ्गल करन।
बन्दत शिवसुख थान, पावत ज निश्चय भजे ॥१

ॐ ह्रीं श्री द्रोणागिरि सिद्धक्षेत्राय महार्घ्यं निर्वपा० स्वाहा।

गीतिका छन्द

जाके सुपुत्र पौत्रादि सम्पत्ति, होय मङ्गल नित नये।
जो जजत भजत जिनेन्द्रपद, अब तासु विघन सु नशिगए॥
मैं करो थुति निज हेत मङ्गल, देत फल वाछित सही।
'दरयाव' है जिनदास तुमरो, आस हम पूरन भई॥

इत्याशीर्वादः।

श्री पावागिरि सिद्धक्षेत्र पूजा

—निर्वाण काण्ड गाथा—

पावागिरि-वर-सिहरे, सुवण्णभद्दाई मुणिवरा चउरो।
चेलणाणई तडग्गो, णिव्वाणगया णमो तेसिं॥

॥ स्थापना ॥

पावागिरि वर क्षेत्र सुन्दर, चेलना के तीर है।
जिसके सु दर्शन मात्र से, मिट जाय भव की पीर हैं॥
मोक्ष चारो सुवर्ण भद्रादी, मुनि जह पाय हैं।
तिनकी हम थापना करी, पूजे सभी मन लाय हैं॥

ॐ ह्रीं श्री पावागिरि क्षेत्रत सिद्धपद प्राप्त सुवर्णभद्रादि मुनीश्वरा. अत्र अवतरत अवतरत। अत्र तिष्ठत तिष्ठत। अत्र मम सन्निहिताः भवत भवत वषट्।

शुद्ध निर्मल नीर की, झारी प्रभु मम हाथ है।
चरणो मे जल अर्पण करू, करुणानिधि धर माथ हैं॥
जीबन, मरण, वृद्धापना, मेरा प्रभु हर लीजिए।
कर जोड के सन्मुख खडा, स्वामी दरशन अब दीजिए॥

ॐ ह्री श्री पावागिरि क्षेत्रतः सिद्धपदप्राप्त श्री सुवर्णभद्रादि मुनीश्वरेभ्य जलम्।

सुगन्ध से सना हुआ, चन्दन घसू मैं नेम से।
भव ताप हारी चरण मे, स्वामी चढाऊ प्रेम से॥
विनय को धर ध्यान मे, भव ताप मम हर लीजिये।
कर जोड विनती करू, स्वामी कृपा अब कीजिये॥ चदन
स्वच्छ अक्षत शुद्ध निर्मल, नीर से प्रभु धोयकर।
तुव चरण मे अर्पण करू, अभिमान सारा खोय कर॥
स्वामी शरण तेरी खडा, ससार दुख दूर कीजिये।
अखय पद करुणा निधी, इस दास को अब दीजिये॥ अक्षत
सुमन सुगन्धित प्रेम से, सेवा लिये लाया प्रभू।
चरण मे अर्पण-करन बहु, दूर से धाया प्रभू॥
अर्पण करू वह प्रेम से, प्रभू काम शर हर लीजिये।
अपराध कोटी कर क्षमा, हे नाथ दर्शन दीजिये॥ पुष्प

बहुभांति के पकवान स्वामी, प्रेम से मैं लाया हूं।
हे दीन बन्धु भक्ति से, अर्पण यहा कर पाया हूं।।
वह असाता जनित व्याधि, क्षुधा भ्रम हर लीजिये।
करके दया करुणा-निधि, सेवक सुदर्शन दीजिये।।

ॐ ह्री श्री पावागिरिक्षेत्रत सिद्धपदप्राप्त श्री सुवर्णभद्रादि मुनीश्वरेभ्यः नैवेद्य।

अज्ञान अन्धकार मे, सन मार्ग मैं भूला प्रभू।
निज मार्ग को तज के प्रभो, अभिमान मे फूला प्रभू।।
अब भक्ति यह दीप लाया, नाथ सेवा लीजिये।
अज्ञान अन्धकार मेरा, दूर स्वामी कीजिये।। दीप
दया मय अष्ट कर्मों, ने मुझे वश मे किया।
इन अष्ट कर्मों ने मुझे, तुव भक्ति से वचित किया।।
इनको जलाने के लिये, मैं धूप सेवा मैं करू।
तुव तेज पूरित भद्र प्रतिमा, प्रेम से हिरदे धरू।। धूप
फल मनोहर लाय कर, करुणानिधि सेवा करू।
मोक्ष फल मुझको मिले, यह भावना मन मे धरू।।
अन्त मे हे दीनबन्धु, मुक्ति मौको कीजिये।
तेरी शरण मे ही पडा, तू-ही दरश अब दीजिये।। फल
हे दयामय अष्ट द्रव्य, मिलाय कर सेवा करू।
अर्घ चरण चढाय कर, मन मे यही आशाधरू।।
दास को अनर्घ पद कर के दया अब दीजिये।
चरण मे आया प्रभो इस, भक्त की सुध लीजिये।। अर्घं

जयमाला

पावागिरि वर क्षेत्र की बरणतहू जयमाल।
प्रेम सहित नर जो पढे, दूर होय भवजाल।।

है ऊन ग्राम सुहावना बहु, और सुन्दर धाम है।
पास पर्वत सुखद, पावागिरि वर नाम है ॥१
सरिता बहे तह चेलना यह, क्षेत्र उसके तीर है।
दरश कर जिसके सकल मिट, जाय भव की पीर है ॥२
मोक्ष चारो सुवर्ण भद्रा-दी मुनी पाये यहा।
भाग्यशाली है वही जो दरश को आये यहा ॥३
बल्लाल नामक भूपती को, उदर मे कुछ रोग था।
उस रोग के ही कारणे विरथा, दिखे सब भोग था ॥४
इस शोक मे ही चल पडा वह राज्य से मुह मोडकर।
कुछ दिन मे आ पहुचा यही निज राजधानी छोडकर ॥५
प्रभु कृपा से उसको यहा, आराम कुछ होने लगा।
तब प्रेम से मत्री बुला, निज हृदय भर रोने लगा ॥६
स्वामिन कहो किस कारणे, मुझको बुलाया आपने।
धर्म के अवतार को, बुरा सताया पाप ने ॥७
भो मन्त्रिवर ! मुझको यहा आराम कुछ होने लगा।
गद्गद् हृदय मेरा हुआ, इससे ही मैं रोने लगा ॥८
एक सौ मन्दिर यहा बनवाऊ, ईच्छा यह लगी।
प्रारम्भ कीजे कार्य झट, मेरी सकल पीडा भगी ॥९
कुछ काल मे मन्दिर बने, सौ मे रहा एक न्यून है।
इस न्यूनता से नाम भी, इस ग्राम का यह 'ऊन है' ॥१०
ग्राम से दक्षिण दिशा जिन गेह इक ललाम है।
देखकर मन हो चकित कारीगरी का काम है ॥११
मूर्तिया यहा तीन सुविशाल शोभित हो रही।
दर्शको के पाप को सब प्रेम से वह खो रही ॥१२
आषाढ कृष्ण अष्टमी बुधवार को इस ठोर मे।
'चेतन' ने चेतन कर दिये महावीर स्वामी मोर मे ॥१३

महावीर स्वामी की सुप्रतिमा, तेज पूर्ण लालम है।
साथ मे ही चार प्रतिमा, भी मिली सुखधाम है ॥१४
पास मे पद पादुका है, सकल अघ-संहारिणी।
मोक्षफल की दायिनी भव-सिन्धु से सत्तारिणी ॥१५
'चैतन्य' का जो स्वप्न था वह आज सच्चा हो गया।
अज्ञात यह बहुकाल से वर, क्षेत्र परगट हो गया ॥१६
हम मागते हैं वर यही प्रभु, चरण सेवा दीजिये।
उर मे दया, सद्भाव का सचार स्वामी कीजिये ॥१७
पावागिरि वर क्षेत्र की, सब आयके पूजा करो।
महावीर प्रभु की मूर्ति को प्रेम से हिरदे धरो ॥१८
इस जगत मे तो धर्म से हो सद्गति नर पाय है।
मान 'सुमनाकर' विनय, आवागमन मिट जाय है ॥१८ पूर्णार्घम्

सुखदायी पावागिरि, सुन्दर सुखद ललाम।
दर्शन से पावे मनुज प्रेम-सहित सुखधाम ॥

इत्याशीर्वाद·।

श्री कमल दह जी (पटना) सिद्धक्षेत्र (सुदर्शन पूजा)

(श्री बाबू पन्नालालजी कृत)

उत्तम देश विहार मे, पटना नगर सुहाय।
सेठ सुदर्शन शिव गये, पूजो मन वच काय ॥१

ॐ ह्री श्री कमल दह सिद्धक्षेत्र से श्री सुदर्शन सेठ सिद्ध पदप्राप्त अत्र अवतर सवौषट् आह्वानन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरण।

नित पूजोरे भाई या श्रावफ कुलमे आयके।
नित पूजोरे भाई श्रीपटना नगर सुहावनो ।।
गगाजल अति शुद्ध मनोहर झारी कनक भराई।
जन्म जरा मृत नाशन कारन, ढारो नेह लगाई ।।नि०
जम्बूद्वीप भरत आरज मे, देश बिहार सुहाई।
पटना नगरी उपवन मे, शिव सेठ सुदर्शन पाई ।। नि०
ॐ ह्री श्री कमलदहजी सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जल।
चन्दन चन्द्र मिलायसु उज्ज्वल, केशर सग घिसाई।
महक उडे सब दिशन मनोहर, पूजो जिनपद राई। नि०। चदन
शुद्ध अमल शशि सम मुक्ताफल, अक्षत पुञ्ज सुहाई।
अक्षय पद के कारण भविजन, पूजो मन हरषाई। नि०। अक्षत
पाचो विधि के पुष्प सुगन्धित, नभलो महक उडाई।
पूजो काम विकार मिटावन, श्रीजिनके ढिग जाई। नि० पुष्प
उत्तम नेवज मिष्ट सुधासम, रस सयुक्त बनाई।
भूख निवारन कञ्चन थारन, भर भर देहु चढाई। नि०। नैयेद्य
मणिमय भाजन घृत से पूरित, जगमग जोति जगाई।
सब मिलि भविजन करो आरती, मिथ्या तिमिर पलाई। नि०। दीप
अगर तगर कर्पूर सुहावन, द्रव्य सुगन्ध मगाई।
खेवो धूप धूमसे वसु विधि, करम कलङ्क जराई। नि०। धूप
एला केला लौग सुपारी नारियल सुखदाई।
भर भर पूजो थाल भविकजन, वाछित सुभ फल पाई। वि०। फल
अष्ट दरब ले पूज रचाओ, सब मिल हर्ष बढाई।
झालर घण्टा नाद बजाओ, 'पन्ना' मगल गाई। नि०। अर्घ

जयमाला

सेठ सुदर्शन जे भये, शीलबान गुणखान।
तिनकी अब जैमालिका, सुनहु भव्य दे कान ।।१

जै सेठ सुदर्शन शीलवन्त, जग छाय रही महिमा अनन्त
तिनकी कछु मैं जयमाल गाय, उर पूज रचाऊ हर्ष ठाय ।।२
तह मुख्य सेठ इक वृषभदास, तिन सेठानी जिनमतिय खास ।
तिन चाकर ग्वाला सुभग नाम, मुनि देखे बन मे एक जाय ।।४
सो महामत्र णवकार, पाय, अति भयो प्रफुल्लित कह्यो न जाय ।
पुनि एक दिवस गङ्गा मझार, यह डूबत जापत मन्त्र सार ।।५
तुरतहि मर सेठ घरे विशाल, सुत एक भयो सुदर्शन भाग्यशाल ।
सबको सुखदाई मिष्ट बैन, निज कपिल यार सग दिवस रैन ।।६
पढि खेल कूद भयो अति सयान, तब सेठ मनोरमा सग सुजान ।
शुभ साइत ब्याह दियो कराय, सो भोगत सुख अति हष ठाय ।।७
पुनि कछुक काल भीतर सुकत, सुत एक भयो अति रूपवन्त ।
तब सेठ सुदर्शन धीरवान, निज काम करे अति हर्ष ठान ।।८
तब कपिल नारि आसक्त होय, घर सेठ बुलाये तुरत सोय ।
तह सेठ नपुसक मिस बनाय, निज शील लिया ऐसे बचाय ।।९
जब खबर सुनी रानी तुरन्त, मन करी प्रतिज्ञा दीतवन्त ।
मैं भोग करू वासू सिहाय, तब ही मम जीवन सुफल थाय ।।१०
इन सेठ अष्टमी कर उपास, मरघट मैं ध्यानारूढ खास ।
तह चेली उनके पास जाय, उन अचल देखि तुरतै रिसाय ।।११
तह सेठ निरुत्तर देखि हाय, निज कधे पै धरिके उठाय ।
फिर पहुची रानी पास जाय, रानीको हाल दियो सुनाय ।।१२
यो खबर करी नृप पास जाय, यो शील विगारचा सेठ आय ।
या सुनत बैन नृप क्रोध छाय, मारन का हुक्म दिया सुनाय ।।१३
तह करी प्रतिज्ञा शीलवन्त, मुनि पदवी धारू यदि बचन्त ।
सो देव करी रक्षा सु आय, पुनि दीक्षित ह्वै वनको सिधाय ।।१४
सो करत करत कछु दिन विहार, तब आये पटना नगर सार ।
तह देवदत्त वेश्या रहाय, मिस भोजन मुनि लीने बुलाय ।।१५

उन कामचेष्टा कर सिहाय, झट सेठ लिए शैय्या गिराय।
लख ऐसो मन में कर विचार, उपसर्ग मेरो यदि हो निवार॥१६
संन्यास धरू नगरी न जाऊँ, बन ही वन करते तप फिराऊ।
यह लख वेश्या भई निरउपाय, निशि प्रेतभूमि दीने पठाय॥१७
तह रानी व्यंतर जोनि पाय, नाना उपसर्ग कियो बनाय।
मुनि पुण्य भाव से देव आय, तब लिए सेठ तुरत ही बचाय॥१८
सो कठिन तपस्या कर निदान, भयो सेठ जहा केवल जु ज्ञान।
सो कछुक काल करके विहार, उन मुक्ति बरी अति श्रेष्ठ नार॥१९

ॐ ह्री श्री कपलदहजो सिद्धक्षेत्रेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता—इक ग्वाल गमारा जप नवकारा, सेठ सुदर्शन तन पाई।
सुत लालबिहारो आज्ञाकारो, 'पन्ना यह पूजा गाई॥२०

इत्याशीर्वाद।

श्री जम्बूस्वामी पूजा

(चौरासी—मथुरा)

चोबीसो जिन पाय, पञ्च परम गुरु बन्दि के।
पूज रचो सुखदाय, विघ्न हरो मङ्गल करो॥

अडिल्ल छन्द—विद्युत मालिदेव चये जम्बू भये।
कामदेव अवतार अन्त केवलि भये।
कलयुग कारे पाख बरागनि शिववरो।
आवो आवो स्वामि भक्ति उर भारी॥१

ॐ ह्री श्री जम्बस्वामिन् अत्रावतरावत संवौषट्।

सिंह पीठ मम देहकमल उर सोहनो।
तिष्ठो तिष्ठो तीर्थ भविक मन मोहनो।

अब मोहि चिन्ता कौन सिद्ध कारज भये।
आतम उपभव पाप सकल सु र थिर भये ॥२

ॐ ह्री श्री जम्बूस्वामिन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठः स्थापनं।

स्वामि अपनो स्वरूप मोहि इक दीजिए।
मैं हू पूजक भक्त आज चित दीजिए॥
या ससार असार असाता के विषै।
तो सू तन मन होय सकल आनन्द जगै॥३

ॐ ह्री श्री जम्बूस्वामिन् अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

गगादिक जल लेय रत्न झारी भरू।
जै जै कर उच्चारि धारिदे प्रति करू॥
सिद्ध चिक्र कू वद्य जम्बू पूजा करू।
ज्ञानावरणी कर्म तनी थिति को हनू॥

ॐ ह्री श्री जम्बूस्वामिभ्य जन्म जरा मृत्युविनाशनाय जल।

बावन चन्दन ल्याय और मलयागिरि।
केशर द्रव्य मिलाय घिसाय इकमिक करी॥
सिद्धचक्र कू वद्य जम्बू पूजा करू।
दर्शनावरणी कर्म तनी थिति को हनू॥ चदन

तन्दुल मुक्ता जिम इन्दु करणा जिसे।
दीर्घ अखण्ड करो पूज करिये तिसे॥
ज्योति सरूपी धाय जम्बू पूजा रचू।
अन्तराय क्षय कीन अक्षय पद मैं चहू॥ अक्षत

पारिजात चन्दन अरु मरु सुहावनै।
सतानक सुन्दर के पुहुप मगावने॥

अलख रूप अवधार जम्बू पद को जजू ।
मोहनी कर्म निवार कामते ना लजू ॥
ॐ ह्रीं श्री जम्बूस्वामिभ्य: जन्म जरा मृत्युविनाशनाय पुष्प ।
सुन्दर घृत मिष्टान्न विविध मेवा जितै ।
मेवा सहित मिलाय पिंड करिये तितै ॥
समयसार मम बन्दि थाल आगे धरू ।
जम्बू स्वामि मनाय वेदनी को हरू । नैवेद्य ।
चन्द्रकात और सूर्यकात शुभ मणि भली ।
और सनेही बात जोय आनन्द रली ॥
अष्टम गुण जुत ध्याय जम्बू पूजूं सदा ।
चार आयु थिति मेटो मरू नहीं मैं कदा । दीप ।
धूप दशाग मगाय अग्नि सग खेय ही ।
धूपायन जु कनक मय सार जु लेय ही ॥
नीच गोत्र अरु ऊंच गोत्र नहिं पाय के ।
आतम रूपो ध्यान निरञ्जन ध्याय के । धूप ॥
श्रीफल लोग बादाम छुआरे लाय के ।
एला पूंगी आदि मनोज्ञ मनाय के ।
अष्टगुणोयुक्त ध्याय सकल भव को हरू ।
नाम करन झड जाय प्रभु पायन परू । फल ॥
ज्ञायक सम्यक् शुद्ध ज्ञान केवल मय सोहे ।
केवल दर्शन प्राप्ति अगरुलघु सुख मे जो है ।
इक मे नेक समाहि हर्ष भारी गुन तेरो ।
अव्याबाध निधारि अर्घ दे चरनन चेरो । अर्घं ॥

जयमाला दोहा

वर्द्धमान जिन बन्दि के, गुरु गौतम के पाय ।
और सुधर्म गणी प्रणमि, जम्बू स्वामी मनाय ॥

जय विद्युत माली देव सार, पचम दिव मे महिमा अपार।
जय राजगुहि पर सेठ थान, उपजे मनमथ अन्तिम सुजान ॥
लघु वय में उर वैराग्य धार, जग सब अस्थिर जान्यो कुमार।
तब सब परिवार उछाह ठान, ब्याही बनिता निज वय समान ॥
रतनन के दीपक दिपे महल, बनिता बैठी जुत काम शैल।
तिन सो ज्ञानादिक वच उचार, रागादि रहित कीनी सुनार।
तब विद्युत प्रभ तह चोर आय, रसभीनी अष्ट कथा सुनाय।
ताको वैराग्य कथा प्रकास, निज तत्त्व दिखाओ चिद विलास।
जग अथिर रूप थिर नही कोय नहि शरण जीवकू आन होय।
ससार भ्रमण विधि पाच ठान, इक जीव भ्रमति नहि साथ आन ॥
षट्द्रव्य भिन्न मत्ता लखाय, जिय अशुचि देय माही रमाय।
आश्रव परसो त्रय प्रीति होय, सवर चिद् निज अनुभूति जोय ॥
तप कर वसुविधि सत्ता नसाय, निज स्वय सिद्ध त्रैलोक गाय।
निज धर्म लसै कोई पुमान, दुर्लभ नहि आतमज्ञान भान ॥
द्वादश भावन इहि भाति भाय, बहुजन युन भेटे वीर पाय।
दीक्षा धर केवल ज्ञानधार, रिधि सप्त लई महिमा अपार ॥
सन्मति गौतम धर्म मुनीश, शिवपाय तबै केवल जगीश।
वानी जु खिरी अक्षरन रूप, तत्त्वन को भाष्यो इम सरूप ॥
आपापर परसो प्रीति होय, चेतन बधै चवभाति सोय।
तब निज अनुभूति प्रकाश पाय, सत्ता सकर्म झडे अघाय ॥
चव बन्ध रहित तब होत जीव, सिद्धालय थिरता ह्वै तदीव।
षट्द्रव्य बखानो भेद रूप, चैतन्य और पुद्गल सरूप ॥
चालन सहचारि थिति सहाय, बतरावन द्रव्यन कू सुभाय।
पुनि सर्व द्रव्य जामे समाय, अवकाश दुतिय अवलोक गाय ॥
मुनि श्रावक को आचार भाष, आचरज ग्रन्थन मे प्रकाश।
पुनि आरज खण्ड विहार कीन, जम्बू वन मे थिति जोगलीन ॥

सब करमन को क्षय करि मुनीश, शिव वधू लह्यो बिसवासु बीस ।
मथुरा तै पश्चिम कास आध, छत्री पद मे महिमा अगाध ।।
वृज मण्डल में जे भव्य जीव, कार्तिक-वदि रथ काढत सदीव ।
केउ पूजत केऊ नृत्य ठान, केऊ गावत विधि सहित तान ।।
निशि घोस होत उत्सव महान, पूरत भव्यन के पुन्य थान ।
पद कमल प्राग तुम दास होय, निज भक्त विभव दे अरज सोय ।।

घत्ता—जल चन्दन लाये, अखत मिलाये, पुहुप सुहाये मन भाये ।
नैवेद्य सु दीप दश विधि धूप फलरु अनूप श्रुत गाये ।।
सुवरन के थाल भरिजु रसालं फेरि त्रिकाल सिर नाये ।
गुणमाल तिहारो मम उरधारी जगत उजारी सुख दाये ।।
ॐ ह्री श्री जम्बूस्वामी सिद्धपरमेष्ठिने पूर्णार्घ्यं ।

दोहा—महिमा जम्बू स्वामि की, मोपे कही न जाय ।
कै जानै केवलि मुनि, कै उन माहि समाय ।

इत्याशीर्वाद. ।

श्री सप्तऋषि पूजा

प्रथम नाम श्रीमन्व दुतिय स्वरमन्व ऋषोश्वर,
तीसरि मुनि श्रीनिचय सर्वसुन्दर चौथो वर ।
पचम श्रीजयवान विनयलालस षष्टम भनि,
सप्तभ जयमित्राख्य सर्व चारित्रधाम गनि ।
ये सातौं चारणऋद्धिधर, करू तासु पद थापना,
मैं पूजू मनवचकायकरि, जो सुख चाहू आपना ।

ॐ ह्री चारणर्द्धिश्रीसप्तर्षीश्वराः ! अत्रावतरत अवतरत सवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट ।

गीता-छंद

शुभतीर्थउद्भव जल अनूपम, मिष्ट शीतल लायके
भव तृषाकंद निकंद कारण शुद्ध घट भरवाय के,
मन्वादि चारण ऋद्धिधारक, मुनिनकी पूजा करू,
ता करे पातिक हरे सारे, सकल आनंद विस्तरू ।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्वस्वरमन्वनिचयसर्वसुन्दरजयवानविनयलालसजय-मित्रर्षिभ्यो जल० ।।

श्रीखण्ड कदलीनन्द केशर, मन्द मन्द घिसाय के,
तसुगंध प्रसरति दिगदिगन्तर, भर कटोरी लाय के ।।म० ।। चंदन
अति धवल अक्षत खण्ड वर्जित, मिष्ट राजन भोग के।
कल धौत थारा भरत सुन्दर, चुनित शुभ उपयोग के ।।म० ।। अक्षतं
बहु वर्ण सुवरण सुमन आछे, अमल कमल गुलाब के,
केतकी चम्पा चारु मरुआ, चुने निजकर चाव के ।। म० ।। पुष्प
पकवान नाना भाति चातुर, रचित शुद्ध नये नये।
सदमिष्ट लाडू आदि भरि बहु, पुरट के थारा लये ।। म० ।। नैवेद्यं
कलधौत दीपक जडित नाना, भरित गोघृतसारसो।
अति ज्वलित जगमगजोति जाकी, तिमिरनाशनहारसो। म०। दीपं
दिक्चक्र गंधित होत जाकर, धूप दशअंगी कही।
सो लाय मनवचकाय शुद्ध, लगायकर खेऊ सही ।। म० ।। धूप
वर दाख खारक अमित प्यारे, मिष्ट चुष्ट चुनाय के,
द्रावडी दाडिम चारु पुगी थाल भरभर लायके ।। म० ।। फल
जल गन्ध अक्षत पुष्प चरु वर, दीप धूप सु लावना।
फल ललित आठों द्रव्य मिश्रित, अर्घ कीजे पावना ।। म० ।। अर्घं

जयमाला (छन्द त्रिभंगी)

बदू ऋषि राजा, धर्म जहाजा, निज पर काजा करत भले ।
करुणा के धारी, गगन बिहारी, दुख अपहारी भरम दले ॥
काटत जमफदा, भविजनवृन्दा, करत अनदा चरणन मे ।
जो पूजै ध्यावै, मगल गावै, फेर न आवै भवबन मे ।१।

छंद पद्धरी

जय श्रीमनु मुनिराजा महत । त्रसथावर की रक्षा करत ॥
जय मिथ्यातम नाशक पतग । करुणारस-पूरित अग अग ॥१॥
जय श्रीस्वरमनु अकलकरूप । पद सेव करत नित अमर भूप ॥
जय पच अक्ष जीते महान । तप तपत देह कचन समान ॥२॥
जय निचय सप्त तत्त्वार्थभास । तप रमातनो तन मे प्रकाश ॥
जय विषयरोध सबोधभान । परिणति के नाशन अचल ध्यान ॥३॥
जय जयहि सर्वसुन्दर दयाल । लखि इन्द्रजालवत जगतजाल ॥
जय तृष्णाहारी रमण राम । निज परिणति मे पायो विराम ॥४॥
जय आनदघन कल्याणरूप । कल्याण करत सबको अनूप ॥
जय मदनाशन जयवान देव । निरमद विचरत सब करतसेव ॥५॥
जय जयहि विनयलालस अमान । सब शत्रु मित्र जानत समान ॥
जय कृशितकाय तप के प्रभाव । छवि छटा उडति आनददाय ॥६॥
जय मित्र सकल जग के सुमित्र । अनगिनत अधम कीने पवित्र ॥
जय चद्रबदन राजीव नैन । कबहू विकथा बोलत न बैन ॥७॥
जय सातौ मुनिवर एकसग । नित गगन-गमन करते अभग ॥
जय आये मथुरापुर मंझार । तह मरी रोग को अति प्रचार ॥८॥
जय जय तिन चरणनि के प्रसाद । सब मरी देवकृत भई बाद ॥
जय लोक करे निर्भय समस्त । हम नमत सदा नित जोरि हस्त ॥९॥

जय ग्रीषमऋतु पर्वतमझार । नित करत अतापन योग सार ॥
जय तृषा परीषह करत जेर । कहु रच चलत नहिं मन-सुमेर ॥१०॥
जय मूल अठाइस गुणन धार । तप उग्र तपत आनंदकार ॥
जय वर्षाऋतु मे वृक्षतीर । तह अति शीतल झेलत समीर ॥११॥
जय शीतकाल चौपट मझार । कै नदी सरोवर तट विचार ॥
जय निवसत ध्यानारूढ होय । रचक नहिं मटकत रोम कोय ॥१२॥
जय मृतकासन वज्रासनीय । गोदूहन इत्यादिक गनीय ॥
जय आसन नानाभाति धार । उपसर्ग सहत ममता निवार ॥१३॥
जय जपत तिहारो नाम कोय । लख पुत्रपौत्र कुलवृद्धि होय ॥
जय भरे लक्ष अतिशय भडार । दारिद्रतनो दुख होय छार ॥ १४॥
जय चोर अग्नि डाकिन पिशाच । अरुईति भीति सब नसत साच ॥
जय तुम सुमरत सुख लहत लोक । सुर असुर नवन पद देत घोक ॥

ये सातो मुनिराज महातप लक्ष्मीधारी ।
परम पूज्य पद धरें सकल जग के हितकारी ॥
जो मनवचतन शुद्ध होय सेवै औ ध्यावै ।
सो जन मनरगलाल अष्ट ऋद्धिन कौ पावै ॥

दाहा—नमन करत चरनन परत, अहो गरीबनिवाज ।
पच परावर्तननितै, निरवारो ऋषिराज ॥

ॐ ह्री श्रीमन्वादिसप्तर्षिभ्यो पूर्णार्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥

—:•:—

निर्वाण-कांड (प्राकृत)

अट्टावयम्मि उसहो चपाए बासुपुज्जजिणणाहो । उज्जन्ते णेमिजिणा पावाए णिव्बुदो महावीरो ।1। वीस तु जिणवरिंदा अमरासुर वदिदा धुदकिलेसा । सम्मेदेगिरि सिहरे णिव्वाण गया णमो तेसिं ।२। बरदत्तो य वरगोसायरदत्तो य तारवरणयरे । आहुट्ठयकोडिओ णिव्वाण० ।३। णेमिसामि पज्जुण्णो सबुकुमारा तहेव अणिरुद्धो । बाहत्तरिकोडीओ उज्जते सत्तसया वदे ।४। रामसुआ वेण्णि जणा लाडणरिंदाण पचकोडीओ । पावागिरवरसिहरे णिव्वाण० ।५। पडुसुआतिणिजणा दविडणरिंदाण अट्ठकोडोओ । सत्तुजयगिरिसिहरे णिव्वाण० ।६। सते ज बलभद्दा जदुबणरिंदाण अट्ठकोडोओ । गजपथे गिरसिहरे णिव्वाण० ।७। रामहणू सुग्गीवो गवयगवाक्खो य णोलमहणीलो । णवणवदीकोडोओ तुगीगिरिणिव्वुदे वदे ।८। णगाणगकुमारा कोडीपचद्धमुणिवरा सहिया । सुवणागिरिवरसिहरे णिव्वाण० ।९। दहमुहरायस्स सुआ कोडीपचद्धमुणिवरा सहिया । रेवाउहयम्मितीरे णिव्वाण० ।१०। रेवाणइए तीरे पच्छिम भायम्मि सिद्धवरकूडे । दो चक्की दह कप्पे आहुट्ठ य कोडिणिव्वुदे वदे । ११ वडवाणीवरणयरे दक्खिणभायम्मि चूलगिरिसिहरे । इन्दजीदकुभयण्णो णिव्वाण० ।१२। पावागिरिवर सिहरे सुवण्णभद्दाइमुणिवरा चउरो । चलणाणईतडग्गे णिव्वाण० ।१३। फलहोडी-वरगामे पच्छिमभायम्मि दोणगिरिसिहरे । गुरूदत्ताइ-मुणिदा णिव्वाण० ।।१४।। णायकुमारमुणिदो बालि महाबालि चेव अज्झेया । अट्टावयगिरिसिहरे णिव्वाण० ।१५। अच्चलपुरवरणयरे ईसाभाये मेढगिरसिहरे । आहुठ्ठय-कोडीओणिव्वाण० ।१६। वसत्थलवणणियरे पच्छिम भायम्मि कुथुगिरिसिहरे । कुलदेसभूषणमुणी णिव्वाण० ।१७। जसरहरायस्स सुआ पचसया कलिंगदेसम्मि । कोडिसिला कोडिमुणि णिव्वाण० ।१८। पासस्स

समवसरणे गुरुदत्त वरदत्तमुणिवरा पंच। रिस्सिदे गिरिसिहरे णिव्वाण गया णमो तेसिं।१६।

जे जिण जित्थुत्तत्था जेदु गया णिव्वुदिं परम।
ते वदामि य णिच्च, तिरयणसुद्धो णमसामि ॥२०
सेसाण तु रिसीण णिव्वाण जमि-जमि ठाणाणि।
ते ह वदे सव्वे दुक्खक्खय कारणट्ठाए ॥२१

अथ अइसयखेत्तकांड-अतिशयक्षेत्रकांड

पास तह अहिणदण णायद्दहि मगलाउरे वदे। अस्सारम्मे पट्टणि मुणिसुव्वओ तहेव वदामि ॥१॥ बाहूबलि तह वदमि पोयणपुरहत्थि- णापुरे वदे। सांति कुथब अरिहो वाणारसिए सुपासपास च।२। महु- राए अहिछित्ते वीर पास तहेव वदामि। जबुमुणिदो वदे णिव्वुइपत्तोवि जबुवणगहणे।३। पचकल्लाणठाणइं जाणवि सजादमज्झलोयम्मि। मणवयण-कायसुद्धो सव्व सिरसा णमस्सामि।४। अग्गलदेव वदमि वरणयरे णिवडकुडली वदे। पास सिवपुरि वदमि होलागिरिसखदेव म्मि।५। गोमटदेव वदमि पचसय धणुहदेहउच्चत। देवा कुणति बुट्ठि केसरिकुसुमाण तस्स उवरिम्मि।६। णिव्वाणठाण जाणि- विण अइसए सहिया। सजादमिच्चलोए सव्वे सिरसा णमस्सामि- ॥७॥ जो जण पढइ तियाल णिव्वुइकडपि भावसुद्धोए। भुजदि णर- सुरसुक्खं पच्छा सो लहइ णिव्वाण ॥

—:०:—

पंचकल्याणक, जैन व हिन्दू पर्व तिथियां

चैत्र शुक्ल पक्ष :

तिथि	व्रत उत्सव पर्व आदि
प्रतिपदा	नववर्ष प्रारम्भ, भगवान मल्लिनाथ गर्भ, गौतम स्वामी जन्म, नवरात्रारम्भ ।
तृतीया	भगवान कुन्थनाथ ज्ञान कल्याण ।
पंचमी	भगवान अजितनाथ निर्वाण। श्री राम राज्य महोत्सव, श्री पंचमी ।
षष्ठी	भ० सम्भवनाथ निर्वाण दिवस, सूर्य षष्ठी व्रत
नवमी	श्री राम जन्म महोत्सव ।
एकादशी	भगवान सुमतिनाथ जन्म, केवलज्ञान व निर्वाण
त्रयोदशी	भगवान महावीर जयन्ती ।
पूर्णिमा	भगवान पद्म प्रभु ज्ञान कल्याणक

वैशाख कृष्ण पक्ष :–

द्वितीया	भगवान पार्श्वनाथ गर्भ,
नवमी	भगवान मुनिसुव्रत नाथ ज्ञान ।
दशमी	भगवान मुनिसुव्रत नाथ जन्म-तप ।
चतुर्दशी	भगवान नमिनाथ निर्वाण, श्राद्ध की अमावस्या

वैशाख शुक्ल पक्ष :

प्रतिपदा*	भगवान कुन्थनाथ जन्म-तप-निर्वाण, चन्द्र दर्शन
तृतीया	अक्षय तृतीया भ० ऋषभदेव प्रथम अहार दिवस

* श्रीमती कृष्णादेवी पुण्य तिथि ।

षष्ठी भगवान अभिनन्दन गर्भ निर्वाण, गंगा सप्तमी
रामानुजाचार्य जयन्ती।

अष्टमी भगवान धर्मनाथ गर्भ

नवमी भगवान सुमति नाथ तप—सीता नवमी

दशमी भगवान महावीर केवलज्ञान।

पूर्णिमा बुद्ध पूर्णिमा-बुद्ध जयन्ती।

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष :

षष्ठी भगवान श्रेयांसनाथ गर्भ

दशमी भगवान विमलनाथ गर्भ

द्वादशी भगवान अनन्तनाथ जन्म-तप

चतुर्दशी भगवान शान्तिनाथ जन्म-तप व निर्वाण

अमावश्या भगवान अजितनाथ गर्भ, वट-सावित्री व्रत

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष :

चतुर्थी भगवान धर्मनाथ निर्वाण,
वैनायकी—श्री गणेश चतुर्थी व्रत, उमावतार।

पंचमी श्रुत पंचमी

दशमी श्री गंगा दशहरा

एकादशी निर्जला (भीमसेनी) एकादशी व्रत,

द्वादशी भगवान सुपार्श्वनाथ जन्म-तप।

आषाढ़ कृष्ण पक्ष :

द्वितीया भगवान ऋषभदेव गर्भ।

षष्ठी भगवान वासपूज्य गर्भ

अष्टमी	भगवान विमलनाथ निर्वाण, शीतलाष्टमी व्रत
दशमी	भगवान नमिनाथ जन्म-तप

अषाढ़ शुक्ल पक्ष :

षष्ठी	स्कन्द षष्ठी व्रत–भगवान महावीर गर्भ
सप्तमी	भगवान नेमिनाथ निर्वाण
अष्टमी	अष्टाह्निका
चतुर्दशी	रात्रि में चातुर्मास-स्थापना
पूर्णिमा	श्री गौतम गणधर दीक्षा-दिवस-गुरु पूर्णिमा

श्रावण कृष्ण पक्ष :

प्रतिपदा	भगवान महावीर प्रथम देसना, (वीर शासन जयन्ती) अशून्य शयन व्रत।
द्वितीया	भगवान मुनि सुव्रतनाथ गर्भ
दशमी	भगवान कुन्थनाथ गर्भ
चतुर्दशी*	

श्रावण शुक्ल पक्ष :

द्वितीया	भगवान सुमतिनाथ गर्भ
पंचमी	नागपंचमी कल्कि अवतार
षष्ठी	भगवान नेमिनाथ जन्म-तप
सप्तमी	भ० पार्श्वनाथ निर्वाण, मोक्ष सप्तमी गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती
पूर्णिमा	भगवान श्रेयांसनाथ निर्वाण–गुरु अकम्पनाचार्य व विष्णुकुमार पूजन, रक्षाबंधन-पर्व

---

* श्रीमती पद्मावती जैन जन्म-दिन।

भाद्रपद कृष्ण पक्ष :

प्रतिपदा	सोलहकारण व्रत प्रारम्भ
सप्तमी	भगवान शान्तिनाथ गर्भ
अष्टमी	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (वैष्णवों का)
नवमी	रोहिणी व्रत

भाद्रपद शुक्ल पक्ष :

प्रतिपदा	लब्धि विधान व्रत
द्वितीया	आचार्य शान्तीसागर संवत्सरी, चन्द्रदर्शन
पंचमी	ऋषिपंचमी व्रत, दशलक्षण प्रारम्भ मेरुस्थापना
षष्ठी	भगवान सुपार्श्वनाथ गर्भ, श्री सूर्य षष्ठी व्रत
सप्तमी	मुक्तावली व्रत, निर्दोष शील सप्तमी
अष्टमी	भगवान पुष्पदंत निर्वाण, राधा [illegible]
दशमी	सुगन्ध दशमी व्रत
त्रयोदशी	रत्नत्रय स्थापना
चतुर्दशी	वासुपूज्य निर्वाण, अनन्त चतुर्दशी ~~भगवान~~
पूर्णिमा*	स्नान दान आदि की पूर्णिमा, उमा-महेश्वर व्रत

आश्विन कृष्ण पक्ष :

प्रतिपदा	क्षमावणी पर्व
द्वितीया	भगवान नमिनाथ गर्भ
चतुर्थी	श्री क्षुल्लक गणेशप्रसाद वर्णी जयन्ती

* श्रीमती कृष्णादेवी जैन जन्म व श्रीमती पद्मावती जैन पुण्य-दिवस।

आश्विन शुक्ल पक्ष :

प्रतिपदा	भगवान नेमिनाथ ज्ञान, शारद नवरात्रारम्भ
अष्टमी	भगवान शीतलनाथ निर्वाण श्री दुर्गाष्टमी व्रत, सरस्वती पूजन
दशमी	विजया दशमी (दशहरा)
पूर्णिमा	शरद पूर्णिमा

कार्तिक कृष्ण पक्ष :

प्रतिपदा	भगवान अनन्तनाथ गर्भ
चतुर्थी*	भगवान सम्भव नाथ ज्ञान, रोहिणी व्रत करवा चौथ
द्वादशी	मुक्तावली व्रत
त्रयोदशी	भगवान पद्मप्रभ जन्म तप
चतुर्दशी	हनुमान जयन्ती
अमावस्या	दीपावली भ० महावीर निर्वाण–गौतम गणधर केवलज्ञान, स्नान-दान-श्राद्ध आदि की अमावस्या

कार्तिक शुक्ल पक्ष :

द्वितीया	भगवान पुष्पदंत ज्ञान–भइया दूज
षष्ठी	भगवान नेमिनाथ गर्भ, सूर्य षष्ठी व्रत
अष्टमी	अष्टाह्निका प्रारम्भ गोपाष्टमी (गो-पूजन)
एकादशी	मुक्तावली व्रत
द्वादशी	भगवान अरहनाथ ज्ञान, तुलसी विवाह

* श्री राजकृष्ण जैन जन्म-तिथि ।

पूर्णिमा — भ० सम्भवनाथ जन्म (हस्तिनापुर, कलकत्ता मुक्तागिरि मेला स्नान-दान व्रत आदि की कार्तिकी पूर्णिमा), गुरु नानक जन्म।

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष :

तृतीया — मुक्तावली व्रत

दशमी — भगवान महावीर तप कल्याणक

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष :

प्रतिपदा — भगवान पुष्पदंत जन्म-तप, रुद्र व्रत

एकादशी — भ० मल्लिनाथ जन्म-तप व भ० नमिनाथ ज्ञान

[redacted] — भगवान अरहनाथ जन्म-तप
दत्तात्रेयावतार, व्रत की पूर्णिमा; रोहिणी व्रत

पूर्णिमा — भगवान सम्भव नाथ तप, स्नान-दान आदि की पूर्णिमा

पौष कृष्ण पक्ष :

द्वितीया — भगवान मल्लिनाथ केवलज्ञान, देहली रथयात्रा

एकादशी — भगवान चंद्रप्रभु व भ० पार्श्वनाथ जन्म तप, सफला एकादशी व्रत (सभी का)

चतुर्दशी — भगवान शीतलनाथ ज्ञान

पौष शुक्ल पक्ष :

दशमी — भगवान शान्तिनाथ ज्ञान कल्याणक

एकादशी — भगवान अजितनाथ केवलज्ञान

चतुर्दशी — भगवान अभिनन्दनाथ ज्ञान कल्याणक,

पूर्णिमा — भगवान धर्मनाथ ज्ञान कल्याणक

माघ कृष्ण पक्ष :

षष्ठी भगवान पद्मप्रभु गर्भ
द्वादशी भगवान शीतलनाथ जन्म-तप, प्रदोष-व्रत
चतुर्दशी भग० ऋषभदेव निर्वाण
अमावस्या* भगवान श्रेयांसनाथ ज्ञान,

माघ शुक्ल पक्ष :

द्वितीया भगवान वास पूज्य ज्ञान
चतुर्थी भगवान विमलनाथ जन्म-तप
पंचमी वसन्त पञ्चमी, वागीश्वरी जयंती, तक्षक पूजा
षष्ठी भगवान विमलनाथ ज्ञान
दशमी भगवान अजितनाथ जन्म-तप
द्वादशी भगवान अभिनन्दन नाथ जन्म-तप, रोहिणी व्रत
त्रयोदशी भगवान धर्मनाथ, जन्म-तप

[redacted]

फाल्गुन कृष्ण पक्ष :

तृतीया भगवान अरहनाथ गर्भ
चतुर्थी भगवान पद्मप्रभु निर्वाण
षष्ठी भगवान सुपार्श्वनाथ ज्ञान
सप्तमी भगवान चन्द्रप्रभु ज्ञान व सुपार्श्वनाथ निर्वाण

---

* राजकृष्ण जैन पुण्यतिथि ।

नवमी	भगवान पुष्पदंत गर्भ
एकादशी	भगवान आदिनाथ ज्ञान व श्रेयांसनाथ जन्म-तप
द्वादशी	भगवान मुनि सुव्रतनाथ निर्वाण
चतुर्दशी	भ. वासपूज्य जन्म-तप, शिवरात्रिव्रतकी पारणा

<u>फाल्गुन शुक्ल पक्ष :</u>

पंचमी	भगवान मल्लिनाथ निर्वाण
षष्ठी	सम्भावनाथ जिनेन्द्र गर्भ
सप्तमी	भगवान चन्द्रप्रभु निर्वाण
अष्टमी	अष्टाह्निका
त्रयोदशी*	
पूर्णिमा	स्नान-दान-पूर्णिमा, होली वसन्तोत्सव

<u>चैत्र कृष्ण पक्ष :</u>

चतुर्थी	भगवान पार्श्वनाथ ज्ञान
पञ्चमी	भगवान चन्द्रप्रभु गर्भ, रंग-पञ्चमी
अष्टमी	भगवान शीतलनाथ गर्भ, श्रीशीतलाष्टमी व्रत
नवमी	भगवान ऋषभदेव जन्म-तप
अमावस्या	अनंतनाथ ज्ञाननिर्वाण व भगवान अरहनाथ निर्वाण

---

* श्री प्रेमचन्द्र जैन जन्मतिथि।

हमारे अन्य प्रकाशन

१. **भक्ति गुच्छक**–(स्तोत्र, पाठ और पूजा आदि का अपूर्व सग्रह)
६३१ पृष्ठ का गुटका । मूल्य ५ रुपये

२ **अध्यात्म तरगिणी**—रचयिता, आचार्य सोमदेव, सस्कृत टीकाकार आ० गणधरकीर्ति, हिन्दी टीकाकार—प० पन्नालाल साहित्याचार्य
मूल्य ५ रुपये

३ **युगवीर भारती**—
प० जुगलकिशोरजी मुख्तार की कविताओ का सग्रह मूल्य ३ रुपये

४ **भगवान महावीर**—(लेखिका रमादेवी जैन) मूल्य ३ रुपये

५ **हरिवश कथा**—मूल लेखक आचार्य जिनसेन, रुपान्तरकार
श्री माई दयाल जैन पृष्ठ सख्या ३४० सजिल्द मूल्य १५ रुपये

६ **प्रद्युम्न चरित्र**—(बाल सस्करण) श्रीमती पद्मा जैन ३ रुपये

७ **हरिवश कथा**— ,, ,, ,, ३ रुपये

८ **तन से लिपटी बेल** (उपन्यास)—
लेखक—श्री आनन्द प्रकाश जैन (सजिल्द) मूल्य १० रुपये

९ **पुराने घाट नई सीढ़िया**—डा० नेमिचन्द जैन, ज्योतिषाचार्य
पी-एच० डी०, डी० लिट् सजिल्द मूल्य १० रुपये

१० **नित्य नियम पूजन, चतुर्विशति पाठ, तीर्थक्षेत्र पूजन व स्तोत्र सग्रह**—श्री वृन्दावन जी कृत ३० रुपये

११ **समयसार**—आचार्य कुन्दकुन्दाचार्य कृत "श्री राजकृष्णजी जैन" द्वारा गाथाओ के अग्रेजी रूपान्तर सहित । (प्रेस मे)

१२ **नियमसार**--आचार्य कुन्दकुन्दाचार्य कृत "श्री राजकृष्णजी जैन" द्वारा गाथाओ के अग्रेजी रूपान्तर सहित । (प्रेस मे)

१३. **सिद्ध चक्र विधान**—श्री सन्तलाल जी कृत (प्रेस मे)

SHRI RAJ KRISHEN JAIN MEMORIAL LECTURE SERIES

12 Jain Ethical Traditions and Its Relevance and the Jain Conception of Knowledge and Reality and its Relevance to Scientific Thought by Dr G C Pandey Ex Vice-Chancellor, Rajathan University, Jaipur 25-00

13 Some Thoughts on Science & Religion by Professor Dr D S Kothari, Ex-Chairman, University Grants Commission 25-00

14 Yoga, English Meditition is Mysticism in Jainism b Justice T K Tukol (Retd, Vice-Chancellor, Bangalore University) 25-00

15 Anekant & Nayavada—By prof Dr T G Kalghatgi former Head of the Department of Jainology & Prakrit, Mysore University 25-00

१६ **भारतीय धर्म ओर अहिंसा**—सिद्धाताचार्य प० कैलाशचन्द्र शास्त्री वाराणसी २५ रुपये

अहिंसा मन्दिर

फोन २६७२०० **१ दरियागज, असारी रोड, नई दिल्ली-२**

अन्य केन्द्र **हरिद्वार, कुरुक्षेत्र, व पिलानी**

(श्री राजकृष्ण जैन चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा सचालित)